# श्री श्री माँ आनन्दमयी

## षोडश भाग

श्री श्री माँ के दिव्य जीवन के बारह महीनों की घटनावलियों का वर्णन इस भाग में है। हरि बाबा जी के सम्बन्ध में विचित्र दर्शन, काशी विश्वनाथ मन्दिर में, वृन्दावन आश्रम में पंच शिव प्रतिष्ठा, काशी में बासन्ती-पूजा, श्री श्री माँ की षष्ठीतम जयन्ती, कलकत्ता में भागवत-सप्ताह और शारदीय-पूजा, राँची में लक्ष्मी पूजा, काशी आश्रम में प्रथम बार श्री श्री श्यामा पूजा, आकस्मिक दुर्घटनाएँ, विंध्याचल में गीता-जयन्ती तथा इलाहाबाद, गया, पुरी, दिल्ली, हरिद्वार हृषीकेश, होशियार आदि स्थानों में माँ की भ्रमण-लीलाओं की कहानी इस भाग में वर्णित है।

[ जनवरी १९५६ से दिसम्बर १९५६ तक ]

# श्री श्री माँ आनन्दमयी

## षोडश भाग

[ १ जनवरी १९५६ से ३१ दिसम्बर १९५६ ]

श्री गुरुप्रिया देवी

हिन्दी रूपान्तर--विश्वनाथ मुखर्जी

श्री श्री आनन्दमयी संघ

भदैनी, वाराणसी

प्रकाशक :
श्री श्री आनन्दमयी संघ
भदैनी, वाराणसी-१

प्रथम संस्करण
सितम्बर, १९७०

मूल्य : तीन रुपये पचास पैसे

मुद्रक :
बाबूलाल जैन फागुल्ल
महावीर प्रेस
भेलूपुर, वाराणसी-१

# प्रकाशकीय

श्री श्री माँ की असीम कृपा से श्रीयुक्ता गुरुप्रिया देवी ( दीदी ) लिखित "श्री श्री माँ आनन्दमयी" का षोडश भाग प्रकाशित हुआ। दीर्घ दिनों से लेखिका माँ के निकट से बराबर दूर रहती आयी हैं, फिर भी आपकी डायरी बराबर चालू रही। इस दृष्टि से आपने श्री श्री माँ के अगणित भक्तों को कृतज्ञता-पाश में आवद्ध कर लिया है।

प्रस्तुत भाग मूल बंगला के त्रयोदश भाग का हिन्दी रूपान्तर है। शीघ्र ही अगला भाग भी प्रकाशित किया जायगा। अन्य भागों की तरह इस भाग के मुद्रण एवं गेटअप में विशेष ध्यान दिया गया है।

सितम्बर, १९७०

विनीत
प्रकाशक

# विषय-सूची

●

# श्री श्री माँ आनन्दमयी

## षोड़श भाग

### १ जनवरी, १९५६

आज अंग्रेजी साल का पहला दिन है। इस उपलक्ष में माँ का दर्शन करने के लिए सवेरे से भीड़ बढ़ती जा रही है। टेहरी के महाराजा, महारानी, राजमाता आदि आकर माँ का दर्शन कर चले गये। इस बार दिल्ली में आशातीत रूप से काफी दिनों तक ठहरने का संयोग हो गया है और इस सुयोग के कारण अनेक नये-नये भक्तों को दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ है। इसी बीच एक दिन पाकिस्तान के हाई कमिश्नर राजा गजनफर अली खाँ भी सपत्नीक आकर माँ का दर्शन कर गये हैं।

दिल्ली में कुछ दिन

हरि बाबाजी अभी तक नर्सिंग होम में हैं और धीरे-धीरे स्वास्थ्य-लाभ कर रहे हैं। माँ नित्य दोनों वक्त हरि बाबाजी को देख आती हैं। कल मुझे काशी जाना है।

### २ जनवरी, १९५६

आज शाम की गाड़ी से मैं, पानू, रेणु और दो अन्य लड़कियाँ काशी की ओर रवाना हुए। चलते वक्त सुना कि माँ हरि बाबाजी को देखकर थोड़ी देर बाद आश्रम लौट आयेंगी। माँ की तबीयत

इधर कुछ दिनों से ठीक नहीं है। उपयुक्त सेवा करने लायक साथ में कोई नहीं है। कुछ दिनों के लिए कुसुम को वृन्दावन से बुलाया गया है।

## ३ जनवरी, १९५६

आज दोपहर को १२-३० बजे काशी पहुँची। मार्ग में विभिन्न स्टेशनों पर समाचार पाकर अनेक लोग आकर माँ के बारे में जानकारी प्राप्त कर गये। सभी लोग यही पूछ रहे थे—"माँ इधर कब आनेवाली हैं?"

## ५ जनवरी, १९५६

सुबह के १० बजे हैं। अचानक इलाहाबाद से परमानन्द स्वामीजी का फोन आया कि माँ अपर इंडिया एक्सप्रेस से यहाँ आ गयी हैं। माँ यहाँ डा० पन्नालालजी के निवास स्थान पर ठहरी हैं। आज वे भोजन करने के पश्चात् मोटर से विंध्याचल रवाना हो जायेंगी। यहाँ से श्री गोपीनाथ कविराजजी और अमूल्य बाबू को कल सुबह मोटर से भेजने को माँ ने कहा है।

दोपहर को डा० दास गुप्ता के साथ पानू, दीदी माँ आदि माँ से मुलाकात करने के लिए मोटर द्वारा विंध्याचल रवाना हो गये।

**इलाहाबाद और विंध्याचल**

रात ८ बजे के बाद पटल ने आकर सूचित किया कि माँ २ बजे के बाद विंध्याचल पहुँचीं। इलाहाबाद से माँ श्री गोपाल स्वरूप पाठकजी की गाड़ी से विंध्याचल आयी हैं। साथ में पाठकजी की बहन, लड़की और नीरज बाबू

की लड़की वीथू है। ये लोग माँ को विंध्याचल पहुँचाकर मोटर से वापस चले गये।

उस दिन दीदी माँ, पानू और विमला विंध्याचल रह गये। बाद में सुना कि उस दिन सायंकाल डा० पन्नालाल जी के दामाद श्री रामेश्वर सहाय और कुछ अन्य लोग भी आये थे। वे लोग सरकारी डाक बंगले में ठहरे थे।

## ६ जनवरी, १९५६

माँ के पूर्व निर्देशानुसार आज सवेरे श्रीयुक्त कविराजजी एवं अमूल्य बाबू विंध्याचल रवाना हो गये। उनके साथ 'बुनी' भी गयी। बाद में उदास, विन्दु तथा चिन्मयानन्द भी रवाना हो गये।

## ७ जनवरी, १९५६

आज गौरांग ब्रह्मचारी विंध्याचल से आये हैं। उनकी जबानी पता चला कि इन दिनों माँ की तबीयत एक प्रकार से ठीक है। श्रीयुक्त कविराजजी के साथ माँ की काफी बातचीत हुई है। इलाहाबाद से परसों रात को डा० पन्नालालजी, उनकी कन्या लीला तथा अन्य लोग आये हैं। यह भी सुना कि कल माँ यहाँ आने वाली हैं। श्री हरि बाबाजी को जब नर्सिंग होम से छुट्टी मिलेगी तब शायद माँ दिल्ली रवाना हो जायेंगी।

## ८ जनवरी, १९५६

आज अपराह्ण में ५ बजे के लगभग माँ यहाँ आयीं। माँ के

साथ कानपुर के ४-५ व्यक्ति, कलकत्ता से गंगाचरण बाबू की पत्नी और पुत्र तथा भाईजी के पुत्र रामानन्द आये हैं। इस बार काफी दिनों के बाद रामानन्द हमारे यहाँ आया। सुना कि विंध्याचल आने के बाद माँ ने तार करवाया था।

## १० जनवरी, १९५६

आज अढ़ाई बजे लगभग माँ मोटर द्वारा पुनः विन्ध्याचल चली गयीं। इसके पहले रेलगाड़ी से एक पार्टी चली गयी है। माँ इस बार विन्ध्याचल २–१ रोज से अधिक नहीं ठहरेंगी, क्योंकि यह पता चला है कि हरि बाबाजी को अगले शनिवार १४ ता० तक छुट्टी मिल जायगी।

## ११ जनवरी, १९५६

आज विन्ध्याचल से फोन आया कि कल माँ यहाँ आयेंगी और शाम की गाड़ी से दिल्ली रवाना हो जायेंगी। रात को पटल ने भी आकर यही समाचार दिया। वह आज माँ से मुलाकात करने के लिए विन्ध्याचल गया था।

## १२ जनवरी, १९५६

आज दो बजे के लगभग माँ डा० गोपाल बाबू की मोटर से यहाँ आयीं। देखा—उनकी तबीयत ठीक नहीं है। पिछले २–३ रोज से पेट में दर्द का भाव चल रहा है। वह अब भी मौजूद है। फिर भी आज जाने वाली हैं। दिल्ली से तार आया है कि परसों हरि बाबाजी को अस्पताल से मुक्त कर दिया जायेगा। माँ यथा समय अपर इंडिया एक्सप्रेस से रवाना हो गयीं। उनके साथ परमानन्द

स्वामीजी और शोभा गये। माँ अपने साथ और किसी को ले जाने को राजी नहीं हुईं।

## १३ जनवरी, १९५६

विन्ध्याचल से गोपी बाबू, अमूल्य बाबू आदि आज सवेरे मोटर द्वारा यहाँ आये।

रात को बम्बई से भइया का टेलिग्राम आया कि आजकल अस्वस्थ रहने के कारण वे फिलहाल एक सप्ताह तक कलकत्ता नहीं जा सकते। उनकी तबीयत के बारे में माँ की कुछ बातें ख्याल में आयी थीं। इसीलिए माँ प्राइवेट रूप में उनकी पत्नी लीला के निकट कुछ निर्देश भिजवायी थीं। माँ की कृपा इस तरह अयाचित भाव में सर्वदा किसी-न-किसी के ऊपर वर्षित होती है, यह बात मैं बराबर देखती आ रही हूँ।

## १४ जनवरी, १९५६

पौष संक्रान्ति महा-यज्ञ का वार्षिक उत्सव का दिन

आज मकर संक्रान्ति है। आज महायज्ञ का वार्षिक उत्सव का दिन है। इसलिए आज उदयास्त माँ-नाम-कीर्त्तन की व्यवस्था की जा रही है। सभी लड़कियाँ मिलकर उषा काल से कीर्त्तन प्रारम्भ कर चुकी हैं। बाहर से काफी लोग आकर सहयोग दे रहे हैं। यज्ञ-मण्डप और उसके चारों तरफ फूल-माला से खूब अच्छी तरह सजाया गया है।

दिल्ली से अभी तक माँ के बारे में कोई समाचार नहीं मिला है। माँ के शरीर के बारे में विशेष चिन्ता है, क्योंकि उनके साथ सेवा करने वाला कोई नहीं है।

## १६ जनवरी, १९५६

आज दिल्ली की चिट्ठी मिली। स्वामीजी ने लिखा है कि १३ ता० को माँ दोपहर के वक्त सभी लोगों को साथ लेकर सकुशल यहाँ आ गयीं। स्टेशन से आश्रम आते समय माँ नर्सिंग होम से हरि बाबाजी को देखने गयी थीं। डाक्टर ने कहा है कि लघुशंका करने के लिए जो छेद किया गया है, वह बरसात के कारण अभी तक सूखा नहीं है। फलस्वरूप हरि बाबाजी को अभी ३–४ दिन और अस्पताल में रहना पड़ेगा। यह राय सुनकर हरि बाबाजी ने नारायण दासजी से कहा था कि काशी में फोन कर दो ताकि माँ ३–४ दिन वहाँ आराम करने के बाद यहाँ आयें। किन्तु फोन लाइन ठीक न रहने की वजह से ठीक समय पर नहीं मिला। इधर माँ भी पहले के समाचार के अनुसार दिल्ली पहुँच गयीं। बहरहाल हरि बाबाजी की हालत इन दिनों तेजी से ठीक हो रही है। स्वामीजी ने यह भी लिखा है कि गोपाल की माँ स्वस्थ होकर अस्पताल से आश्रम आ गयी है और माँ के निकट है।

गंगा चरण बाबू की पुत्रवधू माँ के साथ है। उसका भी एक पत्र मिला है। उसने लिखा है कि माँ की तबीयत विशेष अच्छी नहीं है। यद्यपि पेट के दर्द में कुछ कमी हुई है, परन्तु रीढ़ की हड्डी तन जाने के कारण एक नये दर्द की सृष्टि हुई है। यह संवाद पाकर मेरा मन खराब हो गया है।

इसके कुछ देर बाद पटल से समाचार मिला कि कल हरि बाबाजी को अस्पताल से छोड़ दिया गया है। वहाँ से हरि बाबाजी को आश्रम में लाया गया है। समझ गयी कि माँ वहाँ जाकर जल्दी से हरि बाबाजी के लिए समस्त प्रबन्ध कर रही हैं।

## १७ जनवरी, १९५६

आज दिल्ली के श्री पंकज सेनजी द्वारा लिखित पत्र से ज्ञात हुआ कि हरि बाबाजी आश्रम में बहुत अच्छी तरह हैं। माँ का शरीर एक प्रकार से चल रहा है, पर वे हरि बाबाजी के लिए बहुत व्यस्त रहती हैं।

## १८ जनवरी, १९५६

आज शोभा और गौरी के पत्र मिले। इन लोगों ने लिखा है कि माँ खुले हुए स्थान पर सुबह-शाम हरि बाबाजी को लेकर बैठती हैं। एक दिन की एक विचित्र घटना का विवरण भी इन लोगों ने लिखा है कि एक दिन भोर के समय माँ लेटे-लेटे सुन रही थीं, कोई मानो विभोर होकर कीर्त्तन कर रहा है—"ओ हे वृन्दावन श्याम........" यह सुनते-सुनते माँ के भीतर से एक और पद बाहर निकला—"ओ हे निखिल पति श्याम........"

एक विचित्र घटना

माँ भी उसी सुर में स्वयं गाने लगीं। हरि बाबाजी ने इस बारे में सुन कर माँ से पूछा था कि क्या माँ ने कुछ देखा था क्या? माँ ने उनके उत्तर में सिर्फ यही कहा था कि आवाज ही मात्र सुन पाई थी।

गौरी के पत्र से माँ की तबीयत के बारे में विस्तार से समाचार मिला। माँ की कमर की हड्डी का दर्द अब काफी कम हो गया है। आजकल अपराह्ल के समय ४ बजे के बाद दलिया की खिचड़ी खाती हैं। सवेरे मिश्री का पानी, संतरे का रस और दही खाती हैं। पेट के दर्द की वजह से इस तरह का पथ्य चल रहा है। इस तरह के भोजन से उन्हें काफी आराम है।

शायद हरि बाबाजी अभी १५ दिन वहाँ रहेंगे। इसके बाद वे होशियारपुर जाने वाले हैं। हरि बाबाजी के जाने के बाद माँ संभवतः विन्ध्याचल आयेंगी। ऐसी संभावना है। नर्सिंग होम से हर दूसरे दिन डाक्टर आकर नयी पट्टी बाँध जाते हैं। प्रतिदिन सुबह-शाम नियमित रूप से सत्संग हो रहा है।

## २० जनवरी, १९५६

आज हीरू के पत्र से वहाँ के प्रोग्राम के बारे में विस्तार से समाचार मिला। सवेरे ९॥ से १०॥ तक पाठादि होता है। हरि बाबाजी एवं माँ दोनों ही आकर बैठते हैं। इसके बाद कुछ देर श्रीमद्भागवत पाठ होता है।

अपराह्ण में लगभग एक घण्टे तक माँ और हरि बाबाजी की उपस्थिति में भक्त चरित्र का पाठ होता है। हरि बाबाजी स्वयं अभी तक पाठ नहीं करते। यद्यपि सबेरे-शाम थोड़ी-थोड़ी देर तक कीर्त्तन करते हैं।

पटना के श्रीयुक्त नगेन्द्र बख्शी आई० सी० एस० माँ का दर्शन करने के लिए दिल्ली गये हैं। एक बार माँ इनके यहाँ एक जून ठहरी थीं। आप अद्भुत प्रतापशाली व्यक्ति हैं, किन्तु अत्यन्त सज्जन और मिलनसार प्रकृति के हैं। बिहार सरकार के बोर्ड आफ रेवन्यू के सेक्रेटरी हैं।

## २२ जनवरी, १९५६

श्रीयुक्त बख्शी पटना जाते वक्त काशी में कुछ देर के लिए रुक गये और मुझसे मुलाकात कर गये। देखा—उनका स्वभाव सुन्दर है और सेवा परायण भी। यद्यपि कुछ देर तक यहाँ रहे, पर ऐसा

लगा मानो न जाने कितने दिनों के परिचित हैं, ऐसे भाव में रहे। वास्तव में माँ के श्रीचरणों में आकर न जाने कितने अच्छे भाई-बहनों को मैं पा सकी।

आज एक समाचार मिला जिसके कारण जरा मैं उद्विग्न हो उठी। अचानक भारत सरकार ने सभी लाइफ इंश्योरेंस कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया है। जीवन बीमा के सम्बन्ध में एक आमूल परिवर्तन की योजना चल रही है। श्रीयुक्त बी० के० शाह (भइया) न्यू इण्डिया के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। सच तो यह है कि वे जीवन बीमा निगम के कारबार को नयी पद्धति से निर्माण कर रहे थे। उनकी अभिज्ञता, कर्मक्षमता इस सम्बन्ध में अतुलनीय है। अचानक इस तरह भारत सरकार द्वारा जीवन बीमा कम्पनियों की स्वतन्त्रता समाप्त कर देने पर भइया को कितना मानसिक कष्ट हुआ होगा, इस बात की कल्पना करने पर हमें अपार दुःख हो रहा है। केवल भइया के लिए ही नहीं, बल्कि उनके सूत्र से उनकी कम्पनी के अनेक लोगों से एक अपनापन कायम हो गया है, अब शायद उन लोगों के साथ उक्त प्रीति सम्बन्ध बनाये रखना संभव नहीं होगा। सहस्र व्यक्तियों के जीवन में एक आमूल परिवर्तन हो जायेगा।

## २३ जनवरी, १९५६

आज दिल्ली से गौरी का एक और पत्र आया। इस पत्र से यह ज्ञात हुआ कि फिलहाल इन दिनों माँ की तबीयत ठीक है। परन्तु अभी तक वे दोपहर को फल-दही और तीसरे पहर खिचड़ी खाती हैं, पेट की हालत ठीक है। खाँसी की कुछ शिकायत है।

उसने आगे लिखा है कि हरि बाबाजी के स्वस्थ हो जाने के कई दिनों के भीतर ही आदित्य नारायणजी एवं उनके भक्तों में से

कुछ लोग हरि बाबाजी के स्वास्थ्य-लाभ के उपलक्ष्य में ५०० साधुओं को भोजन कराने वाले हैं। अगर इधर कुछ दिनों के भीतर यह कार्य हुआ तो वृन्दावन में होगा और वहाँ माँ को ले जाया जायेगा। अगर वृन्दावन में शिव प्रतिष्ठा की स्थापना हुई तो उसी समय साधु-भोजन होगा।

उसके पत्र से यह भी ज्ञात हुआ कि टिहरी की राजमाता भी संभवतः माँ के साथ विन्ध्याचल आयेंगी।

## २५ जनवरी, १९५६

आज गौरी के पत्र से ज्ञात हुआ कि आगामी ३० ता० को हवाई जहाज से हरि बाबाजी अमृतसर होते हुए होशियारपुर जायेंगे। माँ उसी दिन मोटर से वृन्दावन जाने वाली हैं। वहाँ से काशी आने की बात है।

माँ के पेट में रह-रह कर दर्द की टीस उभड़ती है, किन्तु खाँसी का वेग कम हो गया है।

## २७ जनवरी, १९५६

स्वामीजी और हीरू के पत्र से ज्ञात हुआ कि २५ ता० की रात को भइया दिल्ली पहुँचे। अगले ३१ ता० को वे बम्बई वापस चले जायेंगे। पहली चोट को माँ की कृपा से उन्होंने बर्दाश्त कर लिया है। अब वे नये सिरे से कार्य करने को उद्यत हुए हैं। माँ ने लिखा है कि बम्बई में भइया का योगायोग बहुत अच्छा है। विभू बम्बई में है, इसलिये नित्य रामायण-पाठ, कीर्त्तन आदि सब नियमित रूप से हो रहा है। सत्संग में उन लोगों का मन लग रहा है।

## २८ जनवरी, १९५६

स्वामी जी के पत्र से ज्ञात हुआ कि इन दिनों माँ की तबीयत एक प्रकार से ठीक है। हरि बाबाजी भी स्वस्थ हैं। वृन्दावन से दिल्ली वापस आने के बाद ३ ता० को माँ काशी आने वाली हैं।

## २९ जनवरी, १९५६

गौरी ने लिखा है कि माँ का खाना-पीना पहले के नियमानुसार चालू है। गले के दर्द में शायद कुछ कमी हुई है। खाँसी में कमी हो गयी है। भइया और टेहरी की महारानी नित्य माँ के निकट आती हैं।

हीरू के पत्र से ज्ञात हुआ कि इसी बीच एक दिन माँ बुली की लड़की के यहाँ गयी थीं। बुली दिल्ली में रहती है। माँ से इनके पूरे परिवार का काफी दिनों से परिचय है।

हरि बाबाजी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गये हैं। डाक्टर ने उनकी पट्टी खोल दी है। नियमित रूप से दोनों वक्त कीर्त्तन में भाग ले रहे हैं।

३१ ता० को पंचू दादा के यहाँ माँ को भोग दिया जायगा। वहाँ से माँ सीधे वृन्दावन जाने वाली हैं।

हरि बाबाजी अक्सर मेरे बारे में पूछताछ करते रहते हैं। मैं शीघ्र स्वस्थ होकर शिवरात्रि तथा महाप्रभु के उत्सव में भाग ले सकूँ, इसके लिए वे संकल्प कराकर एक लक्ष जप करवा रहे हैं। यह सब बातें सुनने पर माँ की कृपा स्मरण हो आती है और मेरा अन्तर कृतज्ञता से भर उठता है—माँ के चरणों में आकर इस तरह न जाने कितने साधु-महात्माओं की कृपा प्राप्त कर सकी।

## ३१ जनवरी, १९५६

स्वामी जी के पत्र से ज्ञात हुआ कि कल सबेरे माँ पंचू दादा के यहाँ गयी थीं। माँ के लिए भोग का इन्तजाम वहाँ हुआ था। वहाँ से माँ Caledonian इंश्योरेंस कं० के मैनेजर श्री मेहरा के यहाँ और फिर निज़ामुद्दीन स्थित एक पंजाबी सज्जन के घर होती हुई शाम के लगभग आश्रम वापस आयी थीं। कल सुबह ७ बजे श्री श्री हरि बाबाजी हवाई जहाज से अमृतसर रवाना हो गये हैं।

आज सुबह मोटर द्वारा माँ वृन्दावन जाने वाली हैं। वहाँ से परसों सबेरे दिल्ली वापस आयेंगी। फिर यहाँ आश्रम में खाना-पीना समाप्त कर अपर इंडिया एक्सप्रेस से काशो रवाना होंगी। माँ के साथ टिहरी की राजमाता और उनकी लड़की शीला के आने की बात है। शीला का विवाह पंजाब के लम्बाग्राम के राजा से हुआ है।

सुना कि बम्बई से अचानक कोई आवश्यक समाचार आने के कारण भइया दो दिन पहले ही चले गये हैं।

## १ फरवरी, १९५६

**माँ के अपूर्व स्नेह की बातें**

श्री श्री हरि बाबाजी की अस्वस्थता के समय माँ की एक अपूर्व स्नेहमयी मूर्त्ति प्रकाशित हुई थी, उस बारे में आज भी चर्चा होती रहती है। श्री श्री हरि बाबाजी आपरेशन के एक दिन पूर्व कुछ खा नहीं पाये थे। यह बात सुनकर आने के बाद माँ स्वयं सामने खड़ी होकर दलिया बनवायीं, फिर स्वामीजी और पानू के द्वारा भिजवायीं। ठीक से हो जाय,

इसलिए माँ ने यत्किंचित् सहयोग किया। इससे कितना यत्न और आग्रह के भाव प्रकट हुए, यह बिना देखे समझाया नहीं जा सकता। श्री श्री हरि बाबाजी के एक आश्रमवासी पण्डित सुन्दरलालजी यह यत्न और आग्रह देखकर मुग्ध हो उठे और लगे सभी के निकट सविस्तार वर्णन करने। माँ का सब कुछ आश्चर्यजनक और सुन्दर होता है। उस समय माँ को देखकर ऐसा लगता था जैसे वे हरि बाबाजी के अलावा कुछ नहीं जानतीं। उस विषय के अलावा उन्हें कुछ करने या कहने को नहीं रहा है। माँ का सभी काम ही मानो अपूर्व और सुन्दर होता है।

## ३ फरवरी, १९५६

माँ दोपहर को २ बजे के बाद अपर इंडिया एक्सप्रेस से यहाँ आ गयीं। साथ में राजमाता, उनकी पुत्री शीला, स्वामीजी आदि ८-१० व्यक्ति आये हैं। विंध्याचल के आश्रम में पाखाना और बाथरूम की आवश्यक सुविधा न रहने के कारण २-३ नये अलग से बनाये जा रहे हैं। पानू को आज रात को विंध्याचल भेज दिया गया।

माँ की तबीयत ठीक नहीं मालूम पड़ रही है। आराम तो वे कर नहीं पातीं। अब इधर कुछ दिन शायद आराम कर सकें।

## ५ फरवरी, १९५६

आज तीसरे पहर माँ मोटर द्वारा विंध्याचल रवाना हो गयीं। साथ में डाक्टर गोपाल दादा की मोटर में कुछ लोग गये। लखनऊ से एक प्रसिद्ध स्वीस अध्यापक माँ का दर्शन करने आये हैं। माँ के साथ २-१ दिन रहने के लिए वे भी विंध्याचल गये।

परसों शाम को पण्डित गोपीनाथ कविराजजी माँ के साथ भेंट करने आये थे। बातचीत के सिलसिले में माँ कविराजजी से कह रही थीं—"एक-एक समय एक-एक घटना हो जाती है। हरि बाबा भी इस शरीर के संग बड़े संकोच के साथ व्यवहार करते हैं। यह शरीर भी वही करता है। कभी स्पर्श नहीं किया जाता। इस बार दिल्ली आश्रम से जब हरि बाबा रवाना होने लगे तब यह शरीर मोटर के सामने जाकर खड़ा हो गया। पिताजी रवाना होने वाले थे कि अचानक इस शरीर ने कहा—"पिताजी, थोड़ा घर में आओ।" इस तरह कहना हुआ कि हरि बाबा ने तनिक भी आपत्ति नहीं की। घर में आते ही कहा गया—"चौकी के ऊपर थोड़ा बैठो।" पिताजी संकोच के साथ बैठे। पिताजी के बैठने के बाद यह शरीर दोनों हाथों से उनके दोनों बाहों को जरा ऊपर उठाते हुए कहा—"अच्छा अभी चलो।"

इस तरह सूक्ष्म में जो कुछ दिखाई दिया था, उसे माँ ने प्रकट किया। शिशु को मानो माँ ने दोनों हाथ पकड़कर उठा दिया।

गोपी बाबू से माँ कह रही थीं—"इस तरह हो जाता है। इच्छा से तो कुछ किया नहीं जाता।"

**हरि बाबाजी के बारेमें माँ का विचित्र दर्शन और अपूर्व मातृभाव**

यह बात सुनकर होरू ने कहा—"एक और विशेष बात है। इस बार जब हरि बाबाजी दिल्ली आश्रम से होशियारपुर जा रहे थे, उस वक्त वे नारायणदास इंजीनियर से कह रहे थे कि आपरेशन के बाद बेहोशी की हालत देख रहे थे—छोटे शिशु के रूप में वे माँ की गोद में लेटे हुए स्तन पान कर रहे हैं। शिशु की तरह वे एक लंगोट पहने हुए हैं और चारों तरह साधु-महात्माओं का दल ज्योतिर्मय पताका

लेकर खड़े हैं। इस तरह की चमत्कार पूर्ण ज्योति इसके पूर्व उन्होंने कभी नहीं देखी थी।

यह बात सुनकर कविराजजी ने कहा—"हरि बाबाजी की बीमारी का समाचार पाकर माँ जिस प्रकार अचानक अमृतसर चली गयीं, वह भी तो एक अद्भुत मातृभाव है। ठीक उसी प्रकार हरि बाबाजी का भी शिशु भाव मातृ गोद में रहा। अगर ठीक उसी समय माँ अमृतसर जाकर हाजिर न रहतीं तो वहाँ आपरेशन होकर न जाने कैसा विभ्राट हो जाता कौन जाने! माँ ठीक समय पर जाकर हाजिर हो गयीं। यह घटना साधारण नहीं है।"

हरि बाबाजी के आपरेशन के एक दिन पहले सवेरे सूक्ष्म में हरि बाबाजी के गुरुदेवजी ने आकर माँ से कहा था—"आगामी काल इसके संरक्षण की आवश्यकता है। स्वयं रक्षा की जरूरत है।"

यह घटना भी बहुत ही असाधारण है, इसमें सन्देह नहीं। और यह बात अधिकतर लोग जानते हैं कि इस उम्र में इस तरह के आपरेशन में ९५ प्रतिशत व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है। कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों की मृत्यु इसी रोग में हुई है। फलस्वरूप हरि बाबाजी के मामले में सब कुछ माँ की कृपा से योगायोग हो गया है, इसमें सन्देह की गुंजाइश कहाँ है? इस प्रकार माँ की कृपा अविरल रूप से बरस रही है। हम लोगों के लिए दुर्भाग्य की बात है कि हम इतना देखकर भी नहीं समझ पाते।

## ६ फरवरी, १९६६

कल विन्ध्याचल जाने के पूर्व आत्मानन्दजी के साथ एक मेम और साहब माँ से एकान्त में बातचीत करने के लिए आये थे।

जीवन को उन्नत और पवित्र करने के उपाय

मैं जिस कमरे में बैठी थी, उसी कमरे में वे लोग माँ के साथ बातें करते रहे। आत्मानन्दजी माँ की बातें उन लोगों को समझा रहे थे। साहब और मेम के साथ माँ की बातचीत धर्म के सम्बन्ध में हो रही थी। धर्म भाव से जीवन को पवित्र और उन्नत बनाने के कौन-कौन से उपाय हैं—यही उनका मुख्य प्रश्न था।

बातचीत के सिलसिले में माँ कह रही थीं—"सत्य, धैर्य, शान्त और एकत्व भाव, अर्थात् सभी एक हैं, एक के अलावा दो नहीं—इन्हीं भावों को रखने का प्रयत्न करो।"

आज कल बाहर विभिन्न देशों में माँ की बातें इतनी द्रुत गति से प्रसारित हो गयी हैं कि माँ का आश्रम देखने के लिए नित्य लगभग २-४ साहब मेम आते रहते हैं। यह घटना प्रायः देखती रहती हूँ। माँ और आश्रम के सम्बन्ध में उनका कौतूहल सचमुच देखने लायक होता है। विदेशों से माँ के पास प्रायः पत्र आते रहते हैं। अनेक स्थान पर अनेक अलौकिक घटनाएँ हो रही हैं। सहस्रों मील दूर रहने पर भी लोग इस प्रकार माँ की कृपा का अनुभव कर रहे हैं, यह सब सुनकर चकित रह जाना पड़ता है।

अचानक स्वामीजी विन्ध्याचल से मोटर द्वारा चले आये। वृन्दावन में शिवरात्रि के दिन शिव प्रतिष्ठा करने की बात हुई है। शिव मन्दिर के कार्य से वे माँ के निर्देशानुसार वृन्दावन जा रहे हैं। इसी समय पानू को भी चण्डीगढ़ के श्री वर्माजी से मुलाकात करने के लिए भेज दिया गया।

योगेन दादा से बातचीत के सिलसिलेमें काफी दिन पहले की एक घटना सुनने में आयी। योगेन दादा ने बताया कि कुछ वर्ष

**माँ के निकट अजाना या भूल कुछ नहीं है**

पूर्व किसी के प्रश्न पर माँ कह रही थीं—"इस शरीर के लिए अजाना या भूल कुछ भी नहीं है। सामने हो, दूर हो, बाह्यतः देखना-न देखना जो होना है, हो जाता है।" इस बात पर हम समझते हैं कि माँ की कृपा सर्वत्र समान रूप से वर्षित हो रही है। जान, अनजान, नये, पुराने का कोई प्रश्न ही नहीं है।

फिर प्रश्न उठा कि माँ के निकट जो लोग आते हैं, वे लोग खराब काम कैसे करते हैं? कितने तरह के गलत काम हुए जा रहे हैं—वह भी माँ के पास से अधिक दूर भी नहीं। इस प्रश्न के उत्तर में माँ ने कहा था कि कुत्ते कहाँ-कहाँ पेशाब पाखाना करते हैं, उसे मना करना या देखना होगा? तुम लोगों के शरीर में भी तो न जाने कितने जीवाणु सर्वदा सृष्टि-स्थिति-लय हो रहे हैं, उसका छूत तुम सब मानते हो क्या?"

माँ की बात बिलकुल सत्य है। एक बार श्री कविराजजी से किसी ने इस तरह का सवाल पूछा था। उनसे पूछा

**माँ का क्षेत्र सीमा रेखा हीन**

गया था कि प्राचीन काल में साधुओं के आश्रम में उनकी तपस्या के प्रभाव के कारण बाघ और गाय अपनी हिंसा वृत्ति को भुलाकर एक ही घाट पर पानी पीते थे। किन्तु माँ के यहाँ नाना प्रकार के अन्याय पूर्ण कार्य कैसे हुए जा रहे हैं? कविराज जी ने उत्तर दिया था कि बात सच है। किन्तु उनकी तपस्या के प्रभाव से, उनकी सीमाबद्ध रेखा के भीतर किसी प्रकार का अन्याय पूर्ण कार्य सम्भव नहीं होता था। उनकी शक्ति का प्रभाव भी सीमित क्षेत्र तक रहा। किन्तु भगवान् के राज्य में आखिर क्या नहीं हो रहा है! उनकी सीमा तो सीमित

नहीं है। वह भाव भी नहीं है, वह रूप भी नहीं है, उस तरह के संकल्प भी नहीं हैं। वे विराट् और महान् हैं। उनकी सृष्टि के भीतर सब कुछ हो सकता है और हो रहा है।

## ८ फ़रवरी, १९५६

तीसरे पहर विन्ध्याचल से राजमाता और उनकी लड़की मोटर द्वारा आयीं। ये लोग आज शाम को दिल्ली चली जायेंगी। इन लोगों के साथ बुनो भी आयी है। उसकी जबानी माँ के बारे में कुछ बातें सुनने में आयी। माँ की तबीयत ठीक नहीं है। सर्दी-खाँसी से परेशान हैं। विन्ध्याचल में काफी लोग माँ का दर्शन करने आये हैं।

## १० फ़रवरी, १९५६

यहाँ कई अनुष्ठान होने वाले हैं, इसी उपलक्ष्य में आज माँ शाम को ५॥ बजे विंध्याचल से यहाँ आ गयीं।

## १३ फ़रवरी, १९५६

आज मेरा जन्म दिन है। पिछले साल से ही कन्यापीठ की सभी लड़कियाँ मिलकर इस दिन विशेष रूप से जप-ध्यान का आयोजन करती हैं। अमूल्य दादा की लड़की सती ही इस आयोजन की उद्योक्ता है। आज भी सवेरे से जप-ध्यानादि आरम्भ हो गया है। माँ के बैठने का स्थान खूब अच्छी तरह सजाया गया है। तीसरे पहर ३ बजे से पुनः सत्संग प्रारम्भ हुआ। छोटी-छोटी किशोरियाँ तथा बड़ी महिलाएँ भी मेरे सम्बन्ध में भाषण देती

रहीं। तीसरे पहर हिन्दू विश्वविद्यालय की अध्यापिका पद्माजी गीता पर प्रवचन देती रहीं। शाम के बाद महिलाओं के आग्रह पर नारायण स्वामीजी भाषण देने लगे। सभी लोगों की जबानी इतने प्रकार की बातें सुनते रहने के कारण मैं अत्यन्त संकुचित हो रही थी।

शाम के बाद लखनऊ के ख्याति प्राप्त स्वीस अध्यापक डा० बुश माँ का दर्शन करने आये। सिर्फ ३-४ दिन के दर्शन मात्र से ही वे माँ का विशेष रूप से अनुरक्त हो गये हैं। डा० बुश पाश्चात्य जगत् के एक अत्यन्त प्रसिद्ध दार्शनिक हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के आह्वान पर वे कई माह के लिए भारत आये हैं। भारतीय दर्शन के अलावा आध्यात्मिक विद्या के सम्बन्ध में आप में यथेष्ठ अनुसन्धित्सा है।

इन्हीं के साथ प्रसिद्ध डच गायक और भाषाविद् डा० आर्नल्ड बैक भी सपत्नीक माँ का दर्शन करने आये हैं। डा० बैक आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की ओर से भारतीय लोक संगीत सीखकर उसे रेकर्ड करवाकर विलायत भेजते हैं। आप अनेक भाषाओं के गीत गा लेते हैं। बंगला में बड़े सरल ढंग से बातचीत करते हैं। माँ के पास बैठकर वे ४-५ गीत सुनाते रहे। कल पुनः आयेंगे।

दोपहर के पश्चात् माँ डा० गोपाल दासगुप्त के साथ उनके मोटर पर ही विश्वनाथ मन्दिर देख आयीं। विश्वनाथ मन्दिर के पण्डे माँ और डाक्टर बाबू को बड़े आग्रह के साथ ले गये थे। डाक्टर साहब पिछले ३६ वर्षों से काशी में रह रहे हैं। किन्तु आज के पहले कभी वे विश्वनाथ दर्शन करने नहीं गये थे। एक बार माँ के प्रश्न करने पर उन्होंने कहा था—माँ को पाने के बाद भी क्या विश्वनाथ-दर्शन की आवश्यकता है?"

माँ के प्रति उनकी श्रद्धा-भक्ति और आदर असीम है। उनके मन की भावनाओं का पता उनके द्वारा रचित कविताओं से लग जाता है। प्रायः एक न एक कविता लिख-कर वे माँ के श्री चरणों में भेज देते हैं। उनकी कविताएँ अत्यन्त सुन्दर होती हैं। भाव-भाषा की दृष्टि से अत्यन्त मधुर।

**काशी विश्वनाथ मन्दिर में माँ**

आज ३६ साल बाद घटना चक्र से माँ स्वयं उन्हें साथ लेकर विश्वनाथ दर्शन करने गयीं। श्री विश्वनाथ के महन्त उन्हें अपने यहाँ बुलाने के लिए काफी अनुरोध करते रहे, इसमें कोई सन्देह नहीं। अगर वे माँ के साथ न जा पाते तो आज तक उन्हें वहाँ जाने का अवसर शायद ही मिल पाता। पण्डाजी माँ को मन्दिर के भीतर ले गये और दरवाजा खोलकर उन्होंने विश्वनाथ का स्पर्श एवं मूर्त्ति पर पानी चढ़वाया। कुछ दिन हुए हरिजन आन्दो-लन के कारण जन साधारण के लिए मन्दिर के भीतर जाकर विश्वनाथ को स्पर्श करने की मनाही थी। लोग बाहर से एक खिड़की द्वारा दर्शन किया करते थे। आज बहुत दिनों बाद पण्डों ने मन्दिर को खोल दिया है। विश्वनाथ मन्दिर से वापस आते समय माँ मारवाड़ी अस्पताल में स्व० मनमोहन मुखर्जी की वृद्धा पत्नी को देखने चली गयीं। वृद्धा अभी हाल में विधवा हुई हैं। पैर में चोट लगने के कारण पिछले कई माह से अस्पताल में भर्ती हैं। आश्रम की ओर से इनके लिए भोजनादि का प्रबन्ध हो रहा है।

## १४ फरवरी, १९६६

आज सवेरे ९।। बजे के लगभग माँ आयीं। आश्रम के सामने स्थित जिस पुराने मकान को खरीदा गया है, उसमें मरम्मत का काम हो रहा है। इस मकान में चल रहे काम-काज दिखाने के

लिए कमल आकर माँ को साथ ले गया। साथ ही एक आराम-कुर्सी पर बैठाकर मुझे भी ले जाया गया।

११ बजे के लगभग डा० बैक पुनः सपत्नीक माँ का दर्शन करने के लिए आये। अन्नपूर्णा मन्दिर के सामने लोगों को वे कई गीत गाकर सुनाते रहे। उन्हें रात को ९ बजे पुनः आने के लिए अनुरोध किया गया। वे सपत्नीक आश्रम में प्रसाद पा गये।

तीसरे पहर माँ काफी देर बाद नीचे आयीं। नीचे कुछ देर बैठने के बाद ऊपर जाकर थोड़ी देर टहलती रहीं, फिर जाकर सो गयीं। मौन के कुछ समय पहले नीचे आकर बरामदे में बैठीं। मौन के बाद डा० बैक आये। टेप रेकर्ड मशीन में उनके ४-५ गीतों को माँ की उपस्थिति में रेकर्ड कर लिया गया।

## १८ फरवरी, १९५६

कल माँ जब सोने गयीं तब लगभग ३ बज चुके थे। इस प्रकार शारीरिक विश्राम के अभाव में उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता।

प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक M. Jean Herbert माँ का दर्शन करने के लिए आये हैं। लगभग २० वर्ष पूर्व वे इस देश में आकर माँ का दर्शन कर सके थे। फ्रांसीसी भाषा में इन्होंने भारतीय संन्यासियों के बारे में कुछ पुस्तकें लिखी हैं। माँ के बारे में भी एक पुस्तक तथा 'सद्वाणी' का फ्रांसीसी में अनुवाद किया है। आपकी पत्नी भी एक लेखिका हैं। आप भी साथ आयी हैं। जड़वादी पाश्चात्य देशवासियों के मन में भारतीय साधना और यहाँ के साधु-महात्माओं की शिक्षा एवं जीवनधारा के विषय में विशेष रूप से आग्रह की सृष्टि हुई है, यह सब बातें इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। इस तरह की

घटनाएँ माँ के निकट अहरह हो रही हैं। फ्रांसीसी डाक्टर Weintrob ( मातृदत्त नाम विजयानन्द ) लगभग ५ साल से आश्रम में रहते हुए माँ के निर्देशानुसार साधन-भाजन कर रहे हैं। अमेरिकन युवा Jack Unger ( जयानन्द ) माँ के निर्देशानुसार अलमोड़ा वाले आश्रम में साधन-भजन कर रहे हैं। एक बार पिताजी की बीमारी का समाचार पाकर अमेरिका गये, पर माँ के आकर्षण के कारण पुनः वापस चले आये। फ्रांस के राजनीतिक कर्मचारी मि० हेनरी पेतित इधर कुछ दिनों से भारत में आकर माँ का साथ कर रहे हैं। अंग्रेज युवक Collin Turnbull हिन्दू विश्वविद्यालय में गवेषणा करने आये थे और यहाँ माँ का दर्शन करने के बाद से वे अनुरक्त हो गये हैं। माँ ने इनका नाम प्रेमानन्द रखा है। फ्रांस की धनाढ्य महिला Countesse de Ganay भारत आकर जब काशी आयीं तब आश्रम में माँ का दर्शन कर इस तरह मुग्ध हो गयीं कि अपने मुल्क वापस जाकर माँ की सेवा के लिए एक चेक भेज चुकी हैं। वे बार-बार माँ की एक व्यवहृत वस्तु के लिए अनुरोध करती रहती हैं। उन्हें माँ द्वारा व्यवहृत एक आसन भेज दिया गया। आसन पाकर वे इतना आनन्दित हो गयी थीं कि तुरत प्राप्ति संवाद भेजा था। एक अन्य फ्रांसीसी महिला Mme Miriam Orr जो पेरिस में रहती है, माँ का एक चित्र देखकर इस कदर मुग्ध हो उठी हैं कि माँ के लिए अक्सर ड्राई फ्रूट्स भेजती रहती हैं। उनका एक लेख आनन्दवार्त्ता में प्रकाशित हो चुका है। इस तरह और भी न जाने कितनी घटनाएँ होती रहती हैं, इन सबका उल्लेख कहाँ तक करूँ।

विदेशागत विशिष्ट जनों का माँ के प्रति आकर्षण

आस्ट्रेलिया की श्रीमती Edith Mason अलमोड़ा में माँ के

श्री चरणों में आकर हाजिर हो गयीं। उनका और माँ के मिलन का दृश्य अत्यन्त वैचित्र्यपूर्ण रहा। प्रथम दर्शन का वह दृश्य अत्यन्त अपूर्व रहा। भाव विह्वल अवस्था में वे बैठी रहीं। माँ भी निष्पलक भाव से देख रही हैं। उस स्थान की आबहवा में मानो कोई परि-वर्त्तन हो गया है। दीर्घ समय तक यह स्थिति बनी रही। फिर सहसा वे दो शब्द बोल उठीं—ओह! बण्डरफूल! बण्डरफूल!! वे क्या समझीं, क्या पा सकीं, यह तो माँ या वे स्वयं जान सकती हैं।

अंग्रेज युवक Richard Lannoy भारत में फोटो संग्रह करने के उद्देश्य से आये हैं। प्रथम दर्शन में माँ को देखकर वे मुग्ध हो गये हैं। अपने मुल्क वापस जाकर लन्दन के प्रसिद्ध प्रकाशक थामस एण्ड हण्डसन कं० के प्रकाशन से 'इण्डिया' नामक एक पुस्तक प्रकाशित करवाया है। माँ तथा आश्रम के कई दृश्य उक्त पुस्तक में प्रकाशित हुए हैं।

## १६ फरवरी, १९५६

आज सरस्वती पूजा है। इस बार महिलाएं नये आश्रम के नीचे के हाल में पूजा करने वाली हैं। पूजा आरम्भ होने पर माँ नीचे जाकर बैठीं। मुझे भी ले जाया गया। शाम के बाद कीर्त्तनादि भी माँ की उपस्थिति में हुआ।

अन्नपूर्णा मन्दिर के बगल में गोपाल मन्दिर है। वहाँ कुछ मिस्त्री काम कर रहे थे, इसलिए गोपाल को अन्नपूर्णा मन्दिर में रखा गया था। आज गोपाल को उनके मन्दिर में ले जाकर रखा गया।

आश्रम के पश्चिम में शिल्प प्रतिष्ठान के आंगन में जो नया

मकान बन रहा है, उसके नीचे वाले खण्ड में आश्रम के पुस्तकालय का उद्‌घाटन हुआ। माँ को पुरोभाग में रखते हुए नारायण शिला के साथ आश्रम के बालक-बालिकाएं हाथों में पुस्तक लेकर नये कमरे में आये। यहाँ कीर्त्तन, नारायण-पूजा और यज्ञ माँ की उपस्थिति में अच्छी तरह से हुआ।

इधर सोहरतगढ़ के कुमार श्रीपतिसिंह के लड़के ने दीदी माँ के निकट दीक्षा ग्रहण की। इसी उपलक्ष्य में आश्रम में आकर लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

शाम के बाद फ्रांसीसी साहित्यिक हार्वट माँ का दर्शन करने आये। बातचीत के सिलसिले में ब्लांका की जबानी एक सुन्दर घटना का विवरण सुनने में आया। मिस वायलेट स्यड्नेय नामक एक अमेरिकन महिला काशी में अपने कार्य के सिलसिले में क्लार्क्स होटल में ठहरी हुई हैं। माँ के प्रति वे विशेष अनुरक्त हो गयी हैं।

**माँ की कृपा। माँ को स्मरण करने पर वे आवाज देती हैं**

कुछ दिन पहले आत्मानन्द उनके होटल के बरामदे में बैठे बातचीत कर रहे थे। मातृ कृपा के बारे में चर्चा चल रही थी। अचानक आत्मानन्द ने देखा कि होटल के दरवाजे के सामने माँ की मोटर खड़ी है। आत्मानन्द दौड़ कर आये तो देखा—मोटर के भीतर माँ बैठी हैं। वे विन्ध्याचल से लौट रही थीं।

अचानक दरवाजे के समीप आकर क्यों ठहर गयीं? यह प्रश्न माँ से पूछने पर उन्होंने कहा—"मैं अपनी माँ से भेंट करने आयी हूँ।" कहने की आवश्यकता नहीं कि विन्ध्याचल से वापसी का मार्ग यह नहीं है। पता नहीं किस योगायोग के कारण माँ उधर

चली गयी थीं। माँ से इस प्रकार प्रत्यक्ष कृपा-निर्देशन पाकर मिस स्यड्नेय विशेष रूप से चकित रह गयीं।

आत्मानन्द ने एक और घटना का विवरण सुनाया। फ्रांसीसी महिला Miriam ने फ्रांस से आत्मानन्द को एक पत्र लिखते हुए अनुरोध किया है कि वे माँ का कुछ प्रसाद भेज दें। आत्मानन्द ने जब माँ से यह प्रार्थना व्यक्त की तब माँ ने अपने बालों में हाथ फेरते हुए कुछ केश उन्हें दिये। आत्मानन्द समझ गये कि माँ ने उन्हें प्रसाद के रूप में भेजने के लिए यही दिया। विषय बहुत ही अद्भुत रहा। क्योंकि माँ साधारण तौर पर अपना प्रसाद कह कर किसी को कुछ नहीं देतीं। कुछ देर बाद माँ को जब ख्याल हुआ कि आत्मानन्द ने उनके केशों को प्रसाद के रूप में स्वीकार किया है तब वे तुरन्त बोल उठीं—"नहीं, नहीं। यह लो, फूल लो।"

इतना कहने के बाद उन्होंने एक गुलाब का फूल आत्मानन्द के हाथ पर रख दिया। कहने की आवश्यकता नहीं कि आत्मानन्द ने केशों के साथ उक्त फूल को भी प्रसाद के रूप में उक्त महिला के पास भेज दिया। स्वाभाविक रूप में माँ के हाथ से पहले-पहल जो कुछ मिला, वही श्रेष्ठ प्रसाद है, आत्मानन्द को यह तथ्य समझने में देर नहीं लगी।

एक और घटना का वर्णन आत्मानन्द ने किया। इंग्लैण्ड के एक सज्जन केनिथ ग्रांट कुछ दिन हुए माँ का फोटो देख कर तथा पुस्तकें पढ़कर अत्यन्त आकर्षित हुए। माँ के बारे में पाश्चात्य जगत् में प्रचार करने में जी जान से जुट गये हैं। आश्चर्य का विषय तो यह है कि केनेथ साहब ने अभी तक माँ का दर्शन नहीं किया है। ऐसी हालत में वे माँ के प्रति इतने अनुरक्त हो गये हैं

जान कर विस्मित रह जाना पड़ता है। एक पत्र में उन्होंने माँ से नये नाम की प्रार्थना जतायी है।

माँ ने उन्हें जताने के लिए कहा—"ठीक है, सत्यप्रिय।"

आत्मानन्द ने माँ के द्वारा नये नामकरण की सूचना पत्र के द्वारा दे दी। केनेथ इस नये नाम को पाकर अत्यन्त मुग्ध हो गये हैं। विस्मित और आनन्द से पूर्ण होकर कृतज्ञता जताते हुए उन्होंने कई पत्र लिखे हैं।

माँ के दर्शन का सौभाग्य न जाने कितने लोगों को नहीं हुआ है, फिर भी इस प्रकार न जाने कितने व्यक्ति माँ की कृपा से धन्य हुए जा रहे हैं, इसका लेखा-जोखा कौन रखता है?

## १७ फरवरी, १९५६

गोपीनाथ कविराजजी के साथ उस दिन श्री श्री हरि बाबाजी के गुरुजी के सम्बन्ध में माँ की बातचीत चल रही थी। श्री श्री हरि बाबाजी की बीमारी के समय उनके गुरु को माँ ने देखा था—इस विषय की चर्चा चल रही थी। गोपी बाबू का प्रश्न था कि श्री श्री हरि बाबा के उपलक्ष्य में उनके गुरुदेव का दर्शन माँ ने किया था, यह कहा जा सकता है या नहीं।

माँ ने कहा—"इस शरीर की बात छोड़ दो। पर किसी उपलक्ष्य में तो ऐसा होता है। फिर किसी-किसी के कर्मफल से ऐसा हो रहा है।"

गोपी बाबू ने माँ से पुनः कहा कि अधिकतर यह देखा गया है कि माँ की बातें थोड़ी-थोड़ी प्रकट होती हैं। सभी बातें हर समय नहीं होतीं। इसके अलावा एक ही बात अनेक प्रकार से कही जाती है। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर में माँ ने कहा—"पिताजी, सिर्फ तुम्हीं लोग तो नहीं हो ? और भी अनेक हैं। (शायद माँ ने सूक्ष्म शरीरधारियों के सम्बन्ध में इंगित किया) सभी लोगों को जो सुनने लायक नहीं है, उसे नहीं कहा जाता। फिर यह भी कह सकते हो कि माँ कभी-कभी एक-एक प्रकार की बातें कहती हैं। तुम लोगों के परिवर्त्तन के साथ ऐसा होता है। तुम लोगों का तो प्रत्येक मुहूर्त्त में परिवर्त्तन होता रहता है। उसी तरह तुम लोगों के प्रति इस शरीर की बातों में परिवर्त्तन होता रहता है।"

मेरी छोटी बहन बेलू विन्ध्याचल से आयी है। उसकी जबानी एक सुन्दर घटना सुनने में आयी। गत संयम सप्ताह में ध्यान के समय उसने देखा कि माँ का सारा शरीर नील वर्ण का है। माँ अर्द्धशायित अवस्था में हैं। ऐसा क्यों देखती रही इसे ठीक से न समझ पाने पर बेलू मुझ से कारण पूछने लगी। मैंने कहा—"महिषासुर वध के समय इसी तरह नीलवर्ण हो गया था, सुना जाता है।"

एक और घटना सुनने में आयी। महानिशा में बेलू नित्य ध्यान करती है। एक दिन ध्यान के समय वह देखने लगी कि माँ के कमरे में वह एक वेदी पर लेटी हुई है। उसके चारों ओर पानी ही पानी है। कुछ दूर पर ९ साधु खड़े होकर माँ को पुष्पांजलि दे रहे हैं। इनमें से एक को बेलू पहचान सकी। वे स्वामी मंगल गिरि थे—दीदी माँ और स्वामी अखण्डानन्दजी के गुरु। जिस मन्त्र के पाठ के साथ अंजलि दी जा रही थी, यद्यपि वह याद नहीं है, तथापि उसके सुर अभी तक कानों के पास ध्वनित होते हैं।

आज तीसरे पहर श्री श्री सरस्वती की प्रतिमा गंगा में विसर्जित की गयी।

## १८ फरवरी, १९५६

माँ की अस्वस्थता के कारण आज से कविराजजी से कुछ लोगों ने मिलकर माँ के दर्शन का समय निश्चित कर दिया। सवेरे ११ से १२ और रात को ८॥ से ९ तक माँ के दर्शन का समय निश्चित किया गया। यह सब सुनकर माँ ने कहा—"तुम लोग एक ठीक करो, किन्तु मेरे लिए तो एक रास्ता रह गया। अगर ख्याल हुआ तो इधर-उधर होगा। जितने दिन चल सके इस तरह चलने दो।"

हम यह जानते हैं कि माँ के निकट कोई भी नियम या कानून अधिक दिनों तक स्थायी नहीं रहता। माँ अपने ख्याल के अनुसार सब कुछ बदल देती हैं।

## १९ फरवरी, १९५६

माँ के दर्शन का समय नियमानुसार चल रहा है। दोपहर को १२ बज रहे हैं। माँ लगातार बातचीत करती जा रही हैं। कहते-कहते अचानक थमकर घड़ी की ओर देखने लगीं। देखा कि घड़ी में ठीक १२ बजे हैं। इधर सभी लोग तन्मय होकर माँ की बातें सुन रहे हैं, समय का ध्यान किसी को नहीं था। अचानक माँ बोलीं—"समय हो गया है, यह ख्याल में जग उठा इसलिए।" इतना कहने के बाद माँ पुनः आगे बातचीत करने लगीं। कुछ देर बाद सत्संग समाप्त हो गया।

आज सवेरे १० बजे के लगभग सेण्ट्रल बंक के एकाउण्टेण्ट श्री टण्डन माँ को मोटर द्वारा यहाँ के पशुपतिनाथ के मन्दिर में ले गये थे। सुना कि यह विग्रह अत्यन्त जागृत है। काफी

**काशी पशुपतिनाथ के मन्दिर में माँ**

पुराना मन्दिर है। शायद ३०० वर्ष पुराना है। मन्दिर के शिखर स्वर्णमय हैं। चारों तरफ शिवलिंग खुदे हुए हैं। माँ ने दोनों गालों से शिवलिंग को स्पर्श किया। माँ की ओर से कुछ फल और दक्षिणा समर्पित किया गया। मन्दिर के पुरोहित ने बताया कि एक दिन स्नान के समय उन्हें साक्षात् दर्शन प्राप्त हुआ था, किन्तु जब इस बात को लोगों के सामने उन्होंने प्रकट कर दिया तब से फिर कभी दर्शन नहीं हुआ। इतना कहते-कहते वे रो पड़े।

माँ ने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा—"जिस रूप को आपने देखा है, उसी रूप का ध्यान करने का प्रत्यत्न करो।"

## २० फरवरी, १९५६

कल माखन के पुत्र बाच्चू का यज्ञोपवीत होने वाला है। नये भवन के जिस कमरे में सरस्वती-पूजा हुई है, उसी कमरे में ही काली-पूजा का प्रबन्ध हो रहा है। पहले यह निश्चय हुआ था कि अन्नपूर्णा के साथ जो काली मूर्त्ति है, वहीं पूजा होगी। किन्तु कल अचानक माँ को ख्याल हुआ कि नयी मूर्त्ति बनवाकर नये आश्रम में पूजा करवायी जाय तो अच्छा हो। उसी ढंग से व्यवस्था हो रही है। अत्यन्त सुन्दर ढंग से सब कुछ हुआ। पूजा समाप्त होने के बाद माँ के भोग के समय माखन ( मामू ) ने अपने हाथ से माँ को खाना खिलाया। बिशू ने आरती की।

## २१ फरवरी १९५६

काली-पूजा के बारे में एक सुन्दर घटना सामने आयी। नये

**कई सुन्दर घटनाएँ**

आश्रम के जो सज्जन मालिक थे, उनकी इच्छा थी कि वहीं काली मूर्ति स्थापित कर मकान को देवोत्तर संपत्ति बना दी जाय। किन्तु जीवितावस्था में उनकी वह इच्छा पूर्ण नहीं हो सकी। वसीयत में यह भी लिखा था कि अगर उनके जीवनकाल में यह कार्य पूर्ण न हो सका तो उनके वंशधर ऐसा करेंगे, किन्तु आखिर तक यह भी नहीं हो सका।

यह बात कोई नहीं जानता था। माँ को भी नहीं बताया गया था। आज तीसरे पहर बातचीत के सिलसिले में यह सब बातें माँ को बतायी गयीं। माँ किंचित् हँसती हुई बोली—"देखो दीदी, साधु संकल्प किसी भी रूप में पूर्ण हो जाता है। कम से कम कुछ क्षणों के लिए काली माता वहाँ बैठी रहीं। वंशधरों के करने की बात थी। खैर ये लोग भी तो वंशधर हैं। ( माँ माखन को दिखाने लगीं—ये लोग उसी भवन में रहते हैं। ) सभी तो एक ही घर के हैं। एक ही से सब।"

माँ के आकस्मिक ख्याल से उक्त मृत व्यक्ति की अपूर्ण शुभ-इच्छा किस प्रकार अन्त में पूर्ण हो गयी, यह देखकर सभी लोग अत्यन्त विस्मृत हुए।

माखन के लड़के के यज्ञोपवीत के उपलक्ष्य में एक और सुन्दर घटना हुई थी। कल शाम को अचानक मेरी छोटी बहन उषा पटना से यहाँ आ गयी। इसे जनेऊ के बारे में कुछ पता नहीं था। दूसरी ओर कानपुर से जितेन दादा आकस्मिक रूप से चले आये। वे गंगा-स्नान करने के बाद नया जनेऊ पहन कर ब्राह्मण-भोजन के वक्त आसन पर बैठे। मेरी बड़ी बहन ने ( बाच्चू की माँ ) आकर बाच्चू के कर्ण छेदन के समय उसे गोद में बैठायी और नहलायी।

इस प्रकार मेरे अधिकांश भाई-बहन आकस्मिक रूप से जनेऊ के काम में सम्मिलित हुए। यह एक आश्चर्य की बात हुई, इसमें सन्देह नहीं। इस सम्बन्ध में माँ मुझसे एकान्त में कहने लगीं— "दीदी, जरा सोचो। जितेन, उषा आकर क्यों इस तरह योगदान करने लगे? देखो, कितना सुन्दर योगायोग है। फिर तुम्हारी दीदी भी आकर कर्ण छेदन के समय उसे गोद में लेकर बैठ गयी। स्नान कराने के समय पास ही थी। इस योगायोग के बारे में जरा सोचो।"

मैं यह सब बातें सुनकर चकित रह गयी।

## २३ फ़रवरी, १९५६

आज सवेरे कविराज जी के एक गुरु भाई एवं अमूल्य दादा माँ को महाराज जय नारायण घोष द्वारा प्रतिष्ठित एक प्राचीन मन्दिर दिखाने ले गये। तीसरे पहर माँ छत पर बैठकर राय बहादुर नारायण दास जी के साथ बातें करती रहीं। बातचीत के सिलसिले में श्री श्री हरि बाबा की बीमारी की चर्चा चल पड़ी। स्वस्थ होने के बाद गत ३० जनवरी को सवेरे जब हरि बाबाजी कालकाजी के आश्रम से रवाना हो रहे थे, ठीक उसी समय माँ उनके हाथों को पकड़ती हुई अपने आसन पर बैठायी थीं। घर से हरि बाबाजी को बाहर ले आकर जब वे गाड़ी पर बैठ गये तब माँ उनके घुटनों पर सिर रखती हुई बोलीं—"पिताजी, किशनपुर में सूक्ष्म शरीर में देखा—याद है न?"

क्या देखा था? मोटर द्वारा एयरपोर्ट की ओर जाते हुए हरि बाबाजी ने नारायणदासजी से कहा था—"माँ ने उन्हें किशनपुर में देखने की जो बात बतायी थी, उस बारे में एवं माँ का शिशु की तरह निःसंकोच व्यवहार देखकर उन्हें एक बात याद आ

हरि बाबाजी के बारे में और बातें

गयी। आपरेशन के बाद उसी रात को उन्होंने देखा था कि वे माँ की गोद में शिशु की तरह सोये हुए हैं और स्तन पान कर रहे हैं। उनकी कमर में सिर्फ गेरुआ और सुनहले रंग का एक कपड़ा लपेटा हुआ है। और चारों तरफ अनेक देवी-देवता तथा अनेक अन्य जन माँ का जयगान कर रहे हैं। उन सभी के हाथों में उनकी कमर में लिपटे कपड़े की तरह रंग की पताका है। उन पताकाओं से एक अद्भुत ज्योति निकल रही थी। इसके पूर्व ऐसा उन्होंने कभी नहीं देखा था।"

नारायणदासजी कह रहे थे कि यह विशेष लक्ष्य का विषय है कि इतने बड़े मेजर आपरेशन के समय भी हरि बाबाजी को कोई जानकारी न हो सकी। शाम के बाद जब वे होश में आये तब उन्होंने पूछा था कि मेरा आपरेशन होने वाला था, वह कब होगा? कितनी अद्भुत है माँ की कृपा।

इस प्रकार की और भी बातचीत हुई।

आज देहरादून के पण्डित परशुरामजी ने अपने नया जनेऊ ग्रहण के उपलक्ष्य में कन्यापीठ में भण्डारा दिया। माखन के लड़के के साथ उन्होंने भी नया जनेऊ ग्रहण किया।

## २५ फरवरी, १९५६

आज सवेरे ८ बजे नये आश्रम के बड़े कमरे में उद्बोधन हुआ। लड़कियाँ यहाँ संस्कृत अध्ययन करेंगी। हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग को अध्यापिका पद्माजी कन्यापीठ की लड़कियों का संस्कृत पढ़ाती हैं। आपने नये शिक्षा मन्दिर के आचार्य पद को ग्रहण किया। माँ सबसे पहले "सत्यं ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म" एवं

बाद में "ओं नमो भगवते वासुदेवाय" गाती रहीं। लड़कियाँ सरस्वती का स्तव पाठ और माँ नाम कीर्त्तन करती रहीं। पद्माजी तथा लड़कियाँ गीता पाठ करती रहीं।

**विशुद्धानन्दजी के आश्रम में श्री श्री माँ**

९ बजे के बाद माँ को श्री स्वामी विशुद्धानन्दजी के आश्रम में ले जाया गया। यहाँ जाने में माँ को जरा देर हो गयी। इस बारे में श्री गोपीनाथ कविराज जी के गुरु भाई ने एक अच्छी घटना सुनायी। उन्होंने आज भोर के स्वप्न में देखा था कि माँ आश्रम में जरा देर से पहुँची रही हैं। लोग बहुत उद्विग्न हो उठे हैं। ठीक इसी समय माँ वहाँ पहुँचीं। उस वक्त वे माँ को साथ लेकर अपने घर ले गये। उनकी माँ अपने निकट माँ को पाकर बोलीं—"अब तुम मेरी पकड़ में आ गयी हो। बोलो, अब कहाँ भागकर जाओगी।" इसके बाद माँ के साथ अनेक प्रकार की बातें हुईं। इसके पूर्व कई बार प्रयत्न करने पर भी वे यह सब बातें माँ से नहीं कह पाई थीं। स्वप्न में ही इनके सभी प्रश्नों के समाधान हो गये हैं।

इन स्वप्नों का विवरण सुनकर माँ ने कहा—"इस शरीर को भी रवाना होने के पूर्व ख्याल हो रहा था कि आज जरा देर होने दो न। बाद में बीच रास्ते यह ख्याल हुआ कि शायद काफी देर हो रही है। तब जल्दी से चलने के लिए कहा गया।"

बहुत सुन्दर आश्रम है। सामने विशुद्धानन्दजी की एक पूर्णा-कृति श्वेत पत्थर के आसन पर बैठी हुई मूर्त्ति है। माँ इस मूर्त्ति को देखती हुई बोलीं—"देखो, कितना जीवन्त लगती है। वे आज भी भी हैं। नित्य विराजते हैं।"

कविराज जी के गुरु भाई ने कहा—"मुझे ऐसा लग रहा

है जैसे जब यह मूर्त्ति स्थापित की गयी थी तब से अब तक इसमें कुछ परिवर्त्तन हो गया है। नित्य प्रति दिन सुबह-शाम मूर्त्ति के भाव में भी परिवर्त्तन होते देखता हूँ।"

आश्रम से नवमुण्डी आसन के पार्श्व में माँ कुछ देर तक बैठी रहीं। आसन की सार वस्तु स्वामीजी एक डिबिया में बन्द कर मध्यस्थ कुण्ड के नीचे रख गये हैं।

टलहती हुई माँ आश्रम के सभी हिस्सों को देखने लगीं। चार तल्ले के ऊपर विज्ञान मन्दिर है।

स्वामीजी जिस आसन पर बैठते थे, जिस शय्या पर बैठकर उपदेश आदि देते थे, उन सभी को माँ ने दोनों हाथोंसे स्पर्श किया। लगभग १॥ घण्टा आश्रम में रहने के बाद माँ वापस चली आयीं।

तीसरे पहर कविराज जी के आने पर उक्त प्रसंग पर बातचीत होने लगी। सुना कि विशुद्धानन्दजी कह गये हैं कि नवमुण्डी के आसन की सार वस्तु का प्रभाव आसन के ऊपर अति तीव्र रूप से रहेगा। यहाँ तक कि इसका प्रभाव चारों ओर बहुत दूर तक प्रभाव विस्तार करता रहेगा।

बाद में सत्संग प्रारम्भ हुआ। एक सज्जन ने माँ से पूछा कि इस दुनिया के प्रेम कम होकर भगवान् के प्रति कैसे प्रेम बढ़ सकता है ?

उत्तर में माँ ने कहा—"पार्थिव-प्रेम बड़ा कष्टदायक और नाशवान् है और भगवत्-प्रेम बड़ा ही सुखदायक है।"

"उक्त प्रेम कैसे बढ़ता है ?"

"सत्संग करने, गुरु ने जो नाम दिया है उसे जप करने, कीर्त्तन करने, सद्ग्रन्थ का पाठ करने, प्रार्थना करने और ध्यान करने से।

भगवत्-स्मरण में जितना अधिक समय दिया जायगा, उतनी ही भगवत्-बुद्धि बढ़ेगी। भगवान् का स्वभाव है, वे सर्वदा दरवाजा खुला रखते हैं। जितना समय और शक्ति दुनिया के काम के लिए दिया जाता है, उतना अगर उनके लिए दिया जाय तो अपने को पहचानने का मार्ग खुल जाता है। तो सद्ग्रन्थ का पाठ करो किंवा नाम जपते रहो। जितना इस तरह करोगे, उतनी शुद्ध बुद्धि होगी। जन्म-मृत्यु से मुक्ति मिल जायगी। भगवान् तो प्राणों के प्राण आत्मा हैं। उन्हें पाने का अर्थ है अपने को पाना। दुनिया उसे कहते हैं जो दुर्बुद्धि और दुर्गति की ओर ले जाती है। भगवान् से दूर हटा ले जाती है। इसीलिए एक मात्र श्रेष्ठ मार्ग है—अपने को जानना, अपने को पाना।"

आज रात को अन्नपूर्णाजी का पूर्णिमा-पूजा का भोग हुआ। माँ स्वयं सभी को खिचड़ी परोसने के बाद लोगों के साथ छत पर भोग पर बैठीं। सभी लोग इससे महा आनन्दित हुए।

## २६ फरवरी, १९५६

सत्संग के समय माँ से प्रश्न किया गया—"माँ एबार आमि तोरे खाबो। मुण्डमाला केड़े निये अम्बले सम्भार चड़ाबो।" ( माँ अब मैं तुझे खाऊँगा। मुण्डमाला छिनकर चटनी में संभार चढ़ा ऊंगा। ) इस गीत का क्या अर्थ है ?

माँ ने कहा—"तोरे माने काल को। समस्त आहुति देकर साधक काल के अतीत होना चाहते हैं।"

## २८ फरवरी, १९५६

आज शाम को कविराज जी अपने गुरुदेव की अलौकिक शक्ति की एक घटना का उल्लेख करते रहे। घटना यों है—

इन लोगों के आश्रम में नवमुण्डी का आसन तैयार होने के बाद उसके लिए एक चद्दर की जरूरत हुई। कविराज जी तथा अन्य भक्तों ने चार चद्दर खरीदने का संकल्प किया। उसी के अनुसार कविराज जी ८० रुपया लेकर हाजिर हुए। जब विशुद्धानन्दजी के सामने यह समस्या आयी तब उन्होंने कहा कि इतना खर्च करने की जरूरत नहीं है। केवल एक चद्दर के लिए २० रुपया काफी है। इधर कविराज जी बाकी रुपया वापस ले जाने के लिए सहमत नहीं हुए।

तब स्वामीजी ने कहा—"ठीक है तब बाकी रुपया आश्रम में दे दो।"

जब कविराज जी स्वामीजी के हाथ पर रुपया देने के लिए आगे बढ़े तब स्वामीजी ने कहा—"रुपये अपने पास रखो। वहीं से चला जायगा।"

कविराज जी इस बात का अर्थ समझ नहीं सके। उन्होंने पुनः पूछा—"रुपये हाथ में लेकर बैठ जाओ। किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।"

कविराज जी एक लिफाफे में रुपये रखे हुए थे। उसे हाथ में लेकर वे आँखें बन्दकर बैठे रहे। कुछ देर बाद स्वामीजी ने कुर्सी पर अंगुली से टक्कर मारते हुए दो आवाज किया, फिर धीरे से बोले—"आ गया हूँ।" इसके बाद तुरत कविराज जी से कहा—"मुट्ठी खोल दो। ले गया।"

कविराज जी ने मुट्ठी खोलते हुए विस्मय के साथ देखा कि लिफाफा ज्यों का त्यों है, पर उसके भीतर रखे रुपये गायब हैं और उस लिफाफे से एक अपूर्व सुगन्ध निकल रही है। वह सुगन्ध उक्त लिफाफे में काफी दिनों तक रही।

## १ मार्च, १९५६

आज दोपहर भोजनादि के बाद माँ मोटर द्वारा विंध्याचल चली गयीं।

## २ मार्च, १९५६

आज शाम को माँ विंध्याचल से वापस आ गयीं। सुना कि कल वहाँ माँ चित्रा की बहन के साथ प्राइवेट में अनेक अच्छी-अच्छी बातें कहती रहीं। मां ने कहा था—"जबर्दस्ती कभी कुछ कहना ठीक नहीं है कि क्या करूँ या क्या न करूँ। क्योंकि अधिकतर यह देखा गया है कि जो-करेगा नहीं जोरदार शब्दों में कहता है, वही उसके जीवन में हो जाता है और उसके फलस्वरूप अनेक लांछना अपवाद बर्दाश्त करना पड़ता है उसे।"

संकल्प-विकल्प ठीक नहीं, विधि का विधान अमोघ

इस प्रसंग में माँ ने एक कहानी सुनायी। एक लड़का विवाह की रात को गृहस्थी नहीं बसायेगा, कहता हुआ घर से बाहर चला गया और एक महात्मा के पास जाकर संन्यास ले लिया। काफी दिनों की बात है जब वह गुरु के निकट बैठा हुआ था, ठीक उसी समय घटनाचक्र से उसकी पत्नी वहाँ आयी और गुरुदेव को प्रणाम करके बैठ गयी। गुरुदेव ने आशीर्वाद दिया—"पुत्रवती हो।"

यह बात सुनते ही महिला रो पड़ी। बोली—"बाबाजी, मेरे पति तो संन्यासी हैं। ये सामने बैठे हैं।"

गुरुदेव ने देखा—मेरा आशीर्वाद वृथा हुआ जा रहा है। फिर उन्होंने संन्यासी से पुनः आश्रम परिवर्त्तन करने की सलाह दी।

आगे चलकर उसे ४ पुत्र हुए। इसके बाद लोकनिन्दा बर्दाश्त न कर सकने से कारण पति-पत्नी दोनों गंगा में कूद पड़े। विधि का विधान इस तरह भी हो जाता है।

## ३ मार्च, १९५६

आज सवेरे १० बजे के बाद माँ विशुद्धानन्दजी के आश्रम में चली गयीं। माँ के लिए वहीं भोग की व्यवस्था की गयी है। कविराज जी की पत्नी ने स्वयं अपने हाथ से भोग बनाया है। भोग के समय कविराज जी पंखा झलते रहे।

उसी दिन कविराज जी के गुरुदेव का एक बहुत बड़ा चित्र ले आया गया था। कुछ देर तक एक दृष्टि से उस चित्र की ओर देखती हुई माँ बोलीं—"बिलकुल जीवन्त मालूम पड़ रही हैं। दोनों आँखें मानों हिल उठी हैं। सिर के बाल काँप रहे हैं।"

**भक्त की प्रार्थना पूर्ण हुई**

नर्मदा से कान्ति भाई कुछ शिवलिंग उठा ले आये थे। उनमें से तीन शिव को तौलकर चावल के भीतर रख दिया गया। इन शिवलिंगों में बड़े शिवलिंग को भवानी ने पसन्द कर लिया था। किन्तु जब उसने एक पिंगल वर्ण शिवलिंग देखा तो उसे पाने के लिए माँ के निकट बार-बार प्रार्थना करने लगी। बाद में देखा गया कि तौल में उक्त लिंग ठीक रहा। गृहस्थों के लिए ऐसे लिंग की पूजा उचित नहीं है, शास्त्र में ऐसा विधान है। फलस्वरूप स्पष्टतः भवानी की इच्छा माँ ने पूर्ण कर दी।

## ४ मार्च, १९५६

कलकत्ता के पुराने भक्त नवतरु हालदार जी अभी कुछ

दिन पूर्व स्वर्गवासी हो गये हैं। उसी उपलक्ष्य में आज आश्रम में भोग का प्रबन्ध किया गया है। विशुद्धानन्द आश्रम के साधु-ब्रह्मचारी, कविराज जी सपरिवार और इनके गुरु भाइयों में कुछ लोगों को निमंत्रित किया गया है। माँ स्वयं सभी ओर देखभाल कर रही हैं।

शाम के समय कविराज जी से कुछ प्रश्न पूछे गये जिसके उत्तर में उन्होंने अनेक सुन्दर बातें बतायीं। इन बातों का टेप कर लिया गया है।

आज रात को माँ वृन्दावन आश्रम में पंचशिव प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में वृन्दावन रवाना हो गयीं। मेरा भी दिल्ली में एक्सरे होने की बात है। इसीलिए माँ की अनुमति के अनुसार यह निश्चय हुआ है कि जब मुझे दिल्ली जाना ही है तब क्यों न वृन्दावन का उत्सव देखती हुई, दिल्ली में जाकर काम समाप्त कर काशी चली आऊँ।

## ७ मार्च, १९५६

आज बुनी के पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ परसों लगभग ३॥ बजे वृन्दावन के आश्रम में पहुँच गयीं। स्वामीजी ने आश्रम को बहुत ही भव्य ढंग से सजाया था।

आज ११ बजे के बाद मैं, दीदी माँ और कुछ लोग वृन्दावन की ओर रवाना हुए। डाक्टरों की राय के अनुसार मैं मोटर द्वारा मुगलसराय आकर तूफान एक्सप्रेस से रवाना हुई। माँ की कृपा से रिजर्वेशन हो गया था।

## ८ मार्च, १९५६

सवेरे ८ बजे के लगभग मथुरा पहुँची। यहाँ से मोटर द्वारा हम सब वृन्दावन आये।

वृन्दावन आकर देखा कि आज ही हरि बाबाजी आये हैं। उनकी अभ्यर्थना बड़े समारोह के साथ हो रही है। बैण्ड पार्टी, कीर्त्तन, मंगल कलश, माला-चन्दन आदि से उनकी खूब आदर के साथ अभ्यर्थना हुई है। माँ स्वयं अपने हाथ में माला लिये हरि बाबाजी के लिये खड़ी थीं। किन्तु घटनाचक्र से जब हरि बाबाजी की मोटर गेट के पास आयी तो किसी सूरत से दरवाजा खोला नहीं जा सका। अन्त में ताला तोड़ कर हरि बाबाजी को आश्रम में लाया गया।

भोर से शिव प्रतिष्ठा का काम शुरू हो गया है। मन्दिर निर्माण का कार्य भी काफी जोर-शोर के साथ जारी है।

## ९ मार्च, १९५६

आज माँ काफी सवेरे जाग उठीं। अपने शरीर की ओर उनका ध्यान नहीं रहता। उत्सव के किसी भी कार्य में त्रुटि न रहे, इस-लिए इधर-उधर दौड़-धूप करती हुई सारा काम-काज देख रही हैं।

हरि बाबाजी की उपस्थिति में सवेरे आश्रम में राम-नाम हुआ।

## १० मार्च, १९५६

आज शिवरात्रि है। नये मन्दिर में आज शिव की स्थापना

होगी। इस उपलक्ष्य में भोर से ही नाना प्रकार के अनुष्ठान हो रहे हैं। मण्डप की क्रिया-कर्मादि के पश्चात् पंच शिवलिंगों को पालकी पर और पण्डितों के दल ने पार्वती, गणेश और महाबीर के विग्रह को कन्धे पर बैठा कर बैण्ड पार्टी के साथ, हुलू ध्वनि, लाजा तथा पुष्प वृष्टि के साथ काफी घूमधाम से मन्दिर की परिक्रमा की। शिवजी की यह पाल्की इसी कार्य के लिये विशेष रूप से काशी से लायी गयी है। माँ, हरि बाबाजी और अन्य अनेक लोग इस परिक्रमा में सम्मिलित हुए। इसके बाद शिवलिंग को वेद ध्वनि के साथ विभिन्न द्रव्यों से स्नान कराया गया।

वृन्दावन आश्रम में पंचशिव प्रतिष्ठा

लगभग ११ बजे शुभ मुहूर्त्त देख कर पाँचों शिवलिंगों को मन्दिर में ले जाकर वेदी पर बैठाया गया। इनके नाम इस तरह रखे गये—

पहला लिंग नर्मदा तट के एक आश्रम में परित्यक्त स्थिति में पड़ा था। स्वामी अखण्डानन्द जी के नाम से प्रतिष्ठित की गयी। नाम रखा गया—सिद्धेश्वर।

दूसरा दादा महाशय के नाम पर मामू के हाथ से स्थापित किया गया। नाम रखा गया—बाणेश्वर।

तीसरा परशुरामजी, जिन्होंने मन्दिर बनवाया है, उनके पिता के नाम पर रखा गया। नामकरण किया गया—नर्मदेश्वर।

चौथे की स्थापना कमलाकान्त के हाथ से हुई। इनका नाम रखा गया—गोपेश्वर।

अन्तिम पांचवां कान्ति भाई के स्व० पिता के नाम पर स्थापित किया गया। नाम रखा गया—ब्रह्मेश्वर।

माँ की उपस्थिति और साक्षात् निर्देश की सहायता से इतना बड़ा विराट कार्य अत्यन्त सुचारु रूप से सम्पन्न हो गया। इस उत्सव के सिलसिले में बाहर से अनेक भक्त आये हुए हैं। सभी का कहना है कि इस तरह का उत्सव कभी नहीं देखा गया।

इस मन्दिर की स्थापना से आश्रम की शोभा सौगुनी बढ़ गयी। बायीं ओर महाप्रभु और नित्यानन्द का विशाल श्वेत मन्दिर और दायीं ओर एक ही आकार का इन पंच शिवों का मन्दिर है। बीच में जगमोहन। सामने तैयार हो रहा है—सुबृहत् भागवत भवन। यह सब मिलकर आश्रम की श्रीवृद्धि बढ़ानेमें अपूर्व श्रीदान दे रहे हैं।

शिवरात्रि के उपलक्ष्य में शाम के बाद से नये मन्दिर में प्रत्येक प्रहर में पूजा की व्यवस्था की गयी है। जगमोहन मन्दिर में भी लोग पांच भागों में विभक्त होकर पूजा करेंगे, ऐसा निश्चय हुआ है। पूजा हुई। प्रथम प्रहर में योगेन दादा, द्वितीय में कमलाकान्त, तृतीय एवं चतुर्थ में कुसुम कराता रहा। प्रत्येक प्रहर की पूजा के बाद बड़े धूमधाम से कीर्त्तन होता रहा। माँ रात भर जागती रहीं। बीच-बीच में कीर्त्तन भी कराती रहीं। अपूर्व, सुन्दर ढंग से शिव मन्दिर में प्रथम शिवरात्रि अतिवाहित हुई।

## ११ मार्च, १९५६

माँ की तबीयत विशेष ठीक नहीं है। अचानक कुछ बिगड़ गयी है। बुनी की भी तबीयत ज्यादा खराब है। सिविल सर्जन बुनी का इलाज कर रहे हैं।

इस तरह ४-५ दिन बीत गये, किन्तु माँ की तबीयत ठीक नहीं हो रही है। बात क्या है, कोई समझ नहीं पा रहा है।

एक दिन माँ अचानक हँसती हुई बोलीं—"दीदी, तमाशा देख रही हो ? शिवजी यह तो कह सकते थे कि मुझे अच्छी तरह भोग दो, शयन दो। यह न करके इस शरीर पर ऐसा क्यों ?"

मैं तो अवाक् रह गयी। बहरहाल अगले दिन से खूब अच्छी तरह से भोग दिया जाने लगा।

## १७ मार्च, १९५६

आज शाम को एक दुर्घटना हो गयी। रेणु और चन्दन रसोई बनाने गयीं। तरकारी की कड़ाही जब वे चूल्हे से उतार रही थीं तब चूल्हें में कुछ गिर जाने के कारण आग भभक उठी और उसकी लौ छत तक जा पहुँची। रेणु और चन्दन माँ की कृपा से बच गयीं, वर्ना उनके बचने की कोई संभावना नहीं थी। रेणु का चेहरा और हाथ के कई जगह जल गये। चन्दन को मामूली जख्म लगे हैं।

घटनाक्रम से सिविल सर्जन यहाँ मौजूद थे। वे स्वयं दवा वगैरह देकर सब ठीक-ठाक कर गये।

उधर माँ शाम के समय हरि बाबाजी के आश्रम में गयी थीं। वहाँ भी एक दुर्घटना हो गयी। मोटर से उतरते समय विमला के हाथ की एक अंगुली मोटर के दरवाजे से दब जाने के कारण आधी कट गयी। मानो किसी का भी समय अच्छा गुजर नहीं रहा है।

माँ के जयन्ती-उत्सव के सम्बन्ध में बातचीत तय करने के लिए टिहरी के महाराजा आज यहाँ आये हैं। आप इस उत्सव कमेटी के सेक्रेटरी हैं।

## २४ मार्च १९५६

होली नजदीक है। इसी उपलक्ष्य में कागज की झण्डियाँ, कपड़े की पताकाएँ आदि तैयार की जा रह हैं। उत्सव के समय माँ यहाँ मौजूद रहेंगी। इसलिए लोग बड़े उत्साह के साथ उत्सव के आयोजन में व्यस्त हैं। उत्सव के बाद हरि बाबाजी होशियारपुर चले जायेंगे।

## २५ मार्च, १९५६

आज हरि बाबाजी का जन्म दिवस है। इस अवसर पर जगमोहन मन्दिर बड़े अच्छे ढंग से सजाया गया है। हरि बाबाजी के कीर्त्तन के बाद सभी आकर बैठे। माँ, स्वामी अखण्डानन्दजी आदि लोग उपस्थित थे। मैंने हरि बाबाजी को अबीर-चन्दन लगाकर माला पहनायी। एक नया गेरुआ कत्थरी ओढ़ाकर प्रणाम किया। सभी लोगों ने मिलकर आरती की। बाद में फल-मिठाई का वितरण हुआ।

## २६ मार्च, १९५६

आज होली है। सवेरे से ही महाप्रभु के मन्दिर के चारों ओर घूमते हुए लोग कीर्त्तन कर रहे हैं। माँ सवेरे एक बार हरि बाबाजी के आश्रम में गयी थीं। वहाँ से वापस आकर मेरे कमरे में आयीं और बोलीं—"उसे पूरा करके आती हूँ।" इतना कहकर वे जगमोहन मन्दिर की ओर चली गयीं। वहाँ जाकर पिचकारी में रंग भरकर लोगों के ऊपर डालने

**वृन्दावन आश्रम की होली में माँ**

लगीं। कुछ देर तक रंग छोड़ने के बाद माँ अपने दोनों हाथों को ऊपर उठाकर गाने लगीं—धर लाओ-धर लाओ……इत्यादि। बच्चे फूले नहीं समाये। वे बड़े उत्साह के साथ माँ का साथ देते रहे।

कुछ देर बाद माँ पुनः मेरे कमरे में आकर बैठ गयीं। अब कीर्त्तनियों की बुलाहट हुई। माँ ने शुरू किया—'कृष्ण केशव, कृष्ण केशव, कृष्ण केशव पाहि माम्।……" आगे चलकर माँ केवल "कृष्ण-कृष्ण" कहने लगीं।

देखते-देखते कीर्त्तन खूब जम उठा। सभी लोग मुग्ध भाव से गाने लगे—"कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे।"

अब माँ गाने लगीं—जय शचिनन्दन नदिया बिहारी, विष्णु प्रिया का प्राणधन जय गौर हरि। आगे पुनः—"जय अद्वैत नित्यानन्द जय श्री गौरांग, हरे कृष्ण हरे राम श्री राधे गोविन्द।" इसके बाद गाने लगीं—"हरि बोल की तरंग।"

"हरि बोल-हरि बोल" गाते-गाते मानो सभी नाम के झूले में झूलते हुए कीर्त्तन करने लगे। काफी देर तक कीर्त्तन करने के बाद माँ स्वयं अपने हाथ से लोगों को मिठाई बाँटने लगीं।

## २७ मार्च, १९५६

आज अवधूतजी हरि बाबाजी को लेकर दिल्ली चले गये। मेरे लिये यह तय किया गया कि आगामी पहली ता० को रवाना होकर दिल्ली में एक्सरे कराने के बाद काशी वापस चली जाऊँगी।

## २९ मार्च, १९५६

पहले यह निश्चय किया गया था कि फ्रंटियर मेल से माँ दिल्ली जायँगी, किन्तु वे मथुरा के प्रभुदयाल भार्गव की मोटर से आज दिल्ली रवाना हो गयीं। रात को जब मोटर दिल्ली से वापस आयी तब ड्राइवर के हाथ से एक पत्र मिला। माँ ने लिखवाया है कि मैं दिल्ली काफी सावधानी के साथ आऊँ। सुना कि माँ नयी दिल्ली स्टेशन होती हुईं दिल्ली जंकशन पर उतरी हैं। माँ दिल्ली आ रही हैं, यह समाचार पाते ही अनेक व्यक्ति माँ का दर्शन करने के लिए नयी दिल्ली के स्टेशन पर आये थे। इन्हीं लोगों को आनन्द देने के लिये माँ इतनी दूर का चक्कर काटती हुई गयीं। माँ के ख्याल में कोई बात बाकी नहीं रहती। रात ९ बजे माँ दिल्ली से काश्मीर मेल से जालन्धर रवाना हो गयीं।

## १ अप्रैल, १९५६

आज सवेरे बुनी आदि काशी रवाना हो गये। मैं तीसरे पहर ३ बजे भार्गव भाई की मोटर से दिल्ली रवाना हुई। लगभग ५ बजे दिल्ली वाले आश्रम में पहुँच गयी।

दिल्ली आने पर पता चला कि हरि बाबाजी की विशेष इच्छा है कि मैं होशियारपुर अवश्य आऊँ। स्वयं माँ भी यह कह गयी हैं कि अगर डाक्टरों की राय हो तो मैं जरूर होशियारपुर आऊँ।

## २ अप्रैल, १९५६

लगभग ९ बजे मुझे डा० वेदप्रकाश के चेम्बर में एक्सरे के लिए ले जाया गया। यहाँ से जितेन दत्त के घर होती हुईं आश्रम

वापस आ गयी। डा० बलराम के नाम से माँ के निकट इस आशय का तार भेजा गया कि मेरे शरीर को जो हालत है, उसे देखते हुए मुझे होशियारपुर जाने की सलाह नहीं दे सकते।

मैं जरा द्विविधा में फँस गयीं। इतनी दूर से माँ के भावों को ठीक से समझ नहीं पा रही हूँ। अन्त में काशी वापस जाने का निश्चय कर लिया।

होशियारपुर में माँ

माँ तड़के होशियारपुर पहुँच गयी थीं। वहाँ हरि बाबाजी के गुरु के आश्रम में माँ के लिए नया मकान बन रहा है। काम अभी पूरा नहीं हुआ है। उक्त मकान में रहने के कारण माँ को ठंढ लग गयी। फलस्वरूप वे सर्दी-खाँसी से पीड़ित हैं। कहीं हरि बाबाजी के भक्तवृन्द यह समाचार पाकर दुःखी हों, इसलिए वे अत्यन्त सजग हैं।

## ३ अप्रैल, १९५६

आज डा० सेन मुझे देखने के लिये आश्रम में आये। पारुल मेरे साथ थी। वह भी अस्वस्थ है। डा० सेन की राय के अनुसार उसे नर्सिंग होम में दाखिल कर दिया गया। मेरे नये एक्स रे के प्लेटों का उन्होंने मुआइना किया। प्लेट आशाजनक प्रमाणित नहीं हुई। फलस्वरूप सन्तोष बाबू मुझे कुछ दिनों तक सतर्क रहने की चेतावनी देते गये।

## ४ अप्रैल, १९५६

आज मैं कई लड़कियों और पानू को साथ लेकर अपर इण्डिया एक्सप्रेस से बनारस रवाना हुईं।

### ७ अप्रैल, १९५६

आज होशियारपुर से एक पत्र माँ का समाचार लेकर आया। आज माँ जालंधर आकर कल सुबह मोटर द्वारा चण्डीगढ़ जायँगी। पंजाब के चीफ इञ्जीनियर श्री वर्मा एक अर्से से माँ को चण्डीगढ़ ले जाने के लिये बराबर आग्रह प्रकट करते रहे। इतने दिनों बाद उनकी इच्छा पूरी हुई। पंजाब की नयी राजधानी चण्डीगढ़ को भारत की सर्वश्रेष्ठ नगरी के रूप में सँवारने की चेष्टा सरकार की ओर से हो रही है। संसार के एक श्रेष्ठ आर्किटेक्ट Le Corbusier ( फ्रांस निवासी ने ही चण्डीगढ़ के प्लान को बनाया है। श्री वर्मा इनके सहयोगी हैं। यहाँ सब कुछ नये ढंग से निर्मित हो रहा है। प्रधान मंत्री पं० नेहरू ने कहा है—चण्डीगढ़ स्वतंत्र भारत का एक श्रेष्ठ प्रतीक है। पंजाब के मंत्री मण्डल में परिवर्त्तन होने तथा आन्तरिक मामलों में विशेष विरोध हो जाने के कारण श्री वर्मा इस कदर निराश हो गये कि उन्होंने पद त्याग कर दिया है। चण्डीगढ़ मानों उनकी स्वप्न भूमि है। खून-पसीना एक कर उन्होंने इस नगरी को बनाया है। यही वजह है कि कार्यभार छोड़ने के पहले वे एक बार माँ का दर्शन कर लेना चाहते हैं। आप बड़े विनयी सद्भावापन्न व्यक्ति हैं।

### ८ अप्रैल, १९५६

आज जालन्धर से पुष्प, रवि और कुछ लोग यहाँ आये। इन लोगों की जबानी माँ के बारे में ज्ञात हुआ। अवधूतजी वहीं से हरिद्वार चले गये हैं। कमलाकान्त काशी आने वाला था, किन्तु हरिद्वार में अचानक योगी भाई के अस्वस्थ हो जाने के कारण उसे वहाँ भेज दिया गया।

## १२ अप्रैल, १९५६

वृन्दावन से प्राप्त एक पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ वहाँ पहुँच गयी हैं। पहले यह तय हुआ था कि २० या २१ को दिल्ली में हरि बाबाजी के सभी भक्त मिलकर एक उत्सव मनायेंगे। इस उत्सव में माँ को उपस्थित रहने के लिए विशेष रूप से कहा गया था। यही वजह है कि हम सब आशंका कर रहे थे कि अब तो उक्त उत्सव में १८-१९ दिन बाकी है। बृहद् रूप से होने वाला है। न जाने कितनी तैयारियाँ होंगी। अगर इस बीच माँ काशी के बाहर चली गयीं तो बड़ी कठिनाई होगी। लेकिन अब यह जानकर सन्तोष हुआ कि दिल्ली का वह उत्सव अब नहीं होगा।

आज रात १० बजे के बाद माँ यहाँ आयीं। सुना कि कल वृन्दावन में श्री श्री उड़िया बाबाजी की तिरोधान तिथि का भण्डारा था। इसी उपलक्ष्य में माँ इस बार विशेष रूप से वृन्दावन गयी थीं। वहाँ से वापस लौटते वक्त अलीगढ़ के सत्येन दादा के यहाँ एक रात ठहरकर आज यहाँ आ पहुँची।

## १३ अप्रैल, १९५६

आज मुक्तानन्द गिरिजी ( दीदी माँ ) का शुभ-संन्यास तिथि उत्सव है। देहरादून स्थित दीदी माँ के शिष्य नरेश चक्रवर्ती के एकान्त आग्रह पर इस वर्ष यह उत्सव मनाया गया। नरेश ने कई माह पूर्व दीदी माँ का जन्म दिन मनाने के लिए मेरे पास कुछ रुपये भेजा था। चूंकि दीदी माँ संन्यासिनी हो गयी हैं, इसलिए उनके पूर्व जीवन का जन्म दिन मनाना हम लोगों ने पसन्द नहीं किया। दूसरी बात यह है कि दीदी माँ का कौन सा जन्म दिन

है, इसका हमें पता नहीं था। इसलिए यह निश्चय किया गया कि जन्म दिन मनाने की अपेक्षा संन्यास तिथि स्मरण किया जाय।

**दीदी माँ (श्री श्री मुक्तानन्द गिरिजी) का प्रथम संन्यास-उत्सव**

यह प्रथम उत्सव है इसलिए यह सोचा गया कि निमन्त्रण पत्र वगैरह छपवाकर जरा ससमारोह यह उत्सव मनाया जाय। इस अवसर काशी में रहने के लिए मैंने माँ से विशेष अनुरोध किया था।

सभी लोग मिलकर कन्यापीठ के बरामदे में दीदी माँ की पूजा का प्रबन्ध कर रहे हैं। एक चौकी पर गिरिजी को बैठाया गया है। उनके पीछे उन्हीं का एक शिष्य गैरिक रंग का छाता लिये खड़ा है। ब्रह्मचारी कान्ति भाई और हर प्रसाद पूजा कर्म में भाग ले रहे हैं। ये दोनों उन्हीं के शिष्य हैं। इस समय गिरिजी को देखने पर ऐसा लगता है जैसे वे भिन्न स्थिति में हैं। शाम के बाद जब उनकी आरती की जा रही थी तब उनकी इस स्थिति को श्री, कविराज जी बड़े गौर से देख रहे थे। गिरिजी जहाँ बैठे थे, उसके पीछे एक बड़ी तस्बीर टंगी हुई है। उक्त चित्र में गिरिजी के गुरु महाराज श्री श्री मंगलानन्द गिरिजी के एक ओर मेरे पिता स्वामी अखण्डानन्दजी और दूसरी ओर मुक्तानन्द गिरिजी खड़ी हैं।

भोर में साढ़े चार बजे से चौबीस घण्टे के लिए अखण्ड कीर्त्तन प्रारम्भ हो गया है। प्रभात-कीर्त्तन के बाद मंगलारती, गुरु वन्दना, गीता, चण्डी और उपनिषद् पाठ एवं उसके बाद गुरु-पूजा, अंजलि और आरती हुई। तीसरे पहर श्रीमद्भागवत और उपनिषद् के पाठ के बाद सांध्य स्तव, भजन और कीर्त्तन हुए। मौन के बाद गिरिजी के सम्बन्ध में कुछ चर्चाएँ की गयीं। माँ की उपस्थिति में

सब कुछ सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ। दीदी माँ के शिष्य-शिष्याओं तथा मुहल्ले के लोगों ने प्रसाद प्राप्त किया।

## १४ अप्रैल, १९६६

आज १ वैशाख है, बंगला का शुभ नव वर्ष का प्रथम दिन। भोर के वक्त से लड़कियाँ, मंगलारती और समवेत रूप से स्तवादि पाठ करने के बाद माँ के गले में माला पहनायीं। २५ पहमहंस दण्डी स्वामी और १०० अन्य संन्यासियों को भोजन कराया गया।

## १६ अप्रैल, १९६६

आज वात्सरिक वासन्ती पूजा का प्रथम दिन है। इधर कई वर्षों के बाद माँ काशी के आश्रम में उपस्थित हैं। सभी अत्यन्त आनन्दित हैं। शाम को देवी के आमन्त्रण के बाद आरती हुई। माँ हर वक्त चण्डी मण्डप में मौजूद थीं। बाहर से अनेक भक्त आये हुए हैं।

काशी में वासन्ती-पूजा

## १७ अप्रैल, १९६६

आज महा सप्तमी है। माँ की उपस्थिति में देवी का महास्नान आदि सम्पन्न हो रहा है। अलमोड़ा विद्यापीठ के शिक्षक और ब्रह्मचारीवृन्द पुरी से आये हैं। ये सभी लोग बड़े उत्साह के साथ पूजा के कार्य में जुटे हुए हैं। देवी के सामने चण्डी-मण्डप के बरामदे में बैठे समवेत रूप से चण्डी पाठ और कीर्त्तन हो रहा है। शाम के समय देवी की आरती खूब धूमधाम से सम्पन्न हुई।

## १८ अप्रैल, १९५६

आज देवी की महाष्टमी पूजा है। सवेरे सात बजे कन्यापीठ की सभी लड़कियों ने मिलकर माँ को लेकर अपने नये रसोईघर का उद्बोधन किया। इसके साथ ही गंगा दीदी के राधा-गोविन्दजी, लड़कियों के गोपाल और शिवजी को भी ले जाया गया। वहाँ सभी देवताओं को भोग चढ़ाया गया।

नये आश्रम के हाल में चण्डी देवी की वेदी की स्थापना होगी। इस उपलक्ष्य में माँ को वहाँ ले जाकर उनके चरणों से ईंटें स्पर्श कराकर ५ ईंट नींव में रखे गये। मेरे मन में एक संकल्प है और वह यह कि सुविधानुसार माँ के लिए यहाँ एक मन्दिर स्थापित करूंगी। एक अर्से से यहाँ माँ के लिए एक मन्दिर बनाने की चर्चा चल रही है। बहरहाल नये आश्रम में इस मन्दिर की प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में किसी से कुछ कह नहीं सकी हूँ। मुझे विश्वास है कि माँ की कृपा होने पर मेरी यह शुभ-इच्छा एक दिन अवश्य पूरी होगी।

आनन्दमयी करुणा के दातव्य चिकित्सालय का जो कि सड़क पर आश्रम के मोटर गैरेज से सटे हुए मकान में है, उद्बोधन किया गया। नये आश्रम से कीर्त्तन करते हुए माँ को वहाँ ले जाया गया। वहाँ भी माँ को माला-चन्दन देकर नारायण की पूजा होम किया गया।

इसके बाद माँ को गंगा दीदी नये आश्रम में ले गयीं।

तीसरे पहर ४।। बजे के लगभग सन्धि पूजा आरम्भ हुई। माँ चुपचाप मण्डप में बैठी रहीं। अचानक बोल उठीं—"देखो देवी की दोनों आँखें कैसी जल रही हैं, मानो जीवन्त मूर्त्ति है।"

सन्धि पूजा में देवी को साधारण कपड़े पहनाये गये हैं। यह

देखकर माँ बोलीं—"कल महानवमी के दिन लाल रंग की एक बनारसी साड़ी मंगा लेना।"

प्रसाद वितरण के समय कुछ हरिजनों को बुलाकर बड़े आदर से उन्हें भोजन कराया गया। इस दृश्य को माँ स्वयं आकर देख गयीं। इनमें से प्रत्येक को रुपये तथा फल दिया गया। ये लोग अत्यन्त प्रसन्न थे। इतना मिल सकता है, ऐसी आशा इन्हें नहीं थी।

## १९ अप्रैल, १९५६

आज महानवमी है। पूजा और होम नियमानुसार हो गया। प्रसाद पाने के लिए काफी लोग आये हैं। माँ ने नारायण स्वामी से कहा—"नारायण, जितने लोग हैं, उन सब को एक साथ बैठाओ।"

नारायण स्वामी ने कहा—"माँ, पहले निमन्त्रित व्यक्तियों को बैठा दूँ। पता नहीं, कहीं किसी चीज की कमी पड़ जाय।"

**नाना प्रसंग में माँ का अज्ञात परिचय**

तभी अचानक माँ के मुँह से निकल "चिन्ता किस बात की। मैं तो यहाँ मौजूद हूँ। एक साथ पंगत लगा दो।"

माँ के आदेशानुसार लोग एक साथ बैठ गये। लोगों ने तृप्ति पूर्ण भोजन किया। कम पड़ने की बात क्या, बल्कि प्रत्येक सामान बच गया।

इस तरह माँ न जाने कितनी बार हम लोगों को अपना परिचय दे चुकी हैं, फिर भी हम उन्हें पहचान नहीं पा रहे हैं। नारायण स्वामी बाद में मेरे निकट दुःख प्रकट करते हुए कह रहे थे—"माँ

की बातों का हम लोग निर्विचार रूप कहाँ पालन करते हैं ? प्रत्येक कार्य में अहं भाव प्रकट हो ही जाता है।"

आज एक और विशेष उल्लेखनीय घटना हो गयी। रमा ने माँ को एक सिल्क की चुनरी (लाल-पीले रंग में रंगा दुपट्टा) दी। माँ उस दुपट्टे को ऊपर से ओढ़कर स्वयं सभी को भोग की 'खिचड़ी-प्रसाद' वितरण कर रही हैं। प्रसाद वितरण करते समय कह रही हैं—'महाप्रसाद-महाप्रसाद' इसके साथ ही अपना हाथ सिर से लगा रही हैं।

महाप्रसाद

मैंने कन्यापीठ की लड़कियों को बुलाकर माँ के हाथ से प्रसाद लेने के लिए कहा। प्रसाद वितरण करते-करते आश्रम के सदर दरवाजे के पास आकर सीढ़ी पर बैठ गयीं। जाति-धर्म बिना विचारे माँ सभी को महाप्रसाद बांटने लगीं। साथ में नारायण स्वामी थे। उन्होंने कहा—"माँ, इस सौभाग्य से कुछ लोग वंचित हो रहे हैं क्यों ?"

इतना सुनना था कि माँ बोलीं—"वंचित कोई क्यों रहेगा ? माँगने पर मिल सकता है।"

इतना सुनने के बाद वे मुँह खोलकर माँ के सामने जाकर खड़े हो गये। माँ ने कहा—"इसमें से जरा सा मुझे खिला दो।"

पास ही हरप्रसाद खड़ा था। उसने माँ के मुँह में थोड़ी सी खिचड़ी डाल दी। इसके बाद माँ ने थोड़ी सी खिचड़ी निकालकर नारायण स्वामी के मुँह में डाल दी। यह दृश्य देखकर माँ के पास बहुत से लोग दौड़े आये। माँ अपने हाथ सभी को खिलाने लगीं। विद्यापीठ के सभी ब्रह्मचारियों, साधु-संन्यासी, यहाँ तक कि मुहल्ले के मल्लाहों के लड़के-लड़कियों को बुलाकर उन्हें माँ प्रसाद देने

लगीं। परमानन्द स्वामीजी, पटल और पानू को माँ ने स्वयं विशेष रूप से बुलाकर जबर्दस्ती उनके मुँह में प्रसाद ठूंस दिये।

यह मानो जगन्नाथजी का क्षेत्र बन गया। चूंकि यह महाप्रसाद था, इसलिए छुआ-छूत का प्रश्न नहीं था। मानो एक अपूर्व आनन्द-हाट लग गया था। जिन लोगों ने इस दृश्य को नहीं देखा है, उन्हें कैसे समझाऊं? आश्चर्य है। सभी लोगों की निष्ठा और शुद्धाचारिता की ओर माँ की तीव्र नजर रहती है और उसी माँ को निष्ठा और शुद्धाचारिता भंग करने में एक क्षण भी नहीं लगा।

## २० अप्रैल, १९५६

आज दशमी है। यथा रीति देवी का पूजन और विसर्जन हुआ। तीसरे पहर गंगा में प्रतिमा का विसर्जन हुआ। शाम के वाद लोगों ने माँ को प्रणाम करने के बाद उनके हाथ से प्रसाद ग्रहण किया।

## २१ अप्रैल, १९५६

सत्संग में माँ बैठी हैं। नारायण स्वामीजी ने माँ से पूछा—"माँ, सुना कि इस बार न जाने कौन वृन्दावन में अपने शरीर में आग लगाकर यमुना नदी में कूद गया था?"

माँ ने कहा—"हाँ, एक व्यक्ति सपत्नीक आकर वृन्दावन में साधन-भाजन कर रहा था। इनका पुत्र ग्वालियर में काम करता है। उस व्यक्ति का चेहरा प्रायः पिछली बार तुम लोगों के आश्रम में जो भागवत-पाठ कर रहा था (शुक्राचार्यजी), उसकी

एक घटना

तरह था। उसके गुरुदेव भी वृन्दावन में रहते हैं। पता नहीं किस कारण शिष्य के साथ उनका मनमुटाव हो गया। वह व्यक्ति बड़ी निष्ठा के साथ साधन-भजन में लगा था। किसी के साथ विशेष मतलब नहीं रखता था। अपने आप में मग्न रहता था। यमुना नदी में उसे राधा-गोविन्द की शायद कोई मूर्त्ति प्राप्त हुई थी। उसकी सेवा-पूजा में बराबर लगा रहता था। किसी की जबानी उसने सुना था कि वृन्दावन का रज खाना अच्छा है। फलस्वरूप वहाँ की मिट्टी खाते-खाते उसे तपेदिक हो गयी। इलाज करने पर वह स्वस्थ भी हो गया। वह अक्सर कहा करता था—"जमुना मैया, अब ले ले।" यह भाव उसमें क्रमशः अधिक प्रबल हो उठा था और वह अधिकतर समय यमुना किनारे इसी भाव में पड़ा रहता था। वह शायद अक्सर अपने सिर के भीतर वंशी की ध्वनि सुना करता था और पेट के भीतर नृत्य की आवाज। एक दिन वह मिट्टी का तेल और सलाई लेकर यमुना किनारे आया। वहाँ जाकर किया क्या? अपने ऊपर तेल उड़ेलकर आग लगा ली। जब आग तेजी से लपलपायी तब यमुना में कूद पड़ा। यह सब देखकर न जाने कौन उसे नदी से बाहर निकाल लाया। सारे शरीर में भयंकर घाव हो गये थे। ऊपर बालू चिपक जाने के कारण अजीब चपाट बन गया था। समझ सकते हो कि देखने पर वह कैसा लगता रहा होगा।"

"इस घटना के बाद से न जाने वह व्यक्ति क्यों इस शरीर को देखने की इच्छा प्रकट करता रहा। इधर इस शरीर की हालत ठीक नहीं थी। हरि पिताजी के सत्संग में ठीक से नहीं जा पा रही थी। एक दिन उक्त व्यक्ति की पत्नी एवं उसके गुरु के यहाँ से एक महिला आकर इस शरीर को सारी राम कहानी सुना गयीं। इस शरीर को बार-बार वहाँ जाने का अनुरोध कर गयीं। इसके बाद उक्त

व्यक्ति का पुत्र आकर इस शरीर को वहाँ चलने के लिए कहा। उससे कहा गया कि तीसरे पहर आना।"

"दोपहर के बाद यह शरीर जरा हल्कापन महसूस करने लगा। इसीलिए हरि पिताजी के सत्संग में गयी। उन लोगों को शायद यह आशा नहीं थी कि यह शरीर अचानक वहाँ जायगा। सत्संग समाप्त होने के बाद आश्रम में आकर परमानन्द से बोली—"चलो, उस व्यक्ति से मुलाकात कर आऊँ।" वे लोग वृन्दावन के किसी पुराने मन्दिर में रहते थे। उनसे कहा गया था कि यह शरीर किसी गृहस्थ के घर नहीं जाता। योगेन बाबू को (वर्धमान कुंज के मैनेजर श्री योगेन काव्यतीर्थ) भी मोटर पर बैठा लिया गया। वहाँ जाकर देखा गया कि उस व्यक्ति को ऊपर से नीचे उतारा जा रहा है। साधारण दृष्टि से देखने पर ऐसा नहीं लगता था कि वह व्यक्ति बीमार है। अत्यन्त शान्तभाव उसकी आकृति पर विराजमान था। जब उससे यह कहा गया कि यह शरीर आया है तब उसने अपनी आँखें खोलीं और दोनों हाथ ऊपर उठाये। इस शरीर ने उसके सिर और हृदय पर हाथ फेरा। सारे शरीर से क्लेद निकल रहा था। वहाँ कुछ देर रहने के बाद आश्रम में वापस आ गये। इस घटना के कुछ दिनों बाद सुना कि उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी।"

माँ की जबानी इस तरह की विस्तृत घटना सुनकर सभी को प्रसन्नता हुई। बाद में पता चला कि उक्त व्यक्ति का नाम था—रामकुमार।

सत्संग में वीर भी आया था। उसने कहा—"आज ठीक एक माह पूरा हुआ। पिछले माह इसी शुक्ल एकादशी के दिन उसका देहान्त हुआ था।"

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इस विशेष तिथि के दिन माँ

की जबानी यह कहानी सुनने में आयी। आखिर क्यों, कौन जाने।

## २२ अप्रैल, १९५६

१९ वैशाख ( २ मई ) से माँ का जन्मोत्सव आरम्भ होनेवाला है। अब बहुत कम समय रह गया है।

इस बार माँ के जीवन की ६० वीं वर्षगांठ का उत्सव अर्थात् हीरक जयन्ती उत्सव होगा। किन्तु "हीरक जयन्ती" शब्द अंग्रेजी शब्द का अनुवाद होने के कारण यह नाम अधिकतर लोगों को पसन्द नहीं था। अन्त में श्री शंकर भारतीजी के अनुमोदन के अनुसार इस उत्सव का नामकरण किया गया—"षष्टितम जयन्ती उत्सव।"

**श्री श्रीं माँ के षष्टितम जयन्ती उत्सव की प्रस्तुति**

पिछले वर्ष सोलन में जब माँ का ५९ जन्मोत्सव मनाया जा रहा था तभी सभी लोगों ने मिलकर यह निश्चय किया था कि इस वर्ष माँ का जन्मोत्सव विशेष रूप से मनाया जायगा। तभी से सभी श्रेणी के भक्तों में इस सम्बन्ध में विशेष उत्साह जागृत होता रहा। सभी लोगों की समवेत चेष्टा, आग्रह और सबके ऊपर माँ की असीम कृपा से इतना बड़ा उत्सव अत्यन्त सुष्ठ रूप में सम्पन्न होगा, इस बात का दृढ़ विश्वास प्रत्येक के मन में था। यदि उत्सव सम्यक् रूप से अनुष्ठित किया जाय तो काफी धन एवं काफी पहले से कार्यक्रम बनाना आवश्यक हो जाता है। मैं लम्बे समय से शय्यागत हूँ। मेरे द्वारा क्या सम्भव हो सकता है, यह मैं स्वयं ही नहीं जानती। इसीलिए सोलन में ही संघ की ओर से माँ के इस उत्सव का संचालन करने के लिए अलग से एक "जयन्ती कमेटी" बनायी गयी। इस

कमेटी में श्री कान्तिभाई मुनसा, श्री लीलावती शाह, श्री यतीन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय, श्री श्यामसुन्दर नाथ सोपारी, राजा साहब ( सोलन ), श्रीमान् पानू, कमल मुझे एवं टेहरी के महाराजा को रखा गया। कमल को कमेटी का कोषाध्यक्ष बनाया गया। मेरे आग्रह पर टेहरी के महाराजा को इस कमेटी का सेक्रेटरी बनाया गया और विभिन्न लोगों की इच्छा पर मुझे अध्यक्ष बनाया गया। कमेटी के सभी कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए कई शाखा कमेटियों का गठन करने के पश्चात् कुछ लोगों को उन कमेटियों का सभापति मनोनीत किया गया। इन लोगों पर तमाम जिम्मेदारी डाल दी गयी। उत्सव के उपलक्ष्य में सभी प्रकार की पूजा अर्चना और अनुष्ठानादि के संचालन की जिम्मेदारी श्री नारायण स्वामीजी को सौंपी गयी। अभ्यागतों के भोजन की जिम्मेदारी श्री परमानन्द स्वामी को दी गयी। श्रीमान् पानू के ऊपर समस्त अतिथि, अभ्यागतों, साधु-महात्मा और विशिष्ट व्यक्तियों के ठहरने की व्यवस्था, अभ्यर्थना और उनके सुख-सुविधा का ख्याल रखना और चारों तरफ सफाई रखने की जिम्मेदारी दी गयी। प्रोग्राम संचालन और पण्डाल का काम देखने की जिम्मेदारी श्री सत्येन्द्र कुमार बसु ( पटल ) को दी गयी। उत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रकार के मनोरंजन वगैरह की जिम्मेदारी दी गयी श्री सोपारी साहब को। आगे चलकर श्री परमानन्द स्वामी और श्री सत्येन्द्र कुमार बसु के शाखा कमेटी के सभापति-पद ग्रहण करने से अनिच्छा प्रकट करने पर सर्व सम्मति से, क्रमशः श्री योगेश ब्रह्मचारी और श्रीमती लीलावती शाह को भोजन तथा पण्डाल व्यवस्था की जिम्मेदारी सौंप दी गयी।

दूसरी समस्या यह रही कि यह जयन्ती उत्सव कहाँ सम्पन्न हो ताकि चारों ओर से सुन्दर हो, इस प्रसंग पर एक अर्से से चर्चा होती रही। विभिन्न प्रकार के अनुष्ठानादि, यागयज्ञादि, पण्डित

संग्रह तथा हर प्रकार की सुविधाओं की दृष्टि से काशी धाम सबकी निगाहों में श्रेष्ठ स्थान प्रमाणित हुआ। यद्यपि इस बहस में कलकत्ता, देहरादून, बम्बई आदि की चर्चा हुई थी। आखिर तक मेरे और योगी भाई के विशेष आग्रह पर सभी प्रकार की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए काशी में जयन्ती उत्सव मनाने का निश्चय किया गया।

तीसरी समस्या थी—आर्थिक व्यवस्था। इस विराट उत्सव के लिए लगभग एक लाख रुपया न सही तो उसके आसपास की रकम की जरूरत पड़ सकती है, पर इतने रुपयों का संग्रह किस तरीके से किया जाय, इस बारे में सोलन में ही विस्तारित रूप से विचार विमर्श किया गया था। अर्थ-संग्रह की दृष्टि से समस्त प्रदेशों को कई विभाग में विभक्त किया गया और प्रत्येक विभाग के लिए एक आर्गनाइजर एवं २-३ सदस्य मनोनीत किये गये। इसके बाद यह निश्चय किया गया कि बाकी लोग सम्मिलित रूप से और सदस्य बढ़ाकर अर्थ-संग्रह के लिए प्रयत्न करेंगे। अब तक किये गये निश्चयानुसार बात विशेष आशाजनक न होते हुए भी लोगों में आन्तरिका और सहायता देने की प्रबल इच्छा ऐसी थी कि जिसका वर्णन करना कठिन है।

सन् १९५० के जनवरी माह से लगातार तीन वर्ष तक सावित्री महायज्ञ हुआ था, उसके बाद से इतना बड़ा आयोजन किसी भी उत्सव के लिए नहीं आयोजित किया गया है। वर्तमान आश्रम में स्थान की कमी इस तरह बढ़ गयी है कि अब उसकी कल्पना करना भी कठिन है। घाट के ध्वस्त हो जाने के कारण आश्रम के नीचेवाले गंगा का तट अव्यवहार्य हो गया है। इसीलिए आश्रम में लोगों के ठहरने, खाने-पीने एवं सत्संग करने के स्थान का पर्याप्त अभाव हो गया है। पिछले दो साल से नीचे के हिस्से में सभी लोगों

के लिए खाने-पीने का प्रबन्ध किया जा रहा है। इधर कुछ दिनों से माँ के आदेशानुसार कन्यापीठ की लड़कियों का रसोईघर वहाँ स्थानान्तरित कर दिया गया जिसके कारण आजकल वह सुविधा भी नहीं रह गयी है। किन्तु इस उत्सव का विराट् आयोजन अब किसी सूरत से पूरा करना ही है। इसी उद्देश्य से नये आश्रम के कमरों का परिवर्तन-परिवर्द्धन तेजी से किया जा रहा है। इसके उत्तर भाग की ओर आश्रम की पाकशाला और भण्डार गृह का प्रबन्ध किया जा रहा है। ऊपर भी यथाकिंचित् परिवर्तन करते हुए रहने लायक इन्तजाम किया जा रहा है। इन दिनों विद्यापीठ के शिक्षक तथा ब्रह्मचारीवृन्द यहीं हैं। नीचे दो वड़े-बड़े कमरों के बीच की दीवार को तोड़कर एक बड़ा हॉल बनाया गया है। चण्डी-देवी की वेदी वहीं तैयार की गयी है और यह भी तय किया गया है कि उत्सव के समय सहस्र चण्डी-पाठ इसी जगह होगा।

विराट-उत्सव। विभिन्न जगहों से अनेक साधु-सन्त, महात्मा आदि लोग आ रहे हैं। हम सबको इस बात की आशंका है कि कहीं किसी की सेवा में त्रुटि न रह जाय। मैं माँ के चरणों में बार-बार प्रार्थना करती हुई जान ले रही हूँ कि क्या करने से ठीक होगा। क्योंकि मैं यह जानती हूँ कि माँ की कृपा और शक्ति की सहायता के बिना यह कार्य ठीक से कर गुजरना मनुष्य-शक्ति के बाहर की बात है। माँ कृपामयी हैं। वे असीम कृपा करती हुई इस सम्बन्ध में हमें कुछ न कुछ बताती जा रही हैं।

चौथा है—कार्यक्रम या प्रोग्राम। इस उत्सव के कार्यक्रमों की रूपरेखा पिछले मार्च माह में माँ जब वृन्दावन में थीं, तभी तेहरी के महाराजा तथा अन्य लोगों के सामने तय हुई थी। विशेष अनुष्ठानों में सहस्र चण्डीपाठ, रुद्राभिषेक, महामृत्युंजय जप, विष्णु यज्ञ, शिवार्चना, तुलादान, कुमारी-पूजा, दरिद्रनारायण सेवा, पंडितों

की विदाई, समस्या पूर्त्ति आदि है। यह सब विभिन्न साधु-सन्तों के सामने होगा। नित्य सत्संग का भी प्रबन्ध रहेगा।

इस उत्सव के उपलक्ष्य में योगदान के निमित्त हम लोगों ने परिचित तथा अपरिचित सभी महात्माओं को सूचना भेज दी। इसके अलावा भारत के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद, उप राष्ट्र-पति डा० राधाकृष्णन्, प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू, स्वराष्ट्र मन्त्री पं० गोविन्द वल्लभ पन्त, कानून मन्त्री डा० कैलास नाथ काटजू, श्री गुलजारीलाल नन्दा, महावीर त्यागी, केशव-दत्त मालवीय आदि मन्त्रियों एवं विभिन्न राज्यों के राज्यपालों, मन्त्रियों, विशिष्ट कर्मचारियों और जन नेताओं को पृथक् रूप से सूचित किया गया है। टेहरी के महाराजा की यह विशेष इच्छा रही कि इस जयन्ती उत्सव के समय देश के चोटी के सभी नेता माँ के चरणों तले एकत्रित हों। निमन्त्रण पत्र भेजने के अलावा आश्रम की ओर से काफी लोगों से लोग व्यक्तिगत रूप से मिल आये हैं। माँ के भक्तों की संख्या का सटीक विवरण असम्भव है। हम लोगों को एक प्रतिशत भी नाम-पता ज्ञात नहीं है। फिर भी जहाँ तक हो रहा है अनेक भक्तों को निमन्त्रण पत्र भेजा जा रहा है। भारत के अलावा अमेरिका, योरोप, एशिया, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका आदि देशों में पाँच हजार से अधिक निमन्त्रण पत्र भेजे गये हैं।

इस उत्सव के उपलक्ष्य में एक विशेष दर्शनीय वस्तु आयी है। वह है—अष्ट धातु से निर्मित एक अति बृहत् अपूर्व सुन्दर सिंहा-सन। कलकत्ता से काफी इन्तजाम के साथ इसे यहाँ मंगवाया गया है। सिर्फ इसे देखने के लिए शहर के कोने-कोने से उत्सव के पहले से ही अनेक नागरिक आश्रम में आ रहे हैं।

इस सिंहासन का एक अलग इतिहास है। परम पूज्य श्री

अवधूत जी ने माँ को कहीं सिंहवाहिनी मूर्त्ति में दर्शन किया था। उसी समय से उनके मन में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि माँ के जयन्ती उत्सव के समय इस तरह का एक जीवन्त सिंह बनवाकर उसके ऊपर माँ को आसन दिया जाय। जब यह इच्छा मेरे सामने प्रकट की गयी तब मेरे मन में भी यह संकल्प उदय हुआ कि महात्मा जी की इस इच्छा को पूर्ण करने का अवश्य प्रयत्न करना चाहिए। इस तरह के सिंहासन बनवाने में कई हजार रुपये लगते हैं, यह बात मुझे अच्छी तरह मालूम है। फिर भी माँ की कृपा से इस कार्य को करने का निश्चय किया। पहले इस तरह का सिंह काशी में बनवाने का प्रयत्न किया। अन्त में कलकत्ता के प्रसिद्ध शिल्पी श्री निताई पाल को काशी बुलवाकर बनाने की ज़िम्मेदारी सौंप दी। उक्त सिंह आजकल बनकर यहाँ आया है। इसे देखकर सभी यह कह रहे हैं कि इस तरह का जीवन्त सिंह इसके पहले कहीं देखने में नहीं आया है।

पीतल के एक विराट् वेदी के ऊपर अष्ट धातु में ढली हुई विशाल सिंह मूर्त्ति। वेदी के नीचे लोहे के चार पहिये हैं जिसकी वजह से इसे इधर-उधर खींचकर ले जाया सकता है। दोनों आँखें शीशे की हैं। उसमें भीतर से रोशनी की जा सकती है। रात के समय अगर इस सिंह को देखा जाय तो जीवन्त मालूम पड़ सकता है। इसका निर्माण सिंह साइज में कराया गया हैं। साढ़े छ फुट ऊंचाई हैं। सिर्फ सिंह का वजन २८ मन है। उसके ऊपर चांदी की मीनाकारी और लाल मखमल से बना माँ के सोने लायक आसन है। इस पर जरी की अत्युत्तम लाल मखमल की एक छतरी है। सारी सामग्री अपूर्व सुन्दर एवं अपने में निराली है।

यह तय किया जा रहा है कि अगले २ ता० से इसी पर माँ की पूजा होगी। इसके बनवाने में सब मिलाकर १५,००० रुपया

व्यय हुआ है। जिस वस्तु का निर्माण इतने रुपये लगाकर तथा काफी परिश्रम करके करवाया गया, इसके ऊपर अगर माँ कृपा करके कुछ देर के लिए बैठें तो बनवाना सार्थक हो जाय।

उत्सव के उपलक्ष्य में प्राचीन सावित्री महायज्ञ के कुण्ड की सफाई करवाकर उसके ऊपर एक नया मन्दिर बनवाया जा रहा है। मन्दिर का फर्श संगमरमर से बनवाया गया। घाट की वर्तमान हालत को देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि आश्रम की उत्तर दिशा की ओर स्थित यज्ञ मन्दिर कितने दिनों तक उपयोग में आ सकता है। इसी वजह से शायद आश्रम में शीघ्र ही नित्य यज्ञ भी इस नये मन्दिर में करना पड़ेगा।

## ४ मई, १९५६

**बहु प्रत्याशित षष्ठ दशाब्दी जयन्ती उत्सव का आविर्भाव साधु-समागम**

बहु प्रत्याशित जयन्ती उत्सव के दिन सन्निकट है। काशी की भीषण गर्मी को सह्य करते हुए भी विभिन्न प्रदेशों से अनेक भक्त आकर एकत्रित हुए हैं। धनी-द्ररिद्र, विशिष्ट-साधारण, हिन्दू-सिख, ईसाई-यहूदी, निमंत्रित-अनिमंत्रित, बालक-वृद्ध हर प्रकार के लोग आये हैं। महात्माओं का भी आगमन प्रारम्भ हो गया है। सबसे पहले आये श्री श्री हरि बाबा जी महाराज। उनकी विराट भक्त मण्डली और वृन्दावन की प्रसिद्ध रासलीला पार्टी भी इनके साथ आयी है। हो गया उत्सव आरम्भ।

हरि बाबा जी के ठहरने का इन्तजाम शिला प्रतिष्ठान के बीच निर्मित लाइब्रेरी वाले कमरे के ऊपर के हिस्से में किया गया है। माँ के

तत्त्वावधान में सुन्दर रूप से उनके कमरे को ठीक से सजा दिया गया है। उनकी भक्त मण्डली और रास पार्टी के लिए पास ही एक प्राचीन विशाल भवन में रहने का प्रबन्ध कर दिया गया है।

हरि बाबाजी के बाद ही आये ग्वालियर से श्री रामदास बाबाजी। इसके बाद क्रमशः विभिन्न महात्मा आने लगे। वृन्दावन से चक्रपाणिजी, झूँसी से प्रभुदत्तजी, बम्बई से कृष्णानन्दजी, कलकत्ता से श्री योगेश ब्रह्मचारीजी, श्री शरणानन्दजी, वृन्दावन के स्वामी अखण्डानन्दजी, श्री कृष्णानन्दजी, अवधूतजी आदि अनेक महात्मा उत्सव में शामिल होने के लिए आये। इनके लोगों की अभ्यर्थना के लिए प्रत्येक बार पताका के साथ जुलूस और कीर्त्तन करते हुए आश्रम ले आने की व्यवस्था होती रही। कभी-कभी आधी रात या बाद में विद्यापीठ के बालक और ब्रह्मचारी उत्साह के साथ हाथों में पताका लिए महात्माओं के आगमन की प्रतीक्षा में सड़क पर खड़े रहते थे। यह दृश्य देखकर राह चलते लोग प्रशंसा करते और श्रद्धा से सिर झुका लेते रहे। महात्माओं के ठहरने, खाने-पीने में किसी प्रकार की त्रुटि न रहे, इस ओर हरेक का विशेष ध्यान था।

श्री चक्रपाणिजी, प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी और स्वामी कृष्णानन्द-जी के ठहरने की व्यवस्था रींवा कोठी में की गयी है। गंगा तट के ऊपर विशाल राजप्रासाद है। पिछले कई माह पूर्व इस कोठी को राजा साहब ने विश्वविद्यालय को दान में दे दिया है। स्वामी अखण्डानन्दजी के लिए निश्चय किया गया है पंचकोट राजा की कोठी। यह कोठी भी गंगा किनारे स्थित मनोरम स्थान है। श्री कृष्णानन्द, अवधूतजी अत्यन्त शान्तिप्रिय हैं, दूसरों के साथ रहना वे पसन्द नहीं करते। यही वजह है कि इनके लिए दुर्गाकुण्ड पर स्थित निराले में श्रीनाथ शाहजी के भवन में रहने की व्यवस्था की

गयी है। भोजन के बारे में यही निर्देश दिया गया है। सभी महात्मा अपनी-अपनी पसन्द के अनुसार तरह-तरह की चीजें खाते हैं, इसलिए इन लोगों के लिए आश्रम की ओर से भोजन बनाने लायक सभी सामग्री अलग-अलग ढंग से सजाकर रखी जा रही है। सिर्फ अवधूतजी तथा योगेश ब्रह्मचारी आश्रम में प्रसाद ग्रहण करेंगे। महात्माओं की उपस्थिति में फिर भी माँ को उत्सव के बारे में कुछ-कुछ ख्याल कराया जा रहा है। अन्यथा सिर्फ एक ही बात कहती हैं—"तुम लोगों का उत्सव है, तुम लोग करोगे। इस शरीर से कुछ पूछना क्या है ?"

महात्माओं में आखिर तक एक मात्र श्री श्री हरि बाबाजी महाराज ही कृपा करके उपस्थित रहे। श्रीमत् योगेश ब्रह्मचारीजी तीन सप्ताह तक रहे। श्री अवधूतजी उत्सव के मध्य आकर आखिर तक रहे। स्वामी अखण्डानन्दजी से अन्त तक रुकने की प्रार्थना की गयी, पर वे अनिवार्य कारणों से ६-७ दिन ठहरने के बाद ऋषिकेश चले गये। विशिष्ट भक्तों में जो उत्सव के अन्त तक रुके रहे, उनमें थे—सोलन के महाराजा, टेहरी के महाराज सपरिवार, टेहरी की राजमाता एवं उनकी लड़की और जामाता। रींवा की रानी साहिबा, डा० पन्नालाल सपरिवार, अहमदाबाद के कान्तिभाई मुनसा, मुकुन्द भाई आदि उत्सव के अन्त तक रहे। भारत के विभिन्न प्रकार के लोग आकर एकत्रित हुए थे। बंगाली, हिन्दुस्तानी, बिहारी, गुजराती, मराठी, मद्रासी, पंजाबी आदि प्रान्तों के भक्तों का एक अपूर्व सम्मिलन था।

पहले यह आशा की गयी थी कि इस उत्सव में अधिक से अधिक ५०० भक्त आ सकते हैं। इसी के अनुसार व्यवस्था की गयी है। उत्सव आरंभ होने के बाद अभ्यागतों की संख्या इस कदर बढ़ने लगी कि सिर्फ बाहरी अभ्यागतों की संख्या १५०० से ऊपर हो

गयी। आश्रम से कुछ दूर विश्वविद्यालय के पास चीफ प्राक्टर श्री दासगुप्त के सौजन्य से प्रासाद तुल्य तीन होस्टल बिल्डिंग आश्रम के उपयोग के लिए प्राप्त था। किन्तु आश्रम से दूर होने के कारण लोग वहाँ जाने को राजी नहीं हुए। फलस्वरूप वे भवन खाली पड़े रहे। सिर्फ दो दिनों के लिए 'नदेर निमाई' पार्टी के लिए वहीं ठहरने की व्यवस्था की गयी थी। फलस्वरूप आश्रम के आसपास के १४-१५ मकानों में भक्तों को ठहराया गया। उत्तर और दक्षिण स्थित जैन मन्दिर, नेपालराज की कोठी, रींवा कोठी, मुक्तागाछा की राजकोठी, पंचकोट राजा की कोठो आदि भवन आश्रम के उपयोग के लिए मिल जाने पर पर्याप्त समाधान हो गया। इसके अलावा प्रत्येक व्यक्ति की सुख-सुविधा और आवश्यकता की पूर्त्ति करने के लिए श्री पानू अक्लान्त परिश्रम करता रहा। आश्रम की ओर से किसी को किसी प्रकार की तकलीफ न हो, इस बात का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। सभी एक स्वर में कह रहे हैं कि उत्सव के दिन बड़े आनन्द से व्यतीत हुए। दरअसल बात यह है कि जयन्ती उत्सव की तरह इतना विराट उत्सव में कभी भाग ले न पाने के कारण लोग इतने प्रसन्न थे कि किसी को अपने सुख-सुविधा की विशेष चिन्ता नहीं रही। सभी आनन्द में मस्त रहे। इस युग में इस तरह का उत्सव हो सकता है, यह कल्पना के परे की बात रही। यही वास्तव में मुख्य कारण था।

हजारों बाहरी अतिथि तथा अभ्यागतों के लिए हर प्रकार की व्यवस्था करने में हमें सरकारी और गैर सरकारी कर्मचारियों के निकट से पर्याप्त सहायता प्राप्त हुई है। विशेष रूप से नगरपालिका के एक्जीक्युटिव अफसर श्री ठाकुर प्रसाद शर्मा, हेल्थ अफसर श्री वर्मा और उनके इंस्पेक्टर, यहाँ तक कि सामान्य वेतन भोगी जमादारों की टोली भी आश्रम के इस विराट कार्य में निःस्वार्थ रूपसे जिस प्रकार से सहयोग दिया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी

होगी। नगर पालिका, इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट, इलेक्ट्रिक सप्लाई कं० तथा वाटर वर्क्स के सम्मिलित प्रयत्नों के बिना इतना बड़ा उत्सव अत्यन्त सुष्ठु भाव से सम्पन्न हो सकता था या नहीं, कहा नहीं जा सकता।

इसके बाद भोजन। इतने लोगों के भोजन का प्रबन्ध करना कितना बड़ा कठिन कार्य है, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। आश्रम के निमंत्रित अतिथियों की संख्या थी—१५०० के ऊपर। इसके अलावा अनाहूत, स्वाहूतों की संख्या ५-६ सौ से अधिक हो जाती थी। इतने लोगों का दोनों जून का भोजन, दो वक्त नाश्ते का प्रबन्ध करने की जिम्मेदारी। अगर स्वामी परमानन्द-जी के जिम्मे न होता तो शायद अन्त तक बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ता। यह पहले ही लिखा जा चुका है कि इन्होंने यद्यपि भोजन-कमेटी के अध्यक्ष पद को स्वीकार नहीं किया था तथापि स्वयं दिन-रात मौजूद रहकर सारा इन्तजाम करते रहे। प्रत्येक छोटी-मोटी बातों का विशेष ध्यान रखते रहे और बड़े ही सलीके से सारे कार्य का ठीक ढंग से संचालन करते रहे। इसी वजह से इतना बड़ा उत्सव अन्त तक सुचारु रूप से सम्पन्न हो सका है। इस भोज की पाक व्यवस्था माँ के निर्देशानुसार नये आश्रम की पाठशाला में होती थी और शिल्प प्रतिष्ठान के आंगन में शामियाना लगाकर उसके नीचे सभी को खिलाया जाता था। शुद्धाचारियों के लिए अन्नपूर्णा मन्दिर के नीचे पहले की भाँति प्रबन्ध किया गया था। जयन्ती उत्सव के अन्तिम दिनों में दोपहर के बाद लगभग २००० से अधिक व्यक्ति नित्य आकर आश्रम में प्रसाद ग्रहण किया करते थे। उत्सव में आगत सभी अतिथियों का जहाँ तक हो सकता था, वहाँ तक रुचि-अभिरुचि का ध्यान विशेष रूप से रखते हुए खाने-पीने का प्रबन्ध किया जाता रहा।

उत्सव का एक प्रधान दर्शनीय वस्तु था पण्डाल। काशी की बात कौन कहे भारत के इतिहास में इतना सुन्दर, अभिनव एवं विशाल पण्डाल इसके पूर्व कहीं निर्मित नहीं हुआ है। यह बात हर कोई स्वीकार कर रहा है। आश्रम के सालाना संयम-सप्ताह के समय प्रति वर्ष एक पण्डाल बनाया जाता है। इस उपलक्ष्य में कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली में भी अनेक सुन्दर-सुन्दर पण्डाल बनवाये गये थे, किन्तु इस पण्डाल की छटा और ही थी। श्रीमती लीलावेन और बम्बई के कई कलाकारों की योजना के अनुसार इसे काफी रकम खर्च करके बनवाया गया है।

**जयन्ती उत्सव में सत्संग की व्यवस्था**

जयन्ती महोत्सव के समय स्थानीय जमींदार श्री लक्ष्मीचन्द के सौजन्य एवं सहायता से प्राप्त आश्रम के पास ही उनकी विशाल भूमि पर सत्संग के लिए आयोजन किया गया था। यह स्थान मुख्य सड़क के समीप ही है, आश्रम से अधिक दूर नहीं। यह स्थान इतना बड़ा है कि यहाँ विशाल जनता के लिए सत्संग किया जाना संभव था। फलस्वरूप यहीं उक्त पण्डाल बनवाया गया।

उत्सव मई माह में आरम्भ हुआ। प्रचण्ड गर्मी पड़ रही थी। इसलिए पण्डाल के चारों ओर ईंट की दीवारें बनवाकर बीच-बीच में खस की पट्टियाँ लटका दी गयीं। सिर्फ पण्डाल के सामने वाले हिस्से की दीवार छोटी बनायी गयी थी ताकि पण्डाल के भीतर अगर जगह की कमी पड़ जाय तो बाहर खुले स्थान में ३-४ हजार व्यक्ति खड़े रहकर भीतर का सारा दृश्य देख-सुन सकें। नित्य दोपहर को जब सत्संग प्रारम्भ होता था तब पाइप के जरिये खस की टट्टियों को तर कर दिया जाता था। फलस्वरूप बाहर भयंकर लू चलते रहने पर भी भीतर शीतल और आराम बोध होता था। इसके अलावा पण्डाल के भीतर ३५-४० सीलिंग पंखें लगे हुए थे।

पण्डाल का आयतन था—११०′×८०′ भीतर लगभग ३००० दर्शकों के लिए बैठने लायक स्थान था। पीछे की ओर ४५′×१६′ साइज की एक वेदी बनायी गयी थी। वेदी पर्याप्त ऊँची थी ताकि पण्डाल के किसी भी कोने में बैठा हुआ आदमी माँ या महात्माओं का भली-भाँति दर्शन कर सके। कोई असुविधा न हो। वेदी के ऊपर बढ़िया गलीचा, आसन आदि बिछाकर सत्संग का स्थान सुसज्जित किया गया था। पण्डाल के भीतर माइक एवं शक्तिशाली लाउडस्पीकर लगे थे ताकि बहुत दूर से यहाँ तक कि आश्रम में होने वाले सत्संग सम्बन्धी भाषण, गायन, भजन, यंत्र-संगीत आदि सभी कार्यक्रम साफ-साफ लोग सुनते रहे।

पण्डाल का भीतरी भाग, प्रवेश द्वार का निर्माण करने और सजाने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी श्रीमती लीलाबेन ने ले ली थी। इस कार्य में मदद लेने के लिए वे बम्बई से दो कलाकारों को बुलवायीं थीं। भइया की पत्नी श्रीमती लीलाबेन एक परम विदुषी महिला हैं। सभी प्रकार के काम में असामान्य दक्षता रखती हैं। वे स्वयं एक अच्छी चित्रकार हैं। इन तीनों ने मिलकर दिन-रात लगातार परिश्रम करते हुए इस तरह पण्डाल को सजाया कि उसका वर्णन करना कठिन है। पण्डाल तथा आश्रम का प्रवेश द्वार इतने सुन्दर ढंग से सजाया गया था कि जो देखता वही मुग्ध भाव से देखता रह जाता था। भीतर की सजावट तो और भी अच्छे ढंग से की गयी थी। गर्मी के मौसम में काशी में फूल-माला की बेहद कमी हो जाती है, पर शिल्पियों ने अपनी शिल्प विद्या के माध्यम से उस अभाव की कमी को दूर कर दिया था। अगर इस कला का प्रयोग न किया जाता तो लगातार २६ दिनों तक होनेवाले इस उत्सव के लिए पण्डाल और आश्रम को नित्य सजाने का काम बड़ा दुरूह हो जाता, इसमें सन्देह नहीं।

२ मई को तीसरे पहर से पण्डाल में सत्संग प्रारम्भ हुआ हरि बाबाजी, कई महात्मा एवं माँ उस समय वहाँ मौजूद थीं। सर्वप्रथम विदग्ध पण्डित श्री बिन्दु महाराज ने नातिदीर्घ भाषण दिया। इसके बाद पण्डित वेदसुखानन्द जी का मंगलाचरण-पाठ और पण्डित भगवती प्रसाद का पौराणिक मंगलाचरण पाठ हुआ। इसके बाद भजन कीर्त्तन के पश्चात् शाम को कार्यक्रम समाप्त हो गया। बाद में ७-१५ से ८-१५ मिनट तक रात को श्री हरि बाबा जी महाराज का नियमित कीर्त्तन हुआ। कीर्त्तन के पश्चात् वे ८-४५ तक भक्त चरित्र के सम्बन्ध में भाषण देते रहे। इसके बाद ८-४५ से ९ बजे तक यथा रीति मौन हुआ। बाद में रात १०-३० बजे तक सत्संग होता रहा।

**उत्सव का आरम्भ बहुविध विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम**

३ मई से पण्डाल में नित्य प्रातःकाल रासलीला का अभिनय आरम्भ हुआ। इन लोगों को अभिनय करने की सुविधा देने के लिए एक पृथक् उच्च वेदी का प्रबन्ध किया गया। इसे भी उत्कृष्ट सोफा गलीचा द्वारा सुसज्जित कर दिया गया। नित्य सवेरे ८-३० से ११-३० बजे तक श्री कृष्ण या श्री महाप्रभु की जीवन-सम्बन्धी घटना के आधार पर यह लीला आरम्भ होती थी। रासलीला देखने के लिए अपार भीड़ एकत्रित होती थी। काफी दूर से हजारों स्त्री-पुरुष इस लीला को देखने आते थे। परम श्रद्धेय कविराज जी भी २-१ दिन इस लीला को देखकर प्रसन्न हुए थे। महात्माओं में अनेक लोग लीला देखा करते थे। लीला समाप्त होने के बाद श्री श्री हरि बाबा जी महाराज कुछ देर

**रासलीला**

तक कीर्त्तन करते और फिर उस वक्त का सत्संग समाप्त हो जाता था।

तीसरे पहर ४ बजे श्री श्री हरि बाबाजी की भक्त मण्डली समवेत रूप से रामायण पाठ करती। इसके बाद ६-३० बजे तक विशिष्ट वक्ता या महात्माओं के भाषण का कार्यक्रम रखा गया था। महात्माओं में स्वामी अखण्डानन्द जी महाराज, श्री कृष्णानन्द जी, अवधूत जी, स्वामी रामदास जी, श्री चक्रपाणि जी, स्वामी शरणानन्द जी, श्री योगेश ब्रह्मचारी जी गभीर ज्ञानगर्भ भाषण देते थे। नलिनी ब्रह्म, पण्डित श्रीनाथ शास्त्री तथा अन्य अनेक व्यक्ति सुन्दर एवं सुललित भाषा में विभिन्न प्रसंगों पर भाषण दिया करते थे। स्थानीय विशिष्ट पण्डित वक्ताओं में थे, हिन्दू विश्व विद्यालय के दर्शन विभाग के प्रधान अध्यापक डा० आत्रेय भाषण देते। योग वाशिष्ठ पर उनका भाषण पाण्डित्य पूर्ण होता था। संस्कृत कालेज के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० मंगलदेव शास्त्री, डा० महादेव शास्त्री, डा० राजबली पाण्डे, सन्त छोटे महाराज, मुसलमान सन्त बाबा कालिदास, अध्यापक याज्ञिक आदि किसी-किसी दिन विभिन्न विषयों पर भाषण दिया करते थे।

महात्माओं के भाषण

७ मई को जगद्गुरु रामानुजाचार्य देवनायकाचार्य लोगों के आह्वान पर पण्डाल में आये और भाषण देने के लिए तैयार हुए। इसी दिन विजयलक्ष्मी नामक चौदह वर्षीय एक बालिका सम्पूर्ण रामायण जबानी सुनाकर लोगों को चमत्कृत कर गयी। सुना गया कि बचपन से ही उसे सम्पूर्ण रामायण कंठस्थ है।

जयन्ती के उपलक्ष्य में कलकत्ता विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यापक श्री त्रिपुरारि चक्रवर्त्ती महाशय को आह्वान

करके ले आया गया है। वे जलद गम्भीर स्वर में, सुललित एवं तेज पूर्ण भाषा में महाभारत के सम्बन्ध में उपदेश देते रहे। आपके भाषण की विशिष्टता यह है कि आप सम्पूर्ण महाभारत को भाषण के माध्यम से आँखों के सामने चित्रित कर देते हैं। सुना है कि कलकत्ता की बड़ी-बड़ी सभाओं में आप जिस वक्त महाभारत के बारे में भाषण देने लगते हैं, उस समय हजारों स्त्री-पुरुष स्तब्ध होकर सुनते रहते हैं। कलकत्ता में हुए संयम-सप्ताह में हम इस बात का रसास्वादन कर चुके हैं। आपका माँ के ऊपर भी खूब सुन्दर भाव है। माँ भी आपकी काफी खातिर करती हैं। २३, ३४, २५ ता० को लगातार तीन दिनों तक आपके भाषण हुए। यद्यपि आप बंगला में बोल रहे थे, तथापि अनेक गैर बंगाली भी आपका भाषण मंत्रमुग्ध भाव से सुनते रहे।

शाम के बाद से मौन के समय तक श्री श्री हरि बाबाजी का कीर्त्तन नियमित रूप से होता है। मौन के बाद का डेढ़ घंटा मातृसंग के लिए रखा गया था। लेकिन इस वक्त माँ अक्सर कीर्त्तन आरंभ कर देती रहीं। इनके साथ हजारों नर-नारी योगदान देते रहे। चाहे मातृसंग के लोभ से या चाहे किसी भी कारण से हो, इस वक्त सर्वाधिक भीड़ होती थी। कभी-कभी यह संख्या ७-८ हजार तक पहुँच जाती थी। विशाल पण्डाल और उसके सामने उन्मुक्त मैदान में जन समुद्र उमड़ पड़ता था। सभी को एक स्वर से कहते सुना कि काशी में इतने विराट रूप में सत्संग का आयोजन और जनता की इस कदर भीड़ कभी देखने में नहीं आयी।

**श्री श्री हरि बाबाजी का कीर्त्तन और मातृसंग**

टेहरी के महाराज का उत्साह और श्रीमान् विभु, पटल आदि के

प्रयत्नों से प्रत्येक रात को संगीत का अति सुन्दर आयोजन होता था। कुछ लोग इस आयोजन को संगीत-सम्मेलन भी कहते रहे। अगर अतिशयोक्ति न माना जाय तो यही ठीक नाम है। काशी अनादि काल से संगीत-साधना का क्षेत्र रहा है। ऐसी हालत में काशी जैसे स्थान में, माँ के इस तरह के एक उत्सव में भारत के ख्यातिप्राप्त संगीत कलाकारों को एक साथ देखते हुए अगर इसे संगीत सम्मेलन कहा जाय तो कोई अस्वाभाविक न होगा। प्रसिद्ध ठुमरी गायिका श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी, श्रीमती गिरिजा देवी, श्रीमती श्रीमती पद्मजा देवी, पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर के प्रिय शिष्य श्री बलवन्त भाई, डागर बन्धु, श्री हरिशंकर मिश्र आदि कलाकारों एक-एक दिन आकर अपना कंठ संगीत सुना कर जनता को मंत्र मुग्ध वना गये। कलकत्ता से श्री सुखेन्दु गोस्वामी, उत्पला सेन, छवि वन्द्योपाध्याय आकर अपने संगीत से मुग्ध कर गये हैं। ये सभी माँ के विशेष भक्त हैं। संगीतज्ञों के साथ प्रसिद्ध तबला वादक श्री सामता महाराज, कंठे महाराज, आशुतोष भट्टाचार्य एवं किशन महाराज ने अपने कृतित्व का अद्‌भुत परिचय दिया।

**विश्वविख्यात कण्ठ एवं यंत्र संगीतज्ञों का संगीत-प्रदर्शन**

एक दिन श्री युगलकिशोर आये और बहुत बढ़िया जलतरंग सुना गये और एक दिन उस्ताद बिसमिल्ला खाँ अत्यन्त मधुर शहनाई सुना गये। इन सांध्य अनुष्ठानों में उस्ताद अली अकबर खाँ जो कि उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के सुयोग्य पुत्र हैं, सरोद और श्री रविशंकर के सितार का कार्यक्रम श्रेष्ठ रहा। अली अकबर वर्तमान भारत के सर्वश्रेष्ठ सरोदिया हैं। अली अकबर के पिता उस्ताद अलाउद्दीन खाँ मइहर स्टेट में रहते हैं। आप भारत के सर्वश्रेष्ठ सरोद-शिल्पी हैं। आपके भाई उस्ताद आकतबुद्दिन अहमद

माँ के पिता श्री विपिन भट्टाचार्य के घनिष्ठ मित्र रहे। ये दोनों ही कुमिल्ला जिला के निवासी रहे। अली अकबर कलकत्ता से हवाई जहाज द्वारा आकर एक दिन यहाँ रहने के बाद दूसरे दिन बम्बई रवाना हो गये। श्री रविशंकर भी एक रात के लिए हवाई जहाज से दिल्ली से आये थे। आप प्रसिद्ध नर्त्तक श्री उदय-शंकर के कनिष्ठ भ्राता हैं। अली अकबर और रविशंकर दोनों ही बंगाली हैं। दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र में असामान्य यश और प्रतिपत्ति के अधिकारी बनकर सम्पूर्ण भारत का नाम रौशन कर रहे हैं। इन दोनों कलाकारों का संगीत सुनने के लिए न जाने कितने व्यक्ति अर्थ व्यय करते रहते हैं। फलस्वरूप इनके आश्रम-आगमन पर शहर की जनता में हर्ष की लहर दौड़ गयी। अली अकबर और रविशंकर क्रमशः सरोद तथा सितार बजाकर कम-से-कम ८००० जनता को इस तरह लगातार कई घण्टे तक मुग्ध बनाये हुए थे कि जिसे बिना देखे भाषा के जरिये समझाया नहीं जा सकता। अन्य कारणों से रात अधिक हो जाने पर वाध्य होकर अनुष्ठान समाप्त कर देने पर अथवा न जाने कब कैसे रात गुजर जाती, यह कोई जान नहीं पाता था। माँ की जयन्ती के उपलक्ष्य में इस तरह के दो यन्त्र शिल्पी आकर काशी के संगीत प्रेमियों को इस तरह प्रसन्न कर गये कि वे आश्रम के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने में नहीं चुके। इस उपलक्ष्य में उस्ताद अली अकबर खाँ और रविशंकर दोनों का माँ के साथ परिचय प्राप्त होने पर वे माँ के प्रति अशेष कृतज्ञता प्रकट करते रहे।

**रामायण-पाठ**

कलकत्ता के प्रसिद्ध रामायण-गायक मृत्युंजय चक्रवर्ती १५, १६ और १७ की रात को ८-१५ से ११-१५ बजे तक रामायण-पाठ करते रहे। इस क्षेत्र में इनका मुकाबला करने वाला कोई नहीं है।

हवड़ा-समाज के प्रसिद्ध 'नदेर-निमाई' पार्टी भी एक दिन के लिए कलकत्ता से आकर २६ ता० को ९।। बजे से भोर ४ बजे तक नदीया-लीला अभिनय कर गयी है। हबड़ा समाज के ऋषिकेश बाबू हम लोगों के विशेष परिचितों में हैं। वे लोग माँ के सामने अभिनय कर पायेंगे, यह बात जानकर एक रात के लिए ही सही, अनेक बाधाओं के बावजूद इतनी दूर से आये थे। ये लोग काशीस्थ बंगालियों को जिस प्रकार का आनन्द दे गये हैं, वह वर्णनातीत है।

नदेर-मिनाई

एक दिन पण्डाल में रात को गुजराती गरबा नृत्य का आयो-हुआ था। गुजरात में नवरात्रि के अवसर पर इस प्रकार के नृत्या-नुष्ठान बराबर होते हैं। इसके वाद शान्ति निकेतन के संगीत कालेज के अध्यक्ष श्री शैलजा मजुम-दार के नेतृत्व में रवीन्द्र-संगीत तथा नृत्य के कार्यक्रम हुए। इसी दिन ३० ता० को रात में इस अनुष्ठान की समाप्ति के बाद सोलन के राजा साहब जयन्ती के कार्यकर्त्ताओं की ओर से अतिथि-अभ्यागत एवं स्थानीय तथा बाहरी सभी लोगों को धन्यवाद दिया। विशेष रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से अनेक स्वयंसेवक, पुलिस आदि जिन लोगों ने अक्लान्त रूप से पण्डाल की शान्ति-रक्षा और जनता की मदद के लिए परिश्रम किया था, उन सभी लोगों को धन्यवाद दिया गया। एक माह तक लगातार चलने वाले यह कार्यक्रम राजा साहब के इस धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ।

नृत्यानुष्ठान

जयन्ती महोत्सव के बीच २० से २३ ता० तक लगातार तीन दिनों तक हमारे पण्डाल में रामचरित मानस सम्मेलन का द्वादश

अधिवेशन अनुष्ठित हुआ। अखिल भारतीय रामायण-सम्मेलन के मन्त्री श्री नागेश उपाध्याय जी हम लोगों आश्रम के निकट रहते हैं। उनके विशेष आग्रह पर यह अनुष्ठान हमारे पण्डाल में हुआ। इस उपलक्ष्य में अभ्यर्थना समिति का सभापति मुझे मनोनीत किया। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए बाहर से काफी लोग आये थे। उनके भोजन आदि का प्रबन्ध आश्रम की ओर से किया गया था। सम्मेलन के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री डा० सम्पूर्णानन्द जी, मन्त्री पण्डित कमलापति त्रिपाठी, हिन्दू विश्व विद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति पण्डित गोविन्द मालवीय आदि आये थे। श्री बिन्दु महाराज जी सम्मेलन के सभापति थे। उत्सव के अन्तिम दिन वे माँ से उत्सव की ओर से आशीर्वाद माँगने लगे और माँ से कुछ कहने के लिए उन्होंने निवेदन किया।

**रामचरित मानस सम्मेलन**

माँ ऐसी सभाओं में प्रकट रूप से कुछ कहती नहीं, इसलिए स्वाभाविक रूप से बोलीं—"हरि कथा ही कथा और सब वृथा व्यथा।" और—"जहाँ राम वहाँ आराम और जहाँ नहीं राम वहाँ बे आराम।" बाद में सभी लोगों के साथ कुछ देर तक राम-नाम कीर्त्तन करती रहीं।

पण्डाल-संलग्न भूमि में एक इन्क्वारी आफिस, टेलिफोन काल आफिस, पुलिस स्टेशन, फायर ब्रिग्रेड स्टेशन, बुकस्टाल, टी स्टाल और आम लोगों के पानी पीने के लिए प्याऊ का प्रबन्ध किया गया था। इसके अलावा दर्शकों के लिए नगरपालिका की ओर से पण्डाल के समीप ही ५-६ पाखाना और पेशाबखाना बनवाया गया था। आश्रम के समीप ही सर्वसाधारण की सुविधा के लिए बरफ और केवड़ा मिश्रित पीने लायक पानी का प्रबन्ध था। एक माह

तक लगातार इन स्थानों में बरफ सप्लाई का पूर्ण व्यय पटल स्वयं अपनी ओर से देता रहा।

पण्डाल के सत्संग का सारा कार्य ब्रह्मचारी कान्तिभाई स्वयं अपने हाथ से करते थे। साधु-महात्माओं का माला-चन्दन से स्वागत करना, उद्घोषक का कार्य करना, मण्डप में शान्ति व्यवस्था रखना, यह सारा कार्य वे अत्यन्त शृङ्खलाबद्ध रूप से करते रहे। इतने लम्बे अर्से तक चलने वाले इस प्रकार के महोत्सव में हो रहे सत्संग का संचालन करना कितना कठिन कार्य है, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

उत्सव का आरम्भ चण्डीमण्डप के बरामदे में रामार्चना के द्वारा किया गया। श्री श्री हरि बाबाजी के विशेष आग्रह और इच्छा पर

**रामार्चना**

१ ता० के प्रातःकाल से २२ दिन तक चलता रहा। इस रामार्चना के आचार्य थे पण्डित श्रीनाथ शास्त्रीजी, पूजक मनोहर। पूजा के अन्त में नित्य श्री श्री हरी बाबाजी स्वयं स्तव पाठ एवं रामनाम कीर्त्तन करते थे। स्वयं माँ भी अर्चना के समय उपस्थित रहती थीं।

२ ता० के प्रातःकाल से सहस्र चण्डीपाठ आरम्भ हुआ। पिछले वर्ष बनारस में ही रोग निरामय के लिए हरि बाबाजी की इच्छा-

**ब्राह्मणों द्वारा सहस्र चण्डीपाठ**

नुसार शत चण्डीपाठ कराया गया था। इसी के साथ रुद्राभिषेक भी हुआ था। उसी समय से आज तक यानी लगातार एक वर्ष से योगेश दादा वगैरह नित्य चण्डी-पाठ करते हुए उक्त अनुष्ठान की धारा की रक्षा करते आये हैं। सोलन में जब जयन्ती उत्सव की चर्चा चली थी तभी योगी भाई ने

कहा था कि मैं जब सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाऊँ तब सहस्र चण्डी-पाठ के साथ उत्सव की समाप्ति होगी। यही इच्छा टेहरी की महा-रानी ने प्रकट की। इन लोगों की इच्छा से इस बार जयन्ती-उत्सव के समय सहस्र चण्डीपाठ का प्रबन्ध हुआ।

नूतन आश्रम का हाल का जीर्णोद्धार किया गया। नयी वेदी पर चण्डी देवी का घट स्थापित किया गया जहाँ पाठ का प्रबन्ध हुआ है। बंगाली, स्थानीय महाराष्ट्रीय आदि २५ पाठकों ने पाठ आरम्भ किया। आचार्य थे अग्निहोत्री बाटु दादा। जापक विशु पुरोहित एवं यजमान टेहरी के महाराज। पाठकों को एक कालीन का आसन, एक कुशासन, धोती, चद्दर, गमछा, पंच-पात्र और ताम्रकुण्ड आदि देकर उनका वरण किया गया। आचार्य को विशेष रेशमी वस्त्र और उत्तरीय दिया गया। वेदी के ऊपर सुसज्जित घट स्थापित कर उसपर चाँदी के सिंहासन पर चण्डी देवी की सुवर्ण मूर्त्ति रखी गयी। देवी मूर्त्ति को विभिन्न बहुमूल्य अलंकारों से सज्जित करने के बाद राजोचित पूजा के अन्त में पाठ आरम्भ किया गया। नित्य पाठ के समय एक ब्राह्मण विघ्न नाशक नवार्ण मंत्र जप करता था। प्रतिदिन ५० चण्डीपाठ पूर्ण होता था। इस प्रकार २० दिन में सहस्र चण्डीपाठ समाप्त हुआ। पाठान्त में प्रत्यह एक कुमारी और एक बटुक को वस्त्र-दक्षिणा देकर सह भोजन कराया जाता था।

२२ मई से २५ मई तक चार दिन पाठान्त में होम हुआ और २६ ता० को होम की पूर्णाहुति हुई।

सहस्र चण्डीपाठ तो यथारीति अति सुन्दर ढंग से समाप्त हो गया। किन्तु परिसमाप्ति के बाद सुना गया कि इसके संकल्प में

**सम्पुटित सहस्र चण्डीपाठ और रुद्राभिषेक**

गलती रह गयी है। बात यह है कि सोलन में जब सहस्र चण्डी की चर्चा चली थी तभी टेहरी की महारानी के मन में यह इच्छा उत्पन्न हुई थी कि पाठ सम्पुटित रूप से होना चाहिए। किन्तु आगे चलकर इस बारे में फिर कोई चर्चा नहीं हुई। इधर ऐसा हुआ कि २ मई को जिस समय सहस्र चण्डी का अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ, उस समय अस्वस्थ रहने के कारण टेहरी की महारानी काशी में मौजूद नहीं थीं। यद्यपि महाराज उपस्थित थे, पर उन्होंने कुछ नहीं बताया। पाठ संकल्प के समय उन्होंने यह जरूर पूछा था कि पाठ सम्पुटित रूप से होगा या नहीं। आचार्य को इसकी जानकारी नहीं थी। फलस्वरूप उन्होंने कहा कि साधारण रूप से होगा। बाद में १५ ता० को महारानी दिल्ली से जब वापस आयीं तो देखा कि पाठ सम्पुटित रूप से नहीं हो रहा है। यह देखकर वे दुखित हुईं, पर इस सम्बन्ध में कुछ बोलीं नहीं।

बाद में यह बात १९ ता० को सवेरे माँ और मेरे निकट पहुँची। उस समय उत्सव समाप्त होने में सिर्फ १५ दिन बाकी थे। इस अर्से में पुनः नये सिरे से सम्पुटित सहस्रचण्डी पाठ कराना सम्भव है या नहीं, माँ जानना चाहती हैं। महारानी चाहती थीं कि उत्सव के बीच इस तरह का पाठ हो। इधर दूसरे दिन रविवार था। काशी में बाजार बन्दी थी। फलस्वरूप सभी लोग पुनः इस पाठ के सम्बन्ध में सन्देह प्रकट करने लगे। इधर माँ बार-बार कहने लगीं—"कोशिश करके तो देखो। देखो क्या होता है आखिर तक। सूरजरानी की इच्छा।"

वृन्दावन के योगेन बाबू को उसी दिन गलीचा खरीदने के लिए मोटर से मीरजापुर भेज दिया गया। विभिन्न सामान संग्रह

करना प्रारम्भ हो गया। दूसरे दिन रविवार, दुकानें बन्द, कुछ करना सम्भव नहीं है। यही सब सोचा जा रहा था कि ठीक इसी समय मोहनानन्द ब्रह्मचारी की एक शिष्या अचानक माँ का दर्शन करने आयी। पाठ के लिए आवश्यक सामान खरीदने की दिक्कत वाली बातें उसके कान तक पहुँची। वह तुरन्त स्वयं ही बोली कि उसके पति का बरतनों की दुकान है, इसलिए वे बरतनों का प्रबन्ध कर दे सकते हैं। तुरन्त उसके साथ एक आदमी मोटर से गया और आवश्यक बरतन ले आया। दूसरी ओर पटल पाठकों की तलाश में गया। इतने कम समय में इतने पाठकों को खोज निकालना सहज बात नहीं थी। दूसरी ओर पटल का भाई हाबुल किसी प्रकार दुकान खोलवाकर अनुष्ठान और पाठकों के लिए आवश्यक सामग्री खरीद लाया। इस प्रकार महारानी की शुभ इच्छा और माँ की असीम कृपा से आखिर तक असम्भव भी सम्भव हो गया। सिर्फ एक दिन में जब कि सारा बाजार वन्द था, सहस्र चण्डी पाठ की सभी व्यवस्थाएँ पूर्ण हो गयी। एक ही उत्सव में दो बार सहस्र चण्डी पाठ कराने की बात सुनने पर शायद कोई विश्वास न करे, पर मैंने देखा कि माँ की उपस्थिति से असम्भव नामक कोई वस्तु है ही नहीं।

पाठक भी मिल गये। ५० महाराष्ट्रीय ब्राह्मण और रुद्राभिषेक के लिए १६ ब्राह्मण आये। वाकी २१ ब्राह्मण बाटु दादा अपने साथ लाये। इन ८७ ब्राह्मणों के द्वारा संपुटित रूप से सहस्र चण्डी का पाठ २१ ता० की भोर से प्रारम्भ हुआ। इस बार भी यजमान टेहरी के महाराज बने। उनके वंश में परम्परा के अनुसार सुवर्ण निर्मित पात्र में चण्डी देवी का बीज मन्त्र और यन्त्र लिखकर पूजा होती है। पूजा राजोचित भाव से ही अनुष्ठित हुआ। देवी के नैवेद्य के लिए चाँदी की थाली, कटोरी, गिलास, चम्मच और रेकाबी दी

गयी। जब सभी पण्डित एकत्रित हुए तब महाराज ने वरण साम-ग्रियों से उनका वरण किया। पाठ आरम्भ हुआ। ८४ ब्राह्मणों के दल ने एकत्रित होकर एक स्वर से पाठ आरम्भ किया। बड़ा ही अपूर्व दृश्य था। पाठ पर बैठने के पहले ८४ पण्डितों के आसनों के स्थान में कमी पड़ रही थी। यह बात माँ से कहने पर वे आकर उन आसनों को इस तरह सजावायीं कि बाद में देखा गया अभी ९-१० आसन और बिछाये जा सकते हैं। इस तरह के दृश्य मैं इसके पूर्व अनेक बार देख चुकी हूँ।

नित्य पाठ के अन्त में अब तीन कुमारी और एक बटुक को दक्षिणा तथा वस्त्र देकर भोजन कराया जाने लगा। प्रत्येक व्रती भी पहले की भाँति पाठ के अन्त में आश्रम से एक सेर दूध और मिठाई जलपान के लिए प्राप्त करते रहे।

२६ ता० को सम्पुटित चण्डीपाठ समाप्त हुआ। २७ ता० को सवेरे होमान्त में पूर्णाहुति का प्रबन्ध हुआ। इसमें कई सौ ब्राह्मणों ने भाग लिया। साधारण अनुष्ठान के होम और आरती पाँच दिनों तक होती रही, किन्तु इस बार सब कुछ एक दिन में समाप्त करना था। एक साथ इतने अधिक ब्राह्मणों द्वारा होम करने की असुविधा देखकर नये यज्ञ मन्दिर; तुलादान वेदी पर और मातृ मण्डप के सामने ही होम की व्यवस्था की गयी। तिल, जौ, चावल, चीनी, घी, मेवा, चन्दनचूर्ण इत्यादि के मिश्रण द्वारा आहुति दी जाती रही। प्रत्येक अध्याय के बाद पान-सोपाड़ी और पद्म बीज इत्यादि के द्वारा आहुति दी जाती रही। व्रतियों में प्रत्येक को दक्षिणा के रूप में ६३) रु० और आचार्य को १०१) रु० दिया गया। इसके अलावा प्रत्येक को अलग से मार्ग व्यय एवं जलपान-दक्षिणा आदि भी दिया गया। आचार्य को सवत्सा गाय और वृष दान दिया गया।

सम्पुटित सहस्रचण्डी पाठ प्रसंग के उत्सव के पश्चात् एक दिन योगी भाई ने माँ से एक विस्मयकर दर्शन की बातें बतायीं। पहली बार जब चण्डी पाठ का कार्यक्रम चल रहा था तब एक

**एक विस्मय जनक घटना**

दिन योगी भाई ने आश्रम से पण्डाल की ओर जाते हुए मातृ मण्डप की खिड़की से देखा कि चण्डी देवी के घट के स्थान की जगह आसन के ऊपर काली मूर्त्ति अधिस्थिता हैं। योगी भाई को जब सन्देह हुआ तब वे और पास जाकर मूर्त्ति का अच्छी प्रकार दर्शन किया। फिर उन्होंने सोचा कि बंगाल में अनेक जगह चण्डी देवी के घट के स्थान पर मूर्त्ति स्थापित करने की कोई रीति है, इसलिए यहाँ भी शायद देवी मूर्त्ति स्थापित की गयी है। योगी भाई प्रणाम करने के बाद पण्डाल में चले गये। किन्तु वापस लौटते समय उन्होंने देखा कि देवी मूर्त्ति के स्थान पर घट ही विराजमान हैं। यह देखकर वे चकित रह गये। तो क्या सचमुच देवी ने कृपा करके उन्हें दर्शन दिया। बहरहाल इस सम्बन्ध में वे चुप रह गये।

बाद में उन्होंने इस घटना का विवरण माँ और मेरे निकट सुनाया। तब माँ ने कहा—"देखो, देवी स्वयं प्रकट होकर पूजा ग्रहण करती रहीं।"

बात सत्य है भी। अगर वे स्वयं इस तरह पूजा स्वीकार न करतीं तो ऐसे उत्सव के बीच दो बार सहस्र चण्डोपाठ हो सकता था या नहीं, यह कहना असम्भव है।

उत्सव के बीच श्रीकृष्णानन्द अवधूतजी की इच्छानुसार काशी स्थित ललिता घाट पर त्रिपुरा सुन्दरी देवी के मन्दिर में पुनः शत

चण्डीपाठ का प्रबन्ध हुआ। ललिता घाट के ऊपर प्रसिद्ध संन्यासी श्रीशंकर भारतीजी रहते हैं। भारतीजी उत्सव के दरम्यान एक बार माँ को देवी मूर्त्ति के रूप में देख चुके हैं और बाद में देवी ने स्वयं भारतीजी को माँ के बारे में अनेक रहस्यपूर्ण बातें बतायी हैं। इस वजह से अवधूतजी के मन में देवी के प्रति विशेष श्रद्धा के भाव उत्पन्न हुए और इसी स्थान पर उत्सव के दरम्यान देवी का श्रृंगार और शत चण्डी की बातें मन में उत्पन्न हुएँ। इसी निश्चय के अनुसार उस दिन समस्त आयोजन किया गया। सुवर्ण पात्र में यन्त्र बनाकर, षोड़शोपचार में देवी का पूजन करने के पश्चात् शत चण्डीपाठ २३ मई को सवेरे से प्रारम्भ कर दिया गया। यह पाठ २७ ता० को जाकर समाप्त हुआ और उसी दिन होम, दक्षिणा, ब्राह्मण-विदाई आदि कार्य समाप्त कर दिया गया।

**शत चण्डीपाठ**

दूसरी ओर ६ ता० की सुबह से ११ दिनों तक लगातार रुद्राभिषेक अन्नपूर्णा के मण्डप में प्रारम्भ हुआ। इन अनुष्ठान में ११ व्यक्ति व्रती थे। आचार्य बने पण्डित विधुशेखर शास्त्री एवं यजमान बने योगी भाई। मन्दिर के सामने वाणलिंग स्थापित किया गया। वहीं रुद्री पाठ के साथ शिव के ऊपर गंगाजल, दूध, भांग इत्यादि की धारा दी जाती थी। एक ब्राह्मण एक ओर बैठे गणेश मन्त्र जपा करते थे। सभी व्रतियों तथा आचार्य का चण्डीपाठ के अनुष्ठान की तरह राजोचित रूप से वरण किया गया। १७ ता० को नये यज्ञ मन्दिर में ११ ब्राह्मण सम्मिलित होकर अन्त में पूर्णाहुति देने लगे। प्रत्येक व्रती को ३६) रु० दक्षिणा और आचार्य को ५१) रु० और सवत्सा गाय दान में दी गयी।

**रुद्राभिषेक**

७ ता० को सवेरे से कन्यापीठ के ऊपर वाले हाल में शिवा-

र्चना शुरू हुआ। टेहरी के महाराजा के आग्रहानुसार इस अनुष्ठान का आयोजन किया गया था। व्रतियों की सुविधा के लिए बाटु दादा और टेहरी के महाराजा के परामर्शानुसार आश्रम से वैदिक शिव पूजा पद्धति प्रकट किया गया। पहले से ही एक चौकी, पंचपात्र, ताम्र कुण्ड, धूपदानी, नैवेद्य पात्र और पंच प्रदीप संग्रह कर लिया गया था। महाराजा को इस बात की आशा थी कि उपस्थित भक्तों में शायद अनेक लोग इसमें भाग लेंगे, किन्तु अन्त तक सिर्फ एक गृहस्थ भक्त ने भाग लिया। फलस्वरूप आश्रमके ब्रह्मचारियों में से ५ ब्रह्मचारियों को इस अनुष्ठान में बैठाया गया। चाँदी की चकती पर शिव का बीज मन्त्र लिखकर पूर्णांगीण वैदिक प्रथा के अनुसार शिवार्चना और उसके साथ ही महामृत्युंजय जप आरम्भ किया गया। अग्निहोत्री बाटु दादा इस अनुष्ठान के आचार्य नियुक्त हुए।

**शिवार्चना**

१७ ता० को रुद्राभिषेक समाप्त होने के बाद १८ ता० से स्मृति मन्दिर में विष्णु यज्ञ आरम्भ हुआ। ऋषिकेश से ५ ब्राह्मण को इस उपलक्ष्य में बुलाया गया था। सुवर्ण निर्मित्त विष्णु मूर्त्ति सिंहासन पर स्थापित करने के बाद षोड़शोपचार से उनकी पूजा हुई। नैवेद्य के लिए चाँदी की थाली कटोरा और गिलास दिया गया। नारायण को रेशमी पीताम्बर, लक्ष्मो देवी को लाल रंग की बनारसी साड़ी और उत्तरीय दिया गया। विष्णु यज्ञ में १७ व्रती नियुक्त किये गये। यह अनुष्ठान तीन दिनों तक चलता रहा। आचार्य थे—पं० कृष्ण किशोर शास्त्रो। जब २० ता० को अनुष्ठान समाप्त हुआ तब उसके दूसरे दिन पूर्णाहुति प्रदान किया गया। आहुति के समय पुरुष-सुक्त का पाठ हुआ। प्रति ब्राह्मण को

**विष्णु यज्ञ**

१६) रु० और आचार्य को ५१) रु० दक्षिणा के साथ एक सवत्सा गाय दान में दी गयी।

जयन्ती उत्सव के बीच जितने अनुष्ठानों का आयोजन किया गया था, उन सब में सबसे अधिक आकर्षक था—तुलादान।

**तुलादान की कहानी और प्रस्तुति**

तुलादान के बारे में ज्यों-ज्यों चारों तरफ बातें फैलती गयी त्यों-त्यों लोगों में एक अदम्य कौतूहल और अनजाना आग्रह दिखाई देने लगा। सैकड़ों व्यक्ति नित्य आते और इस सम्बन्ध में तरह-तरह की जिज्ञासाएँ प्रकट करते रहे। माँ के दिव्य और अलौकिक जीवन से सम्बन्धित तुलादान की कहानी के प्रति लोगों का कौतूहल प्रकट करना स्वाभाविक है।

माँ के उत्सव के समय तुलादान का प्रस्ताव किसने और किसके द्वारा हुआ, यह बता देना आवश्यक समझती हूँ।

पुराणों में वर्णित है कि रुक्मिणी ने श्रीकृष्ण को तौल कर तुलादान किया था। यह बात अधिकांश लोग जानते हैं। मैं स्वयं जानती थी। सोलन में जब पहले-पहल जयन्ती उत्सव के बारे में चर्चा चली तब माँ के इस उत्सव में अगर तुलादान भी किया जाय तो कैसा हो, इस बारे में मेरे मन में प्रश्न उत्पन्न हुआ था। यद्यपि उस समय इस सम्बन्ध में मुष्टिमेय व्यक्तियों के बीच बातचीत चलती रही, तद्यपि कई लोग विशेष रूप से कमला, रमा, लक्ष्मी आदि इस सम्बन्ध में अत्यन्त उत्साह और आग्रह प्रकट करती रही। यद्यपि जयन्ती उत्सव में कार्यक्रम हो रहा था, पर जयन्ती उत्सव के उपलक्ष्य में संगृहीत रकम से यह अनुष्ठान हो, ऐसी मेरी इच्छा नहीं थी। मेरा विचार था कि व्यक्तिगत रूप से जो लोग जो कुछ भी संग्रह कर सकें, उसके द्वारा ही हो। यही

मेरी वास्तविक इच्छा थी। यही वजह है कि बाहरी लोगों की तो दूर की बात आश्रम के लोगों से इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा गया था। दस व्यक्तियों द्वारा संगृहीत अर्थ के द्वारा जो विराट उत्सव होने वाला है और दस व्यक्तियों के परामर्श के अनुसार जिस उत्सव का संचालन होगा, वहाँ मेरी व्यक्तिगत इच्छा को पूर्ण करना न्याय संगत नहीं है, इस बात को मैं अच्छी तरह समझती थी। इसके अलावा ऐसा भी हो सकता है कि कुछ लोग इसे पसन्द भी न करें। इस तरह की आशंका मेरे मन में उत्पन्न हुई थी। फलस्वरूप सोलन से आने के बाद जब मुझे कभी-कभी यह समाचार मिलता था कि कमला, रमा और लीला बड़े उत्साह के साथ तुलादान के लिए विभिन्न सामग्रियाँ संग्रह कर रही हैं, तब मैं बार-बार सतर्क कर देती थी कि किसी से जबर्दस्ती कुछ मत लेना। अगर कोई स्वेच्छा से कुछ देता हो तो ठीक है।

महोत्सव प्रारम्भ होने के कुछ दिन पूर्व जब मैं दिल्ली में थी तब योगी भाई और टेहरी के महाराजा के सामने इस बारे में चर्चा करने पर उन लोगों ने तुलादान की बात सभी भक्तों में प्रचारित करने की सलाह दी। महाराजा ने कहा कि इतना बड़ा और एक विशिष्ट अनुष्ठान अगर सर्व साधारण को न ज़ता कर किया गया तो इससे दो बातें पैदा होंगी। पहली यह कि लोग दुःखित होंगे, दूसरी यह कि एक ऐसे महान् कार्य में वे भाग लेने से वंचित रह गये, इसका भी अफसोस उन्हें होगा। इसके बाद निमंत्रण-पत्र कार्य-क्रम छपवाते समय पुनः वही बातें महाराजा ने कही।

मेरे मन में इस सम्बन्ध में एक आशंका थी। वह यह कि अगर सर्वसाधारण में तुलादान की बात प्रचारित कर दी जायगी तो उस समय एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होगी जो सम्हले न सम्हलेगी। इन सभी बातों पर अच्छी तरह विचार करने के पश्चात् महाराजा

साहब के परामर्श के अनुसार कार्य-क्रम में 'तुलादान' शब्द के स्थान पर 'तुला' शब्द छपवाया गया ताकि 'दान' के सम्बन्ध में जनसाधारण में किसी प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न न हो।

तुलादान एक विशेष दुरूह अनुष्ठान है, इस सम्बन्ध में मेरी कोई धारणा नहीं थी। इसके पहले ब्रह्मचारी मोहनानन्द जी के तुलादान उत्सव में भी माँ के साथ हम सब बहुत से लोग वहाँ मौजूद थे। उसमें देखा गया था—साधारण बात रही।

इस बार काशी आने पर स्थानीय पण्डित श्री नारायण साहित्याचार्य तथा श्री नरेन काव्यतीर्थ जो के साथ इस बारे में विशद रूप से चर्चाएं हुईं तब ऐसा लगा कि तुलादान वास्तव में एक विराट अनुष्ठान है। इस सम्बन्ध में पौराणिक शास्त्रों में विशद रूप से विधि-विधानों का उल्लेख किया गया है। बहरहाल, विस्तार पूर्वक जान लेने के बाद सभी लोगों ने एक स्वर से कहा कि जब इस कार्य के लिए अग्रसर हुए हैं तब इसे कर डालना उचित होगा और सम्पूर्ण रूप से शास्त्रीय विधान के अनुसार ही करना चाहिए। इसके साथ ही यह भी तय किया गया कि इस उत्सव के विविध अनुष्ठानों में स्थानीय तथा महाराष्ट्रीय ब्राह्मण भाग ले रहे हैं, इसलिए यह अनुष्ठान बंगाली पण्डितों द्वारा अनुष्ठित किया जाय। इस निश्चय के अनुसार श्री साहित्याचार्य जी को आचार्य पद पर वरण किया गया।

२४ को तुलादान होगा, इसीलिए कन्यापीठ के ठीक सामने एक मण्डप बनवाया गया। अधिकांश लोगों की इच्छा थी कि पण्डाल या अन्य किसी प्रशस्त स्थान में अगर यह अनुष्ठान हो तो अधिक से अधिक लोग देख सकते हैं। इधर मैं यह चाहती थी कि इस तरह का कोई उत्सव आश्रम के बाहर हो। बहरहाल

कन्यापीठ के ठीक सामने १२ हाथ × १२ हाथ एक वेदी जिसकी ऊँचाई एक हाथ थी, बनवायी गयी। इसके चारों ओर एक प्रकार की लकड़ी का प्रवेश द्वार बनाया गया। वेदी के ऊपर चटाई का छाजन लगाकर ऊपर से सफेद कपड़े का आच्छादन बनाया गया। इस वेदी के मध्यस्थल में ५ × ५ × १ हाथ ऊँची एक और वेदी बनायी गयी। मण्डप के भीतर पूर्व-पश्चिम ५ हाथ ऊँचा और मोटे-मोटे दो लकड़ी के स्तंभ गाड़े गये। इनके ऊपर उसी नाप की एक मोटी लकड़ी का बीम लगा दिया गया। उसके साथ ही २ × २ हाथ वर्गाकार दो पल्ले लगाये गये। प्रत्येक कोण में विचित्र वर्ण में ध्वजा-पताका, आईना, चंवर, घुंघरू बाँध दिये गये। एक भव्य दृश्य बन गया। मण्डप के मध्य में ईशान कोन में एक चतुष्कोणवाली छोटी वेदी है। पूर्व की ओर चतुष्कोण में सामवेदीय यज्ञकुण्ड, उत्तर की ओर पद्माकार अथर्ववेदीय यज्ञकुण्ड, पश्चिम में गोलाकार यजुर्वेदीय यज्ञकुण्ड और दक्षिण की ओर अर्द्धचन्द्राकार ऋग्वेदीय यज्ञकुण्डों का निर्माण किया गया। समस्त वेदियों और कुण्डों को गोबर से खूब अच्छी तरह लीप दिया गया। तुलादान का आयोजन अनुष्ठान के एक दिन आगे रात तक चलता रहा। तुलादान के लिए इतना बड़ा विराट आयोजन आज के जमाने में सुनने में नहीं आता है जबकि तुलादान—उत्सव की बात अक्सर सुनने में आती है। असली बात तो यह है कि शास्त्रीय विधान के अनुसार आजकल कोई करता नहीं।

पहले मेरी यह इच्छा थी कि माँ के शरीर का वजन सिर्फ सोना या चाँदी के द्वारा की जाय। बाद में साहित्याचार्य जी ने बताया कि सोना-चाँदी के अलावा अष्टधातु, अन्न, वस्त्र, घृत, मधु आदि द्वारा भी तुलादान करने की विधि है। उसी के अनुसार यह सब द्रव्य समूह भी संग्रह किया गया।

अनुष्ठान वाले दिन सवेरे माँ के कमरे में टेहरी के महाराजा, डा० पन्नालाल और उनकी लड़की लीला आदि थे। इसी समय पन्नालालजी ने माँ से दान के सम्बन्ध में प्रश्न किया। किन्तु माँ प्रत्युत्तर में बिना कुछ कहे अपने ख्यालों में बाथरूम की ओर जाती हुई बोलीं—"दिन तो गुजरता जा रहा है। साथ में कुछ नहीं जायगा। दान करो जो जितना कर सको।"

दान के सम्बन्ध में सवेरे से माँ के निकट तरह-तरह की बात हो रही थी, इसलिए माँ के मुँह से ये बातें प्रकट हुईं। बातें पन्नालालजी और उनकी लड़की के कानों में जाते ही उनके अन्तर में धँस गयी। मैंने सोचा कि कहीं इन बातों का गलत अर्थ न लगाया जाय कि तुलादान के बारे में यह सब बातें कह रही हैं। यही वजह है कि मैं स्वयं जाकर माँ से पूछ आयी तब पन्नालालजी और लीला से कहा कि माँ ने वह बातें तुलादान के सम्बन्ध में नहीं कही है। दान अच्छा काम है, इसलिए माँ कह रही हैं कि दान करना कर्त्तव्य है। वे लोग बात समझ गये। फलस्वरूप पन्नालाल और लीला दोनों ने ही सोचा कि दान अगर करना ही है तो माँ का शरीर वजन करने के बाद ही करना सर्वश्रेष्ठ-दान होगा। जबकि उस समय सिर्फ कई घण्टे बाकी थे। इतने कम समय में कुछ किया जा सकता है या नहीं, इस सम्बन्ध में पन्नालालजी को सन्देह होने पर भी लीला अपने पिता से बार-बार कहती रही कि प्रयत्न करके देखा जाय, इसमें हर्ज क्या है ?

माँ का वजन केवल चाँदी से हो, यह बात पहले भी हुई थी और मेरे मन में यही इच्छा थी। किन्तु तुलादान की बात विशेष रूप न तो किसी से कही गयी, न आवश्यक सामग्रियों का हो संग्रह हो सका। इधर मैं बीमार पड़ी हूँ, इसलिए माँ के वजन के लायक चाँदी संग्रह नहीं हो सका। बहरहाल चाँदी से वजन किया जाय,

यह चर्चा एक बार चली थी, इसलिए लीला और पन्नालालजी चाँदी के संग्रह के लिए बाहर चले गये। तुलादान करने के ठीक समय के कुछ देर पहले एक सज्जन की सहायता से पौने दो मन चाँदी लेकर वे लोग लौटे। अधिकतर लोगों का ख्याल था कि माँ के शरीर का वजन लगभग इतना होगा, इसलिए इतनी चाँदी वे ले आये थे।

**तुलादान**

इधर प्रातःकाल से अनुष्ठान चल रहा था। कुसुम ब्रह्मचारी यजमान, साहित्याचार्य जी, आचार्य एवं २४ बंगाली पण्डित व्रती बने। आचार्य व्रतियों का वरण करके अनुष्ठान प्रारम्भ कर दिया गया। शान्ति कुंभ के ऊपर स्वर्ण निर्मित नारायण और यम की मूर्त्ति स्थापित करने के पश्चात् षोड़शोपचार में राजोचित ढंग से पहले पूजा हुई। पूजा और होम आदि में लगभग १।। बज गये। इधर सैकड़ों स्त्री-पुरुषों की भीड़ भोर से ही इस बात की प्रतीक्षा कर रही है कि कब माँ आयेंगी। सारा शहर मानों आज टूट पड़ा था। १२ बजने के काफी पहले ही आश्रम में, छत पर यहाँ तक कि इधर-उधर सर्वत्र लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गयी। स्थानाभाव के कारण न जाने कितने भक्त चिलबिलाती धूप में खड़े रहे। जनता शान्तिपूर्ण ढंग से शृंखलावद्ध रूप से इस अनुष्ठान को देख सकें, इसलिए पुलिस के लोग विशेष रूप से परिश्रम कर रहे हैं। अत्यन्त कठिनाई से तुला मण्डप के बाहर एक ओर साधु, महात्मा और ब्रह्मचारियों के लिए बैठने का स्थान ठीक किया गया। समस्त आश्रम आज जन-समुद्र बन गया था। जिन लोगों ने उस दृश्य को नहीं देखा है, उन्हें उस दृश्य को भाषा के द्वारा समझाने लायक शब्दों का आज भी निर्माण नहीं हुआ है। सैकड़ों भक्तवृन्द, बालक-बालिका, स्त्री-पुरुष, वृद्ध-वृद्धाएँ सभी की आकृतियों पर

उत्तेजना और आग्रह की छाप थी। विशिष्ट-विशिष्ट व्यक्ति भी अपने-अपने पद की मर्यादा भूलकर सभी से प्रतियोगिता करते हुए सामान्य स्थान पर, इस तपती दोपहरिया में कई घण्टों से खड़े हैं। कितना अपरिसीम उत्साह इनमें है! कितना अतुलनीय आनन्द है। माँ का इस प्रकार का एक अनुष्ठान वे लोग देखने पायेंगे, यह सब सोचते हुए अपने को धन्य समझ रहे हैं। काशी जैसे सुपवित्र तीर्थ क्षेत्र में, गंगा के किनारे, जगत्-जननी का इस प्रकार पुंखानुपुंख रूप में, शास्त्रीय विधि सम्मत तुलादान के उत्सव में योगदान देना कितने बड़े असीम सौभाग्य की बात है, भला इसमें किसी को सन्देह हो सकता है! माँ के जीवन की अजस्र अलौकिक घटनाओं के बारे में सभी सुन चुके हैं। पता नहीं आज क्या हो, सभी यही बात कह रहे हैं। सभी के मन में इसी बात की चिन्ता है।

पूजा और होम समाप्त हो जाने के बाद नारायण स्वामीजी और परमानन्द स्वामीजी माँ को लिवाने गये। माँ दोपहर के पहले से ही अपनी गुफा में जाकर सो गयी थीं। बुनी ने जाकर उन्हें गरद के कपड़े पहनाये। नारायण स्वामी और परमानन्दजी सहायता देकर माँ को ऊपर ले आये। आज माँ में एक अस्वाभाविक स्थिति देख रहा हूँ। आँखें ढपती जा रही है, शरीर जैसे पस्त है, बातों में अटपटापन है, चेहरे का भाव असाधारण है, आँखों से पानी गिर रहा है। यह असाधारण हालत देखकर मैं घबड़ा उठी। माँ के निकट जाकर हाथ जोड़ती हुई बोली—"माँ, क्या मैंने कोई अन्याय कर डाला है?"

धीरे-धीरे माँ को परमानन्दजी और अवधूतजी मण्डप में ले आकर दक्षिण के पल्ला पर बैठाया। माँ के दर्शन के लिए उद्ग्रीव सहस्रों जनता के कण्ठों से जय ध्वनि कर उठी। माँ तुलादण्ड में बैठती हुई स्पष्ट स्वर में बोलीं—'नारायण, नारायण।'

तुरन्त अन्नपूर्णा के मन्दिर से सिंहासन पर ६ नारायण शिलाएं ले आया गया। उन शिलाओं में संयोग से माँ का पैतृक नारायण शिला भी था। माँ की गोद में सिंहासन सहित शिलाएं रख दी गयीं। अब आचार्य ने आकर माँ के एक हाथ में नारायण की सुवर्ण मूर्त्ति और दूसरे हाथ में यम की मूर्त्ति रखी। माँ आसन पर बैठी रहीं। आँखों की स्थिति अस्वाभाविक रही। सम्पूर्ण आकृति पर एक अवर्णनीय भाव है।

तुलादान का कार्य आरम्भ हुआ। पहले कांसा की एक परात में ताम्रकुण्ड, पीतल की रेकाबी, चाँदी की थाली-कटोरी-रेकाबी-गिलास, आधा सेर सोना की पत्तरें और अन्य अष्ट धातुओं से पूर्ण किया गया। यह सब सामान रखने पर जब कमी पड़ी तब डा० पन्नालाल द्वारा लायी गयी चाँदी की दो सिल्लियाँ रखने पर वजन बराबर हुआ। चारों ओर तुमुल जय जयकार हर्षध्वनि हुई। फिर धीरे-धीरे वह सब सामान उतारकर अलग रख दिया गया। इसके बाद क्रमशः देहरादूनी-बासमती चावल, गेहूँ, जौ, उड़द, तिल, गाय का घी, फल, गरद और सूती कपड़े तथा चीनी से तौला गया। प्रत्येक बार वजन सम्पूर्ण होता रहा और जनता आनन्द से हर्ष ध्वनि कर उठती थी। लोगों में एक अपूर्व उत्तेजना थी। इस प्रकार दस वस्तुओं वजन करने की क्रिया समाप्त हुई। दीदीमाँ और माखन की इच्छानुसार बताशा और लाचोदाना से माँ को तौला गया। बचपन में माँ को दीदीमाँ अधिकतर तुलसी के पौधे के नीचे लेटा देती थी। इसीलिए माखन की इच्छा उत्पन्न हुई थी कि इस उपलक्ष्य में माँ को तौलकर उन सामग्रियों को लोगों में 'हरि की लूट' के रूप में लुटाया जाय। इसका व्यय भार माखन ने वहन किया। अन्त में पन्नालालजी द्वारा लायी गयी चांदी से माँ को तौला गया। इस प्रकार तुला-अनुष्ठान समाप्त हुआ।

तुला मण्डप की सारी सामग्री यहाँ तक कि काष्ठ निर्मित प्रवेश द्वार और तुलादण्ड भी आचार्य के घर भिजवा दिया गया। प्रत्येक व्रती को १२) रु० दक्षिणा तथा आचार्य को १०१) रु० और गोदान दिया गया।

दान की सामग्रियों में बरतन आदि के अलावा चावल, गेहूँ, जौ आदि सामान शास्त्रीय विधि के अनुसार ब्राह्मणों में वितरण किया गया। घी का उपयोग ब्राह्मण-भोजन में किया गया। कपड़े ब्राह्मणों और गरीबों में दान किया गया। चाँदी डा० पन्नालालजी की इच्छानुसार वृन्दावन के महाप्रभु के मन्दिर में उनके सेवा कार्य के लिए भेजा गया।

तुलादान के दूसरे दिन २५ ता० को तीसरे पहर पण्डितों की संवर्द्धना का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में की छतपर बंगाली, हिन्दुस्तानी, महाराष्ट्रीय, गुजराती आदि विभिन्न १५० ब्राह्मणों की टोली बैठी। पहले यह लोग कुछ देर तक शास्त्रीय चर्चा करते रहे। बाद में प्रत्येक ब्राह्मण को तुलादान सामग्री में से एक पीतल की रेकाबी, ताम्रकुण्ड, पीतल का सिंहासन, चाँदी का एक बरतन, स्वर्ण खण्ड मनु प्रणीत एक पुस्तक, फल, मिठाई और ४) रु० दक्षिणा स्वरूप भेंट किये गये।

उत्सव के अन्त में टेहरी की राजमाता के आग्रहानुसार शास्त्रीय विधि से चतुर्वेद पाठ एवं वसन्त-पूजा का प्रबन्ध हुआ।

**चतुर्वेद पाठ**

गंगा तट पर जिस वक्त ६० ब्राह्मण समवेत स्वर से वेद पाठ कर रहे थे, उस वक्त आश्रम का सम्पूर्ण वातावरण वेद ध्वनि से मुखरित हो उठा था। वेद पाठ समाप्त होने के बाद सभी पण्डितों को ४-४ रुपये दक्षिणा, माला-चन्दन, फल-मिठाई देकर

स्वागत किया गया। दूसरे दिन तुलादान के मण्डप में ही पूजा का आयोजन किया गया और उसके बाद लोग शान्तिवारि प्राप्त कर कृतकृतार्थ हुए।

जयन्ती उत्सव के उपलक्ष्य में योगी भाई की इच्छानुसार समस्या पूर्त्ति परीक्षा और पुरस्कार वितरण का प्रबन्ध हुआ था। काशीस्थ संस्कृत अध्ययन करनेवाले कुछ छात्रों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। विचारक थे सोलन के राजपण्डित महामहोपाध्याय मथुरा प्रसादजी। प्रथम पुरस्कार २००) रु०, द्वितीय पुरस्कार १००) रु० और तृतीय पुरस्कार ५०) रु० था। प्रस्तुत पुरस्कार वितरण पण्डित संवर्द्धना के साथ किया गया। पुरस्कार प्राप्त छात्रों को जब माँ के निकट ले जाया गया तो उन्होंने अपने हाथ से इन लोगों के गले में माला पहनायी।

१६ मई जह्नु सप्तमी के दिन विशेष समारोह के साथ गंगा पूजा का प्रबन्ध किया गया था। गंगा में एक मन दूध अर्पित किया गया और इस पार से उस पार तक पुष्प माला गंगा को पहनायी गयी। यह दृश्य बहुत ही अपूर्व रहा। गंगा-पूजा करने की प्रथा हमारे देश में अनेक स्थानों में प्रचलित है, किन्तु इस तरह का समारोह और वह भी इस रूप में कहीं किया जाता है या नहीं, इसमें सन्देह है।

**गंगा-पूजा**

दूसरे दिन उत्सव के उपलक्ष्य में काशी कुष्ठशाला के ७० रोगियों को तृप्ति के साथ भोजन कराकर वस्त्र दान दिया गया। पड़ोस के दरिद्र बालकों इस दिन प्रेम से स्वागत किया

**कुष्ठ-सेवा**

गया। उन्हें आश्रम के भीतर आसन पर बैठाकर भरपेट भोजन कराकर वस्त्र बाँटे गये।

तुलादान के दिन सवेरे १०८ कुमारियों की पूजा हुई। उत्सव के बाद भी पुनः एक दिन पुनः १०८ कुमारियों की सेवा का इन्तजाम किया गया। कुमारी-पूजा हमारे आश्रम के प्रत्येक उत्सव का एक अंग सा बन गया है। फलस्वरूप इस उत्सव में भी वह छूटा नहीं।

**कुमारी पूजा**

उत्सव के बीच दो दिन अखण्ड तुलसीदास कृत रामायण का पाठ हुआ। उत्सव के अन्त में एक सप्ताह तक अखण्ड रामायण पाठ हुआ। एक दिन अन्नपूर्णा मिल के स्वत्वाधिकारी की पत्नी के आग्रह पर नवाह का प्रबन्ध किया गया। इस कार्यक्रम का सम्पूर्ण व्यय उन्होंने दिया।

**अखण्ड रामायण पाठ**

१७ मई को भोलानाथजी का तिरोधान तिथि उत्सव मनाया गया। आश्रम की लड़कियाँ उषाकाल से अखण्ड रूप में ६ घण्टे तक नाम लेती रहीं। दोपहर को १०८ साधुओं को भोजन कराकर उन्हें वस्त्र भेंट दिये।

एक दिन अन्नपूर्णा मन्दिर और स्मृति मन्दिर में कमलाकान्त ब्रह्मचारी और चित्तरंजन इन दोनों ने मिलकर शिव को एक लाख विल्व पत्र अर्पण किया। उत्सव के अन्त में दो दिन नित्य अढ़ाई सौ ब्राह्मणों को भोजन कराया गया। इसके अलावा विभिन्न दिनों में पास पड़ोस के दरिद्र स्त्री-पुरुष, शहर के दरिद्र नारायण, दण्डी संन्यासी आदि लोगों को भोजन

**एक लाख विल्व पत्र द्वारा अर्चना**

कराया गया। अगर इस तरह लिखा जाय तो बहुत सी बातें लिखनी पड़ेंगी। फलस्वरूप संक्षेप में इतना लिख देती हूँ कि माँ के इस उत्सव में कहीं किसी प्रकार त्रुटि नहीं रह सकती। स्वयं जगज्जननी जहाँ उपस्थित हैं, वहाँ उनकी असीम कृपा से कुछ त्रुटि का न रहना स्वाभाविक है। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

जयन्ती महोत्सव के दरम्यान विभिन्न अनुष्ठानों में माँ की तिथि पूजा का आयोजन ही सर्वश्रेष्ठ आयोजन हुआ था, इसमें किसी को सन्देह नहीं है। २ मई, फसली १९ वैशाख रात ठीक ३ बजे माँ का जन्म हुआ था। इसी उपलक्ष्य में उसी दिन रात को आश्रम के वासन्ती-मण्डप में माँ की पूजा ससमारोह आरम्भ हुई। रात को लगभग दो बजे पूजा आरम्भ हुई। माँ को पूजा मण्डप में ले आया गया। सभी लोगों की इच्छा थी कि पूर्वोल्लिखित नव निर्मित सिंहासन पर माँ बैठें, किन्तु विशेष प्रार्थना करने पर भी वे सिंहासन पर न बैठकर उसकी सीढ़ियों पर बैठ गयीं।

**श्री श्री माँ की तिथि पूजा**

इस बार की पूजा का विशेष उल्लेखनीय विषय यह है कि प्रत्येक वर्ष जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जब माँ की पूजा प्रारम्भ होती है तब वे सिर से पैर तक कपड़े ओढ़कर लेट जाती हैं और पूजान्त में जब तक माँ को पुकारकर उठाया नहीं जाता तब तक शरीर में न किसी प्रकार का स्पन्दन होता है और न अनुभूति। इस बार माँ लगातार तीन घण्टे तक बैठी पूजा ग्रहण करती रहीं। ब्रह्मचारी शुकदेव (कुसुम) पूजा करता रहा। पूजा के समय अनेक विशिष्ट व्यक्ति मौजूद थे। महामहोपाध्याय कविराजजी भी इस उम्र में उषाकाल तक बैठे रहे। पूजा के बाद उन्होंने माँ के चरणों में पुष्पांजलि दी।

२ मई को रात के अन्तिम पहर से वासन्ती मण्डप में अखण्ड रूप से जप आरम्भ हुआ। यह जप लगातार २६ दिनों तक चलता रहा। इसी के साथ ही अन्नपूर्णा मन्दिर के नाट मन्दिर में भी तीन दिनों तक अखण्ड माँ-नाम कीर्त्तन होता रहा। २७ मई तक नित्य नियमित रूप से वासन्ती मण्डप में माँ के चित्र की पूजा होती रही तथा नियमानुसार भोग दिया जाता था। इसके अलावा प्रत्येक शाम और सवेरे भक्तगण माँ के समक्ष आरती करते थे। शाम के समय माँ प्रायः छत पर चहल कदमी करती रहतीं। मुख्य रूप से वहीं आरती होती थी। उसी समय सैकड़ों भक्त आग्रह के साथ माँ की आरती देखने के लिए एकत्रित होते थे। शत-शत कण्ठ से "आरत करे चन्द्र तपन........" आरती-गीत से मानों आकाश-बतास मुखरित हो उठता था।

**अखण्ड जप और कीर्त्तन**

२७ मई की रात को पण्डाल में ही मातृपूजा का आयोजन हुआ। आज ही मूल तिथि पूजा है। आश्रम के भीतर कहीं ऐसा उपयुक्त स्थान नहीं है जहाँ कम से कम दो हजार व्यक्ति बैठकर पूजा में योगदान दे सकें। फलस्वरूप पण्डाल में ही पूजा का आयोजन किया गया। पूजा के आयोजन की सुविधा के लिए रात १०॥ बजे के बाद पण्डाल खाली कर दिया गया। पुनः सारा इन्तजाम करने के बाद रात पौने दो बजे पण्डाल का प्रवेश द्वार खोल दिया गया। देखते-देखते कुछ ही देर में दो हजार व्यक्ति आकर पण्डाल में इकट्ठे हो गये। सभी लोगों के देखने और बैठने की सुविधा के लिए टेहरी के महा-राजा, श्री बी० के० शाह और सोपारी साहब बड़े परिश्रम से प्रबन्ध करते रहे। इन लोगों का उत्साह और उद्यम सचमुच प्रशंस-नीय है।

**तिथि पूजा का विस्तृत विवरण**

नारायण स्वामी के नेतृत्व में पहले से ही पूजा का आयोजन ठीक से हो रहा है। नव निर्मित विशाल सिंहासन पूजा स्थान के बीच में रखा गया है। पश्चिम ओर महात्मागण बैठे हैं। समस्त पूजा स्थान और पण्डाल फूल-पत्ते आदि से सजाया गया है। पण्डाल से आश्रम तक सारा मार्ग फूल-पत्तों से बहुत सुन्दर ढंग से सजा है।

धीरे-धीरे पूजा का समय समीप आ गया। रात को ठीक तीन बजे एक सुसज्जित पालकी पर माँ को बैठाया गया और फिर कीर्त्तन तथा बाजे-गाजे के साथ जुलूस के रूप में पूजा स्थान में ले आया गया! माँ पूजा मण्डप में आकर सिंहासन की सीढ़ियोंपर बैठ गयीं। अन्त में श्री श्री हरि बाबाजी तथा अवधूतजी के आग्रह पूर्ण प्रार्थना करने पर माँ सिंहासन पर बैठीं। लगभग ५ बजे प्रातःकाल पूजा समाप्त हुई और तब आरती पुष्पांजलि हुई। इसके बाद क्रमबद्ध रूप में उपस्थित भक्त नर-नारी एक-एक करके माँ के निकट आकर प्रणाम करने के बाद प्रसाद लेते हुए चले गये। इस प्रकार प्रसाद वितरण में दो घण्टे लगे। माँ चुपचाप सिंहासन पर बैठी रहीं। जब सभी लोग प्रणाम निवेदन कर चुके तब माँ को धीरे-धीरे उठाकर पुनः पालकी पर बैठाकर कीर्त्तन करते हुए आश्रम में ले आया गया। इस समय माँ की आकृतिपर एक असाधारण भाव था। समस्त मुख मण्डल में अपूर्व ज्योति चमक रही थी। भाव मानों समाहित भाव था। माँ की यह आकृति अविस्मरणीय रहेगी।

आश्रम में आने के बाद माँ चुपचाप गुफा में जाकर सो गयीं। देखनेपर ऐसा लगता था जैसे वे किसी और लोक में हैं, इस जगत् से उनका कोई सम्पर्क नहीं है। दोनों आँखें अर्द्ध निमीलित, कण्ठ-स्वर में जड़ता का आभास।

आज तिथि पूजा के बाद उत्सव समाप्त हो गया। सभी के

अन्तर में न जाने कैसी एक उदासीनता; विषाद के भाव उत्पन्न हो गये। पिछले एक साल से जो लोग इतने बड़े आयोजन के लिए परिश्रम कर रहे थे, योजना बना रहे थे, आज वह महोत्सव समाप्त हो गया। न जाने कितने भक्त, दूर-दूर के देशों से शहरों से आनन्दपूर्ण भावनाएँ लेकर माँ, के चरणों में आये थे, आज उसका अवसान हो गया।

**जयन्ती उत्सव या राजसूय यज्ञ**

सभी एक स्वर से कह रहे हैं—"जो देखा, जो पाया उसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती।" श्रद्धेय त्रिपुरादि चक्रवर्ती जी तो पूजा मण्डप में बैठे उच्छ्वसित भाव से बोले—"महाभारत और पुराणों में राजसूय यज्ञों की कहानियाँ पढ़ चुका हूँ, सुना भी है। किन्तु आज प्रत्यक्ष कर दिया।"

सचमुच आज के युग में इस तरह का विराट उत्सव सम्भव है, इस तरह का पुंखानुपुंख रूप में विधिवत् राज-यज्ञादि सम्भव है, यह स्वयं अपनी आँखों से देखे बगैर कोई कल्पना नहीं कर सकता। मैं तो शय्याशायी हूँ। सच पूछिये तो अपने शरीर से कोई भी कार्य नहीं कर पाती। यह बात सच है कि सभी श्रेणी के भक्तों से जिस प्रकार अपरिसीम सहायता एवं उत्साह प्राप्त कर सकी, वह वास्तव में अकल्पनीय है। अपूर्व प्रीति और भ्रातृ भावापन्न होकर लोगों ने इस कार्य में जिस ढंग से मदद दी है, वह भूलने लायक नहीं है। सच पूछिये तो माँ का कार्य माँ स्वयं ही असीम कृपा करके सुष्ठु रूप में समाधान करती रहीं, हम सब तो निमित्त मात्र बनकर यंत्रवत् काम करते रहे।

अब विदा की बेला है। एक-एक करके सभी माँ को प्रणाम

करके आशीर्वाद प्राप्त करते हुए अपने-अपने घर वापस जा रहे हैं।

**विदा की बेला**

सिर्फ हरि बाबाजी, अवधूतजी, चक्रपाणिजी २ ४ दिन ठहर कर हृषीकेश चले जायेंगे। सुना कि स्वयं माँ भी ३–४ दिन बाद हृषीकेश चली जायँगी। भइया के साथ बातचीत हो गयी है कि मैं कुछ दिनों बाद बम्बई चली जाऊँगी। यह आनन्द का बाजार टूट गयी, मिलन की बेला समाप्त हो गयी, सभी के अन्तर में उदासीनता के बादल घिर आये हैं। उत्सव की पूर्णता समाप्त हो गयी।

## ५ जून, १९५६

आज माँ पंजाब मेल से प्रतापगढ़ होती हुई हरिद्वार गयीं।

## ८ जून, १९५६

आज भोर के समय मैं बम्बई जाने वाली हूँ। किन्तु अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण यात्रा स्थगित कर देनी पड़ी। तार द्वारा समाचार मिला कि माँ हृषीकेश ६ ता० की शाम को पहुँच गयीं।

## १० जून, १९५६

मेरी तबीयत क्रमशः खराब हो रही है। साथ ही बुखार भी आ रहा है। आज बुखार १०४ डिग्री है। कमजोरी, उल्टी आदि की शिकायतें हैं। डा० दास गुप्त इलाज कर रहे हैं।

आज परमानन्द स्वामीजी के पत्र से माँ के बारे में विस्तार से

समाचार मिला। हरिद्वार स्टेशन से माँ को मोटर द्वारा हृषीकेश ले जाया गया। हृषीकेश में गंगा पार करने के लिए पहले से ही एक लंच की व्यवस्था थी। गंगा उस पार परमार्थ निकेतन अति सुन्दर विशाल आश्रम है। स्वामी शुकदेवानन्द जी इसके मण्डलेश्वर हैं। स्थान अत्यन्त मनोरम है। पास ही गीता भवन और स्वर्गाश्रम है। इस आश्रम में प्रत्येक वर्ष २-३ माह विशेष रूप से सत्संग का आयोजन होता है। इस बार इसी उपलक्ष्य में श्री श्री हरिबाबा जी, स्वामी अखण्डानन्द जी यहाँ आये हैं। माँ को भी इसी कार्य के लिए विशेष प्रार्थना करते हुए ले जाया गया है। आश्रम के भीतर एक छोटा सा भवन अलग से माँ और उनके साथ गये लोगों के लिए छोड़ दिया गया है। आश्रम का वातावरण देखकर सभी प्रसन्न हैं।

**हृषीकेश के परमार्थ निकेतन में माँ**

## १२ जून, १९५६

मेरा बुखार अभी तक उतरा नहीं है। मलेरिया है जानकर डा० दासगुप्त और डा० भार्गव दोनों आपस में परामर्श करने के बाद मुझे तीन दिन कुनैन का इंजेक्शन देने को सोच रहे हैं।

दिल्ली में जो डाक्टर मेरा इलाज करते हैं, वे यानी डा० बलरामजी अपने व्यक्तिगत कार्य के सिलसिले में बम्बई गये हैं। वहाँ से वे और भइया बराबर फोन-तार से मेरा हालचाल नित्य जान लेते हैं। डा० बलराम ने वहीं से सूचित किया है कि मुझे कुनैन का इंजेक्शन दिया जाय। माँ को नित्य मेरे बारे में समाचार भेजा जा रहा है।

## १४ जून, १९६६

कुनैन के तीन इंजेक्शन लगने पर यद्यपि मेरा बुखार अपेक्षाकृत कम हो गया है, पर बाकी शिकायतें ज्यों की त्यों है।

तीसरे पहर मैं लेटी हुई थी। अचानक सुना कि माँ आयी हैं। थोड़ी देर बाद देखा—माँ सीधे मेरे कमरे में चली आ रही हैं। मैं यह देखकर अवाक् रह गयी। अचानक माँ इस तरह चली आयेंगी, इस बात का विश्वास स्वप्न में भी किसी को नहीं था। बहरहाल, सुना कि ५-६ दिनों बाद माँ पुनः हृषीकेश वापस चली जायँगी। यह भी पता चला कि हरि बाबाजी ने कहा है कि माँ एक बार काशी जाकर मुझे देख आयें और अगर संभव हो तो देहरादून में ले आयें। माँ की भी यही इच्छा है।

काशी में प्रत्यावर्त्तन

## १८ जून, १९६६

माँ की उपस्थिति से मैं कुछ स्वस्थ अनुभव कर रही हूँ। बुखार कम है और अन्य शिकायतों में कमी आ गयी है। डा० दासगुप्त भरसक मुझे शीघ्र चंगा करने के लिए यथासाध्य प्रयत्न कर रहे हैं। माँ भी मुझे नियमित रूप से खाने-पीने की हिदायत दे रही हैं। मैं यह अच्छी तरह अनुभव कर रही हूँ कि माँ की कृपा से ही क्रमशः स्वस्थ हो रही हूँ।

बम्बई में भइया और डा० बलराम से मेरे देहरादून जाने के बारे में बातचीत हो रही है। उन लोगों की सहमति प्रकट की कि अभी कुछ दिनों के लिए देहरादून चली जाऊँ और माँ के निकट कुछ दिन विश्राम करूँ। इसके बाद बम्बई आना ठीक होगा।

फलस्वरूप यही निश्चय किया गया कि अगले २० ता० को माँ के साथ देहरादून जाऊँगी। तुरत श्री श्री हरिबाबा जौर शुकदेवानन्द जी को तार से यह समाचार दिया गया।

## २० जून, १९५६

**देहरादून की ओर**

आज सवेरे माँ के साथ देहरादून रवाना हो गयी। पहले रिजर्वेशन पाने में कठिनाई हुई, पर बाद में भइया की कलकत्ता स्थित कम्पनी के मैनेजर श्री सरकार जी के प्रयत्नों से रिजर्वेशन प्राप्त हो गया। हमारे साथ चल रहे हैं—दीदी माँ, नारायण स्वामीजी, शोभा, उदास, उषा, मँझली दीदी, पानू आदि अनेक लोग। स्टेशन पर अमूल्य दादा की लड़की सती आयी थी हमें गाड़ी पर बैठाने के लिए। माँ उसे उसी हालत में अपने साथ देहरादून की ओर ले चलीं। माँ का सब कुछ असाधारण होता है। सती भी माँ के साथ जाने का मौका पाकर प्रसन्न हो उठी। लखनऊ में हरिराम आदि लोगों से मुलाकात हुई। कानपुर से हरेन्द्र और बिन्दु लखनऊ आकर भेंट कर गये।

## २१ जून, १९५६

**एक विशिष्ट घटना**

आज सवेरे हरिद्वार पहुँच गयी। यहाँ से गाड़ी रवाना होने पर सती, उषा, पानू आदि मिलकर माँ के सामने चिट्ठियाँ पढ़कर सुना रहे हैं। माँ अपने ख्याल के अनुसार जवाब दे रही हैं। रामनाथ बसाक नामक एक सज्जन ने अपने पत्र में प्रश्न किया है कि उनकी दीक्षा कब होगी? माँ अचानक अपने ख्याल में बोल उठीं—'१८ ता० को।"

मैं उत्सुक होकर कुछ पूछ बैठी तो माँ ने प्रश्नकर्त्ता को लिखने को कहा—"१८ से जो नाम जो रूप अच्छा लगे, उसे लेकर बैठो।"

उस समय वहाँ नारायण स्वामीजी भी मौजूद थे। वे तुरत पत्रा खोल कर देखने लगे कि १८ श्रावण क्या कोई विशेष दिन है। मैंने गौर किया कि माँ का भाव कुछ भिन्न रूप में है। माँ ताली बजाती हुई बोलीं—"जाओ, ख्याल होने पर दिन-तारीख भी बता दूँगी।"

इस मामले में कोई विशेषता है, इस बात को हम सब समझ गये।

गाड़ी जब देहरादून के स्टेशन पर आकर ठहरी तो वहाँ किसी को न देख हम चकित रह गये। अपने आने को सूचना हम पहले ही भेज चुके थे। बाद में तार भी भेजा गया था, फिर भी कोई नहीं आया है, बड़ा आश्चर्य हुआ। खैर, हमलोग स्वयं टैक्सी ठीक करके किशनपुर के आश्रम में आये। यहाँ आने पर पता चला कि चिट्ठी ठीक समय से आ गयी, पर बाद में जो तार भेजा गया था, उसमें २१ के बदले २५ ता० लिखा था। यही गड़बड़ी हो गयी। माँ मुझे अपने साथ लेकर सीधे कल्याणवन के बाग में गयीं। यहाँ आकर देखा कि हरि बाबाजी यहाँ आ सकते हैं, इसलिए बागवाले भवन का अच्छे ढंग से निर्माण किया गया है। लगभग दो हजार रुपये लगाकर पाखाना, बाथरूम, सेप्टीटैंक आदि बनवाया गया है। बरामदे को कड़े तार की जाली से घेर दिया गया है। सामने बाग में काफी हिस्सा ईंट से घेर दिया गया है। समस्त परिवेश साफ सुन्दर और मोहक बना दिया गया है। यहाँ का सारा काम स्वरूपानन्द जी देखते हैं। माँ का चारों ओर ख्याल रहता है। कैसे क्या करने पर हरि बाबाजी तथा उनके साथ आनेवाले लोगों को सुविधा होगी, इस सम्बन्ध में माँ स्वरूपानन्दजी को निर्देश देती

रहीं। बाद में आश्रम में वापस आने पर मेरे रहने के सम्बन्ध में निर्देश देती रहीं।

आज दोपहर को भोजनादि के पश्चात् हम आराम करते रहे। ठीक ४ बजे माँ मोटर द्वारा हृषीकेश रवाना हो गयीं। भूपेन की नयी शादी हुई है, यहाँ के एक भक्त डा० मुखर्जी की लड़की के साथ। इस उपलक्ष्य में उसे एक छोटी गाड़ी मिली है। उसी गाड़ी पर वह माँ को बैठाकर ले चल रहा है। साथ में हंसा देवी और लक्ष्मी देवी की गाड़ी में नारायण स्वामीजी, शोभा, उदास, हेमी दीदी, उषा आदि गये। यह तय हुआ कि पानू माँ को पहुँचाकर आज रात को वापस आ जायगा।

## २२ जून, १९६६

आज पानू दोपहर को हृषीकेश से वापस आ गया। सुना कि कल रास्ते में नदी पर का पुल टूट जाने के कारण मोटर को उस पार ले जाने में बड़ी दिक्कत हुई थी। नदी में तेज धार थी। साथ में माँ के रहने के कारण भूपेन का नया ड्राइवर पानी के ऊपर से गाड़ी पार करने का साहस कर सका था। हृषीकेश में गंगा इस पार माँ के लिए मोटर वोट और माल ले जाने के लिए नाव तैयार थी। गंगा उस पार माँ के लिए श्री श्री हरि बाबाजी, स्वामी अखण्डानन्द जी, स्वामी शुकदेवानन्द जी आदि लोग प्रतीक्षा कर रहे थे। ज्योंही माँ की मोटर किनारे लगी त्योंही सभी लोग माँ की अभ्यर्थना करते हुए परमार्थ निकेतन में ले गये। यहाँ सत्संग जारी था। माँ को सीधे वहीं ले जाया गया। वहाँ कुछ देर रुकने के बाद माँ को निर्दिष्ट कमरे में ले जाया गया। यहाँ क्रमश: तीन मकान हैं। एक में श्री श्री हरि बाबाजी, दूसरे में स्वामी अखण्डा-

नन्दजी और तीसरे में माँ के लिए इन्तजाम किया गया है। स्वामी शुकदेवानन्द जी स्वयं आकर लोगों का हालचाल जान ले रहे थे।

यह पहले तय हुआ था कि २–३ दिन बाद श्री श्री हरि बाबाजी के साथ माँ देहरादून वापस लौट आयेंगी। पानू मेरी ओर से स्वामी अखण्डानन्द जी तथा शुकदेवानन्द जी से एक बार देहरादून आने के लिए विशेष प्रार्थना जता आया है।

कल शाम को भूपेन की गाड़ी से पानू के लौटने की बात थी। साथ में लक्ष्मीजी का लड़का रज्जू भी अपनी गाड़ी से जा रहा था, किन्तु कुछ दूर जाने के बाद रज्जू गलत राह पर निकल गया। इधर रात हो गयी थी, राह बहुत खराब थी, इसलिए लाचारी में हृषीकेश वापस लौटने के लिए भूपेन और पानू को मजबूर होना पड़ा। परमार्थ निकेतन से पारापार होने के लिए शाम को ७ बजे के बाद कोई नाव नहीं मिलती। किन्तु उस समय रात के ८ बज चुके थे। भूपेन और पानू ने घाट के किनारे आकर देखा कि स्वामी प्रकाशानन्द मोटरवोट लेकर घाट पर मौजूद हैं। यह देख कर यह लोग चकित रह गये। मानो माँ ने यह इन्तजाम कर रखा था। वर्ना ऐसे समय नाव मिलती नहीं। सचमुच माँ की कृपा रहने पर असंभव भी संभव हो जाता है।

इधर लक्ष्मीजी को जब यह ज्ञात हुआ कि उनका लड़का अकेले देहरादून चला गया है तब वे रोने-धोने लगीं। माँ स्वयं उसे सान्त्वना देती रहीं और अधिक रात तक तरह-तरह की बातें करती रहीं।

आज सवेरे आते समय पानू हरि बाबाजी से यह सुन आया है कि आगामी रविवार शायद देहरादून जाना स्थगित भी हो सकता है। चूँकि इन दिनों देहरादून में काफी बारिश हो रही है इसलिए भक्तवृन्द और रासलीला पार्टी के लोग आने को उत्सुक

नहीं हैं। ऐसा भी संभव है कि वे लोग अभी ८–१० दिन माँ को लेकर हृषीकेश में ठहर जाँय। यह समाचार सुनकर मेरा मन बुझ सा गया। मुझे आशा थी कि शायद माँ २–३ दिन के भीतर वापस आ जायँगी।

## २४ जून, १९५६

कल शाम को अचानक यह समाचार प्राप्त हुआ कि माँ शायद आज भोर के वक्त हरि बाबाजी के साथ आ सकती हैं। इसलिए कल रात को ही सब कुछ सजाकर रख दिया गया। किन्तु जब सवेरे ९ बजे तक माँ नहीं आयीं तब पानू फोन द्वारा नारायण स्वामीजी से बातचीत करने के बाद यह आकर बताया कि पक्की तौर से माँ के आने की कोई बात तय नहीं हुई है। आश्चर्य की बात है कि हमलोग भोर से ही माँ की प्रतीक्षा में बैठे हैं। वहाँ स्वामी शुकदेवानन्दजो, हरि बाबाजी आदि सभी लोग कुछ दिन और ठहर जाने के लिए माँ से प्रार्थना कर रहे हैं। अब यह तय हो गया कि माँ वहाँ २९ ता० तक रुकेंगी।

यहाँ आने के बाद से मेरी तबीयत कुछ खराब हो गयी है। बुखार तो रोज ही आ रहा है। इसके अलावा मेरा यहाँ आना हरि बाबाजी की विशेष इच्छा पर हुआ है, इसलिए वे स्वयं एक बार मुझे देखने की इच्छा जाहिर कर चुके हैं।

**जयन्ती उत्सव की धारा की रक्षा**

काशी रहते यह निश्चय हुआ था कि अगले एक साल तक जयन्ती-उत्सव की धारा को कायम रखने के लिए प्रत्येक माह कृष्णा चतुर्थी के दिन जहाँ-जहाँ सम्भव हो, वहाँ-वहाँ विशेष रूप से सत्संग और संयम की व्यवस्था की जाय। माँ जहाँ मौजूद रहेंगी, वहाँ विशेष रूप से उस

धारा की रक्षा का प्रयत्न किया जायगा। परसों कृष्णा चतुर्थी हैं, उसी उपलक्ष्य में यहाँ दिन भर सत्संग और कीर्त्तन का • प्रबन्ध किया गया है। इसी उपलक्ष्य में यदि माँ हरि बाबाजी आदि को साथ लेकर यहाँ चली आतीं तो अच्छा होता। सभी लोगों की इच्छा है। माँ के निकट यह प्रार्थना भेज दी गयी।

## २५ जून, १९५६

रात को माँ ने हीरू को यहाँ भेज दिया। कल भोर के वक्त माँ हरि बाबाजी को साथ लेकर यहाँ आयेंगी। हीरू सत्संग में भजन-कीर्त्तनादि करेगा।

## २६ जून, १९५६

आज सवेरे लगभग ८ बजे टेहरी महाराज की गाड़ी से माँ, नारायण स्वामीजी, सती, उदास यहाँ आये। टेहरी की दूसरी गाड़ी से, एक जीप में हरि बाबाजी के एक साथी विभु और हरि बाबाजी आये। मेरे कमरे में बैठकर काफी देर तक बातें होती रहीं। ज्ञात हुआ कि अब उनका हृषीकेश वापस जाने की इच्छा नहीं है। माँ को भी देहरादून रह जाने लिए कहा। हम सब यह सुनकर अवाक् रह गये। उधर परमार्थ आश्रम के लोग इस आशा में रहेंगे कि माँ शाम तक लौट आयेंगी। संभवतः स्वामी शुकदेवानन्द जी विशेष रूप से दुःखित होंगे, इसलिए यह राय किसी को पसन्द नहीं आयी। आदर्श की दृष्टि से यह ठीक नहीं था। फलस्वरूप अन्त में यह निश्चय हुआ कि माँ कल सुबह वहाँ सभी से

देहरादून में माँ

कहकर देहरादून वापस आ जायँगी। इसके अलावा माँ के यहाँ आने का विशेष प्रयोजन है। वह इसलिए कि बम्बई से भइया एक दिन के लिए माँ का दर्शन करने यहाँ आ रहे हैं। इसके बाद भइया कुछ दिनों के लिए भारत के बाहर चले जायेंगे। सौभाग्य से हरि बाबाजी ने भी माँ का इस समय देहरादून लौट आने का प्रस्ताव स्वीकार किया। वे स्वयं जाकर स्वामी शुकदेवानन्द जी को समझा देंगे, ऐसा उन्होंने वायदा किया।

तीसरे पहर ठीक ४ बजे माँ हरि बाबाजी आदि को लेकर हृषीकेश वापस चली गयीं। इस बार उनके साथ गये—नारायण स्वामीजी, उदास, पुष्प और हीरू।

## २७ जून, १९५६

सबेरे ८ बजे के भीतर माँ यहाँ आ गयीं। यह निश्चय हुआ है कि हरि बाबाजी बाकी लोगों को लेकर ३० ता० की भोर को यहाँ आ जायँगे। इस बार यहाँ आकर वे आश्रम के ऊपर पितृ मन्दिर में ठहरेंगे, ऐसा वे कह गये हैं। रामलीला पार्टी के लोग कल्याण वन में रहेंगे। इस बार साथ में परमानन्द स्वामीजी के न रहने के कारण माँ स्वयं इधर-उधर चारों तरफ की व्यवस्था कर रही हैं। साधुओं की सेवा में किसी प्रकार की त्रुटि न रहे, इस ओर माँ की कड़ी नजर है।

वृन्दावन में नेपाल के राज परिवार की ओर से एक भागवत भवन, गीता भवन और एक अतिथिशाला का निर्माण हुआ है। काफी दिनों से काम चल रहा है, किन्तु प्रगति विशेष नहीं हो रही है। इस बार इसीलिए चारों ओर से निरुपाय होकर परमानन्द स्वामीजी से अनुरोध किया गया है कि वृन्दावन में कुछ दिन ठहर कर काम जल्दी से समाप्त कर दें।

इधर हरि बाबाजी और अन्य लोग आ रहे हैं। भागवत-सप्ताह भी शीघ्र शुरू होने वाला है। उपयुक्त कार्य-कर्त्ताओं की काफी कमी है। परमानन्द स्वामी जी के न रहने पर काम-काज चलाने में काफी असुविधा होती है। इधर कभी-कभी निरुपाय होकर स्वामीजी को कहीं न कहीं भेजना पड़ता है।

## २८ जून, १९५६

मैं अभी तक पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं हो सकी हूँ। बुखार बना है। इसके अलावा इधर २–३ दिन से पेड़ू और कमर में तेज दर्द पैदा हो गया है।

## २९ जून, १९५६

आज सवेरे टेहरी के महाराजा, महारानी और परिवार के अन्य अनेक सदस्य माँ के साथ मुलाकात करने आये। माँ से भेंट करने और यहाँ खाने-पीने के बाद वे लोग दिल्ली चले गये।

माँ के निकट सभी एक हैं

श्री हरि बाबाजी कल यहाँ आने वाले हैं। यहाँ से उनके साथ आने वाली रास पार्टी के लिए एक पूरी बस रिजर्व करके भेजने का प्रबन्ध किया गया है। इसके अलावा टेहरी महाराज की जीप भी हरि बाबाजी के साथ हृषीकेश से आयेगी। महाराज यह बात विशेष रूप से कह गये हैं कि माँ यहाँ जितने दिनों तक रहेंगी तबतक उनकी यह जीप माँ की सेवा में रहेगी। माँ के निकट सचमुच एक आश्चर्यजनक बात दिखाई देती है। इनके निकट आकर बड़े-बड़े राजा महाराजा भी

अपने मान-सम्मान और अभिमान को भुला कर साधारण आदमी बन जाते हैं। माँ की मौजूदगी में वे इतने साधारण बन जाते हैं कि अत्यन्त तुच्छ काम में जुट जाने पर भी संकोच या असम्मान बोध नहीं करते। यह सब माँ की आश्चर्यजनक लीला है। यहीं सभी माँ की सन्तानें हैं। सभी के अन्तर में एक अपूर्व भ्रातृत्व बोध है।

## ३० जून, १९५६

हरि बाबाजी आदि प्रमुख महात्माओं का आगमन

लगभग ९ बजे हरि बाबाजी, स्वामी अखण्डानन्दजी, स्वामी शुकदेवानन्दजी आदि तथा अन्य कुछ लोग महात्मा काली कमली वाले की जीप में आये। इन लोगों का बड़े ही सुन्दर ढंग से आरती करते हुए स्वागत किया गया। स्वामी अखण्डानन्दजी आदि महात्माओं को फल माला अर्पण किया गया। जो लोग जन्मोत्सव के अवसर पर काशी नहीं आ सके थे, उन लोगों को वस्त्र भेंट किये गये। कुछ देर बाद हरि बाबाजी के साथी तथा रास पार्टी के लोग आ गये।

## १ जुलाई, १९५६

आज से रासलीला शुरू हुई। रासलीला सुबह ८॥ बजे से ११॥ बजे तक होती रही। श्री श्री हरिबाबाजी की विशेष इच्छा थी कि रासलीला कार्यक्रम मेरे सामने हुआ हुआ करे। इसलिए आश्रम के हाल में इसके लिए इन्तजाम किया गया है। आश्रम में अन्यत्र स्थान की कमी है।

तीसरे पहर ४ से ५ बजे तक सत्संग का प्रोग्राम बना है। इसके अलावा हरि बाबाजी का नित्य का कीर्त्तन तो है ही।

इधर मेरा शरीर स्वस्थ नहीं हो रहा है। बुखार रोज आ रहा है। माँ की तबीयत भी ठीक नहीं है। आराम जरा भी नहीं कर पातीं। एक के बाद एक कार्यक्रम जारी है।

अब यह चर्चा चल रही है कि स्व० चौधरी शेरसिंह की वार्षिक स्मृति दिवस के अवसर पर आश्रम में उनकी पत्नी भागवत-सप्ताह करायेंगी। ९ जुलाई से यह कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

## २ जुलाई, १९५६

कल रात को लगभग एक बजे बम्बई से भइया और डा० बलरामजी मोटर से यहाँ आये। भइया के साथ उनके कानपुर शाखा के मैनेजर मि० सेठ और मि० अग्रवाल नामक एक और सज्जन आये हैं। माँ से कुछ देर तक बातचीत करने के बाद वे लोग सोने चले गये।

## ३ जुलाई, १९५६

डा० बलरामजी ने आज से नये ढंग से मेरी चिकित्सा शुरू की। उनकी राय के अनुसार यह निश्चय किया गया कि भागवत-सप्ताह समाप्त हो जाने के बाद १९ या २० ता० को माँ काशी चली जायेंगी और मैं बम्बई जाऊँगी। डा० बलरामजी आज रात को दिल्ली चले गये। जाते समय कह गये कि भइया अगले रविवार को पुनः एक बार देहरादून आ सकते हैं। भइया १२ ता० को चीन, श्याम और फिलिपीन द्वीप जाने वाले हैं। उनकी यह विशेष इच्छा है कि विदेश जाने के पहले एक बार माँ का दर्शन कर लें तब रवाना होंगे।

## ७ जुलाई, १९५६

श्री श्री हरि बाबाजी अभी हैं। सत्संग मजे में चल रहा है। उनके भक्तों में और भी लोग यहाँ आ गये हैं। आम्ब से वहाँ के राजा, रानी और बच्चे जीप से माँ के पास कुछ दिनों तक रहने के लिए आये हैं।

## ९ जुलाई, १९५६

**किशनपुर आश्रम में भागवत-सप्ताह**

आज से आश्रम के हाल में भागवत-सप्ताह प्रारंभ हुआ। वृन्दावन के पण्डित श्रीनाथ शास्त्री जी पाठ और व्याख्या कर रहे हैं। सत्संग मन्दिर में मंच बनाया गया है जहाँ घट स्थापित कर पूजादि तथा मूल पाठ का भी प्रबन्ध हुआ है। हाल के सुसज्जित मंच पर तीसरे पहर ३ बजे से व्याख्या प्रारंभ हुई। माँ, हरि बाबाजी आदि अनेक व्यक्ति आकर सत्संग में बैठते हैं।

इधर कई दिनों से लगातार वर्षा होने के कारण विभिन्न स्थानों से सम्बन्ध विच्छेद सा हो गया है। यही वजह है कि भइया दिल्ली से नहीं आ सके। वे दिल्ली में अपने काम से आये हैं। पानू से फोन पर बातचीत हुई है। माँ का चरण-दर्शन करने का अवसर न पाने के कारण वे बड़े दुःखित मन से बम्बई वापस जा रहे हैं।

हरि बाबाजी अगले १७ ता० को दिल्ली जाने वाले हैं। मुझे भी १९ ता० को दिल्ली होते हुए बम्बई जाना है। माँ भी इसी दिन झूँसी होती हुई काशी चली जायँगी।

हरि बाबाजी नित्य सत्संग के बाद २-३ बार मेरे कमरे में

आकर बैठते हैं और मेरे स्वास्थ्य के बारे में बराबर हालचाल पूछते हैं। मैं शीघ्र स्वस्थ हो जाऊँ, इसके लिए वे कितना प्रयत्नी कर रहे हैं। मेरा रोग दूर हो जाय, इसके लिए वे कोई न कोई अनुष्ठान बराबर करते जा रहे हैं। सचमुच उनकी इस असीम कृपा के बारे में सोचने पर कृतज्ञता से चित्त भर उठता है। उनके सभी भक्त कहते हैं कि वे मेरे लिए जो कुछ कर रहे हैं, इसके पहले किसो के लिए इतना उन्होंने कभो नहों किया है। सभो माँ क लीला है।

## १७ जुलाई, १९५६

कल भागवत-सप्ताह समाप्त हो गया है। आज उसका हवन आदि सुबह हो गया। स्वर्गीय शेरसिंह की पत्नी शान्ति सप्ताह के उपलक्ष्य में बहुत कुछ कर चुकी हैं। आश्रम के साधु और ब्रह्म-चारियों को कपड़े ओर रुपये दिये। सप्ताह खूब सुन्दर ढंग से हो गया।

हरि बाबाजी आज रात को दिल्ली रवाना हो गये। उनके लिए एक कूप प्रथम श्रेणी का और उनके साथ के लोगों के लिए थर्ड क्लास का एक कम्पार्टमेण्ट रिजर्व करा दिया गया।

तीसरे पहर ५॥ बजे श्री शिवचरण दास सब्बरवालजी माँ तथा हरि बाबाजी को अपने यहाँ ले गये। सब्बरवालजी तथा उनको पत्नी हमेशा माँ की सेवा के लिए उद्ग्रीव रहतो हैं। श्री सब्बरवालजी पहले पंजाब के साल्ट कमिश्नर थे। आजकल अवकाश प्राप्त जीवन देहरादून में व्यतीत कर रहे हैं। जब हम लोगों की रायपुर वाली जमीन के सम्बन्ध में झंझट हुआ था तब आपने मदद की थी।

बहरहाल, सब्बरवाल जी के यहाँ से माँ हरि बाबाजी को साथ लेकर रायपुर आश्रम होती हुई आयीं। वहाँ से सीधे स्टेशन पर हरि बाबाजी को गाड़ी पर बैठाकर तब वापस आयीं। हरि बाबाजी गाड़ी छूटने तक माँ को इन्तजार करने नहीं दिया, पर माँ की ओर से पानू और प्रकाशानन्द स्टेशन पर मौजूद रहे।

जब ये लोग स्टेशन से वापस आये तब इनकी जबानी पता चला कि माँ के चले आने के बाद हरि बाबाजो ने अपने भक्तों को लेकर प्लेटफार्म पर कीर्त्तन शुरू कर दिया था। इधर गाड़ी के छूटने का समय हो गया, पर कीर्त्तन समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। स्टेशन के बड़े-बड़े अधिकारी इन्तजार करने लगे। वे गाड़ी रवाना नहीं कर पा रहे हैं और इधर हरि बाबाजी कीर्त्तन समाप्त किये बिना बन्द नहीं कर सकते थे। आखिर में गाड़ी ७ मिनट लेट छूटी।

हरि बाबाजी का कीर्त्तन के प्रति श्रद्धा, भक्ति और निष्ठा सचमुच में अपूर्व है। कीर्त्तन के समय उनका ध्यान और किसी ओर नहीं रहता। एक बार हम हरि बाबाजी को लेकर कहीं जा रहे थे। गाड़ी में रहते वक्त ही कीर्त्तन का समय हो गया। तुरत डिब्बे में घण्टी बजा कर उन्होंने कीर्त्तन प्रारम्भ कर दिया। ट्रेन का गार्ड चकित भाव से दौड़ता हुआ आया। प्रथम श्रेणी के यात्री इस तरह कीर्त्तन कर सकते हैं, ऐसी आशा किसी को नहीं थी। हर स्टेशन पर गाड़ी रुकती, ज़नता चौंककर देखती और तुरत भीड़ एकत्रित हो जाती थी। लोग सोचते—यह क्या बला है?

**हरि बाबाजी की कीर्त्तन-निष्ठा**

इसी प्रकार एक बार हमलोग देहरादून से काशी जा रहे थे। सवेरे जब कीर्त्तन का समय हुआ तब हरि बाबाजी चुपचाप थर्ड

क्लास के एक डिब्बे में जाकर कीर्त्तन करने लगे। माँ हरि बाबाजो के कमरे में सोयी हुई थीं। कहीं उनकी नींद में खलल न पड़े, इसलिए वे दूसरे डिब्बे में चले गये, किन्तु वे कीर्त्तन करने का अपना नियम तोड़ते नहीं।

## १८ जुलाई, १९५६

पिछली बार रायपुर की जमीन के मामले में कुछ गण्डोगोल हुआ था। बात यह है कि रायपुर की जिस भूमि पर नया आश्रम बनवाया गया है, उक्त जमीन को पहले परम श्रद्धेय जमनालाल बजाज जी ने खरीदा था। वे यहाँ एकान्तवास करना चाहते थे, किन्तु इस इच्छा की पूर्त्ति होने के पहले उनका देहान्त हो गया। बाद में उक्त भूमि आश्रम को दान में मिल गयी। पहले यहाँ एक स्थानीय जमींदार थे। उन्हें वार्षिक लगान दी जाती थी। किन्तु जमींदारी प्रथा समाप्त हो जाने पर समस्त भूमि सरकारी कब्जे में आ गयी। यद्यपि भूमि आश्रम के नाम थी। पिछले वर्ष अचानक माँ ने जाकर देखा कि आश्रम की उस भूमि पर ग्राम पंचायत की ओर से पानी की एक विशाल टंकी बनवायी गयी है। आश्रम की भूमिपर से पानी का पाइप ले जाया गया है। गांव के लोग हमारी भूमिपर तरह-तरह के पेड़-पौधे लगाये हैं। यहाँ के आश्रम में साधु-ब्रह्मचारी रहते हैं, पर इस अन्याय के प्रति उनका ध्यान नहीं था।

**रायपुर आश्रम की भूमि का इतिहास**

बहरहाल आश्रम और पंचायत में झमेला आरम्भ हुआ। अन्त में मामला पेचीदा हो गया। ग्राम पंचायत कहती रही कि यह जमीन उसकी है, दूसरी ओर सरकार कहती रही कि उसकी है जबकि जमीन आश्रम की है। सौभाग्य से देहरादून के तत्कालीन

जिलाधीश आश्रम से परिचित थे। वे और पूर्वोक्त श्री शिवचरण दास सब्बरवाल ने इस मामले को निपटाने के लिए अथक परिश्रम किया। अन्त में टंकी और पाइप लाइन के लिए भूमि छोड़ देनी देनी पड़ी। बाकी जमीन सरकारी अधिकार से आश्रम के नाम हो गयी। अचानक जमींदारी उन्मूलन के कारण विंध्याचल वाले आश्रम की जमीन को लेकर गोलमाल उत्पन्न हुई। अभी तक उस झगड़े का निपटारा नहीं हो सका है।

## १९ जुलाई, १९५६

देहरादून में विभिन्न उत्सव मनाने के बाद आज हम लोगों को यहाँ से चल देने की बात है। माँ काशी जा रही हैं, बीच में झूँसी होती हुई जायँगी। श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी ने गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में एक बार आने के लिए माँ से विशेष रूप से अनुरोध किया है, इसलिए वे प्रतापगढ़ में उतरकर वहाँ से मोटर द्वारा झूँसी जायँगी। वहाँ एक रात रहने के बाद मोटर से ही काशी चली जायँगी। फिलहाल यही तय हुआ है। मैं दिल्ली होती हुई बम्बई चली जाऊँगी। पता नहीं, कितने दिनों के लिए माँ से बिछुड़ रही हूँ। भइया की यह विशेष इच्छा है कि बम्बई में अच्छे डाक्टरों के द्वारा मेरी हर तरह की जांच हो जाय और मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर बम्बई से वापस आऊँ।

**माँ काशी की ओर**

तीसरे पहर साढ़े पांच बजे माँ के साथ हम लोग रवाना हुए। रास्ते में हम लोग चौधरी शेर सिंह, नरेश और भूपेन की ससुराल होते हुए लगभग सात बजे स्टेशन आये। स्टेशनपर अनेक भक्त इकट्ठे हुए थे। यहाँ सभी लोग मिलकर नाम कीर्त्तन करने लगे।

मैं तो दिल्ली जाकर वहाँ से बम्बई जाऊँगी। माँ के लिए भी इसी गाड़ी में इलाहाद वाली बोगी रिजर्व की गयी है। लक्सर स्टेशन में माँ की बोगी हमारी गाड़ी से काट दी जायगी और बाद में पंजाब मेल में जोड़ी जायगी।

हरिद्वार स्टेशनपर कुचामन की रानी, योगी भाई आदि मिलने आये थे। योगी भाई दिल्ली से वापस आकर कुछ दिनों तक देहरादून में माँ के पास थे। आज ही शाम को मोटर से वापस आये है। रात ११ बजे गाड़ी जब लक्सर स्टेशनपर ठहरी तब माँ अपने कमरे में चली गयीं। अब तक वे मेरे ही कम्पार्टमेण्ट में बैठी मुझे तरह-तरह का उपदेश एवं बम्बई में कैसे रहूँ, यह सब समझाती रहीं। माँ के साथ नारायण स्वामी और उदास जा रहे हैं। अब माँ के साथ कब मुलाकात होगी, यह माँ जाने।

## २० जुलाई. १९५६

आज भोर में ६ बजे दिल्ली पहुँची। स्टेशन पर जितेन और भइया की कम्पनी के दो व्यक्ति आये हैं। परमानन्द स्वामीजी मुझ से मिलने के लिए आज ही वृन्दावन से आये हैं।

गाड़ी बदलकर मुझे फ्रण्टियर मेलपर चढ़ाया गया। जोरों से पानी बरस रहा है। इस मौसम में भी मुझ से मिलने के लिए डा० बलराम, न्यू इण्डिया के मैनेजर श्री हुन साहब और उनकी पत्नी, यहाँ तक कि श्री श्री हरि बाबाजी, पण्डित सुन्दरलाल आदि अनेक व्यक्ति आये हैं। परमानन्द स्वामीजी मेरे साथ मथुरा तक आये। नयी दिल्ली स्टेशन आने पर देखा कि इस तूफान में नारायण दासजी सपत्नीक, श्री तथा श्रीमती अग्रवाल आदि मुझ से मिलने के लिए आये हैं।

## २१ जुलाई, १९५६

भोर में ८ बजे मैं बम्बई पहुँची। दादर स्टेशनपर मूलजी भाई मिले और साथ हो लिये। बम्बई सेण्ट्रल स्टेशनपर लीलाबेन और उनकी लड़की सुनयना, सोपारी भाई आदि ३-४ गाड़ियाँ लेकर उपस्थित थे। भइया अभी हांगकांग से वापस नहीं आये हैं। शायद कल रात तक आ जाँय।

भइया का निजी भवन विलेपार्ले स्थित फ्लाइंग क्लब के ठीक सामने है। इसके अलावा एक किराये का फ्लेट है—समुद्र के किनारे ब्रैच केण्डी हाऊस में। मैं इन दोनों में रह चुकी हूँ। इस बार मेरे ठहरने का इन्तजाम विलेपार्ले में ही किया गया है। यह भवन इतने सुन्दर ढंग से सजाया गया है कि जिसका वर्णन करना कठिन है। लीलाबेन असामान्य विदुषी महिला हैं। गृहस्थी के प्रत्येक कार्य में उनकी मौलिकता स्पष्ट है। सारा कार्य वे यंत्रवत् करती जा रही हैं। मकान के सामने और पीछे फूल और फलों का बगीचा है। सब कुछ बड़े सलीके और साफ-सुथरे ढंग से सजाया गया है।

डा० सेठ आज शाम को आकर मुझे देख गये। आप बम्बई के एक विशिष्ट डाक्टर हैं। लीलाबेन के फुफेरा भाई हैं। स्थानीय प्रसिद्ध नानावती अस्पताल के सुपरिण्डेण्टेण्ट हैं। आप बड़े मिलनसार हैं। हम लोगों के साथ घर के लोगों जैसा व्यवहार करते हैं।

## २२ जुलाई, १९५६

डा० सेठ आज तीसरे पहर आकर देर तक मेरी जाँच करते रहे। स्पिनल वेल्ट छोड़कर मुझे खड़ी होने को कहा। आगे-पीछे झुकने, बिना किसी सहारे दो तल्ले की सीढ़ियों पर चढ़ाकर सभी कमरों में

ले जाया गया और फिर बिना कुछ पकड़े मुझे नीचे भी ले आया गया। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आज तीन वर्ष के बाद मैं सीढ़ियों से नीचे-ऊपर आ-जा सकी, पर इससे कोई विशेष कष्ट नहीं हुआ। गोकि अनभ्यास की वजह से कुछ कमजोरी जरूर आ गयी थी। कल से मेरी हर तरह की जांच होगी।

भइया रात को लगभग १० बजे हवाई जहाज से बम्बई पहुँचे। घर में आते ही वे सीधे मेरे कमरे में आये। काफी देर तक इधर-उधर की बातचीत करते रहे।

हम लोगों के साथ उनकी इतनी घनिष्ठता और प्रीति सम्बन्ध कैसे हो गयी, वह सब बातें जब सोचती हूँ तो मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। इनका पूरा परिवार हम लोगों के लिए कितने परिचित और कितने अपने हैं। माँ की कृपा से ही एक ऐसे परिवार के साथ घनिष्ठता हुई। यह मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। याद आती है, आज से दो साल पहले माँ ने एक बार बम्बई में इनसे कहा था कि मैं इनकी बहन हूँ तभी से आप सचमुच मुझे अपनी बहन की तरह मानते आ रहे हैं। हम लोग भी इन्हें भइया कहकर पुकारते हैं। आजकल तो आप माँ के सभी भक्तों के लिए भइया बन गये हैं। मुझे स्वस्थ बनाने का मानों आपने संकल्प कर लिया है। भइया, लीला, दोनों लड़के सुधीर और संजय तथा बेटी सुनयना सभी मेरे कितने अपने हैं, कितने प्रिय हैं। रक्त के सम्पर्क से धर्म का सम्बन्ध कितना बड़ा है—यह परिवार उसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। भइया का जीवन अत्यन्त आदर्शमय है। गृहस्थ जीवन यापन करते हुए किस प्रकार आदर्श-जीवन बनाये रखा जा सकता है, यह भइया का जीवन देखने से स्पष्ट हो जाता है। सचमुच इस तरह का भाई पाना गर्व की बात है।

## २३ जुलाई, १९५६

आज सवेरे डा० सेठ आये और मेरा खून ले गये। पेशाब भी भिजवा दिया गया। दो-तीन दिन बाद एक्सरे होगा।

काशी में हुए जन्मोत्सव के समय की एक बात याद आ गयी। श्री शंकर भारतीजी एक दिन उत्सव के बीच माँ के पास आये थे।

**पुरुषकार और कृपा**

उस समय अवधूतजी के साथ उनकी पुरुषकार और कृपा में प्रकृत सम्बन्ध पर चर्चा हुई थी। शंकर भारतीजी ने अपनी प्रांजल भाषा में समझाया कि प्रच्छन्न अनुग्रह या कृपा का ही एक रूप है—पुरुषकार। कृपा प्रकट होने पर ही उसे कृपा समझना चाहिए। उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय सब कुछ उनका प्रच्छन्न अनुग्रह है। भले ही हम क्यों न अनुग्रह या कृपा को ठीक ठीक न समझ सकें, फिर भी वह सभी अवस्थाओं में विद्यमान रहता है। सर्व अवस्था में अनुग्रह और कृपा प्रच्छन्न अवस्था में कृपा करते रहते हैं। संकीर्ण दृष्टि के निकट जो निग्रह है, वास्तव में वही अनुग्रह है। जीव की संकीर्ण दृष्टि में कर्म के अनुसार फल भोग होता है, यह सत्य होने पर वास्तव में निरन्तर सब कुछ ईश्वर की कृपा से संपादित होता है। माँ जो कहती हैं कि सब है और कुछ नहीं है—यह सत्य है। अपनी-अपनी स्थिति में सब ठीक है।

**माँ के स्वरूप के बारे में श्री शंकर भारती जी की राय**

बातचीत के सिलसिले में पन्नालालजी ने माँ के प्रकृत स्वरूप के बारे में भारतीजी से जिज्ञासा प्रकट की। उन्होंने जवाब दिया कि माँ साक्षात् चिदानन्द स्वरूप हैं।

एक और सुन्दर घटना हुई थी। उन दिनों माँ वृन्दावन में

थीं। अप्रैल की शुरुआत थी। कविराज जी के गुरुभाई ज्योतिर्मयजी को विशुद्धानन्दजी के चित्र की ओर देखते रहने पर बहुत कुछ दर्शन हो रहा था। बाद में विशुद्धकानन की छत पर चहल कदमी करते हुए उन्होंने देखा कि माँ भी मानो छत पर खड़ी हैं। माँ जैसे कह रही हैं—'तुमने जो कुछ देखा है, सब ठीक है। सन्देह मत करना। तुम कलकत्ता जाओगे, इसलिए तुम्हें देखने आयी।' आश्चर्य की बात यह है कि ठीक इसी समय माँ स्वयं वृन्दावन में बैठी ज्योतिर्मय बाबू का ख्याल करती हुई उन्हें देखती रहीं। माँ की इस तरह की न जाने कितनी घटनाएँ होती रहती हैं। किन्तु माँ इस बारे में नीरव रहती हैं। घटना चक्र से अगर कुछ प्रकट हो गया तो हमें मालूम होता है।

काशी से बुनी के एक पत्र से ज्ञात हुआ कि २१ जुलाई को माँ ८॥ बजे वहाँ पहुँची हैं।

## २४ जुलाई, १९५६

आज बुनी के पत्र से गुरु पूर्णिमा वाले दिन का पूर्ण विवरण ज्ञात हुआ। शुभ क्षण देखकर सावित्री यज्ञ की अग्नि नव निर्मित यज्ञ मन्दिर में ले आयी गयी। कान्तिभाई, दत्तात्रेय, गौरांग आदि सिर मुड़ाकर गंगा-स्नान करने के पश्चात् कुण्ड में आहुति देते रहे। माँ स्वयं मौजूद रहकर यह सब करवाती रहीं।

काशी में गुरु पूर्णिमा

घाट के ध्वस्त हो जाने के कारण आश्रम का जो हिस्सा गंगा की ओर है, उसमें छत पर गंगा की ओर यज्ञ मन्दिर है, वह शायद आगे उपयोग के लायक नहीं रह जायगा। सावित्री महायज्ञ की समाप्ति के बाद से यज्ञाग्नि उसी मन्दिर से रक्षित रही एवं

नित्य वहाँ आहुति दी जाती थी। लगभग साढ़े ६ वर्ष बाद महायज्ञ की अग्नि पुनः उसी महायज्ञ के पुराने स्थान पर वापस आयी। माँ की लीला समझना कठिन है। लोग यह कह सकते हैं कि क्यों नहीं यहीं पहले से अग्नि-रक्षा की व्यवस्था की गयी, किन्तु ऐसा क्यों नहीं हुआ यह कौन बता सकता है? महायज्ञ के स्थान पर पहले एक छोटी सी कोठरी बनवायी गयी। कुछ दिनों बाद उसे तोड़कर झूला मंच बनवाया गया। कुछ दिन व्यतीत होने के बाद उसे तोड़कर पुनः यज्ञकुण्ड की स्थापना की गयी। फलस्वरूप माँ के निर्देश से किसलिए क्या हो रहा है, कौन समझ सकता है?

बुनी ने अपने पत्र में लिखा है—उस दिन सुबह ९ से ९॥ बजे तक हरि बाबाजी के कमरे में माँ की उपस्थिति में समवेत ध्यान हुआ। बाद में नये आश्रम के बड़े हाल में जिसका नाम 'मातृ मण्डप' रखा गया है, पूजा की व्यवस्था हुई। माँ की खाट को खूब सजाकर माँ को उसपर बैठाया गया था। प्रसाद का प्रचुर आयोजन किया गया था। तीसरे पहर माँ स्वयं अपने हाथ से २५ सेर श्रीखण्ड बाँटती रहीं। दिन भर अखण्ड कीर्त्तन होता रहा। ४॥ से ५ बजे तक मातृमण्डप में मौन पालन किया गया। इसके अलावा अन्य कई प्रोग्राम हुए। इस प्रकार उत्सव बहुत सुन्दर हुआ। भक्तों की काफी भीड़ एकत्रित हुई थी। रात को लड़कियों के ठाकुर घर में माँ को ले जाकर वहाँ आरती और भोग का प्रबन्ध किया गया।

## २५ जुलाई, १९५६

बुनी का पत्र आया है। एक समाचार से मैं मर्माहत हो उठी। अमल सेन जी बाथरूम में गिर पड़े हैं, फलस्वरूप बायीं ओर के कुल्हे की हड्डी टूट गयी हैं। उन्हें अस्पताल भेजा गया है। इधर कई वर्षों से वे लकवा से पीड़ित रहे। पूजा के समय उन्हें काशी लाया गया है। इनके साथ उनकी पत्नी तथा लड़की गिनी आयी है।

## २६ जुलाई, १९५६

आज सवेरे मुझे नानावती अस्पताल में ले जाकर डा० सेठ के निर्देशानुसार पीठ और दाँतों का एक्सरे लिया गया। लीलाबेन भी मेरे साथ थीं। दादाजी के नाम पर यह अस्पताल बना है। आज भी इस अस्पताल का संचालन बड़े भाई करते हैं। काफी साफ-सुथरा अस्पताल है। यहाँ २५० के ऊपर बेड हैं। डा० सेठ अस्पताल के सुपरिण्डेण्टेण्ट हैं।

काशी से प्राप्त एक पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ अच्छी तरह हैं। आजकल माँ हरि बाबाजी के कमरे में सोती हैं।

## २७ जुलाई, १९५६

देहरादून में माँ हरि बाबाजी या पण्डित सुन्दरलालजी के अनुरोध पर प्रतिदिन थोड़ी देर तक कीर्त्तन करती रहीं। सभी लोग इस अवसर का बेसब्री से इन्तजार करते रहते हैं। इसके बाद माँ, हरि बाबाजी आदि लोग मेरे कमरे में आकर बैठते हैं। रात को अच्छी-अच्छी बातें होती है। एक दिन कृपा के बारे में बहुत सी बातें हुईं। माँ ने कहा—"कृपा तो सर्वक्षण वर्षण हो रहा है। पात्र अगर ठीक से धर सके तो ठीक। हम लोग अक्सर पात्र उलटकर रख देते हैं। इसीलिए उनकी कृपा का अनुभव नहीं कर पाते।" इस तरह की बातें माँ कहती रहती हैं, लेकिन हम सब उसे ठीक से समझ कहाँ पाते हैं।

कृपा तो सर्वक्षण वर्षण हो रहा है

अचानक काशी की एक बात याद आ गयीं। वासन्ती-पूजा के समय मण्डप के भीतर स्वामी मंगलानन्द गिरिजी, अखण्डानन्दजी और हम लोगों की दीदी माँ का एक जगह पर चित्र देखकर

माँ को एक विशेष ख्याल हुआ। माँ आकर मुझसे बोलीं—"देखो, कितना आश्चर्यजनक संयोग है। अखण्डानन्दजी और मुक्तानन्दजी दोनों ही पत्नी और पति को खोकर पुनः आकर एक ही जगह मिल गये हैं। तेरे साथ जो योग है, यह भी एक संयोग है।"

माँ की बातों का तात्पर्य मैं कुछ-कुछ समझ सकी। इस प्रसंग पर माँ के साथ पहले भी २-१ बार चर्चा हुई थी। माँ इन सभी विषयों पर साफ-साफ कुछ नहीं कहतीं। माँ की एक बड़ी बहन पैदा होने के कुछ दिनों बाद मर गयी थी। इसके बाद मेरा जन्म हुआ। उनके साथ मेरा एक संयोग है, इस बारे में पहले लिख चुकी हूँ। इसी नाते माँ आजकल हर वक्त मुझे 'दीदी-दीदी' कहकर पुकारती हैं। दूसरी ओर मेरे पिता अखण्डानन्दजी ने अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद तथा दीदी माँ ने अपने पति की मृत्यु के बाद धीरे-धीरे संन्यास ग्रहण किया। दोनों ही व्यक्तियों ने स्वामी मंगलानन्द गिरि से संन्यास लिया। इसके भीतर कुछ असामान्य संयोग है, यह समझते देर नहीं लगी। उस दिन मामू के सुपुत्र बाच्चू के जनेऊ के अवसर पर कुछ आभास मिला था, इसका उल्लेख किया जा चुका है। जब कि जागतिक रूप में मामू के साथ हमारा कोई सम्पर्क नहीं है, फलस्वरूप बात असाधारण है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

## २८ जुलाई, १९५६

कल रात को डा० सेठ मेरे एक्सरे प्लेटों को देखने के बाद बोले कि पहले की अपेक्षा रिपोर्ट अच्छी है, पर अभी सावधानी बरतने की जरूरत है।

काशी से विशुद्धा का पत्र आया है। गुरु पूर्णिमा के दिन माँ

सभी के मस्तक पर फूल-बेलपत्ती रखती रहीं और अन्त में दीदी माँ के सिर पर रखने के बाद जमीन पर लोटती हुई प्रणाम करती रहीं। बाद में उठकर हाथ जोड़ती हुई बोलीं—"इस शरीर को पूजा-ऊजा कुछ नहीं आता।"

बुनी के पत्र से ज्ञात हुआ कि २५ ता० की शाम को एक अमेरिकन लड़की और बरेली की उमा आकर माँ को नाच दिखाती रहीं। कन्यापीठ के ऊपरी मंजिल के हाल में नृत्य होता रहा। आगे उसने लिखा है कि माँ सम्भवतः काशी विंध्याचल में कुछ दिनों तक रह सकती हैं। विंध्याचल से इसी आशय का पत्र बेलू ने भी लिखा है।

## २९ जुलाई, १९५६

बुनी के पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ स्वस्थ हैं। मुझे डा० सेठ ऊपर की मंजिल में पैदल ले गये थे, यह समाचार सुनकर माँ लिखवायी हैं—"बाह, आनन्द ! दीदी को लिखो—दीदी जल्दी से खा-पीकर स्वस्थ बनकर चलना-फिरना शुरू करे। दीदी सब काम काम जुटा कर रखती जा रही है, दीदी के लिए वह सब काम रुका है। इन सब कामों के लिए दीदी को जल्द चलना-फिरना होगा।' इस पत्र के साथ ही भइया और लीलाबेन को लिखवायी हैं—'परमार्थ ही परम धर्म।'

## ३० जुलाई, १९५६

आज भइया डा० सेठ को साथ लेकर डा० बालिगा और डा० एरुलकर से मेरे बारे में परामर्श करने गये थे। एक्सरे के नये

प्लेटों को देखने के बाद इन लोगों ने राय दी कि काफी प्रगति हुई है। कुछ दिनों बाद वे लोग मेरी जाँच करने आयँगे।

बुनी के पत्र से ज्ञात हुआ कि २७ ता० को भोर तीन बजे काशी के आश्रम में, माँ की उपस्थिति में संयम-दिवस का पालन किया जा रहा है। ३ से ३॥ बजे तक उषा कीर्त्तन, बाद में एक घण्टा मौन-ध्यान और जप। तीसरे पहर भी मौन के बाद जप और सत्संग होता है। माँ सभी कार्यक्रमों में उपस्थित रहती हैं। माँ अत्यन्त प्रसन्न चित्त रहती हैं। शरीर भी ठीक है।

## १ अगस्त, १९५६

बुनी के आज वाले पत्र से ज्ञात हुआ कि संभवत: माँ झूलन जन्माष्टमी तक काशी में रहेंगी। इसके बाद के प्रोग्रामों का कोई निश्चय नहीं है। दुर्गा पूजा के समय माँ कहाँ रहेंगी इसका पता नहीं। माँ का क्या ख्याल है, यह वही जानें। फिर भी विभिन्न प्रकार की बातों तथा माँ की बातचीत के ढंग से मुझे कभी ऐसा अंदेशा होता है कि माँ लोगों की निगाह से कहीं दूर न चली जाँय। इधर अर्से से माँ का भाव कुछ अलग-अलग किस्म का हो गया है।

## २ अगस्त, १९५६

सावित्री और बुनी के पत्रों से माँ के बारे में समाचार प्राप्त हुए। माँ एक प्रकार से अपने ख्याल के मुताबिक चल रही हैं। एक-एक मकान में एक-एक दिन भिक्षा की व्यवस्था कर रही हैं। कभी कन्यापीठ में तो कभी अन्नपूर्णा में, कभी दूसरों के मकान से माँ के लिए भोजन आता है। एक लौकी का खप्पर कहीं से मंगवाया

गया है, उसी में माँ के लिए भोजन आता है। माँ का भाव कुछ अनमना सा है। लोगों के बीच रहती हुई जैसे नहीं हैं। २६ ता० को माँ किसी अदृश्य व्यक्ति के साथ जोर-जोर से बातचीत करती रहीं। यद्यपि माँ का इस तरह अशरीरी व्यक्तियों के साथ बातचीत करना नयी बात नहीं है, फिर भी लोग न जाने क्यों बहुत अधिक आतंकित हो गये हैं। माँ का जब जो ख्याल आ जाय, उसे रोकने की क्षमता किसी में नहीं है। पूर्वावस्था में न जाने कितनी बार देख चुकी हूँ कि माँ के ख्याल और इच्छा में बाधा देते समय पिता जी स्वयं ही भयभीत हो उठते थे और अन्त में सब कुछ माँ की इच्छापर छोड़ देते थे।

माँ के भावों में कुछ-कुछ परिवर्त्तन हुआ है, इसे गौर करनेपर समझ में आ जाता है। स्वयं में कई बार यह बात देख चुकी हूँ।

**माँ की पूर्वावस्था की कथा के बारे में हरि बाबाजी की इच्छा**

उन अनुभवों के आधारपर मैं यह समझ गयी कि माँ का ख्याल इन दिनों किधर जा रहा है। उस दिन देहरादून के आश्रम में सत्संग के बीच माँ की पूर्वावस्था की चर्चा चलनेपर हरि बाबाजी ने माँ के निकट पुनः उसी अवस्था को देखने की इच्छा प्रकट की। माँ ने लगातार तीन बार हरि बाबाजी से पूछा कि क्या सचमुच आप उस अवस्था को देखना चाहते हैं? प्रत्येक बार हरि बाबाजी ने कहा—"हाँ, माँ।"

तुरंत माँ मेरी ओर देखती हुई बोलीं—"देखो दीदी, पिताजी पुनः आगे की अवस्था देखना चाहते हैं।"

मैं क्या कह सकती थी। हाथ जोड़ती हुई माँ की ओर देखती रही। माँ ने कहा—"जो हो जाय।"

इधर अर्से से देख रही हूँ कि विभिन्न घटनाएँ और बातचीत मानों माँ के भावों को और भी परिपुष्ट करती जा रही हैं। यही वजह है कि मैं सभी लोगों के निकट विशेष रूप से यह अनुरोध करती रहती हूँ कि कोई भी कार्य माँ की इच्छा के विरुद्ध न होने पाये ताकि उनका ख्याल दूसरी ओर न चला जाय। श्री हरि बाबाजी तथा अन्य महात्माओं के निकट मैं विशेष रूप से कृतज्ञ रहती हूँ कि इन लोगों के कारण ही माँ को सभी लोगों के बीच पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। महात्माओं के अनुरोध को टाल कर और कोई काम करने की प्रवृत्ति माँ में मैंने कभी नहीं देखी। यह बात अलग है कि सहसा कोई तीव्र इच्छा उत्पन्न हो जाय। विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान और उत्सव के दरम्यान सर्व-साधारण के बीच माँ को ले आने में श्री हरि बाबाजी अग्रणी हैं। जब महात्मागण पास रहते है तब माँ उनकी छोटी-मोटी सुविधा-असुविधाओं की ओर विशेष ध्यान देती हैं। ताकि हम सब आदर्श-सेवा क्या है, इसे ठीक से समझ सकें। इस प्रकार माँ को अपने बीच अत्यन्त निकट अपनी माँ की तरह पाने का सुयोग मिला है। वर्ना इस रूप में लोगों के बीच सर्वदा साधारण रूप में पाने का सुयोग होता या नहीं, इसमें सन्देह है।

पहले की तरह अगर माँ भावावस्था में पड़ी रहतीं या मौनावस्था में महीनों गुजर जाते तो आजकल की भाँति सैकड़ों नर-नारी माँ के निकट आने का सुयोग शायद ही प्राप्त कर पाते। कितने कम उम्र के लड़के-लड़कियाँ माँ के स्नेह-प्यार और उनकी बातचीत तथा व्यवहार से मुग्ध होकर अपना सब कुछ त्याग कर माँ के चरणों में पड़े हैं। यदि वे माँ की पहले वाली अस्वाभाविक गंभीर मूर्त्ति देखते तो शायद ही उन्हें माँ के निकट आने का अवसर मिलता। माँ स्वयं ही कृपा करके अपने निकट आने का

अवसर दे रही हैं। अतीत की उन बातों को स्मरण करने पर मैं विस्मित रह जाती हूँ। वह सब बातें तो मानों स्वप्न की तरह हो गयी हैं। कभी-कभी चकित भाव से मैं माँ से पूछ बैठती हूँ—"माँ, क्या तुम वही माँ हो ?"

यही वजह है कि जब कभी मैं माँ के भाव में परिवर्त्तन देखती हूँ तब उन दिनों की घटनाएँ स्मरण हो आती हैं। तब माँ के श्री चरणों में कातर भाव से प्रार्थना करती हूँ—"माँ, तुम्हें इसी रूप में हम तुम्हें देखना चाहते हैं, इसी रूप में पाना चाहते हैं। तुम हमारे ऊपर कृपा करती रहो।"

## ३ अगस्त, १९५६

बुनी का पत्र आया है। माँ स्वस्थ हैं। मेरे बारे में डाक्टरों की राय जान कर माँ ने कहा है—"अच्छा हुआ, अजानित रूप में रोग है, फिर भी चिकित्सा चल रही है, यह ठीक नहीं है। कहाँ से सेप्टिक फोकस है, उसे अच्छी तरह जान लेना चाहिए। नियमित रूप से टहल रहो है, मालिश हो रही है, आनन्द। भोजन और मालिश की ओर विशेष ध्यान रखना।"

काशी में माँ के निकट अनेक लोग आये हैं।

**काशी यात्रा के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण**

नारायण स्वामीजी के पत्र से माँ का काशी-यात्रा के सम्बन्ध में विस्तृत सूचनाएँ प्राप्त हुईं। लक्सर स्टेशन पर माँ की बोगी काट कर दूसरी गाड़ी से जोड़ दी गयी थी। जब गाड़ी मुरादाबाद में पहुँची, उस समय मूसलधार पानी बरस रहा था। ऐसे माहौल में भी अनेक भक्त दर्शन करने के लिए स्टेशन पर आये थे। नारायण स्वामीजी ने आगे लिखा

है—उनके भाव कितने सुन्दर थे। दर्शनार्थियों में हरि बाबाजी के भक्त व्यासजी भी थे। उस मूसलधार वृष्टि में प्लेटफार्म पर खड़े होकर बड़े भाव में कीर्त्तन करते रहे। गीत का पद था—'आनन्दमयी माँ, स्नेहमयी माँ, दयामयी माँ, करुणामयी माँ आदि। बरसते हुए पानी में भींगते हुए कीर्त्तन करते समय व्यासजी ने सभी लोगों से कहा—"यह माँ की करुणा बरस रही है, आप लोग स्नान कर लें।"

दूसरे दिन ८॥ बजे बरेली स्टेशन पर गाड़ी आयी। उस वक्त भी तेजी से पानी बरस रहा था। बरेली में भी भक्तों की अपार भीड़ स्टेशन पर आयी थी।

शाहजहाँपुर में भी वही हालत थी। लखनऊ स्टेशन की हालत मत पूछिये। वहाँ इतने फूल-माला और मिठाइयों का अम्बार लग गया था कि उपस्थित जनता में दोनों हाथों से बाँटते-बाँटते कमी पड़ गयी था।

रायबरेली में अवकाश प्राप्त जज शुक्लजी तथा अन्य अनेक भक्त आये थे। वे गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में माँ के साथ काशी रवाना हुए।

प्रतापगढ़ स्टेशन पर ४–३० पर गाड़ी पहुँची। काशी से केशवानन्द माँ की गाड़ी लेकर स्टेशन पर मौजूद था। उसी गाड़ी पर माँ, नारायण स्वामी और उदास झूँसी के लिए रवाना हुए। शाम होते-होते झूँसी स्थित प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी के आश्रम में पहुँच गयीं। प्रभुदत्तजी माँ को पाकर बड़े प्रसन्न हुए। दूसरे दिन माँ काशी पहुँच गयीं।

## ५ अगस्त, १९५६

आज भी बुनी का पत्र आया है। माँ स्वस्थ हैं। लोगों की भीड़ हल्की है। माँ को आराम है।

## ६ अगस्त, १९५६

नारायण स्वामीजी के पत्र से संवाद प्राप्त हुआ कि पिछले २ ता० को साधन समर आश्रम के प्रतिष्ठाता श्री श्री सत्यदेव ठाकुर के कनिष्ठ भाई श्री श्री विश्वरंजन ठाकुर की तिरोभाव तिथि के उपलक्ष्य में माँ को वे लोग अपने काशी स्थित आश्रम में ले गये थे। आश्रम से कई ब्रह्मचारी पहले से जाकर वहाँ के कीर्त्तन में भाग ले रहे थे। उनके आश्रम में माँ के पदार्पण करने पर उन लोगों को विशेष आनन्द मिला था। माँ आश्रम में जाकर श्री श्री विश्वरंजन ठाकुर के चित्र पर हाथ फेरती रहीं। उस स्पर्श में कितना माधुर्य था।

इस प्रसंग में एक घटना याद आ रही है। कई साल पहले की बात है, देहरादून के किशनपुर स्थित आश्रम में दुर्गा पूजा हो रही थी। उसी समय पार्श्ववर्त्ती श्री श्री रामकृष्ण आश्रम के महात्मागण माँ को अपने आश्रम में आह्वान करके ले गये। उस समय वहाँ श्री श्री परमहंस देव की पूजा हो रही थी। माँ ने सीधे मन्दिर में जाकर श्री श्री ठाकुर के चित्र को दोनों हाथों से उठाकर कलेजे से लगा लिया। पता नहीं माँ के इस व्यवहार पर किसने क्या सोचा, किन्तु माँ तो हमेशा अपने ख्याल के अनुसार कार्य करती रहती हैं। किसके मन में क्या विचार आये, इस ओर ध्यान नहीं देतीं। माँ का सब कुछ अपूर्व है।

नारायण स्वामीजी ने एक और घटना का उल्लेख किया है। काशी के आश्रम में एक दिन माँ का दर्शन करने के लिए एक अमेरिकन साहब और मेम आये थे। वे दोनों दर्शन करने के बाद जब कमरे के बाहर निकलने लगे तब माँ अपने शरीर को दिखाती हुई सहसा बोल उठीं—"योर बेबी।"

माँ के मुँह से यह शब्द निकलते ही साहब दौड़ कर माँ के पास आया और आवेग के साथ उनकी पीठ पर हाथ रखते हुए चूम लिया। उक्त महिला ने भी ऐसा ही किया। थोड़े समय के भीतर माँ उन दोनों के लिए अपना आत्मीय बन गयीं। यह सब सोचने पर आश्चर्य होता है। बाद में माँ ने कहा था कि माँ के शरीर के पिता-माता ने भी कभी इस तरह उनका चुम्बन नहीं लिया था।

## ७ अगस्त, १९५६

बुनो के पत्र से पता चला कि माँ की तबीयत काफी खराब है। पेट में एक प्रकार का दर्द है। यह समाचार सुनकर मन बड़ा उदास हो गया। जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में सिंहासन को बाहर निकाला गया है। शायद माँ उसपर बैठें।

## ८ अगस्त, १९५६

माँ के बारे में समाचार मिला। दर्द अभी तक है।

जयन्ती के अवसर पर काशी में जो फिल्म तैयार की गयी थी, उसका प्रदर्शन आज रात को किया गया था। लगभग १७०० फुट लम्बी टेक्निकलर फिल्म थी। बहुत ही सुन्दर फिल्म है। समाचार पाकर अनेक व्यक्ति देखने आये थे।

## ९ अगस्त, १९५६

बुनी के आजवाले पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ का शरीर पहले की अपेक्षा कुछ ठीक है। फिर भी इधर-उधर घूमते रहने के कारण पूर्ण रूप से ठीक नहीं हो रहा है। अब उन्हें लम्बे अर्से तक के लिए विश्राम की जरूरत है। दिन या रात को सोने का भाव नहीं रहता, इसीलिए बदहजमी की शिकायत है।

भइया आज शाम को हवाई जहाज से कलकत्ता होते हुए काशी की ओर रवाना हो गये।

## १४ अगस्त, १९५६

आज दोपहर को भइया काशी से वापस आये। इनकी जबानी माँ के बारे में विस्तार से समाचार मिला। माँ की तबीयत अब अच्छी है। प्रसन्न मुद्रा में इन दिनों हैं।

पिछले रविवार १२ अगस्त को मामू की लड़की गीता का विवाह हो गया है। दीदी माँ की यह हार्दिक इच्छा थी कि उनके वंश परम्परा के अनुसार लड़की का विवाह शीघ्र हो जाय। इससे शुद्ध और पवित्र भाव अटूट रहता है। गीता की उम्र इस समय १२ वर्ष है। इतनी कम उम्र में एक प्रकार से आजकल विवाह नहीं होता। फिर भी दीदी माँ की इच्छा पूर्ण करने के लिए कई माह से मामू इधर-उधर प्रयत्न कर रहे हैं, पर कहीं कोई सम्बन्ध स्थिर नहीं हो पा रहा है। इधर श्रावण भी बीता जा रहा है। इसके बाद विवाह के लग्न समाप्त हो जायँगे। अन्त में आकस्मिक रूप से सारी व्यवस्थाओं का समा-

**मामू की लड़की गीता का विवाह**

धान सुन्दर रूप से हो गया। ढाका के प्राचीन भक्त विनय बनर्जी अपने छोटे लड़के के साथ काशी आये थे। लड़के की उम्र १५ साल थी। विधि के विधान से अन्त में इस बालक के साथ गीता के विवाह की बातचीत पक्की हो गयी। सिर्फ दो दिन के भीतर काफी धूमधाम से मामू के घर लड़की का विवाह हो गया। भइया भी उस समय उपस्थित थे। घटना चक्र से विन्ध्याचल से बेलू और कानपुर से जितेन दादा भी उस समय काशी आ गये थे।

भइया की जबानी यह भी पता चला कि आश्रम की नीति रक्षा करने के लिए मामू की लड़की के विवाह में आश्रम की ओर से किसी प्रकार की सहायता नहीं दी गयी थी। माँ स्वयं भी उपस्थित नहीं थीं। माँ के अपने भाई की लड़की के विवाह में आश्रम के नियमों का जरा भी उल्लंघन नहीं किया गया था, यह देखकर भइया ने प्रशंसा की।

## १८ अगस्त, १९५६

मोरवी के वृद्ध महाराजा माँ के एकनिष्ठ भक्त हैं। अस्वस्थ दशा में उन्हें बम्बई लाया गया है। यहाँ आने के बाद वे फोन द्वारा २–३ बार मेरे स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। महाराजा इन दिनों शय्याशायी हैं। वे अत्यन्त निराश हो गये हैं—शायद अब वे माँ का दर्शन नहीं कर पायेंगे। दो-एक दिन बाद उनका आपरेशन होनेवाला है। यह सब समाचार तार द्वारा माँ के पास भेजा गया।

## २० अगस्त, १९५६

काशी से बुनी और सावित्री के पत्र प्राप्त हुए। एकादशी से

झूलन का उत्सव आरम्भ हो गया है। आज पूर्णिमा के दिन उसकी समाप्ति होगी। काशी में एकादशी के दिन रात को सभी महिलाओं ने मिलकर माँ की उपस्थिति में भगीरथ का गंगा अवतरण और रामानुज लीला का अभिनय किया था। द्वादशी के दिन निमाई के जीवन का एक अध्याय, महिष-मर्दिनी का आविर्भाव और असुर वध आदि का अभिनय माँ की उपस्थिति में हुआ था। बाद में माँ को झूले पर बैठाकर उनकी आरती और कीर्त्तन किया गया। माँ स्वयं देर तक नाम गाती रहीं। झूलन द्वादशी का दिन भाईजी की देह त्याग-तिथि है, इसलिए आश्रम में विशेष रूप से पूजा और नाम का जप हुआ।

**काशी के झूलन उत्सव में माँ**

## २१ अगस्त, १९५६

कल यहाँ भी झूलन पूर्णिमा का उत्सव साधारण रूप से हुआ। स्थानीय भक्तों में लगभग सौ से कुछ अधिक स्त्री-पुरुष आकर शाम को कीर्त्तन और आरती करते रहे। बाद में सभी को प्रसाद दिया गया। भइया और लीलाबेन ने इसका प्रबन्ध किया था। रात १० बजे के बाद जयन्ती-उत्सव की फिल्म दिखायी गयी। १२ बजे तक लोग मौन-पालन करते रहे।

काशी से पटल और सावित्री के पत्रों से समाचार मिला कि माँ १८ ता० को सवेरे ८ बजे विंध्याचल जाकर शाम को वापस लौट आयीं। पटल के मित्र लखनऊ के पाल साहब माँ तथा अन्य लोगों को तीन मोटरों में विंध्याचल ले गये थे।

आज नारायण स्वामीजी की इच्छानुसार माँ के श्री चरणों में १००८ तुलसी पत्ती देकर पूजा करने की बातें लिखी गयी हैं और

यह भी लिखा है कि इसके साथ ही ८ सुवर्ण तुलसी पत्र देकर पूजा होगी। माँ की तबीयत ठीक है।

कलकत्ता से अनिल गांगुली और उसकी पत्नी सती काशी आयी थी। अनिल ने लिखा है कि काशी में झूलन खूब मजे में हुआ है। उत्सव के बीच माँ एक दिन गंगा दीदी के गुरु के नव प्रतिष्ठित आश्रम में गयी थीं। वहाँ की गोपाल और युगल मूर्त्ति बहुत सुन्दर है। एक दिन छोटेलालजी नामक एक वृद्ध साधक के मन्दिर में माँ को ले जाया गया था।

## २४ अगस्त, १९५६

**नारायण स्वामीजी द्वारा श्री श्री माँ के श्री चरणों में १००८ तुलसी पत्रों का दान**

काशी से विस्तारित समाचार आया है। झूलन के दूसरे दिन नारायण स्वामीजी की विशेष इच्छापर माँ की पूजा हुई थी। अन्न-पूर्णा के ऊपर माँ के कमरे में पूजा का आयोजन हुआ था। पूजा के सारे आयोजन करने के बाद माँ को सजाकर वहाँ ले जाया गया। माँ वहाँ जाकर सो गयीं। सुबह १०॥ बजे से दोपहर ३॥ बजे तक पूजा होती रही। ऊपर ही माँ को भोग दिया गया। नारायण स्वामीजी ने १००८ तुलसी पत्र माँ के चरणों में दिये। कई चरण तुलसी, प्रसाद और माँ के पैर की चन्दन छाप बुनी ने मेरे लिए भेजा है। माँ के उत्सव के समय इस तरह की पूजा करने की मेरी भी इच्छा थी, किन्तु उस समय विभिन्न झंझटों के कारण इसे पूरा नहीं कर सकी। अब नारायण स्वामीजी द्वारा मेरी वह इच्छा पूरी हो गयी, यह बड़े आनन्द की बात है।

मेरे बारे में माँ ने कहा है—"दीदी को कहो कि वह खूब मजे

में खाती-पीती रहे और पैदल चलकर चली आये।" माँ की कृपा से कब सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर उनके चरणों में हाजिर हो सकूँगी, यह सब सोचती हूँ।

माँ का शरीर अच्छा है। बुनी ने लिखा है कि माँ एक दिन लेटी हुई कह रही थीं कि उन्हें जिस प्रकार हर वक्त चलने का ख्याल रहता था, कहीं रहने का ख्याल नहीं होता था, उसी प्रकार आजकल रहने का ख्याल होता है। कहीं जाने का ख्याल नहीं होता।

मोरवी के वृद्ध राजा के बारे में जो तार माँ के पास भेजा गया था, प्रत्युत्तर में उन्होंने लिखवाया है—"सर्वक्षण एकमात्र भगवत्-स्मरण कर्त्तव्य। परमार्थ ही एकमात्र सत्य—और सब व्यर्थ।"

## २७ अगस्त, १९५६

आज के पत्र में माँ का समाचार मिला। माँ अच्छी तरह हैं। पूजा ने बाद २–४ दिन चुपचाप थीं। आजकल प्रसन्न मुद्रा में हैं। आजकल माँ जरा देर से जागती हैं। सवेरे मालिश होती है। बाद में सत्संग में जाती हैं। १२ बजे भोग हो जाने के बाद विश्राम करने जाती हैं। रात को पश्चिम वाले बरामदे में रहती हैं।

## २९ अगस्त, १९५६

काशी से आये पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ स्वस्थ हैं। वहाँ जन्माष्टमी का आयोजन विशेष रूप में किया जा रहा है।

कल यहाँ मण्डी की रानी साहिबा आयी थीं। उनकी विशेष

इच्छा पर टेप रेकार्डर में माँ का गायन और जयन्ती की फिल्म दिखाई गयी। टेहरी की महारानी की माँ, बहन, बहनोई आदि भी आये थे। मण्डी की रानी साहिबा के साथ पूरे पाँच वर्ष के बाद मुलाकात हुई। राजा साहब ब्राजील में भारत के राजदूत बनकर गये हैं। राजा साहब और रानी साहिबा दोनों ही अत्यन्त भक्तिपरायण हैं। सन् १९५० में जिन दिनों माँ मण्डी में थीं तब माँ तथा साथ के अन्य लोगों की खूब खातिर हुई थी।

## ३१ अगस्त, १९५६

**काशी में जन्माष्टमी और गोपालजी का तुलादान**

बुनी का पत्र आया है। बुनी ने लिखा है—जन्माष्टमी दिन दिन सवेरे पालकी खूब सजाकर आश्रम स्थित गोपालजी का जुलूस निकाला गया। फिर नये हाल में श्वेत पत्थर से बनी वेदी पर उन्हें बैठाया गया। हाल के भीतर अत्यन्त सुन्दर ढंग से बत्ती आदि सजा कर कुंजबन जैसा सजाया गया था। सभी लोग गोपालजी को स्पर्श कर प्रणाम करते रहे। बाद में उनका अभिषेक कर स्नान कराया गया। माँ के लिए अहमदाबाद से जयन्ती के मौके पर एक तुलादण्ड भेजा गया था। उसी में गोपालजी का तुलादण्ड उत्सव हुआ था। सोने की ५ गिन्नी, आसन-अंगुरी, चाँदी की थाली, कटोरी, गिलास, पीतल के गमले, प्रदीप, प्रदीपदान, घण्टा आदि, गव्यघृत, पंचामृत, चावल, तिल, बतासा, फल आदि द्वारा तुलादान उत्सव मनाया गया। उत्सव में मैं यद्यपि मौजूद नहीं थी, फिर भी माँ वहाँ मौजूद रहकर सभी को आनन्द देती रहीं, इस समाचार से मैं प्रसन्न हूँ।

नारायण स्वामीजी के पत्र से मुझे तुलादान उत्सव के सम्बन्ध
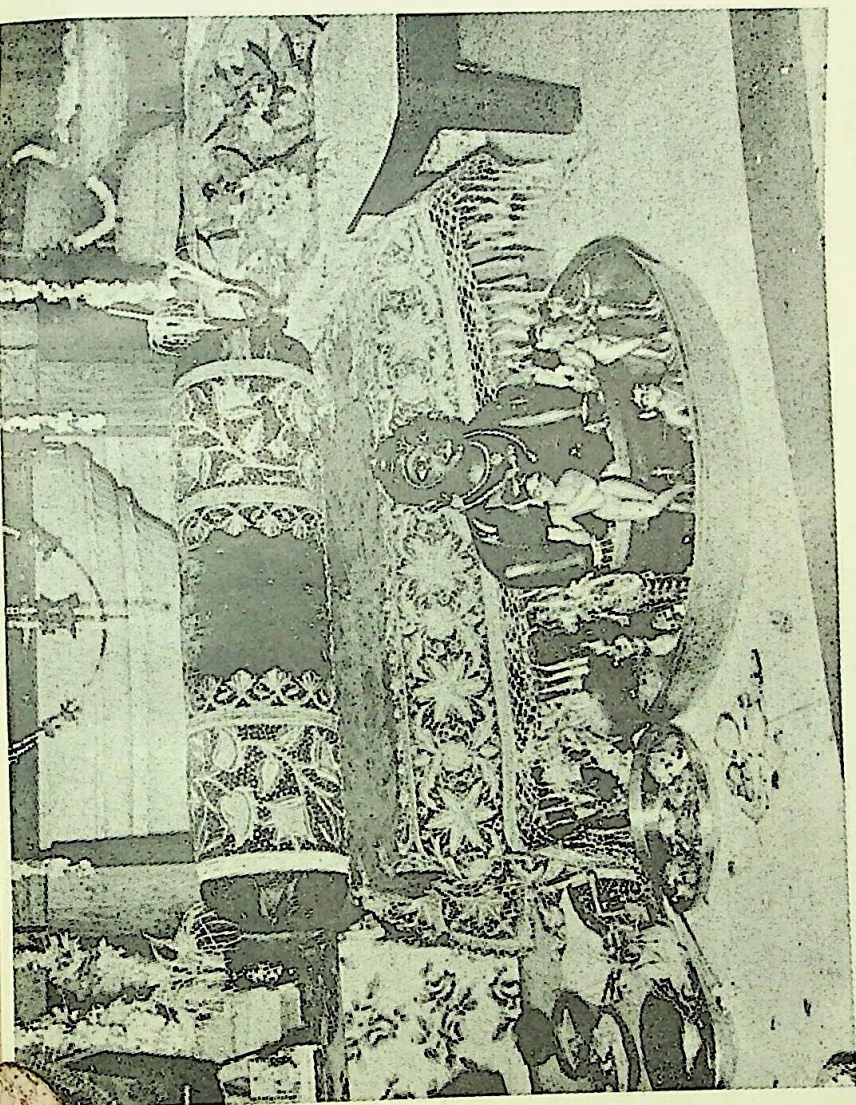
काशी आश्रम में श्री श्री गोपालजी

में विस्तारित समाचार मिला है। माँ की जयन्ती महोत्सव के समय जब तुलादान उत्सव हुआ था तब माँ का ख्याल हुआ था कि नारायण विग्रह और गोपालजी का तुलादान हो। उन दिनों जब माँ को तुलादण्ड पर बैठाया गया था तब माँ के हाथ पर नारायण शिला रखी गयी थी, किन्तु गोपालजी साल में केवल दो बार ( जन्माष्टमी और होली ) सिंहासन त्याग करते हैं, इसलिए गोपालजी को नहीं लाया गया था। पर माँ को जिस बात का एक बार ख्याल हो जायगा, वह पूर्ण होगा ही।

आश्चर्य की बात यह है कि अहमदाबाद से जर्मन सिलवर का जो तुलादण्ड आया था, अभी तक शास्त्रीय विधि से उपयोग नही हुआ था। इसी बीच उसे एक बार प्रेरक के पास वापस करने को चर्चा चली थी, किन्तु माँ ने ऐसा करने से मना किया था। अब संयोग ऐसा हुआ कि वही तुलादण्ड गोपालजी के तुलादान में काम आ गया। मानो माँ ने पहले से ही सारा इन्तजाम कर लिया था।

तुलादान उत्सव माँ की उपस्थिति में सुन्दर रूप में हो गया।

## १ सितम्बर, १९५६

कल रात को एक उल्लेखनीय घटना हो गयी। सवेरे माँ के यहाँ से एक तार आया—'भइया, लीला बेटी और लोग कैसे हैं ?' इसके पहले २-३ पत्र आये थे जिसमें यही पूछा गया था—"भइया कैसे हैं ?"

**अलक्ष्य में माँ किस तरह हमारी रक्षा करती हैं**

यह तार पाकर मैं जरा विस्मित हुई। तो क्या माँ ने भइया के बारे में कुछ देखा है। बातचीत के सिलसिले में भइया ने बताया कि जन्माष्टमी के दिन रात को भयानक स्वप्न

देखते रहे। उन्होंने देखा कि लीला की शय्या के पार्श्व में एक बहुत बड़ा साँप फन फैलाये बैठा है मानो लीला की रक्षा कर रहा हो। जैनी सर्प को देवी का प्रतीक मानते हैं। भइया ने यह भी देखा कि वे माँ का हाथ पकड़ कर टहल रहे हैं। इस स्वप्न का क्या तात्पर्य है, हम नहीं समझ सके। यह जरूर समझ गयी कि इस स्वप्न से माँ के तार का कोई सम्बन्ध है।

आज सवेरे एक और घटना सुनने में आयी। कल रात को भइया को दिल का दौरा आया था। लीला काफी घबड़ा गयी थी। विश्वास था कि जब तक माँ हैं, वे रक्षा करेंगी। अब जाकर भइया का स्वप्न, माँ का तार और गत रात्रि में भइया के दिल के दौरे का सम्बन्ध समझ सकी। माँ स्वयं सारी बातें स्पष्ट नहीं करतीं, किन्तु माँ अलक्ष्य रूप से किस रूप में किसकी रक्षा करती हैं, इसे कोई जान नहीं पाता।

## ३ सितम्बर, १९५६

काशी से बुनी का पत्र प्राप्त हुआ है। जन्माष्टमी के बाद नन्दोत्सव बड़े आनन्द के साथ मनाया गया। माँ कपड़ा जेवर पहनकर श्रीकृष्ण के रूप में सभी को आनन्द देती रहीं। अन्य सभी सखियों में माँ देखने में काफी अच्छी लग रही थीं। जन्माष्टमी के दिन माँ वाला सिंहासन बाहर निकाला गया था। उसपर गोपालजी को बैठाया गया था, माँ नहीं बैठी थीं।

कल माँ तीन दिनों के लिए श्री गोपाल ठाकुर के आश्रम में जाने वाली हैं। पूजा के पहले प्रत्येक बार इसी तिथि को, तीन दिन के लिए माँ को श्री गोपाल ठाकुर बड़े आग्रह के साथ

अपने यहाँ ले जाते थे। उनके निधन के पश्चात् उनकी लड़कियाँ भी पहले की भांति आह्वान करके ले जाती हैं।

डा० सेठ के परामर्श के अनुसार आज मेरे दांतों के दर्द के लिए दांतों के ६-७ प्लेट लिये गये। प्रयोजन होनेपर आपरेशन भी हो सकता है।

## ७ सितम्बर, १९५६

इलाहाबाद से बुनी के दो एक्सप्रेस पत्र प्राप्त हुए। माँ ४ ता० को तीसरे पहर ३ बजे के बाद काशी से मोटर पर रवाना होकर ६॥ बजे के लगभग इलाहाबाद स्थित श्री गोपाल ठाकुर के आश्रम में पहुँचीं। माँ के साथ नारायण स्वामीजी, उदास, बुनी गयी हैं। उसके साथ ही शोभा दीदी, सरयू दीदी, कृपाल, गुणिता ( छोटी लड़की ) और हीरू गये है। इलाहाबाद से शायद आज माँ विन्ध्याचल चली आयँगी। हम लोगों की वात्सरिक भागवत जयन्ती इस बार काशी के आश्रम में १२ ता० से प्रारम्भ होगी। पाठ के लिए वृन्दावन से श्रीनाथ शास्त्री जी को आह्वान किया गया है। जयन्ती के मौके पर माँ काशी रहेंगी।

इलाहाबाद स्थित श्री सत्यगोपाल के गीताश्रम में माँ

आज बुनी के पत्र से ज्ञात हुआ कि कलकत्ता में श्री विनय वंद्योपाध्याय के भवन में इस बार दुर्गा पूजा होने वाली है।

आगामी संयम-सप्ताह इस वार १२ नवम्बर से हरिद्वार के सप्त ऋषि आश्रम में होने वाला है। महात्मा गणेशदत्त गोस्वामीजी ने पिछले वर्ष संयम सप्ताह के अवसर पर हरिद्वार में सप्ताह मनाने के लिए आह्वान किया था। अहमदाबाद में कान्तिभाई मुंशा पूजा

या संयम-सप्ताह मनाने के लिए विशेष आग्रह कर रहे हैं, पर अब काफी देर हो जाने के कारण कोई परिवर्त्तन नहीं किया जा रहा है।

## १० सितम्बर, १९५६

भइया आज दोपहर को विन्ध्याचल से वापस आये। आपकी जबानी माँ का समाचार प्राप्त हुआ। माँ ७ ता० को सवेरे विंध्याचल पहुँचकर सिर्फ कृपाल को साथ लेकर मोटर से काशी चली गयीं। भइया जब ८ ता० की भोर को पहुँचे तब माँ उन्हें अपने साथ लेकर पुनः ९ बजे विंध्याचल रवाना हो गयीं। आज माँ शाम तक काशी लौट आयँगी। सुना कि माँ स्वस्थ हैं।

बम्बई से मेरे रवाना होने के बारे में भइया से माँ की बात-चीत हुई है। अहमदाबाद से कान्तिभाई मुन्शा मुझे कुछ रोज अपने यहाँ रहने के लिए बार-बार आग्रह कर रहे हैं। इस बार माँ इधर नहीं आ सकीं। ऐसी हालत में इतने निकट रहते हुए भी यदि मैं वहाँ न जा सकी तो कान्तिभाई बड़े दुःखित होंगे। यही वजह है कि ६-७ दिनों के लिए मेरे अहमदाबाद जाने के बारे में बातें हो रही है। वहाँ से वापस आकर इस महीने के अन्त तक मैं कलकत्ता चली जाऊँगी।

## १३ सितम्बर, १९५६

काशी से प्राप्त बुनो के पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ एक प्रकार से मजे में हैं। कल से भागवत जयन्ती शुरू हो गयी है। प्रभुदत्त जी के आश्रम में जो सज्जन पाठ करते हैं, नित्यानन्द भट्ट, वे ही पाठ कर रहे हैं।

## १७ सितम्बर, १९५६

आज सवेरे ६ बजे अहमदाबाद आयी। कुन्दनबेन और मूलजी भाई की लड़की नन्दू मेरे साथ आयी है। स्टेशनपर कान्ति भाई, उनके डाक्टर, शक्ति, अनिल आदि मौजूद थे। कल बम्बई स्टेशन पर मुझे गाड़ीपर बैठाने के लिए लीलाबेन आदि आयी थीं। मुझ से विदा लेते समय वे लोग रो पड़ीं। इतने कम अर्से के भीतर इतनी घनिष्ठता स्थापित हो गयी कि इस पर विचार करने पर चकित रह जाती हूँ।

## १९ सितम्बर, १९५६

आज सवेरे कान्ति भाई की मोटर से उषा, मंझली दीदी आदि डाकोर दर्शन कर आये। डाकोर इस क्षेत्र का दर्शनीय तीर्थ स्थान है।

बुनी के पत्र से ज्ञात हुआ कि काशी के नये आश्रम के मातृ मण्डप में भागवत-सप्ताह चल रहा है। इधर काशी में घनघोर वर्षा हो रही है जिसकी वजह से गाड़ियों का आवगमन ठप्प सा है।

## २० सितम्बर, १९५६

काशी से प्राप्त नारायण स्वामीजी के पत्र से ज्ञात हुआ कि इधर कई दिनों से माँ की तबीयत गड़बड़ चल रही है। मूसलधार वृष्टि में माँ ६–७ दिनों तक लोगों की सुविधा-असुविधा पर ध्यान देने के लिए देख-सुन रही थीं, इसी वजह से उन्हें सर्दी-खांसी और बुखार हो गया है। एक दिन तो तेज बुखार आया था। आजकल कुछ कम है।

अगले २६ ता० को मेरे पिता स्वर्गीय स्वामी अखण्डानन्दजी की तिरोधान तिथि है। नारायण स्वामीजी ने लिखा है कि जन्माष्टमी के दिन गोपालजी का जितने कपड़ों से तुलादान किया गया था, वे कपड़े ब्राह्मणों को दान में नहीं दिये गये थे। अब स्वामी जी के भण्डारा वाले दिन साधु-संन्यासियों को देने के लिए रख दिया गया है। लगभग ३०–४० व्यक्तियों को कपड़ा दान में दिया जायगा।

पूजा के पहले विनय दादा की इच्छानुसार उनके मकान में भागवत-सप्ताह प्रारम्भ करने का प्रबन्ध हो रहा है। उनकी बूढ़ी माँ श्री श्री माँ की उपस्थिति में श्रीमद्भागवत सुनने का आग्रह कर रही हैं। माँ भी कृपा करके राजी हो गयी हैं। यह सप्ताह ५ अक्टूबर से प्रारम्भ होने वाला है। संभवतः माँ २ या ३ ता० को काशी से कलकत्ता के लिए रवाना होंगी। शायद मैं भी माँ के साथ-साथ वहाँ पहुँचूँगी।

**विनय बाबू के घर दुर्गा पूजा की बात**

इस वर्ष कलकत्ता स्थित विनय बाबू के भवन कैसे पूजा की बातें तय हुईं, इस बारे में नारायण स्वामीजी ने विस्तार से लिखा है। जिन दिनों माँ देहरादून में थीं तभी विनय बाबू ने अपनी इच्छा जाहिर की, किन्तु उस समय ठीक से कोई बात तय नहीं हो सकी। पर माँ की बातचीत के भाव से यह अनुमान लगाया गया था कि प्रत्येक साल की तरह शायद इस बार पूजा का इन्तजाम न भी हो। माँ पहले से ही सब कुछ देख चुकी थीं, इसलिए देहरादून में जब कुछ लोगों ने पूजा के बारे में प्रश्न किया तब माँ ने कहा था—"पूजा कहाँ होगी, इस समय कह नहीं पा रही हूँ।"

आश्चर्य की यह बात यह रही कि पूजा कहाँ होगी या उन दिनों माँ कहाँ रहेंगी, यह भी तय नहीं था। माँ की बातचीत से हमें और भी शंकाएँ हुई थीं।

नारायण स्वामीजी ने लिखा है कि इस बार काशी में जब विनय दादा आये थे तब उन्होंने मातृ चरणों में पुनः प्रार्थना की थी। बाद में भाइयों से परामर्श करने के लिए कलकत्ता चले गये। ३-४ दिन बाद वहाँ से वापस आने के बाद बात पक्की कर गये। उसी समय भागवत-सप्ताह करने के बाद उनकी वृद्धा माता को भागवत सुनाने का प्रस्ताव उन्होंने रखा था।

साधारण तौरपर पूजा का प्रबन्ध विराट रूप से होता है। सैकड़ों आदमियों के भोजन एवं उनके ठहरने का इन्तजाम करना पड़ता है। ऐसी हालत में कलकत्ता जैसी नगरी में, विनय दादा के भवन में पूजा होगी सुनकर सभी लोग चकित रह गये थे। एक और आश्चर्य की बात यह हुई कि पूजा के कुछ रोज पहले तक अन्यत्र कहीं से भी पूजा के सम्बन्ध में कोई प्रस्ताव नहीं आया था, तभी माँ को ख्याल हुआ था कि अगर इस बार कोई आकस्मिक बाधा न आयी तो विनय बाबू के गुरु पुत्र के यहाँ श्याम नगर जायँगी। पिछले वर्ष भी पूजा के समय एक दिन विनय दादा माँ को अपने गुरु पुत्र के घर पूजा-मण्डप में ले गये थे। उस वर्ष श्यामनगर में उक्त पूजा के समय कुछ घटनाएँ हुई थीं। इस वर्ष विनय बाबू के गुरु पुत्र कुछ दिनों के लिए देहरादून में माँ के पास आकर ठहरे थे। माँ देहरादून में पूजा के बाबत ५१) रु० दक्षिणा दिलवायी थीं। कलकत्ता से अवनी दादा ने लिखा है कि पूजा के बाबत कोई भक्त ५००) रु० दे गया है और एक भक्त ने १०००) रु० देने का वायदा किया है। माँ प्रत्युत्तर में लिखवायी हैं कि दाता की अनिच्छा न हो तो वह रकम श्यामनगर की पूजा के

लिए विनय दादा के गुरुपुत्र को दे दी जाय। इससे यह होगा कि इस वर्ष वे जरा बढ़िया ढंग से पूजा कर सकेंगे।

नारायण स्वामीजी के पत्र में एक और घटना का उल्लेख है। काशी में जिस मातृ मण्डप पर जहाँ भागवत जयन्ती हो रही है, वहीं पर माँ ने एक काली मूर्त्ति देखी है। मूर्त्ति का आनन पूर्व की ओर था, किन्तु माँ मानो मूर्त्ति को उत्तर मूर्त्ति रखने को कह रही थीं। इस सूक्ष्म कथा को प्रकट करते ही बुनी बोल उठी— "इस बार की काली पूजा में हम तुम्हें रहने के लिए कहना चाहते थे, पर अभी तक ऐसा अवसर नहीं मिला जिससे कहा जाय। अब जब कि काली मूर्त्ति इस रूप में दिखाई दे गयी तब इस बार काली पूजा आश्रम में हो।"

नारायण स्वामीजी ने आगे यह भी लिखा है कि रांची के भक्तों ने इस बार की काली-पूजा के अवसर पर माँ को अपने यहाँ रहने के लिए लिखा है, किन्तु काशी-आश्रम की लड़कियाँ जबकि अपने यहाँ पूजा के लिए प्रार्थना कर चुकी हैं तब ऐसी आशा की जाती है कि इस बार काली-पूजा और अन्नकूट के समय माँ यहीं रहेंगी।

माँ की अस्वस्थता के बारे में पता चला कि माँ एक दिन कह रही थीं—"कई दिनों से ख्याल हो रहा है, बीमार होकर सोये रहना बहुत दिनों से हुआ नहीं। इस ख्याल के साथ ही साथ सर्दी, खाँसी, बुखार, जी मिचलना, हाथ-पैर ठण्ढा होना और सारे बदन में दर्द पैदा हो गया। एक प्रकार से ज्वरानन्द।"

**ज्वरानन्द माँ**

माँ का सब कुछ अलौकिक होता है। माँ अक्सर कहा करती हैं—"रोग के रूप में वे ही तो। सभी आनन्द।"

नारायण स्वामीजी ने आगे लिखा है—इलाहाबाद के अन्यतम एडवोकेट श्री गोपाल स्वरूप पाठक की कन्या शान्ता एम० ए० पास करने के बाद रिसर्च कर रही है। उसने एक दिन आकर नारायण स्वामीजी से कहा कि माँ की शारीरिक स्वस्थता के लिए एक लाख जप करवायेगी, किन्तु भूल से उसके मुँह से एक करोड़ शब्द निकल गया। नारायण स्वामीजी ने उसे उत्साह देते हुए कहा कि माँ के शरीर के लिए एक करोड़ जप कराना अच्छा है। संसार में लोग पुत्र के लिए, कन्या के लिए, पति या पत्नी के लिए न जाने कितना करते रहते हैं। हम लोग माँ के चरणों में आये हैं। हम लोगों के लिए माँ के शरीर के लिए इससे बढ़कर अन्य क्या आनन्द की बात होगी। जप करने के बाद माँ के श्री चरणों में एकान्त भाव में प्रार्थना करते हुए जताने लगे—"माँ, तुम ख्याल करके हम लोगों के लिए शरीर को स्वस्थ रखो।"

**शान्ताकृत एक करोड़ जप संकल्प**

काशी जैसे स्थान में यज्ञ मन्दिर के सामने इस तरह की बातें हुई थीं, इसलिए नारायण स्वामीजी कहते हैं कि कुमारी कन्या के मुँह से जब 'एक करोड़' शब्द निकला है तब सभी लोगों को मिलकर एक करोड़ जप करना चाहिए।

शान्ता का प्रस्ताव था कि दुर्गा पूजा के बीच ही एक लाख जप समाप्त किया जाय, किन्तु एक करोड़ जप इस बीच समाप्त करना कठिन होगा, इसलिए काली पूजा के अवसर पर उक्त जप समर्पण करने की बात तय हुई। नारायण स्वामीजी ने विभिन्न जगहों में पत्र द्वारा सूचित कर दिया कि माँ के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जो भक्त ऐसा करने को इच्छुक हैं, वे लोग काली

पूजा के २-३ दिन पहले अपनी जप संख्या मुझे अवश्य सूचित कर दें।

## २१ सितम्बर, १९५६

आज सवेरे उषा, मंझली दीदी आदि चान्दोद से वापस आकर द्वारका चली गयीं। इनके जाने का प्रबन्ध कान्ति भाई ने किया। कुन्दन भी उनके साथ गयी। आज मैं बम्बई वापस जाने वाली थी, किन्तु इतनी दूर आकर वे लोग द्वारका बिना दर्शन किये वापस जायँगे, यह अच्छा नहीं लगा। यही वजह है कि अब दो दिन बाद बम्बई जाने का निश्चय कर इन सबको द्वारका जाने के लिए उत्साहित किया।

माँ के अधिकतर भक्त नित्य तीसरे पहर मुझ से मिलने आते हैं। माँ इधर दो साल से नहीं आयी हैं। सभी लोग इसी बात की शिकायत कर रहे हैं। मुकुन्द भाई स्थानीय ला कालेज के अध्यक्ष हैं। अत्यन्त सज्जन और भगत। इनकी इच्छा थी कि इस बार भागवत-जयन्ती अहमदाबाद में हो। जब यह सम्भव नहीं हुआ तब आपने इस उपलक्ष्य में कुछ रकम काशी भिजवा दी। कान्ति भाई बार-बार अनुरोध कर रहे हैं कि अगले वर्ष का जन्मोत्सव और संयम-सप्ताह दोनों यहीं हो। इन लोगों का विश्वास है कि अगर इनकी ओर से प्रार्थना पेश करूँ तो माँ उसे अवश्य मान लेंगी।

## २३ सितम्बर, १९५६

तीसरे पहर उषा वगैरह द्वारका से वापस आयीं। हम लोग शाम को बम्बई की ओर रवाना हुए। मुकुन्द भाई के अनुरोध पर

स्टेशन जाते समय उनके यहाँ होती हुई गयी। स्टेशन पर मुझे गाड़ी पर चढ़ाने के लिए काफी लोग आये थे। इतने लोगों की भीड़ देखकर स्टेशन के अधिकारी सोच रहे थे कि शायद माँ आयी हैं।

## २९ सितम्बर, १९५६

काशी से बुनी का पत्र मिला है। पता चला कि पानी बरसने के कारण माँ पहले विंध्याचल नहीं जा सकीं, परसों दोपहर को खाने-पीने के बाद माँ, नारायण स्वामी, शोभा और दाशु को साथ लेकर चली गयी हैं। शायद वहाँ २-३ दिन विश्राम करेंगी। इसी बीच मण्डी की रानी साहिबा दिल्ली जाकर वहाँ से जहाज द्वारा काशी में माँ का दर्शन करने गयी थीं। हिमाचल प्रदेश के गवर्नर भद्री के राजा साहब भी अपनी पत्नी एवं कई लोगों के साथ माँ के पास गये थे।

## १ अक्टूबर, १९५६

आज शाम को कलकत्ता मेल से हम लोग रवाना हुए। स्टेशन पर काफी लोग गाड़ी पर चढ़ाने आये थे। इन लोगों के साथ कितना गम्भीर प्रेम सम्बन्ध है। गाड़ी यहाँ से ९ बजे छूटी। अश्रु पूरित नेत्रों से लोगों ने मुझे विदा दी। मैं इन लोगों से पूजा के अवसर पर कलकत्ता आने के लिए कहती रही।

## २ अक्टूबर, १९५६

आज का सारा दिन-रात गाड़ी पर गुजारना है गोकि

दिक्कत की कोई बात नहीं है। हमारे साथ पर्याप्त भोजन है। मेरे साथ उषा, मंझली दीदी, चन्दन, हेम दीदी, पानू और सावित्री चल रहे थे। कल सुबह पहुँचकर माँ का दर्शन शायद कर पाऊंगी। रह-रहकर यही बात स्मरण हो रही है। पिछले १९ जुलाई को लक्सर स्टेशन पर मैं माँ से विलग हुई थी।

## ३ अक्टूबर, १९५६

**बम्बई से मैं कलकत्ता आयी**

सवेरे गाड़ी जब हवड़ा स्टेशन पर पहुँची तो देखा बुनी मुझे लिवा जाने के लिए आयी है। इसके अलावा और भी अनेक लोग उपस्थित थे। साधारण रूप से हर बार से इस बार अधिक भीड़ थी। बाद में पता चला कि ये लोग माँ को लेने के लिए आये थे। स्टेशन से मैं माँ के निर्देशानुसार सीधे आश्रम में चली गयी।

आश्रम में आने पर बुनी की जबानी माँ के बारे में विस्तार से समाचार मिला। माँ परसों काफी तड़के बिन्दु की मोटर से काशी वापस आ गयी थीं। बिन्दु इलाहाबाद निवासी माँ के पुराने भक्त, अवकाश प्राप्त जज नीरजनाथ मुखोपाध्याय का सुपुत्र है। आजकल वह न्यू इण्डिया इंश्योरेंस कं० की इलाहाबाद शाखा का सेक्रेटरी है। श्री शाह ने उसका चुनाव कर नौकरी पर रखा है। हाल ही में बिन्दु को कम्पनी की ओर से गाड़ी मिली है। उसकी इच्छा थी कि माँ एक बार उसकी गाड़ी पर जरूर चढ़े। इस बार उसकी वह इच्छा पूरी हुई। उसके साथ उसकी बहन बीथू और इलाहाबाद विश्वविद्यालय की अध्यापिका श्री ललिता पाठक भी आयी थीं। बीथू एम० ए० पास करने

के बाद इस साल इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डाक्टरेक्ट कर चुकी है। श्रीयुक्ता पाठक अत्यन्त विदुषी और भक्तिमती महिला हैं। आप उत्तर प्रदेश के अन्यतम प्रसिद्ध एडवोकेट श्री गोपाल स्वरूप पाठक की बहन हैं।

**माँ कलकत्ता की ओर**

माँ का इस बार काशी से कलकत्ता जाने का दिन लोगों को नहीं बताया गया। माँ के लिए वर्थ रिजर्वेशन भी चुपचाप कराया गया। यह बात पहले से तय हो गयी थी कि आश्रम के लोग तीसरे पहर कलकत्ता चले जायँगे और माँ पहली तारीख को रवाना होंगी। इधर माँ जब काशी वापस आयीं तो पता चला कि दीदी माँ के लिए रिजर्वेशन न मिलने के कारण ३० ता० को लोग यात्रा नहीं कर सके। अन्त में सभी लोग पहली ता० को एक साथ देहरादून एक्सप्रेस से रवाना हुए। गाड़ी में माँ को ढाका के उपेन्द्र-नाथ वंद्योपाध्याय के ज्येष्ठ पुत्र तिनु का ख्याल हुआ था। श्री तिनु आजकल गया में सिगनल इंस्पेक्टर हैं। देहरादून एक्सप्रेस गया होकर जाती है। सुना कि डेहरी आनसोन से जब गाड़ी छूटने लगी तभी अचानक तिनु न जाने कहाँ से आकर माँ की गाड़ी पर सवार हो गया। माँ को अप्रत्याशित रूप में देखकर वह अवाक् रह गया बाकी लोग चकित रह गये। माँ उसे देखते ही पूछ बैठी—"कहाँ जा रहे हो ? अभी कुछ देर पहले तुम्हारा ख्याल हुआ था।"

तिनु ने बताया कि वह पिछले कई रोज से नित्य सुबह डेहरी आनसोन आता है और यहाँ का काम समाप्त करके शाम को गया वापस चला जाता है। उस दिन माँ के ख्याल से अचानक मुलाकात हो गयी।

तिनु के साथ बातचीत करते करते गाड़ी गया स्टेशन पर आकर ठहरी। तुरत माँ बोल उठीं—"मैं यहाँ उतरूंगी। नारायण,

उदास, सती और दासु को मेरे साथ आने दो। बाकी तुम लोग सीधे चले जाओ।"

गया में माँ

बाकी लोगों का मन उदास हो गया। शोभा तो प्लेटफार्म पर रोने लगी। बहरहाल माँ उतर गयीं। कलकत्ता कब तक पहुँचेंगी, इस बारे में कुछ नहीं बतायीं। बुनी तथा अन्य लोग चले आये।

माँ कब कलकत्ता आयेंगी, सभी यही सवाल पूछ रहे थे। सारी बातें सुनने के बाद में माँ के लिए जरा परेशान हो उठी। माँ कहाँ गयीं, क्या हुआ, पता नहीं उन्हें किसी असुविधा का सामना तो नहीं करना पड़ रहा है? यद्यपि मैं यह जानती हूँ कि माँ की इच्छा में कोई कमी नहीं होती। एक बार ऐसा आभास हुआ कि शायद बुनी माँ की गति-विधि के बारे में कुछ जानती है और संभवत: माँ ने यह सब बताने को मना किया है, इसलिए वह कुछ कह नहीं रही है।

थोड़ी देर बाद पटल का भाई नेडू आया। उससे यह पता चला कि कल उसे पटल के यहाँ से तार प्राप्त हुआ है कि माँ शायद दमदम में आयेंगी। यह समाचार पाते ही कुछ लोग मोटर लेकर दमदम स्थित आपताप मित्र के घर पहुँचे। वहाँ जाने पर पता चला कि मित्र जी माँ के बारे में कुछ भी नहीं जानते। वे लोग निराश होकर वापस आ गये।

फिर भी सभी के मन में यही भावना है कि शायद आज माँ आयेंगी। आज ही बोधन है। विनय बाबू ने माँ से कहा था कि बोधन के दिन आप मेरे यहाँ अवश्य आ जायँ।

धीरे-धीरे दोपहर ढल गयी। खाना-पीना समाप्त हो गया। अचानक लोग चीख उठे—"माँ आ गयीं, माँ आ गयीं।"

देखा—सचमुच में माँ आयी हैं। माँ सीधे मेरे कमरे में चली आयीं। इसके बाद माँ और नारायण स्वामीकी जबानी इन दिनों की कहानी सुनने में आयी।

माँ जब गया में श्रीमान् तिनु के साथ चल पड़ीं तब वह माँ को अपने क्वाटर में ले गया। जिस टैक्सी से माँ स्टेशन से चली थीं; उसे छोड़ देने के लिए माँ ने मना किया। कुछ देर बाद माँ ने नारायण स्वामीजी से पूछा—"कहाँ घूमने चला जाय?" नारायण स्वामीजी ने तुरत कहा—"बुद्धगया।" उसी टैक्सी से लोग तुरत बुद्धगया की ओर रवाना हो गये।

**बुद्धगया में गन्ध रूप में बुद्धदेव की उपस्थिति एक विचित्र घटना**

वहाँ पहुँचकर लोग माँ के साथ मन्दिर दर्शन कर रहे थे कि अचानक एक अनजाने गन्ध से वातावरण गमक उठा। नारायण स्वामीजी ने कहा—"बहुत सुन्दर गमक है। शेफाली फूल की।"

माँ ने कहा—"सिर्फ शेफाली की नहीं, कई फूलों का मिलकर जिस प्रकार होता है, ठीक उसी प्रकार का।"

लोग चकित भाव से चारों ओर देखने लगे—आसपास कहीं भी फूल के पौधे नहीं हैं, फिर यह महक कहाँ से आ रही है? अन्त में लोग जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से माँ की ओर देखने लगे। थोड़ी देर बाद माँ बोलीं—"गन्धरूप में आज बुद्धदेव अपनी उपस्थिति तुम लोगों को जता गये।"

पुनः आगे बोलीं—"महक जैसे इस शरीर के भीतर से उबल-

कर गिर रहा है।" इतना कहने के बाद वे मोटर पर आकर बैठ गयीं। आश्चर्य तब भी हुआ जब लोगों को मोटर में बैठने पर वैसी ही महक मिलने लगी।

यहाँ से मोटर विष्णुपाद की ओर रवाना हुई। उस समय रात के १२ बज चुके थे। नारायण स्वामीजी आदि लोग आशंका कर रहे थे कि मन्दिर का द्वार शायद बन्द हो गया हो। मन्दिर के समीप पहुँचने पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उस समय मन्दिर में कीर्त्तन हो रहा था। तब लोगों को समझ में आया कि मन्दिर का दरवाजा खुला है। माँ जब स्वयं साथ आयी हैं तब मन्दिर का दरवाजा बन्द होगा, यह आशंका मन में लाना निरर्थक था।

उस वक्त श्री विष्णु पाद पद्म का श्रृंगार हो रहा था। पाद पद्म में श्वेत चन्दन पोत दिया गया है। उसके ऊपर कुमकुम जैसी किसी रंगीन सामग्री से शंख, चक्र, ध्वजा, अंकुश आदि बनाया गया है। पादपद्म का गह्वर तुलसी की पत्तियों से भर दिया गया है। इसके ऊपर श्वेत मालाओं से पादपद्म के चारों ओर सजाया है। सभी लोग मुग्ध दृष्टि से इस सुन्दर श्रृंगार को देखते रहे।

कुछ देर बाद लोग माँ को लेकर बाहर आकर मन्दिर देखने लगे तभी मन्दिर से एक पण्डा आया और माँ से कहा कि सोना के शेष नाग का श्रृंगार होगा। पुनः लोग मन्दिर के भीतर गये। उस वक्त विष्णुपादपद्म को घेरकर एक अनेक फनयुक्त सोने का नाग रख दिया गया था। कुछ देर बाद आरती होने पर मन्दिर बन्द कर दिया गया। माँ की असीम कृपा से उस अपूर्व सुन्दर श्रृङ्गार का दर्शन लोग कर सके। कुछ देर पहले या बाद में आने पर यह दर्शन न होता। मानो माँ ठीक समय पर लोगों को लेकर हाजिर हो गयी थीं।

गया के रेलवे क्वाटर में जिस वक्त ये लोग पहुँचे उस वक्त रात के १।। बज चुके थे। माँ रात को बाहर सो गयीं। सामने नारायण स्वामी, दासु और उदास लेट गये। सती घर के भीतर जाकर सोयी। दूसरे दिन सवेरे ७।। बजे माँ कलकत्ता की ओर रवाना हुईं।

यथा समय माँ सियालदह एक्सप्रेस से कलकत्ता की ओर रवाना हुईं, किन्तु इस विषय में कलकत्ता में किसी को कोई सूचना नहीं दी गयी थी। फलस्वरूप जब माँ सियालदह स्टेशन पर उतरीं तब वहाँ कोई ले आने वाला नहीं था। फिर माँ हबड़ा की जगह सियालदह उतरेंगी, इसकी कल्पना किसी को नहीं थी। माँ हबड़ा में ही उतरेंगी, इस विचार से कल अनेक बार लोग उक्त स्टेशन पर जाकर वापस आ गये थे। माँ गया में उतरी हैं अतएव उधर से होकर आनेवाली सभी गाड़ियों के आने के समय लोग हबड़ा पर खोजने गये थे, किन्तु माँ सभी को धोखा देकर कलकत्ता आ जायँगी, यह कल्पना किसी को नहीं थी।

**अज्ञात रूप से माँ का कलकत्ता आगमन**

माँ जिस वक्त कलकत्ता पहुँचीं, उस समय प्रचण्ड रूप से पानी बरस रहा था। ट्राम-बस बन्द थे, इसलिए एक टैक्सी पाने में इतनी देर हो गयी। काफी देर बाद एक टैक्सी नारायण स्वामीजी ले आये और तब माँ से पूछा कि कहाँ जायँगी ?

माँ ने कहा—"दमदम चलो।"

पटल ने ठीक ही समाचार दिया था कि शायद माँ दमदम जायँगी। यह समाचार पाकर पटल का भाई दोपहर को वहाँ हो

आया था, पर तब तक माँ के आने का समाचार प्राप्त नहीं हुआ था।

श्री आपताप मित्र का मकान सियालदह से काफी दूर है, दमदम हवाई अड्डे के पास। माँ यहाँ आ रही हैं, इस समाचार से वे लोग अनभिज्ञ थे। फलस्वरूप माँ जब शाम को उनके दरवाजे पर पहुँचीं तब घर पर कोई मौजूद नहीं था। काफी देर तक पुकारने के बाद नौकर ने आकर दरवाजा खोला। माँ के लिए आपताप दादा ने एक छोटा सा दो तल्ले का मकान बनवाया है। इसके पूर्व माँ उक्त मकान में कई बार जाकर ठहर चुकी हैं। नौकर ने सूचना दी कि पूजा के उपलक्ष्य में सपत्नीक अपने गाँव चले गये हैं। उनकी लड़की और दामाद जरूर यहाँ हैं, किन्तु इस वक्त वे दोनों भी शहर गये हुए हैं। कब तक लोटेंगे पता नहीं। माँ के मकान की चाभी उन्हीं लोगों के पास है।

माँ का ख्याल। मकान बन्द है, फिर भी माँ वहीं एक पेड़ के नीचे बैठ गयीं। नारायण स्वामीजी काफी तलाश करने के बाद नौकरों के यहाँ से तेल की एक बत्ती माँग लाये। चारों ओर पेड़-पौधे हैं, सांप का डर है। साथ में माँ हैं, इसलिए सभी आनन्द में मग्न हैं। सभी लोगों ने निश्चय किया कि आपताप दादा के दामाद और लड़की अगर रात को वापस न आये तो हम सब रात भर इसी पेड़ के नीचे, माँ के साथ रात्रिवास करेंगे।

माँ इधर-उधर घूमने लगीं। दाशु को पास के बाजार में भेज-कर सूजी, चीनी और आलू मंगवाया गया, पर दूध नहीं मिला। दूसरी ओर नल में पानी आना बन्द हो गया था। न तो दूध है और न पानी, आखिर रसोई कैसे बने। यह सब सोचते हुए उदास परेशानी अनुभव करने लगी। तभी नारायण स्वामीजी ने प्रस्ताव

रखा कि दाशु को बाजार भेजकर डाब मंगवाया जाय उसी के पानी से हलुआ बने।

इस प्रकार जब सारी तैयारियाँ हो गयीं तब आपताप दादा के दामाद और लड़की दोनों आये। यहाँ का मजमा देखकर वे दोनों हतप्रभ हो गये। अत्यन्त दुःखित और लज्जित होकर जल्दी से माँ के मकान में उन सबको ले गये। यहाँ आकर वे लोग बार-बार क्षमा याचना करते रहे। माँ हंसती हुई इन लोगों से बोली—"आपताप बाबू को कहा गया था कि एक बार बिना सूचना दिये मकान में घुस जाऊँगी। आज वही हुआ। यह भी एक आनन्द है।"

माँ को इस तरह आनन्दित होते देख उन लोगों का दुःख दूर हुआ। वे लोग प्रसन्न हो उठे। माँ का सब कुछ विचित्र होता है। माँ ने स्वयं आनन्द प्रकाश करते हुए उनके दुःख को दूर कर दिया। वर्ना माँ की दृष्टि में सब एक है, चाहे पेड़ के नीचे रहना हो या राजप्रासाद में। माँ को दोनों ही स्थानों में समान आनन्द मिलता है। सभी लोगों ने उसमें से कुछ-कुछ प्रसाद प्राप्त किया। बाद में यह निश्चय हुआ कि माँ कल सुबह शहर में जायँगी, पर कहाँ जायँगी यह नहीं बताया गया। माँ ने सिर्फ यही कहा—"देखा जाय क्या होता है।"

आज सवेरे जब रवाना होने की बारी आयी तब सवाल उठा कि आखिर कहाँ चला जाय। नारायण स्वामीजी ने कहा कि उनके पूर्वाश्रम के भाइयों का भवन है। वहाँ एक ऐसा कमरा है जहाँ आज तक कोई भी गृहस्थ व्यक्ति नहीं ठहरा है। इस प्रस्ताव पर माँ राजी हो गयीं। आपताप दादा के दामाद ने अपनी गाड़ी से वहाँ पहुँचाया। आश्चर्य की बात है! माँ कलकत्ता में ही हैं और उनके अगणित भक्त इस बात को नहीं जान सके। किसी प्रसंग पर एक

बार भक्तों ने कहा था कि कलकत्ता जैसे शहर में माँ का अज्ञात रूप में रहना बहुत ही कठिन है—एक प्रकार से असम्भव है। कोई न कोई समाचार प्राप्त कर लेगा। किन्तु माँ को अगर ख्याल हो जाय तो कुछ भी असम्भव नहीं है, क्या यह उसका एक उदाहरण नहीं है ?

माँ जब नारायण स्वामीजी के पूर्वाश्रम वाले भाई के मकान के सामने आयीं तब नारायण स्वामीजी ने आगे बढ़कर तुरन्त समाचार दिया। वे लोग आनन्द से इतने अधीर हो उठे कि कैसे क्या करें, समझ नहीं पा रहे थे। दौड़ धूप करके शंख बजाते हुए वे लोग माँ को बड़े आदर के साथ मकान के भीतर ले गये। आज महालया है। माँ अपने ख्याल से बिना किसी निमन्त्रण के उनके मकान में आयी हैं, इससे वे लोग आनन्द से आत्महारा हो गये। वह परिस्थिति कैसी रही होगी, उसका दृश्य मैं अपने मानस-चक्षु में देखती रही।

बहरहाल, माँ को मकान के भीतर ले जाकर एक बरामदे में, खुले जगह पर आसन बिछाकर उन्हें बैठाया गया। जिस कमरे का उल्लेख नारायण स्वामीजी ने किया था, झटपट उसकी सफाई हो गयी, चौकी बिछायी गयी जिस पर माँ का बिछौना ठीक कर दिया गया। माँ इधर आराम करने गयीं और उधर उदास इस बीच भोजन तैयार करके माँ के लिए भोग का इन्तजाम करने लगी। भोग के बाद कुछ देर विश्राम करने के पश्चात् लगभग ३॥ बजे माँ सभी लोगों को साथ लेकर आश्रम आयीं। हम लोग माँ की इस विचित्र लीला की कहानी सुनकर अत्यन्त चकित रह गये।

माँ कुछ देर हमारे निकट बैठने के बाद नारायण स्वामीजी

से बोलीं—"चलो नारायण, विनय बाबू के यहाँ जरा होती आऊँ। पिताजी अगर राजी हो जाँय तो कल यहाँ ठहरकर परसों वहाँ जाया जा सकता है।"

आज महालया है। विनय बाबू पहले से ही प्रार्थना निवेदन कर चुके हैं कि आज माँ उनके यहाँ जरूर पदार्पण करें। राहुल की पत्नी बेबी अपनी गाड़ी से माँ को ले गयी। माँ के साथ नारायण स्वामीजी, पानू, बुनी और उदास गये। माँ जब भी कलकत्ता आती हैं तब अधिकतर राहुल चट्टोपाध्याय (देश-बन्धु चित्तरंजन दास का भांजा) और बेबी माँ को इधर-उधर ले जाते हैं और ले आते हैं। कलकत्ता में अगणित भक्त हैं। जब भी माँ कलकत्ता आती है तब जैसे यहाँ भक्तों में इस बात की प्रतिद्वन्दिता आरम्भ हो जाती है कि किसकी गाड़ी में माँ कृपा करके बैठेंगी। किसकी गाड़ी कब तक माँ की सेवा करेगी। यहाँ तक कि सड़कपर चलते समय किसकी गाड़ी माँ की गाड़ी के पीछे-पीछे चलेगी, इस बात की भी प्रतियोगिता शुरू हो जाती है। केवल इसी बातपर माँ की गाड़ी के पीछे १५-२० मोटरें दौड़ने लगती हैं—यह एक अद्भुत दृश्य बन जाता है। बंगाल के बाहर रहने वाले भक्त इस घटनापर अत्यन्त आश्चर्य प्रकट करते हैं, क्योंकि माँ के लिए इतना आकर्षण अन्य प्रदेशों में नहीं दिखाई देता।

जो भी हो, माँ की गाड़ी जब विनय दादा के घर के सामने पहुँची तब सभी आनन्द से पागल हो उठे। दुर्गा की प्रतिमा के पास ही एक चौकी पर एक सुन्दर आसन बिछाकर उसपर माँ को बैठाया गया, फिर आरती की गयी। इसके बाद माँ को ऊपर छत पर ले जाया गया। यहींपर भागवत-सप्ताह का आयोजन किया गया है। परसों सवेरे से पारायण प्रारम्भ होगा। पाठ की सारी व्यवस्था, हर छोटी-मोटी बात माँ ने समझा दी।

११

बंगाल में इस तरह भागवत सप्ताह की पारायण-व्यवस्था शायद ही कभी हुई हो। इसके पहले कलकत्ता में माँ के निर्देशानुसार दो बार श्रीमद्भागवत सप्ताह का आयोजन हुआ था। ठीक-ठीक विधिवत् सप्ताह का यह रूप देखकर सभी लोग मुग्ध हो उठे।

माँ शाम होने के थोड़ी देर बाद विनय बाबू के यहाँ से वापस आयीं। सुना कि माँ कल तीसरे पहर विनय बाबू के यहाँ चली जायँगी और दशमी तक वहीं रहेंगी। पहले यह तय हुआ था कि मैं आश्रम में रहूँगी, अस्वस्थ हालत में पूजा वाले घर में नहीं जाऊँगी। किन्तु बुनी कल विनय दादा के यहाँ जाकर देख आयी है कि मेरे लिए वहाँ रहने का इन्तजाम किया गया है। फलस्वरूप माँ ने मुझे वहाँ रहने की अनुमति दे दी। इस व्यवस्था से हम सभी को सुविधा और आनन्द हुआ।

## ४ अक्टूबर, १९५६

माँ कलकत्ता आयी हैं, यह बात लोगों की जबानी बिजली की तरह फैल गयी। कल शाम से आश्रम में बेहद भीड़ आने लगी है। कलकत्ता में सभी लोग इतनी जल्दी यह समाचार जान लेंगे, यह बात सोचने पर हमें आश्चर्य होता है। सुबह से इतनी भीड़ इकट्ठी हो गयी है कि नीचे-ऊपर जाने के लिए रास्ता नहीं मिल रहा है। नीचे जो विशाल कमरा है, उसमें तो लोग ठूंसे हुए हैं। आज माँ चली जाने वाली हैं, इसलिए कोई घर वापस जाना नहीं चाहता। दोपहर के बाद भीड़ की यह हालत हो गयी कि मेरे कमरे में भी खड़े होने का स्थान नहीं बचा। माँ अपने कमरे में आखिर कब तक बैठी रहतीं? तीन बजे के बाद मेरे कमरे में आकर बोलीं—"मैं अब जा रही हूँ दीदी! तुम लड़कियों को लेकर बाद में चली आना।"

माँ शायद कुछ देर और ठहर कर तब विनय दादा के यहाँ जातीं, किन्तु बढ़ती हुई भीड़ के कारण माँ का स्थिर होकर बैठे रहना दुश्वार हो उठा। यही वजह है कि माँ जरा और जल्दी चली गयीं। अगर माँ देर तक यहाँ रहतीं तो भीड़ और बढ़ जाती तब हमलोगों के लिए सारा असबाब भेजना कठिन हो जाता। बेबी गाड़ी लेकर दरवाजे पर खड़ी थी। माँ चली गयीं। पानू और परमानन्द स्वामीजी हमलोगों को ले जाने तथा असबाब वगैरह इन्तजाम करने के लिए रुक गये।

परमानन्द स्वामीजी वृन्दावन के भागवत-भवन का काम समाप्त कर आज ही कलकत्ता आये हैं।

शाम होने के कुछ देर पहले हमलोग विनय दादा के यहाँ पहुँचे। हम सबको एक साथ पाकर विनय दादा आनन्द से फूले नहीं समाये। वे बार-बार कहते रहे—

**विनय दादा के यहाँ माँ**

"स्वामीजी और दीदी आ गये, अब मुझे कोई चिन्ता नहीं रहेगी। अब मैं निश्चिन्त हो गया।" सचमुच वे बहुत चिन्तित थे। एक तो घर में पूजा, दूसरे ऊपर से भागवत-सप्ताह तथा पारायण। सिर्फ एक कार्य में लोगों का दिमाग ठीक नहीं रहता। फिर यहाँ तो एक साथ तीन-उत्सव हो रहा है।

अब वे निश्चिन्त होकर कह रहे हैं—"अब मैं पूर्ण रूप से निश्चिन्त हूँ। सब कुछ माँ चला लेंगी। मैं कौन होता हूँ? अब माँ जो आदेश देंगी, वही करूँगा।"

आश्रम के ब्रह्मचारी कान्ति भाई, विभु और हीरू को यहाँ सवेरे ही भेज दिया गया था। ये लोग यहाँ आकर भागवत के लिए मण्डप, व्यास आसन, माँ का आसन आदि सजा चुके हैं। आश्रम

में भागवत-सप्ताह होता ही रहता है, इसलिए इस विषय में ये लोग पारंगत हैं। यद्यपि ये लोग सब कुछ कर चुके हैं, फिर भी न जाने क्यों जब तक माँ स्वयं बता नहीं देतीं तबतक सुन्दर नहीं होता।

श्रीमद्भागवत पाठ के मूल पाठक होंगे ब्रह्मचारी कान्तिभाई। स्थानीय अध्यापक नारायण गंगोपाध्याय तीसरे पहर मूल पाठ की व्याख्या बंगला भाषा में करेंगे। श्रोता होंगे—विनय दादा के छोटे भाई अनिल और धारक होंगे—ब्रह्मचारी कमलाकान्त। महानन्द ब्रह्मचारी तथा मामू जापक होंगे। परमानन्द स्वामीजी लोगों के ठहरने तथा खाने-पीने का इन्तजाम करने लगे।

## ५ अक्टूबर, १९५६

आज प्रातःकाल भागवत माहात्म्य का पाठ आरम्भ हुआ।

**विनय दादा के घर भागवत-सप्ताह**

तीसरे पहर साढ़े चार बजे अध्यापक नारायण गंगोपाध्याय महाशय उसकी व्याख्या करने लगे। कल सवेरे ७ बजे से मूल पाठ आरंभ होगा।

## ८ अक्टूबर, १९५६

सप्ताह खूब ठीक से चल रहा है। अष्टमी के दिन पाठ समाप्त होगा। सवेरे जब मूल पाठ आरंभ होने लगा तब माँ थोड़ी देर के लिए जाकर बैठीं। माँ का दर्शन करने के लिए तथा कुछ लोग बातें करने के लिए हमेशा माँ के दरवाजे के समीप भीड़ लगाये रखते हैं। रह-रह कर ऐसे लोगों को मौका दिया जाता है। जब घर के भीतर और बाहर भक्तों की काफी भीड़ इकट्ठी हो जाती है

तव उस समय माँ ऊपर छत पर जाकर बैठती हैं। वहाँ एक साथ काफी लोग दर्शन कर पाते हैं। तीसरे पहर भागवत व्याख्या के समय तथा शाम के बाद भी नियमित रूप से ऊपर जाकर बैठती हैं। मौन समाप्त होने के बाद ९॥ या १० बजे तक माँ नाना प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देती हुई सबको आनन्द देती हैं। सभी लोग माँ के श्रीमुख से कुछ सुनने को सर्वदा उद्ग्रीव रहते हैं। अध्यापक नलिनी ब्रह्म जी नित्य नाना प्रकार के शास्त्रीय प्रश्न उत्थापन करते हैं। माँ अपनी स्वाभाविक सरल भाषा में सभी प्रश्नों की मीमांसा करती हैं।

शारदीय पूजा शुरू होने पर पूजा के मुख्य तीन दिन विनय दादा के घर पर माँ को भोग दिया जायगा, यह प्रार्थना विनय दादा पहले ही निवेदन कर चुके थे। शहर के अन्य भक्त भी एक-एक दिन अपने यहाँ भोज देने के लिए माँ के निकट प्रार्थना कर रहे हैं। माँ घूम-घूम कर सभी लोगों की वासना पूर्ण कर रही हैं। भोग-व्यवस्था के अलावा अनेक भक्त माँ को अपने घर एक बार ले जाने के लिए बहुत आग्रह प्रकट कर रहे हैं। माँ किसी के घर तो जाती नहीं, दरवाजे के समीप जाकर ५-७ मिनट खड़ी होती हैं। केवल इसी क्रिया से लोग अपने को धन्य समझते हैं। इसी प्रकार कार्यक्रम चल रहा है, माँ को विश्राम करने का मौका नहीं मिल रहा है।

सोलन के राजा साहब दुर्गासिंह जी आज सवेरे आये हैं। आप प्रत्येक वर्ष पूजा के समय माँ के पास आते हैं।

विनय दादा के मकान में स्थान की अधिकता नहीं है। उनके परिवार में ४०-५० व्यक्ति हैं। इधर सोलन के राजा ( योगी भाई ) माँ के निकट रहना पसन्द करते हैं। अपनी सुविधा-असुविधा को

ओर उनका ध्यान नहीं रहता। फिर भी विनय दादा के भवन में उनके लायक व्यवस्था नहीं हो सकी। बम्बई से सप्तमी के दिन श्री बी० के० शाह (भइया) आने वाले हैं। वे भी चाहे जैसे हो, माँ के पास रहना चाहेंगे। इन सारी समस्याओं पर विचार करने के बाद योगी भाई के ठहरने की व्यवस्था स्वास्थ्य विभाग के अवकाश प्राप्त डायरेक्टर श्री भूपेशदास गुप्त जी के भवन में की गयी। उनके आने-जाने के लिए एक मोटर गाड़ी की व्यवस्था कर दी गयी।

## ९ अक्टूबर, १९५६

आज सवेरे कुछ देर तक पाठ के समय माँ बैठने के बाद बाहर चली गयीं। सबसे पहले श्री हरिकृष्ण झाझरिया के घर गयीं।

**कलकत्ता के विभिन्न भक्तों के घर माँ**

इसके पूर्व इस घर में माँ २-३ बार आ चुकी हैं। श्री हरि बाबाजी अपने भक्तों के साथ यहाँ रह चुके हैं। श्री हरिकृष्ण के पिता रामधन दास माँ के पुराने भक्त हैं। आजकल वे वृन्दावन वासी हैं।

झाझरिया के विशाल प्रासादोपम भवन के बगीचे में माँ के बैठने का स्थान बनाया गया है। बहुमूल्य मखमल का गलीचा बिछाया गया। माँ वहाँ कुछ देर के लिए बैठीं। घर की महिलाओं ने माँ की आरती उतारी और फल-मिठाई भोग चढ़ाया।

यहाँ से माँ खड़दह स्थित श्री सखी सोना दीदी के ठाकुरबाड़ी में गयीं। ठाकुरबाड़ी में श्री श्री अन्नपूर्णा और निताई गौर की मूर्त्ति प्रतिष्ठित है। वहाँ शंख ध्वनि के साथ माँ को मन्दिर के भीतर ले जाया गया। इसके बाद आरती और भोग का प्रबन्ध किया गया। सखी सोना दीदी ने माँ के सभी भक्तों के लिए प्रचुर

प्रसाद का प्रबन्ध किया था। इसके अलावा उन लोगों के वापस जाने के लिए ३-४ गाड़ी का प्रबन्ध भी उन्होंने कर दिया। उनका आयोजन और व्यवहार प्रशंसनीय है।

खड़दह से माँ को श्यामनगर स्थित विनय दादा के गुरुपुत्र के घर ले जाया गया। इस गरीब ब्राह्मण ने स्वप्न में माँ का निर्देश पाकर दुर्गापूजा का प्रबन्ध किया था। माँ पूजा के बीच पिछली बार एक दिन यहाँ हो आयी थीं। छोटे से मिट्टी के बने कमरे में देवी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा का प्रबन्ध किया गया था। इनके साथ माँ का कोई पूर्व परिचय नहीं था। किन्तु आकस्मिक रूप में माँ के द्वारा स्वप्नादिष्ट होकर बड़ी भक्ति और निष्ठा के साथ साध्यानुसार पूजा का प्रबन्ध किया था। माँ कब, किसे, किस रूप में, कहाँ कृपा करती हैं, कौन बता सकता है ?

इस साल माँ ने जाकर देखा कि उक्त स्थान पर पक्की दीवारें बनाकर, ऊपर से टीन का छाजन देकर चण्डी मण्डप बनाया गया है। सुना गया कि पिछले साल इन घटनाओं के बाद विनय दादा के छोटे भाई ने स्वेच्छा से प्रवृत्त होकर यह सब बनवाया है। मातृ कृपा से सारी व्यवस्था इसी प्रकार हो जाती है।

इसके पहले यह लिखा जा चुका है कि माँ अवनी दादा के मार्फत पूजा के लिए यहाँ ४००) दिलवायी थीं। आज जब अनिल की पत्नी सती ने माँ को १००) प्रणामी में दिये तब माँ ने रुपयों को विनय दादा के गुरुपुत्र को देने की आज्ञा दी। इस प्रकार उन्हें इस वर्ष पूजा के लिए ५००) दिये गये। इन रुपयों में १००) अगले वर्ष के लिए प्रतिमा बनवाने के लिए जमा रखने को माँ ने कहा। उनके ऊपर माँ की कितनी असीम कृपा है, यह देखने पर अवाक् रह जाना पड़ता है।

आज माँ के आगमन के उपलक्ष्य में विनय दादा के गुरुपुत्र काफी देर से सड़क पर खड़े इन्तजार कर रहे थे। माँ का आह्वान करते हुए उन्हें देवी प्रतिमा के बगल में आसन बिछा कर बैठाया गया। बाद में माँ और देवी की आरती समाप्त करके माँ को कुछ भोग चढ़ाया गया।

सुना कि वहाँ की देवी प्रतिमा में कुछ विशेषता है। •एक हाथ में वर, एक हाथ में अभय और एक हाथ में शूल; किन्तु बाकी सातों हाथ मानों पीछे छिपा कर रखे गये हैं। इस तरह की प्रतिमा अन्यत्र नहीं दिखाई देती।

एक और उल्लेखनीय घटना हुई थी। माँ ने देखा कि एक आसन दोहरा मोड़कर रखा है और उस आसन के भीतर एक दर्पण रखा है। विनय दादा के गुरुपुत्र की पत्नी मानो उसी आसन पर बैठी है। लिहाजा माँ पूछ बैठीं—"दर्पण इस तरह वहाँ क्यों पड़ा है?"

उपस्थित लोगों ने पूछा—"दर्पण कहाँ है माँ? यहाँ तो दर्पण में पूजा या महास्नान नहीं होता माँ।"

इधर माँ स्पष्ट रूप से दर्पण के पकड़ने वाले भाग को स्पष्ट रूप से देख रही थीं। जिस आईने पर महास्नान कराया जाता है, उसे लाकर तुरत माँ को दिखाया गया। किन्तु किसी विशेष कारण से माँ दर्पण देख रही थीं इसलिए यहाँ वापस आकर माँ के निर्देशानुसार एक दर्पण उनके यहाँ भिजवा दिया गया।

वहाँ से वापस आते समय माँ प्रत्येक मूर्त्ति के समस्त शरीर पर हाथ फेरती रहीं। माँ के हाथ से लोगों में बतासा लुटवाया गया।

श्यामनगर से वापस आते समय माँ खड़दह होती आयीं। काशी आश्रम में यज्ञभूषण मौलिक जी रहते हैं। उनका भाई पाकिस्तान से आकर खड़दह में रहने लगा है। पैत्रिक नारायण शिला के लिए एक छोटे मन्दिर का निर्माण कराया है। वहीं इस वार सब लोग मिलकर शारदीय पूजा कर रहे हैं। यज्ञभूषण दादा भी माँ के चरणों में निवेदन कर चुके थे कि माँ समय निकाल कर वहाँ अवश्य पदार्पण करें। माँ को पाकर सभी विशेष आनन्दित हुए। उस स्थान के अनेक स्त्री-पुरुष माँ का दर्शन कर धन्य हुए।

आज माँ के लिए भोग का प्रबन्ध आश्रम में किया गया था। माँ के दर्शन की प्रतीक्षा सवेरे से अनेक भक्त कर रहे थे। दिनाजपुर के महाराजा अपनी कन्या तथा जामाता के साथ माँ के श्रीचरण का दर्शन करने आये थे। माँ को आश्रम पहुँचने में कुछ देर हो गयी। सीमित स्थान, भीड़ प्रचण्ड थी। माँ को नीचे से ऊपर वाले खण्ड में बड़े मुश्किल से ले जाया गया। दो तल्ले के हाल में माँ के लिए भोग का प्रबन्ध किया गया था। आश्रम की ब्रह्मचारिणी तथा अन्य २-४ जन ने माँ के साथ प्रसाद पाने का अवसर पाया। भोग के पश्चात् माँ आश्रम से बाहर आयीं और फिर अवनी दादा के पुत्र श्री मंजु के यहाँ से होती हुई एण्टाली भी चली गयीं। तीसरे पहर ४ बजे से भागवत व्याख्या का कार्यक्रम शुरू हुआ। माँ ठीक समय से पहुँच गयीं। यह बात हमेशा देखने में आयी है कि माँ के किसी भी काम में किंचित् त्रुटि नहीं रहती। समय पर माँ सर्वदा विशेष जोर देती हैं। स्वयं भी प्रत्येक कर्म के द्वारा यही शिक्षा सभी को देती हैं।

आज देवी का बोधन होगा। बोधन के समय माँ को प्रतिमा के बगल में बैठाकर यथा विधि पूजन किया गया। फिर विल्व मूल

से देवी का बोधन हुआ। बोधन की सारी रस्में जब तक पूरी नहीं हुईं तब तक माँ वहीं बैठी रहीं।

## १० अक्टूबर, १९५६

आज सवेरे भागवत-पाठ के समय वहाँ कुछ देर बैठने के बाद ९ बजे के लगभग माँ मोटर से रवाना हो गयीं। नित्य माँ के साथ अन्य २-३ गाड़ियों में कुछ बच्चों को जाने का अवसर मिलता है। माँ की गाड़ी में बैठने के लिए सब आपस में झगड़ते हैं। शायद माँ के श्रीचरणों के पास ही थोड़ी सी जगह मिल जाय तो वे अपने को धन्य समझ लेंगे। भक्तों का आग्रह पूर्ण करते समय कभी-कभी माँ को बैठने लायक जगह नहीं मिलती।

विनय दादा के घर से निकलकर माँ सर्व प्रथम निर्मल चक्रवर्त्ती जी के बालीगंज स्थित भवन में आयीं। पिछले वर्ष पूजा के समय माँ के रहने का प्रबन्ध इसी मकान में किया गया था। निर्मल दादा के घर के ऊपर वाला कमरा माँ के लिए हमेशा खाली रखा जाता है। गोकि कभी-कभी उनके गुरुदेव श्री मोहनानन्द ब्रह्मचारी महाराज इस कमरे में आकर ठहरते हैं। निर्मल दादा, उनकी पत्नी हासी, और बच्चे हँसमुख स्वभाव के हैं। यहाँ कुछ देर बैठने के बाद माँ लेक रोड स्थित आशु वन्द्योपाध्याय के घर आयीं। आशु मेरी बुआ का सुपुत्र है। आशु की बूढ़ी माँ को ऊपर से नीचे ले आकर माँ का दर्शन कराया गया। वहीं आरती हुई। बाद में माँ गाड़ीपर जाकर बैठीं।

अब यहाँ से माँ भवानीपुर में डा० सुधीन मजुमदार के घर गयीं। वे और उनकी पत्नी माँ से अपने यहाँ पदधूलि देने के लिए विशेष आग्रह कर चुकी थीं। माँ यहाँ आयँगी, इस उपलक्ष्य में

उनके घरपर कीर्त्तन की भी व्वस्था की गयी थी। ज्यों ही माँ उनके यहाँ पहुँची त्योंही सुधीन की पत्नी सरस्वती ने माँ को माला, चन्दन, वस्त्रादि देकर पूजा की और फिर कीर्त्तन करना शुरू कर दिया। माँ भी इन लोगों के साथ नाम गाने लगीं। काफी देर तक कीर्त्तन चलता रहा। माँ स्वयं विभोर होकर गाती रहीं, इस प्रकार सभी लोगों को विशेष आनन्द मिला। यहाँ एक घण्टे रहने के बाद माँ बैरकपुर की ओर रवाना हो गयीं।

ढाका विश्वविद्यालय के कानून विभाग के अवकाश प्राप्त अध्यापक श्री अमूल्य दत्तगुप्त जी सपरिवार आजकल काशी वाले आश्रम के समीप रहने लगे हैं। इनके दामाद श्री राखाल चन्द्र विश्वास ने बैरकपुर में नया भवन बनवाया है। इस बार वहाँ शारदीय पूजा की जा रही है। इसी उपलक्ष्य में माँ को वहाँ एक बार जाने के लिए विशेष रूप से आह्वान किया गया है। राखाल भारत सरकार का उच्चपदस्थ कर्मचारी है।

यहाँ से माँ कनक दादा के घर ( लेक के समीप ) गयीं। आज महाषष्ठी है। कनक दादा के विशेष आग्रह पर उनके घरपर माँ के लिए भोग का प्रबन्ध किया गया है।

कनक दादा की वृद्धा माता बहुत ही नियम और निष्ठा के साथ रहती हैं, इसलिए वे स्वयं माँ के लिए भोग का इन्तजाम करती रहीं। अत्यन्त श्रद्धा के साथ माँ के लिए नाना प्रकार का भोजन बनायी हैं। माँ के साथ और लोगों ने बड़े परितोष के साथ प्रसाद ग्रहण किया। इसी के साथ कनक दादा के घर के सभी लोग मानो सेवा का अवसर पाकर कृतार्थ हो गये। भोग के बाद माँ जरा देर विश्राम करने के बाद विनय दादा के यहाँ वापस आ गयीं।

शाम के बाद विनय दादा आकर माँ को पूजा के स्थान पर ले

गये। माँ के सामने नाना प्रकार के मांगलिक द्रव्यादि से देवी का आमन्त्रण-विधान हुआ।

विनय दादा के भाव अत्यन्त सुन्दर हैं। जब से माँ इनके घर आयी हैं तब से वे दिन में कुछ खाते नहीं। रात को सभी अतिथियों को भोजन कराने के बाद वे माँ का प्रसाद ग्रहण करते हैं। माँ कृपा करके उनके घर आयी हैं, बस इसी से वे आनन्द से अधीर हो उठे हैं।

भक्तों की भीड़ क्रमशः बढ़ती जा रही है। ज्यादातर स्त्री-पुरुष माँ के दरवाजे के पास इन्तजार करते रहते हैं। सभी के मन में यही आकांक्षा है कि कैसे माँ का दर्शन जरा सा कर सकूँ। कैसे माँ के निकट अपने हृदय की २-१ बातें कह सकूँ। भोर होने के पहले ही भक्तों का आगमन प्रारम्भ हो जाता है ओर रात को डेढ़ बजे तक सिलसिला जारी रहता है। अगर जबर्दस्ती दरवाजा न बन्द किया जाय तो माँ को विश्राम देना असम्भव हो जाता है। माँ भी कृपा करके अपनी सुविधा और असुविधा पर बिना विचारे सभी की इच्छा पूर्ण करती हैं। भक्तों के हृदय की बातें, प्राणों की बातें माँ के अलावा कौन समझ सकता है ?

## ११ अक्टूबर, १९६६

आज सप्तमी पूजा है। जल्दी से माँ गरद की धोती पहन, चादर ओढ़कर पूजा स्थल पर जाकर बैठ गयीं। माँ के बिना पूजा का कार्य आरम्भ होने में देर होगी। माँ जब मण्डप में आकर विराजमान हुईं तब मानो चण्डी मण्डप दिव्य रूप से आलोकित हो उठा। उपस्थित जन समूह सीमित

**विनय दादा के भवन में शारदीय पूजा**

स्थान में धक्कम-धुक्की करते हुए माँ का दर्शन करने लगा।

विनय दादा ने पहले माँ की पूजा करने के बाद नियमानुसार दुर्गा का महास्नान समाप्त किया। इसके बाद सप्तमी विहित पूजा आरम्भ की गयी। नव पत्रिका प्रवेश, महास्नान, मूल पूजा एवं भोग तक माँ पूजा स्थान पर बैठी रहीं। शाम को देवी की आरती के समय माँ काफी देर तक वहाँ जाकर खड़ी रहीं।

रात को हवाई जहाज द्वारा भइया बम्बई से यहाँ आ गये। आपके साथ बम्बई के एक इंजीनियर मि० भूता आये हैं। पानु भइया को ले आने के लिए दमदम गया था। भइया और मि० भूता के ठहरने का इन्तजाम यहीं किया गया। माँ के समीप रहने का अवसर पाकर दोनों प्रसन्न हो उठे।

## १२ तथा १३ अक्टूबर, १९५६

महाष्टमी के दिन श्रीमद्भागवत-सप्ताह समाप्त हुआ। दूसरे दिन विधिवत् होमादि होने के बाद पारायण पूर्ण हुआ।

पूजा के इन दोनों दिन माँ सुबह-शाम या तीसरे पहर एक बार मोटर से बाहर जाती थीं। भइया भी उसी समय साथ निकलते और आनन्द प्राप्त करते थे। नित्य माँ आश्रम में एक बार जाकर घूम आती थीं। दक्षिण कलकत्ता के अधिकतर भक्त उस समय माँ का दर्शन कर लेते थे।

पूजा आरम्भ होने के पहले अनेक लोगों ने यह प्रस्ताव रखा था कि विनय दादा का मकान जरा दूर है, इसके अलावा वहाँ स्थानाभाव है, इसलिए कलकत्ता के दक्षिणी इलाके में कहीं किसी निर्दिष्ट समय पर माँ के दर्शन की व्यवस्था अगर की जाय तो अनेक

लोगों को सुविधा होगी। इसके लिए दक्षिणी कलकत्ता में एक स्कूल का हाल कुछ दिनों के लिए किराये पर लेने की बातचीत चली थी, किन्तु अन्त तक अनेक झंझट होगी सोचकर उसे किराये पर नहीं लिया गया। हम लोग यह जानते थे कि चाहे दूर हो या पास, माँ के दर्शन के लिए सर्वत्र असम्भव भीड़ होगी। और यही बात हुई थी।

पूजा के तीनों दिन शाम के बाद छतपर माँ की उपस्थिति में विशेष रूप से कीर्त्तन और सत्संग की व्यवस्था हुई थी। अष्टमी के दिन रात को कलकत्ता विश्वविद्यालय के लब्ध प्रतिष्ठित इतिहास अध्यापक श्री त्रिपुरादि चक्रवर्त्ती जी चण्डी तत्त्व के ऊपर व्याख्यान देते रहे। आप एक विशिष्ट ओजस्वी वक्ता एवं पण्डित हैं। महाभारत के सम्बन्ध में भाषण देते रहने के कारण आपकी काफी ख्याति हुई है। आप भाषण देने वाले हैं, केवल एक इसी समाचार से हजारों लोगों की भीड़ एकत्रित हो जाती है।

नवमी की रात को उन्हें कुछ कहना था, पर अपनी अवस्थता के कारण वे नहीं आ सके। फलतः रांची के अध्यापक वीरेश्वर गांगुली ( नीलमणि ) चण्डी तत्त्व के सम्बन्ध में व्याख्या करने लगे।

नवमी के दिन रात को विनय दादा के परिवार की प्रथा के अनुसार प्रशस्ति-वन्दना होगी। परिवार के सभी लोग एकत्रित होकर देवी के सम्मुख माँ को लेकर देर तक विभिन्न प्रकार की बातें करते रहे। उन लोगों के अनुरोध पर उस समय कोई भी बाहरी व्यक्ति वहाँ नहीं था।

## १४ अक्टूबर, १९५६

आज शुभ विजयादशमी है। सवेरे देवी का दर्पण में विसर्जन

होगा। माँ यथा समय पूजा स्थानपर गयीं तो दशमी विहित पूजा के बाद देवी को भोग चढ़ाकर दर्पण में निरंजन किया गया।

आज राहुल चट्टोपाध्याय और बेबी ने माँ को भोग देने का प्रबन्ध किया है। एक बार यह चर्चा चली थी कि आश्रम में ही भोग दिया जायगा, किन्तु अन्त में विनय दादा और उनके परिवार के अन्य लोगों के आग्रह पर यहीं इन्तजाम किया गया। स्थानीय भक्तों में अधिकतर लोगों ने यहीं प्रसाद ग्रहण किया। मकान में अन्यत्र पर्याप्त स्थान न रहने के कारण छत पर भक्तों की एक साथ पंगत लगायी गयी। अत्यन्त निर्विघ्नता के साथ साथ काम समाप्त हो गया। माँ स्वयं जाकर पर्यवेक्षण करती रहीं। बाद में अपने हाथ से सभी को रसगुल्ला बाँटती रहीं। इससे सभी के मन में आनन्द का संचार हुआ। आज विजय दशमी के दिन माँ के हाथ से मिठाई पाकर भक्तगण बार-बार माँ की जय-जयकार करने लगे।

योगीभाई ने पूजा उपलक्ष्य में माँ को एक बनारसी साड़ी दी है। शाम के पहले घर की औरतें मिलकर देवो का वरण कर रही थीं, उस समय माँ उस साड़ी को पहनकर घूँघट काढ़े चुपचाप महिलाओं के बीच जाकर खड़ी हो गयीं। कुछ देर बाद जब महिलाएँ उन्हें पहचान पायीं तब आनन्द का क्या पूछना। माँ कितनी तरह की लीलाएँ करती हैं, उसकी कोई सीमा नहीं है। लीलामयी माँ की लीला अनन्त होना स्वाभाविक है। कौन उसका वर्णन कर सकता है।

शाम को गंगा में देवी प्रतिमा को विसर्जन देने के बाद वहाँ से आकर लड़कों ने माँ को प्रणाम किया। मौन समाप्त होने पर श्री मृत्युंजय चक्रवर्त्ती ( राम रसायण ) ने रावण-वध लीला कीर्त्तन

किया। आपका रामायण गायन अत्यन्त प्रसिद्ध है। आपका गायन होगा सुनकर सैकड़ों नर-नारी आकर एकत्रित हो गये। छत पर तिल रखने भर का स्थान नहीं रह गया, तिसपर आज दशमी है। माँ का दर्शन करने के लिए आज बेहद भीड़ हो गयी है। रात १२ बजे रामायण-गायन समाप्त होने पर माँ बतासा लुटाने लगीं। स्त्री-पुरुष, बालक-बालिका सभी आपस में छीना-झपटी करते हुए बतासा लूटने लगे। उस आनन्द का क्या वर्णन किया जाय।

## १५ अक्टूबर, १९५६

पिछले १२ दिनों से विनय दादा के यहाँ हाट लगा था। आज विदा की बेला है। कल भइया हवाई जहाज से रंगून चले गये। मि० भूता भी कल ही बम्बई रवाना हो गये। माँ और हमलोग आज ही कलकत्ता से चल देंगे। माँ राँची जा रही हैं और मैं अन्य लोगों को लेकर काशी वापस जा रही हूँ।

**माँ की कलकत्ता से राँची की ओर यात्रा**

सवेरे से मूसलधार पानी बरस रहा है, फिर भी माँ इस तूफान में सवेरे आठ बजे विनय दादा के घर से रवाना होकर आश्रम चली आयीं। रास्ते में यादवपुर स्थित दिनाजपुर के महाराजा के यहाँ होती गयीं।

माँ के कलकत्ता से रवाना होने के पूर्व महाराजा एक बार माँ का श्रीचरण दर्शन करने के लिए अत्यन्त आग्रही थे। आज रवाना होने का दिन है, कब मौका मिलेगा, भेंट हो कि न हो, इसलिए माँ भक्त की इच्छा पूर्ण करने के लिए उनके घर होती हुई गयीं।

माँ के लिए आज भोग का प्रबन्ध आश्रम में ही किया गया है। भोग के बाद थोड़ी देर तक वे विश्राम करती रहीं, फिर श्रीरामपुर रवाना हो गयीं। यह तय हुआ कि माँ वहाँ से सीधे स्टेशन आ जायँगी।

आज कन्यापीठ की एक लड़की ज्योति को उसकी बीमारी के कारण बांगर अस्पताल में भर्ती कर दिया गया। अस्पताल के रेसिडेण्ट मेडिकल आफिसर डा० अनिल मैत्र हैं। आप माँ के एक विशेष भक्त तथा अत्यन्त सज्जन और सेवापरायण व्यक्ति हैं। इसके पूर्व आप प्रेसीडेन्सी हस्पताल में काम करते थे। उन दिनों मुक्ति महाराज, कुसुम ब्रह्मचारी, मनमोहन दादा आदि लोगों की बीमारी में जिस तत्परता और लगन से आपने सेवा की थी, वह अविस्मरणीय है। आपकी वृद्धामाता और पत्नी सेवा की ओर विशेष ध्यान देती हैं। पुरी में जगन्नाथ मन्दिर में अमेरिकन युवक जैक को लेकर जो झंझट हो गया था, उसमें पण्डों के मारने के कारण मुक्ति महाराज के पैरों की हड्डी टूट गयी थी। मुक्ति महाराज को प्रेसीडेन्सी अस्पताल में उस समय भर्ती किया गया। उसी अवसर पर डा० मैत्र के साथ हमारा परिचय हुआ। सचमुच कब किस सूत्र से कौन किस रूप में माँ के श्री चरणों में आने का अवसर प्राप्त करता है, वह वास्तव में विचित्र है।

बहरहाल, योगी भाई आज ही सोलन वापस चले जायँगे। मैं दिन भर विनय दादा के यहाँ रही। लेकिन माँ नहीं हैं—लगता है जैसे यह मकान अब वह मकान नहीं रहा। इसका रूप ही बदल गया है।

मैं शाम को ७॥ बजे पंजाब मेल से रवाना होऊँगी। माँ की गाड़ी रात को ८-४५ बजे छूटती है, इसलिए यह तय हुआ था कि माँ ७ बजे स्टेशन पर आ जायँगी तब मेरी मुलाकात उनसे होगी।

इस निश्चय के अनुसार मैं सभी लोगों को साथ लेकर ६॥ बजे स्टेशन पहुँच गयी। मेरे साथ कुल मिलाकर २० व्यक्ति काशी चल रहे हैं। माँ के साथ परमानन्द स्वामी, नारायण स्वामी, उदास, बुनी वगैरह जा रहे हैं।

स्टेशन पर अनेक भक्त आये हैं। ये लोग माँ तथा मुझे गाड़ी पर चढ़ाने के लिए आये हैं। मेरी गाड़ी के छूटने का समय हो गया, ७॥ बजने को है, पर अभी तक माँ नहीं आयीं। अन्त में मेरी गाड़ी ७॥ बजे छूट गयी, माँ नहीं आयीं। रवाना होने के पहले माँ के चरणों का दर्शन नहीं कर सकी, मन बड़ा खराब हो गया। कितनी दूर गयी हैं, कहाँ, बाहर छप्पर फाड़ पानी बरस रहा है, माँ की गाड़ी तो खराब नहीं हो गयी? इन बातों को सोचते रहने के कारण मेरा मन बड़ा उदास हो गया। इसके अलावा माँ के न आने के कारण जरा विश्रृंखला उत्पन्न हो गयी। कन्या-पीठ की कल्याणी नामक लड़की मेरे साथ जाने वाली थी, किन्तु अन्त तक न आने के कारण उसका टिकट वापस कर देना पड़ा। दूसरी ओर जल्दीबाजी के कारण उसके सारे सामान मेरे साथ काशी चल रहा है। इलाहाबाद के श्री गोपाल स्वरूप पाठक की बहन ललिता माँ के साथ जा रही हैं। बात तय हुई थी कि वह स्टेशन पर आकर अपना सामान मुझसे ले लेगी। वह माँ के साथ रांची जानेवाली है। फलस्वरूप उसका सारा सामान मेरे साथ काशी जा रहा है। कल्याणी और ललिता रांची जैसे शहर में, ठण्ढ के इस मौसम में कैसे रह सकेंगी, इस बात की चिन्ता मुझे सताने लगी? सन्तोष इतना ही हुआ कि जब माँ साथ में हैं तब वे ही व्यवस्था करेंगी।

मेरे साथ काफी लोग हैं और उसी अनुपात में सामान भी काफी है! स्टेशन पर भइया की कम्पनी के मैनेजर श्री अमिय

सरकार जी ने बड़ी मदद की। विनय दादा के घर तथा आश्रम से सारा माल स्टेशन तक लारी में ले आने की व्यवस्था वे करते रहे। आप बड़े सज्जन और नम्र स्वभाव के हैं। प्रतिपत्ति भी आपकी असाधारण है। सुना कि आप सर यदुनाथ सरकार के भतीजे हैं और सुभाष बाबू के घनिष्ठ सहयोगी के रूप में सुनाम अर्जित कर चुके हैं। मेरे लिए प्रथम श्रेणी की बोगी आपने रिजर्व करवायी है। हम लोगों के द्वारा बार-बार आपत्ति करने पर आपने कहा—"मुझे भी कुछ सेवा करने का अवसर दीजिये।"

सचमुच में आपका व्यवहार-भाव अति सुन्दर है।

## १६ अक्टूबर, १९५६

आज पूरे ४ माह बाद सवेरे ९॥ बजे के लगभग काशी पहुँची। स्टेशन पर कमल, पटल आदि मौजूद थे। इनके साथ काशी के आश्रम में आयी।

आश्रम आने के कुछ देर बाद डा० गोपाल दादा मुझसे मिलने के लिए आये। हम लोगों के लिए उनके मन में अपार स्नेह है। माँ के श्रीचरणों में आकर आप जैसे व्यक्ति के साथ भाई का सम्बन्ध होना, यह वास्तव में गौरव और आनन्द की बात है।

कलकत्ता से श्री पानु हमें यहाँ ले आया है। हमें यहाँ पहुँचा-कर पानु आज ही राँची में माँ के पास चला गया। माँ आज रांची पहुँचनेवाली हैं।

## १७ अक्टूबर, १९५६

आज एक उल्लेखनीय घटना का पता चला। माँ के कलकत्ता

रवाना होने के पहले एक दिन रात के समय उनके निकट कविराज जी, अमूल्य दादा तथा नारायण स्वामीजी बैठे हुए थे। बातचीत के सिलसिले में माँ कहने लगीं कि काफी दिन पहले जिन दिनों वे रायपुर में थीं, एक दिन शायित अवस्था में देखने लगीं कि उनके दाहिने हाथ के पास आकर कन्याकुमारी देवी की मूर्त्ति आवरण शून्य स्थिति में खड़ी हुई। बाद में माँ के बगल में बैठकर वे आदर-दुलार करती रहीं और गोद में बैठकर गले से लगाती रहीं। उस समय देवी के भीतर से शिव का एकाक्षरी बीज उच्चारित हुआ। माँ देवी की गोद में बैठी साफ-साफ रूप में यह सब देख सुन रही थीं। इस घटना के १५ वर्ष बाद १९५३ सन् में माँ जब दक्षिण भारत में श्री श्री हरि बाबाजी आदि के साथ परिभ्रमण करने गयी थीं तब वहाँ माँ ने सुना कि उसी एकाक्षरी बीज मंत्र का जप करते हुए कुमारी देवी साधना करती रहीं। आश्चर्य का विषय यह है कि यहाँ आने के बाद यह बात माँ ने किसी से भी नहीं कही। असली बात तो यह है कि स्थान, काल, पात्र जब तक ठीक-ठीक नहीं होते तब तक कुछ नहीं होता। माँ के निकट इस तरह न जाने कितनी अजस्र घटनाएँ हो रही हैं, किन्तु उसमें से हम कितना जान पाते हैं—असली बात तो यह है कि हम इन सब बातों को जानने के अधिकारी नहीं हैं।

एक उल्लेखनीय घटना

ठीक इसी तरह पिछली बार विन्ध्याचल में श्री कविराज जी के साथ बातचीत के सिलसिले में विन्ध्यवासिनी के प्राचीन मन्दिर के बारे में माँ के निकट कुछ बातें प्रकट हुई थीं। वे अधिकतर अनेक गुह्य बातें जानने में सक्षम हो जाते हैं। गोकि यह सब उनकी योग्यता और अधिकार की बात है, इसलिए सम्भव

है। आप एक उच्चस्तर के अधिकारी हैं, इसे हर कोई जानता है। बहरहाल, प्राचीन विंध्यवासिनी-मन्दिर के सम्बन्ध में जो कुछ जाना जा सका है, वह यों है—वर्त्तमान में प्राचीन मन्दिर के जिस स्थान की खुदाई हो रही है, उधर निर्देश करती हुई माँ कहती रहीं कि एक दिन उन्होंने सूक्ष्म में देखा—वहाँ एक विशाल मन्दिर है। उसके पश्चिम ओर एक प्रशस्त बरामदा है। दक्षिण और पूर्व की ओर भी बरामदा की तरह है। पश्चिम वाले बरामदे में पंक्तिवार देव-देवियों की मूर्त्ति स्थापित हैं। दक्षिण में एक देवी मूर्त्ति हाथ में एक भग्न माला लिये है। माँ देख रही थीं—उक्त देवी मूर्त्ति अपने स्थान से उठकर माँ के निकट आयीं और उनके चरणों में अपनी माला स्पर्श कराकर स्वाभाविक गति से पुनः अपने स्थान पर जाकर खड़ी हो गयीं। उसके पूर्व-दक्षिण कोणपर एक देवसेविका चद्दर ओढ़े सोयी हुई थी।

सुना कि इस घटना को सुनकर कविराज जी ने माँ से प्रश्न किया था—"जिस देवी मूर्त्ति ने माँ का दर्शन कर आपके चरणों में माला स्पर्श करायी थी, वह क्या माँ का वर्त्तमान रूप था या नित्य रूप ?"

किन्तु इस प्रश्न का कोई स्पष्ट उत्तर माँ के निकट से नहीं मिला, कारण माँ इस तरह के प्रश्नों के उत्तर में साधारणतः नीरव रहती हैं।

प्राचीन मन्दिर के सम्बन्ध में इन सभी बातों को सुनकर मैं अत्यन्त चकित रह गयी। वर्त्तमान प्रादेशिक सरकार की ओर से मन्दिर के भग्नावशेषों का उद्धार-कार्य चल रहा है। भारत सरकार के मंत्री आजाद साहब इस मन्दिर के बारे में पर्याप्त दिलचस्पी ले रहे हैं, किन्तु शत-शत वर्ष बाद अज्ञान में रहते हुए वे

लोग इस प्राचीन मन्दिर के बारे में कितनी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ? इस बीच सरकार की ओर से इस स्थान की खुदाई हो चुकी है जिसमें असंख्य मूर्त्तियाँ बरामद हुई हैं, फिर भी मन्दिर के अनेक तथ्य अज्ञात रह गये हैं। यहाँ तक कि मन्दिर के वास्तविक नाम के बारे में भी मतभेद है। कोई इसे विन्ध्यवासिनी का मन्दिर कह रहा है, कोई खरोष्ठी देवी का मन्दिर कहता है तो कुछ लोग इसे सरस्वती देवी का मन्दिर मानते हैं।

किन्तु माँ के सम्मुख कोई अजाना पर्दा नहीं है। वहाँ तो अतीत, भविष्यत् सब कुछ चिर भास्वर है। यही वजह है कि प्रत्नतत्त्वविद् जिस चीज का वर्षों तक अन्वेषण कर ठीक-ठीक पता लगा नहीं पाते, वह सब माँ की विश्वतः दृष्टि के सम्मुख सदा भास्वर है।

## १८ अक्टूबर, १९५६

बुनी के पत्र से माँ के राँची पहुँचने का समाचार मिला। मूरी स्टेशन पर डा० प्रियरंजन घोष, देवी बाबू एवं डा० शचीन सेनगुप्त की पत्नी तथा पुत्री माँ को ले जाने के लिए मोटर लेकर आये थे। माँ मूरी स्टेशन पर उतरकर मोटर द्वारा चली गयीं। बाकी लोग ट्रेन से गये।

उस दिन माँ हवड़ा स्टेशन पर क्यों नहीं ठीक समय से पहुँच सकीं, इसकी जानकारी बुनी के पत्र से हुई। एक तो प्रचण्ड वर्षा दूसरे रास्ते में मोटर का पहिया फट जाने के कारण पहुँचने में देरी हो गयी थी। इसके अलावा अगणित भक्तों का अनुरोध-अवरोध तो लगा ही रहा। बहरहाल, माँ गाड़ी छूटने के पहले ही स्टेशन पहुँच गयी थीं। यही समाचार हमारे लिए आनन्ददायक

रहा। माँ का दर्शन करने के लिए स्टेशनपर असंख्य भीड़ एकत्रित हो गयी थी।

आगामी १२ नवम्बर से हरिद्वार में संयम-सप्ताह है। इस बार पंजाब के त्यागी महात्मा गोस्वामी गणेशदत्तजी ने सप्त-सरोवर के समीप स्थित सप्त ऋषि के आश्रम में संयम-सप्ताह का प्रबन्ध किया है। इस सप्ताह के उपलक्ष्य में विशिष्ट-विशिष्ट महातमाओं को आमंत्रण भेजा गया है। उन लोगों ने कृपा करके इसे स्वीकार भी कर लिया है। इस वर्ष भी श्री हरि बाबाजी, अखण्डानन्द स्वामीजी, कृष्णानन्द स्वामीजी पण्डित सुन्दरलालजी, श्री चक्रपाणिजी, श्री अवधूतजी, स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी, श्री शरणानन्दजी, श्री शुकदेवानन्दजी आदि भारत के सभी विशिष्ट महात्माओं को पत्र दिया जाय, यह बात माँ बुनी के द्वारा स्मरण दिलायी हैं।

**षष्ठ संयम-सप्ताह की प्रस्तुति**

## २० अक्टूबर, १९५६

आज पुनः पानु और बुनी के पत्रों से माँ के बारे में समाचार मिला। कल रांची आश्रम में माँ की उपस्थिति में लक्ष्मी पूजा होने वाली थी। रांची में आश्रम की प्रतिष्ठा हुए तीन वर्ष हो चुके हैं। उसी समय से भक्तों के आग्रहपर आश्रम में माँ की उपस्थिति में प्रत्येक बार एक न एक उत्सव अनुष्ठित होता आ रहा है। प्रथम वर्ष दुर्गा पूजा हुई थी, द्वितीय वर्ष काली-पूजा और इस वर्ष लक्ष्मी पूजा का आयोजन हो रहा है।

लक्ष्मी मूर्त्ति कलकत्ता के प्रसिद्ध शिल्पी निताई पाल बनाकर माँ के साथ भेजने वाले थे, किन्तु जिस दिन माँ कलकत्ता से रांची

के लिए रवाना होने लगीं, उस दिन मूसलधार पानी बरसता रहा, इसलिए मूर्त्ति स्टेशन नहीं लायी जा सकी। इधर राँची में भक्तगण यह चिन्ता कर रहे थे कि कैसे मूर्त्ति लायी जाय। यहाँ तक कि कुछ लोग यह राय देने लगे कि उस मूर्त्ति की आशा छोड़कर यहाँ से कोई मूर्त्ति ले ली जाय। किन्तु जो मूर्त्ति आश्रम की पूजा के लिए बनवायी गयी है, उसे त्यागने का प्रस्ताव माँ ने अन्त तक स्वीकार नहीं किया। प्रथम वर्ष दुर्गा पूजा के अवसरपर इसी तरह की एक घटना हुई थी। रांची में एक विशिष्ट शिल्पी को मूर्त्ति बनाने का आर्डर दिया गया था। जब मूर्त्ति तैयार हो गयी तब पंचमी के दिन रात को पानु और बुनी आश्रम से मूर्त्ति देखने गये। मूर्त्ति बहुत अच्छी नहीं बनी थी। माँ के आश्रम में, माँ की उपस्थिति में दुर्गापूजा होगी, इस उपलक्ष्य में विभिन्न शहरों से सैकड़ों नर-नारी सम्मिलित होने वाले थे, ऐसी स्थिति में इस प्रकार की एक मूर्त्ति ले आने में हम सब संकोच अनुभव कर रहे थे। बाद में तलाश करने पर यह भी पता चला था कि राँची में इससे सुन्दर मूर्त्ति मिल सकती है। फलस्वरूप यह समस्या माँ के सामने रखी गयी। माँ सारी बातें सुनने के बाद तुरत बोलीं—नहीं, जो मूर्त्ति तुम लोगों की पूजा के लिए तैयार हुई है, उसी को लाना होगा। मूर्त्ति परिवर्त्तन करने की जरूरत नहीं—सभी ठाकुर सुन्दर होते हैं।"

**राँची में लक्ष्मी पूजा में श्री लक्ष्मी मूर्त्ति की बातें**

फलस्वरूप माँ के निर्देश से वही मूर्त्ति लायी गयी। आश्चर्य की बात तो यह हुई कि पूजा के समय जिस किसी ने उस मूर्त्ति को देखा, उसने कहा—"कितनी अपूर्व मूर्त्ति है, कितनी सुन्दर, कितनी अच्छी।' यहाँ तक कि पानु और बुनी ने भी स्वीकार

किया कि आश्रम में ले आने के पहले मूर्त्ति वाकई में बड़ी खराब दिखाई दे रही थी और जब आश्रम के पूजा स्थल में प्राण प्रतिष्ठा हो गयी तब वही मूर्त्ति अद्‌भुत सुन्दर दिखाई देने लगी। जब कि शिल्पी को मूर्त्ति में किसी प्रकार का रूप परिवर्त्तन करने का अवसर नहीं मिला था। न तो इतना समय था और न मौका। माँ की लीला बुद्धि के बाहर की चीज है।

बहरहाल, इस बार भी माँ ने कलकत्ता से लक्ष्मी मूर्त्ति मँगाने के लिए कहा। ट्रंककाल से यह समाचार कलकत्ता भेजा गया। तभी यह पता चला कि नीलमणि कलकत्ता से राँची आ रहा है। आश्चर्य की बात है। यथा समय निर्विघ्न रूप से कलकत्ता की मूर्त्ति राँची आ गयी।

इस बार राँची में माँ का दर्शन करने के लिए अत्यधिक भीड़ हो गयी थी। सुबह-शाम माँ सत्संग में बैठती थीं। अध्यापक मथुरा बाबू और योग दादा आश्रम के एक साधक माँ से नाना प्रकार के आध्यात्मिक प्रश्न करते रहे।

राँची के भक्तों में अधिकतर श्री अरविन्द दर्शन के विशेष प्रेमी हैं। इन लोगों ने हमलोगों के आश्रम में ही "श्री अरविन्द पाठ-चक्र" नामक एक संस्था स्थापित की है। उक्त संस्था के द्वारा आश्रम में नियमित रूप से श्री अरविन्द जन्म दिवस मनाया जाता है। अन्य शहरों से भी इस अवसर पर अनेक विशिष्ट व्यक्ति आकर भाषण देते हैं।

एक विशिष्ट आई० सी० एस० अफसर श्री नगेन बख्शी आज-कल राँची में हैं। आजकल आप बिहार के बोर्ड आफ रेविन्यू के अध्यक्ष हैं। आप माँ के निकट बराबर आते-जाते रहते हैं। पिछले

१७ ता० को माँ को अपनी मोटर से राँची के लेक की ओर घुमाने ले गये थे। सुना कि उक्त स्थान अत्यन्त मनोरम है।

दूसरे दिन श्री बख्शी माँ तथा माँ के भक्तों को राँची स्थित निवास भवन में ले गये थे। निवास स्थान के सामने अत्यन्त सुन्दर एक बाग है। उक्त बाग में नाना प्रकार के फल-फूल लगे हैं। यहाँ ले आकर पहले माँ को उक्त स्थान पर कुछ देर तक बैठाया गया, बाद में बख्शी साहब स्वयं घूम-घूम कर माँ को बाग दिखाते रहे। माँ घूमती हुई आनन्द के साथ कभी अमरूद तो कभी लीची तोड़ती रहीं। इस प्रकार बाग का परिदर्शन कराने के बाद माँ को अमरूद के एक पेड़ के नीचे बैठाया गया। मिठाई और फल का भोग चढ़ाया गया। उपस्थित लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

वास्तव में बख्शा जी अत्यन्त निरभिमान व्यक्ति हैं। माँ के साथ उनका व्यवहार सरल ढंग से हुआ था।

संवाद मिला कि आज भोर के वक्त माँ पुरी चली जायेंगी। वहाँ से शायद २५-२६ ता० को वापस लौटेंगी।

## २३ अक्टूबर, १९५६

पुरी से प्राप्त एक पत्र से माँ के बारे में विस्तृत समाचार मिला। गत १९ ता० को रात को माँ की उपस्थिति में राँची आश्रम में काली पूजा ससमारोह हुई। पूजा के बाद वहाँ के स्थानीय २५०-३०० व्यक्तियों ने प्रसाद ग्रहण किया।

आश्रम की छत पर माँ के लिए एक नया कमरा बनवाया जा रहा है। लक्ष्मी-पूजा वाले दिन माँ को उस कमरे में ले जाया गया। सुबह का सत्संग भी उसी घर में होता रहा। यद्यपि अभी

तक घर पूरा बना नहीं है। नीचे के जिस कमरे में माँ रहती थीं, उसे माँ ने प्रियरंजन के रहने के लिए छोड़ दिया है। फलस्वरूप ऊपर वाले कमरे का निर्माण तेजी से जारी है।

उसी दिन शाम होने के कुछ पहले माँ को राँची शहर से कुछ दूर स्थित श्री रामकृष्ण मिशन के यक्ष्मा अस्पताल का मुआइना करने के लिए ले जाया गया। उक्त अस्पताल अत्यन्त प्राकृतिक परिवेश के मध्य बनाया गया है। सारा इन्तजाम बहुत ही सुन्दर है।

पानु ने लिखा है कि राँची में इस .बार माँ का दर्शन करने के लिए पहले से बहुत अधिक भीड़ हुई थी। आशा की गयी थी कि पूजा के बाद कलकत्ता से यहाँ आने पर माँ ३-४ दिन विश्राम कर सकेंगी, किन्तु अस्वाभाविक भीड़ हो जाने के कारण यह बिल-कुल संभव नहीं हो सका। बीच में एक दिन भोग के बाद माँ 'प्रियधाम' गयी थीं। शाम तक वहाँ रहीं, इस प्रकार एक दिन का उन्हें विश्राम प्राप्त हुआ।

'प्रियधाम' आश्रम के समीप ही कलकत्ता के स्व० प्रियनाथ मुखोपाध्याय का खानदानी मकान है। प्रियनाथ बाबू अब नहीं रहे। इन दिनों उनकी पत्नी और पुत्र श्री देवव्रत दोनों ही माँ के प्रति अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति रखते हैं। प्रियधाम के बाग में माँ के लिए एक छोटा कमरा इन लोगों ने तैयार करवाया है ताकि माँ जब कभी वहाँ जाँय तो उसमें ठहर सकें।

**पुरी की ओर माँ**

२० ता० को सुबह प्रायः ९॥ बजे माँ पुरी की ओर रवाना हो गयीं। छोटा नागपुर के महाराज कुमार अपनी मोटर से माँ को मुरी स्टेशन तक पहुँचा आये।

मुरी में १०।। बजे पहुँचने पर वहाँ एक फ्रांसीसी महिला मिरियम ओर के साथ माँ की भेंट हुई। आप हमारे आश्रमवासी आत्मानन्द ( मिस ब्लांका ) के परिचित हैं। जिन दिनों आप योरोप में थीं, उन दिनों माँ की चर्चा सुनकर तथा चित्र देखकर माँ के प्रति आकृष्ट हुईं। स्वप्न में भी माँ का दर्शन कर चुकी हैं। उसी समय से आप माँ का दर्शन करने के लिए व्याकुल हो गयीं, आज तक आर्थिक कठिनाइयों के कारण इतनी दूर नहीं आ सकी थीं।

माँ के बारे में आप अपनी सहेली आत्मानन्द से एक अर्से से पत्राचार करती रहीं। 'आनन्द वार्ता' पत्रिका में आप माँ के बारे में कई अंकों में लेख दे चुकी हैं। आपकी वयः इन दिनों ६० के लगभग है। आपके पिता-माता यहूदी थे, पर पति ईसाई धर्मी इटालियन थे। आप इन दिनों पेरिस में मनोविज्ञान का अध्ययन करती हैं। हाल ही में चीन में होने वाले किसी अधिवेशन में भाग लेने के लिए गयी थीं। अब वहाँ से सीधे यहाँ आयी हैं। कहा जाता है कि आपकी भारत-यात्रा का व्यय चीन सरकार ने दिया है।

भारत में आप पहले कलकत्ता आयीं। माँ को राँची चलने के एक दिन पहले रात को तार देकर सूचित किया गया कि उक्त भद्र महिला दूसरे दिन सवेरे रांची के आश्रम में पहुँच रही हैं, किन्तु उनकी गाड़ी आने के पहले माँ को रांची से रवाना हो जाना पड़ा था। इधर वह महिला मातृ-दर्शन के लिए न जाने कितने हजार मीलों की यात्रा करती हुई आ रही थी और इतने निकट आकर भी अगर वे माँ का दर्शन न कर पातीं तो इसमें सन्देह नहीं कि वे बहुत दुःखित होतीं। फलस्वरूप श्री बख्शी जी के परामर्श के अनुसार मुरी स्टेशन के अधिकारियों को

तुरत फोन पर अनुरोध किया गया कि जब उक्त फ्रांसीसी महिला वहाँ पहुँचें तब उन्हें वहाँ इन्तजार करने के लिए कहा जाय, क्योंकि माँ कुछ ही घण्टों में पुरी जाते हुए वहाँ पहुँच रही हैं। इस प्रकार दस वर्ष इन्तजार करने के बाद उन्हें आज मातृ-दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दर्शन के पश्चात् वे आनन्द के आवेग से अधीर हो उठीं।

भद्र महिला भारत में कुछ दिनों के लिए आयी हैं। यहाँ के नियम, कानून, रीति, नीति आदि के बारे में कोई जानकारी नहीं है। वे माँ को देखते ही अपने मुल्क की रीति के अनुसार आवेग के साथ माँ के दोनों हाथों को अपने हाथों के बीच दबाती हुई रो पड़ीं। फिर बार-बार माँ के हाथों को चुमने लगीं। माँ के मस्तक पर देर तक अपने गालों को रखने के बाद वहाँ भी बार-बार चुम्बन करने लगीं। माँ के आँचल को हाथों में लेकर बार-बार चुम्बन करती रहीं। अपने भाव भंगिमा के द्वारा वे अपने मन के आवेग को किस प्रकार प्रकट करें, यह समझ नहीं पा रहीं थीं। भारतीय भाषा जानती नहीं, इसलिए भाषा-हीन हृदय के आवेग को प्रकट करने का कोई मार्ग उन्हें सूझ नहीं रहा था। इस तरह अनेक क्षण बीत गये तब साष्टांग होकर माँ को उन्होंने प्रणाम किया। माँ के साथ गये तथा स्टेशन पर खड़े लोग यह दृश्य विस्मय के साथ देखते रहे।

**माँ सभी की माँ हैं**

भद्र महिला सवेरे से कुछ खायी नहीं थीं। माँ ने शचीन दादा से कहा कि स्टेशन से कुछ लाकर खिला दो। माँ दोपहर ११॥ बजे जमशेदपुर की ओर रवाना हुईं। उक्त भद्र महिला माँ के साथ चल पड़ीं। आप तीन माह को छुट्टी पर भारत आयी हैं, अब बाकी समय माँ के साथ रहने में गुजारना चाहती हैं।

तीन बजे के लगभग माँ जमशेदपुर पहुँचीं। यहाँ के भक्तों को माँ के आगमन की सूचना प्राप्त हो गयी थी, फलस्वरूप काफी लोग स्टेशन पर उपस्थित थे। दो घण्टे बाद खड़गपुर जानेवाली गाड़ी आने वाली है। माँ खड़गपुर होती हुई पुरी जायँगी। पहले से आने की सूचना देने कारण माँ के पहुँचते ही स्थानीय भक्त-गण उन्हें मोटर द्वारा स्थानीय सत्यनारायण मन्दिर की धर्मशाला में ले गये। वहीं माँ को भोग दिया गया। यहाँ कुछ देर विश्राम करने के बाद माँ को स्टेशन पहुँचाया गया।

तीसरे पहर ५ बजे के लगभग माँ खड़गपुर पैसेंजर से रवाना हुईं। इस गाड़ी में फर्स्ट क्लास का डिब्बा नहीं था। फलस्वरूप माँ को सेकेण्ड क्लास में यात्रा करनी पड़ी।

उस क्लास के यात्री माँ को देखकर चकित रह गये थे। वे लोग सोचते रहे कि आखिर ये कौन हैं? साथ में संन्यासी, ब्रह्म-चारी, स्त्री-पुरुष यहाँ तक कि विदेशी महिला भी हैं। जब गाड़ी छूटने लगी तब हजारों भक्त-कण्ठ से जय ध्वनि हुई। उस समय लोग और भी चौंके जब कि स्वाभाविक संकोचवश ये लोग माँ से परिचय नहीं प्राप्त कर सके। आगे चलकर सिवाय एक व्यक्ति के बाकी लोग उतर गये। जो सज्जन रह गये थे, वे रेलवे कर्म-चारी थे। उन्होंने माँ का परिचय पूछा। तब धीरे-धीरे उन्हें स्मरण हो आया कि आज से अनेक वर्ष पूर्व आप माँ का दर्शन करने के लिए ढाका गये थे।

रात ९ बजे माँ खड़गपुर पहुँची। यहाँ २॥ घण्टे बाद पुरी एक्सप्रेस मिलेगी। अभी कुछ समय है, यह सोचकर माँ वेटिंग रूम में आराम करने लगीं। कलकत्ता से यहाँ तक माँ के साथ विभु ब्रह्मचारी, डा० अनिला मैत्र और श्री सन्तोष आये थे। अब वे यहाँ से कलकत्ता वापस चले गये।

इस बार राँची में विभु की तबीयत काफी खराब हो गयी थी। यही वजह है कि माँ ने उसे फिलहाल कलकत्ता जाकर इलाज कराने के लिए कहा। डा० मैत्र तथा संतोष रांची में माँ का दर्शन करने के लिए कलकत्ता से आये थे। सन्तोष विद्यापीठ से मैट्रिक पास करने के बाद इन दिनों स्वास्थ्य विभाग में नौकरी कर रहा है।

खड़गपुर से माँ लगभग रात १२ बजे पुरी एक्प्रेस से रवाना हुईं। पहले से माँ के लिए एक कमरा रिजर्व था। यह कमरा कलकत्ता से डा० शचीन सर्वाधिकारी रिजर्व करवाकर स्वयं पूरे परिवार के साथ आ रहे हैं। वे भी माँ के साथ पुरी जा रहे हैं। फ्रांसीसी महिला भी माँ के साथ उस कमरे में सवार हुईं। वे माँ को एक क्षण के लिए छोड़ने को राजी नहीं हुईं।

२१ ता० की भोर में माँ पुरी पहुँचीं। माँ के साथ हैं—परमानन्द स्वामी, नारायण स्वामी, पानु, बुनी, कल्याणी, चित्रा, शोभा, सती आदि थे। स्टेशन पर गिरीन दादा और साधन ब्रह्मचारी भी उपस्थित। माँ तथा उनके साथ के लोगों को दो मोटरों पर बैठाकर ले जाया गया।

फ्रांसीसी महिला आश्रम-जीवन से परिचित नहीं हैं, इसलिए वे समुद्र किनारे स्थित होटल में ठहरीं। उनके लिए अन्य सारी व्यवस्था आश्रम की ओर से करा दी गयी। दोनों वक्त वे आश्रम में आकर भोजन कर जाती थीं।

पत्रों के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि माँ की तबीयत इन दिनों अच्छी है। शायद पुरी में विश्राम करने का अवसर मिले।

## २४ अक्टूबर, १९५६

पुरी में माँ

माँ पुरी में ही हैं। सुबह-शाम अधिकतर समुद्र के किनारे टहलती हैं। कभी-कभी लोगों को साथ लेकर माँ समुद्र किनारे बैठती हैं। कल रात ९॥ बजे वाली एक्सप्रेस से माँ कलकत्ता से मुगलसराय आयेंगी।

## २५ अक्टूबर, १९५६

आज बुनी के पत्र से ज्ञात हुआ कि परसों वहाँ माँ की उपस्थिति में कृष्णा-चतुर्थी का संयम पालन हुआ था। नियमित रूप से ध्यान-भजन-पाठ का प्रबन्ध किया गया था। उसी दिन श्री श्री जगन्नाथ जी का प्रसाद आश्रम में मँगवाया गया था और सभी लोगों ने महाप्रसाद प्राप्त किया था।

परसों रात को माँ सभी के साथ श्री श्री जगन्नाथ मन्दिर गयी थीं। उस दिन मन्दिर में अत्यधिक भीड़ थी। काफी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद लोग आपस में हाथ पकड़कर माँ के लिए जगह बनाते हुए मन्दिर के भीतर ले गये थे। माँ आज दो वर्ष बाद पुरी गयी थीं, इसलिए मन्दिर के पण्डा कुछ पाने की आशा करते रहे। सभी लोगों ने कुछ न कुछ दक्षिणा भेंट स्वरूप दी थी। माँ के पितृ वंश के वृद्ध पण्डा रामगुरु जब आश्रम में आये तब उन्हें प्रणामी ( दक्षिणा ) दी गयी।

माँ आज रात १० बजे काशी आश्रम में आयीं। माँ को ले आने के लिए मोगलसराय स्टेशन पर कमल और पटल गये थे।

माँ के आने पर उनके साथ आये लोगों से पुरी के बारे में

विस्तार से समाचार ज्ञात हुआ। कल परमानन्द स्वामीजी, साधन आदि ने श्री श्री जगन्नाथ देव मन्दिर के निकट बैठनेवाले अंधे, लँगड़े और कोढ़ियों को ५० कपड़े बाँटे थे। इस बार जयन्ती महोत्सव के समय माँ के तुलादान में जितने कपड़े चढ़ाये गये थे, वे सब अहमदाबाद के भक्त कान्तिभाई मुन्शा की ओर से आये थे। किन्तु ये कपड़े अन्य सामग्रियों की तरह ब्राह्मणों को नहीं दिये गये थे। कान्तिभाई की इच्छा थी कि ये सब कपड़े माँ के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में अंधे, लँगड़े, लूले आदि लोगों में बाँटे जाँय। उनकी इच्छा की पूर्त्ति के लिए भारत के कोने-कोने में रहने वाले भक्तों के हाथ बाँटने के लिए भेज दिये गये थे।

माँ जब यहाँ से जाने लगीं तब कुछ धोती-साड़ी उनके साथ भेजा गया था। उसमें से एकादशी के दिन कलकत्ता के आश्रम में १६० कपड़े और रांची में लक्ष्मी पूर्णिमा के दिन इसी प्रकार ५० कपड़े बाँटे गये थे।

कल आश्रम से स्टेशन आते समय एक बार योग दादा के आश्रम में और एक संन्यासी के आश्रम में कुछ देर माँ रुकी थीं। पुरी के बंगाली स्टेशन मास्टर ने माँ के लिए प्रथम श्रेणी और साथ के लोगों के लिए तृतीय श्रेणी की बोगी के रिजर्वेशन में मदद की थी।

पुरी से लगभग शाम को ६ बजे रवाना होकर माँ आज सवेरे ७। बजे हबड़ा पहुँची।

**पुरी से कलकत्ता की ओर माँ का आगमन**

पुरी से माँ की गाड़ी में श्री दिलीप बसु भी आ रहे थे। कुछ देर के लिए माँ के कमरे में आकर वे लोग बातचीत करते रहे। दिलीप बसु भारत के स्वनामधन्य टेनिस के खिलाड़ी हैं। अपने जमाने में वे चैम्पियन थे। सुना कि आप बहुत

सज्जन और मिलनसार प्रकृति के हैं। इसके पहले न तो आपने माँ को कभी देखा था और न बातचीत की थी। अब यह मौका पाकर बड़े आनन्दित हुए हैं।

आज सबेरे जब माँ कलकत्ता आयीं तब अनेक भक्तों से वे घिर गयीं। माल-असबाब तथा साथ के काफी लोग स्टेशन पर रह गये। माँ कुछ लोगों को साथ लेकर स्टेशन से बाहर आकर दो-तीन जगह होती हुई लेक स्थित कनक बन्द्योपाध्याय के घर गयीं। रास्ते में एक बार आश्रम भी गयी थीं। पहले ही चुपचाप समाचार भेजा गया था कि माँ स्टेशन से सीधे आश्रम आकर कुछ देर ठहरेंगी और यहाँ जलपान करने के बाद चली जायँगी। यह समाचार किसी को बताने के लिए मना किया गया था, वर्ना आश्रम में इतनी भीड़ हो जाती कि माँ को हाथ-मुँह धोने का भी अवसर नहीं मिलता।

श्री कनक दादा के भवन में ही माँ के लिए भोग का प्रबन्ध हुआ था। भोग के बाद माँ वहाँ से सीधे स्टेशन की ओर रवाना हुईं। मार्ग में कलकत्ता नर्सिंग होम में कुछ देर के लिए गयी थीं। वहाँ मेरा चचेरा भाई ज्ञान मुखोपाध्याय बीमार हालत में भर्ती है। वह बम्बई की फिल्मी दुनिया का प्रसिद्ध निर्देशक है। कुछ दिनों से स्नायविक दुर्बलता के कारण बीमार पड़ गया है। बम्बई में एक दिन मेरे पास आया था, उन दिनों न जाने वह कैसा हो गया था। बम्बई के इलाज से फायदा न होने के कारण अब उसे कलकत्ता लाया गया है। जितेन दादा उसे इलाज के लिए इंग्लैण्ड भेजने को कह रहे हैं।

किन्तु इधर उसकी हालत बहुत नाजुक हो गयी है। माँ ने

जाकर देखा कि वह बेहोशी की हालत में हैं और उसे आक्सिजन दिया जा रहा है। माँ उसकी बन्द आँखों को अपने हाथ से खोलकर देखने लगीं तब ऐसा लगा जैसे वह माँ को पहचान नहीं सका। उसके ऊपर माँ का एक विशेष ख्याल है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। सुना कि गाड़ी में आते समय बार-बार उसकी चर्चा करती रहीं। पर उसकी हालत का जो वर्णन किया गया, उससे उसके जीने की आशा कम है।

१२ बजे कलकत्ता से माँ की गाड़ी छूटने वाली है। इस तरह की गाड़ी इस मास से चालू की गयी है। पूरी गाड़ी वातानुकूलित है। कुछ डिब्बे प्रथम श्रेणी के और कुछ तृतीय श्रेणी के हैं। भारत में सबसे तेज चलने वाली गाड़ियों में इन दिनों अकेली गाड़ी है। केवल ९॥ घण्टे में कलकत्ता से मुगलसराय पहुँचाती है।

हबड़ा स्टेशन पर सैकड़ों भक्त माँ को गाड़ी पर चढ़ाने के लिए आये थे। गाड़ी १२ बजे छूटेगी, पर कुछ खराबी हो जाने के कारण ५० मिनट देर से छूटी। उपस्थित भक्तवृन्द अचानक इस देर से माँ के निकट और भी आनन्द प्रकट करते रहे।

माँ साधारण तौरपर वातानुकूलित गाड़ी से सफर करना पसन्द नहीं करती। ठण्ढ और बद्ध हवा माँ को पसन्द नहीं आती, पर गाड़ी के सभी डिब्बे उसी तरह के थे। स्वामीजी वगैरह सभी तृतीय श्रेणी के डिब्बे में थे। उनका कमरा भी वातानुकूलित और सुन्दर था। गाड़ी के किसी भी भाग से आदि से अन्त भाग तक आने जाने का मार्ग है। माँ का कमरा ब्रेकवैन के पास रहने के कारण काफी झकोलें खा रहा था, इसलिए घण्टा भर के लिए माँ को स्वामीजी के कमरे में ले आया गया। गया स्टेशन पर जब गाड़ी ठहरी तब माँ पुनः अपने कमरे में चली गयीं।

## २६ अक्टूबर, १९५६

आज सवेरे उठते ही माँ बोलीं—"दीदो, कुछ दिनों के लिए विंध्याचल में टहलान दे आऊँ।"

वहाँ भोजन आदि की व्यवस्था करने के लिए सबेरे पानु को भेजा गया। माँ दिन के ३ बजे रवाना हुईं। रेल से ८-१० व्यक्ति गये।

## २७ अक्टूबर, १९५६

नारायण स्वामीजी की जबानी कुछ उल्लेखनीय घटनाओं का समाचार मिला।

सुना कि जिस दिन माँ खड़गपुर से पुरी जा रही थीं, उस समय खड़गपुर के प्लेटफार्म पर टहल रही थीं। माँ के साथ डा० अनिल मैत्र, सती, पानु और चित्रा थे।

**पुरी के मार्ग पर कृपा-मयी माँ का कृपा वितरण**

माँ ने टहलते हुए देखा—एक प्रौढ़ा स्त्री (बंगाली) एक बच्चे का हाथ पकड़कर जा रही है। माँ को न जाने क्या ख्याल हुआ कि वे आगे बढ़कर बोलीं—"अजी, कहाँ जाती हो?" महिला शायद यह बात सुन नहीं पायी। पुनः दुबारा जब माँ ने कहा—"कहाँ जा रही हो माँ?" तब वह थमककर खड़ी हो गयी।

माँ से उसका कोई परिचय नहीं था। फलस्वरूप वह अवाक् होकर देखती रही। माँ के पुनः प्रश्न करने पर पता चला कि उसके पति इस समय मरणासन्न स्थिति में हैं। डाक्टरों ने कहा है कि एक्स रे कराना पड़ेगा। इधर हालत यह है कि इलाज तक

के पैसे पास में नहीं हैं। यहाँ तक कि कलकत्ता तक ले जाने लायक पैसे नहीं हैं। यही वजह है कि वह क्या करे कुछ समझ नहीं पा रही है। उसका घर मेदिनीपुर के एक गाँव में है।

कृपामयी माँ की कृपा की सीमा नहीं है। किसी कवि की कविता में पढ़ चुकी हूँ—'जीवन जब सूखा हो जाय तब करुणा के निकट आओ।' आज देखा कि कवि की प्रार्थना असत्य नहीं है। सचमुच जीवन में जब शुष्कता आ जाती है तब करुणा के निकट चला आता है। मुसीबत से घिर जाने के कारण उक्त महिला बेदर्दी से दौड़-धूप कर रही थी तभी माँ को आवाज आयी—'माँ, तुम कहाँ जा रही हो ?' आश्चर्य की बात यह हुई कि माँ के बग़ल में ही खड़े हैं—डा० मैत्र। आप कलकत्ता के सरकारी अस्पताल के सर्जन हैं। माँ ने उनसे पूछा—"पिताजी, क्या किया जाय ?"

डा० मैत्र ने आगे बढ़कर उससे कुछ पूछने के बाद एक कागज में नाम पता लिखते हुए कहा कि इस कागज़ को लेकर कलकत्ता के सरकारी अस्पताल में मुलाकात करना। मैं अस्पताल में एक्स रे—भर्ती आदि का प्रबन्ध मुफ्त में करवा दूँगा। तुम्हें कुछ भी देना नहीं पड़ेगा। यह बात सुनकर वह औरत हतवाक् रह गयी। आखिर वह यह क्या सुन रही है ? कलकत्ता जैसी महानगरी में जहाँ काफी रकम खर्च करने पर और बड़े-बड़े लोगों की सिफारश ले जाने पर साधारण सहायता नहीं मिलती, वहाँ यह सब न करने पर भी सारी व्यवस्था हो गयी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था। अयाचित रूप में कृपा की वर्षा से वह इस कदर भाव विभोर गयी कि रोने लगी। पता नहीं, यह रोदन आनन्द का था या दुःख का।

माँ के साथ के लोग उसे सान्त्वना देते हुए बोले—"तुम रो क्यों रही हो ? तुम्हारे पति की तो सारी व्यवस्था हो गयी।"

कुछ देर बाद उक्त महिला रोती हुई बोली--"माँ, मेरे पास इतने पैसे भी नहीं हैं कि कलकत्ता तक जा सकूँ।"

तुरत माँ ने डा० मैत्र से पूछा—"कितना खर्चा लगता है यहाँ से ?" इतना कहने के बाद उन्होंने पानु से पूछा-- "कुछ रकम है ?"

यह बात सुनते ही पानु ने जेब से कुछ रुपये निकाले। साथ ही साथ डा० मैत्र और चित्रा ने भी निकाले। इस प्रकार वहाँ खड़े-खड़े उन दोनों के लिए कलकत्ता जाने की व्यवस्था हो गयी बल्कि आवश्यकता से अधिक प्राप्त हो गयी।

माँ उक्त महिला से बार-बार कहती रहीं—"यह तो सब हो गया। अब तुम यहाँ से सीधे गाँव चली जाओ और परसों सवेरे कलकत्ता पहुँचकर सीधे अस्पताल में पहुँचकर इन डाक्टर बाबू से भेंट करना। ये सारी व्यवस्था कर देंगे, यह तो कह चुके हैं।"

इसी बीच उसका बालक कहीं चला गया था। माँ ने उसे खोजने के लिए सती को भेजा। फिर दोनों को जलपान के लिए इन्तजाम करने के लिए कहा। माँ ने स्वयं अपने हाथ से कई सेब दिये।

उक्त महिला बार-बार 'माँ-माँ' कहती रही। ऐसा लगता था, मानो अभी तक उसका विस्मय दूर नहीं हुआ है। वह सोच रही थी कि यह सत्य है या स्वप्न ?

बुनी-चित्रा बार-बार माँ से कहने लगीं—"सचमुच माँ की कितनी असीम कृपा है। बड़ी भाग्यशाली महिला है।" इधर माँ का काम सम्पूर्ण हो चुका था। बुनी आदि की बातों पर बिना ध्यान दिये माँ तेजी से चहल-कदमी करने लगीं। गाड़ी के आने

का समय हो गया था। सभी लोग माँ के पीछे चलते हुए उक्त महिला के बारे में चर्चा करते रहे।

एक और विस्मयकर घटना का पता चला। खड़गपुर से पुरी जाते समय एक वृद्धा न जाने कैसे माँ के डिब्बे में चढ़ आयी थीं। रूपसा में उसका लड़का रहता है। किन्तु इस घटना के बारे में विस्तार से कुछ पता नहीं चला। इच्छा रह गयी कि कभी माँ की जबानी इस सम्बन्ध में विस्तार से सुनने में आयेगा।

## २८ अक्टूबर, १९५६

आज शाम को देखा कि माँ अचानक आ गयी हैं। साथ में परमानन्द जी तथा ब्रह्मचारी हीरू हैं। सुना कि कल पुनः तीसरे पहर वापस चली जायँगी। एक बार यह चर्चा चली थी कि माँ विंध्याचल में दो दिन रहने के बाद यहाँ काली पूजा के पहले चली आयँगी। अब सुनने में आ रहा है कि माँ यहाँ काली पूजा के बारे में निर्देश देकर विंध्याचल चली जायँगी और बाद में काली-पूजा के दिन सुबह आयँगी।

## २९ अक्टूबर, १९५६

आज माँ भोग के बाद विंध्याचल चली गयीं। शायद काली पूजा के एक दिन पहली वापस आ जाँय।

## ३१ अक्टूबर, १९५६

तीसरे पहर ४॥ बजे माँ विंध्याचल से वापस आयीं। शाम के कुछ पहले अन्नपूर्णा मन्दिर में जाकर अन्नपूर्णा को गोपाल मन्दिर

से ले आने की व्यवस्था की गयी। अन्नपूर्णा मन्दिर में सफेदी–रंग कराने के लिए देवी को गोपाल-मन्दिर में ले जाया गया।

विंध्याचल की कथा प्रसंग में विशेष उल्लेखनीय घटना का पता चला।

**अन्तर्यामी माँ की एक और घटना**

राँची के पारुल की छोटी बहन उषा झाड़ग्राम की किसी महिला स्कूल में शिक्षयित्री का काम करती है। इस बार राँची में लक्ष्मी-पूजा के अवसर पर माँ का दर्शन कर वह अत्यन्त आर्कषित हुई थी। स्कूल से कुछ दिनों की छुट्टी लेकर माँ के निकट आयी है। वह विंध्याचल में भी माँ के पास गयी थी। लड़की अविवाहिता, सरल और हँसमुख प्रकृति की है। इन्हीं चन्द दिनों के भीतर माँ के प्रति उसमें एक तीव्र श्रद्धा-आकर्षण उत्पन्न हुआ है।

वह कल रात को सोती हुई यह सोच रही थी कि काली-पूजा के बाद वह माँ से अलग हो जायगी। यह बड़ा दुःखदायी होगा। यही सब वह सोच रही थी। सोचते-सोचते उसके मन में यह विचार आया कि जाते समय अगर माँ के निकट से कुछ स्मृति स्वरूप ले चलूँ तो शायद कष्ट बोध कुछ कम हो सकता है। बार-बार उसके मन में यही बात उत्पन्न हो रही थी—'काश ! माँ कुछ देतीं तो अच्छा होता।'

आज सवेरे उषा माँ के गले में एक गुलाब की माला पहनाती हुई बोली—"माँ, आज तक किसी के गले में मैंने माला नहीं पहनायी। आज पहले पहल तुम्हें पहना रही हूँ।" हम लोगों ने अनुभव किया कि यह तो स्वच्छ हृदय की बात है। माँ मृदु-मृदु मुस्करा रही थीं। माला के साथ आठ ताजे गुलाब भी माँ को

उसने दिये थे। गुलाब देकर उसने माँ को प्रणाम किया, फिर विभोर होकर माँ की ओर देखती रही। अचानक उसका मन चौंक उठा। जब उसने अपनी ओर देखा तो ज्ञात हुआ कि उसकी गोद में गुलाब का एक फूल पड़ा है।

उषा ने अत्यन्त चकित भाव से माँ से पूछा—"माँ यह फूल कहाँ से आया ? बड़े आश्चर्य की बात है।"

माँ ने हँसते हुए उत्तर दिया—"तुमने माँगा था, इसलिए तुम्हें दिया गया।"

माँ की बातें सुनकर उषा बुरी तरह चौंक उठी। बोली—"मैं ? मैंने तुमसे भला कब माँगा था ?"

माँ ने कहा—"कल रात को मैं स्पष्ट रूप से सुन रही थी कि तुम मुझसे कुछ मांग रही हो, इसीलिए इस शरीर ने तुम्हें यह गुलाब का फूल दिया।"

हम लोगों को समझते देर नहीं लगी कि उषा के हृदय का आवेदन माँ के निकट इस प्रकार सीधे रूप में पहुँचा था। कृपामयी माँ ने आज उसकी मनोवांछा पूर्ण कर दी।

उषा नयी आयी है। माँ की समस्त लीलाओं और खेलों से वह अभी तक परिचित नहीं हो सकी है, इसलिए हतबुद्धि सी होकर उसने फूल को कलेजे से लगा लिया। इससे बढ़कर और कौन-सी श्रेष्ठ वस्तु की आशा वह कर सकती थी ?

थोड़ी देर बाद माँ स्वयं ही बोलीं—"तू चाहती रही, इसलिए पा गयी। अगर तेरी इच्छा हो ता फूल को लाकेट में रख सकती है।"

पिछली रात को सभी प्रार्थनाएँ जब स्मरण हो आयी तब मानी वह कृतार्थ हो उठी।

## १ नवम्बर, १९५६

**काशी-आश्रम में प्रथम बार श्री श्री श्यामापूजा**

आज श्री श्री श्यामा पूजा है। नये आश्रम के मातृ मण्डप में पूजा का आयोजन हो रहा है। सवेरे से माँ चारों तरफ घूमती हुई सब कुछ देख-सुन रही हैं।

इस बार आश्रम में कालीपूजा का प्रस्ताव कैसे हुआ था, यह पहले ही लिखा जा चुका है। आश्चर्य की बात यह हुई कि बाद में माँ का एक पुराना भक्त आकर आश्रम में काली-पूजा हो, इस सम्बन्ध में उसने माँ से निवेदन किया। माँ कब किससे कार्य पूरा करा लेती है, कौन बता सकता है?

माँ की सारी व्यवस्था इसी प्रकार से होती है। माँ कहती हैं कि इस शरीर के कार्यों का संयोग इसी प्रकार अपने आप हो जाता है। इस बार जब माँ कलकत्ता से रवाना हुईं तब माँ के कमरे तक निताई पाल महाशय काली मूर्त्ति पहुँचा गये थे। निताई बाबू बड़े प्रसिद्ध कारीगर हैं। उनके हाथ की बनी काली मूर्त्ति सचमुच अपूर्व है। जो देख रहा है, वही मुग्ध दृष्टि से बस देख रहा है। सचमुच मूर्त्ति दर्शन से अन्तर स्वीकृति देता है—माँ का ही रूप है यह।

रात १२ बजे पूजा आरंभ हुई। माँ पूजा आरंभ होने के समय से अन्त तक बैठी रहीं। स्थानीय भक्तों की बात जाने दीजिये; कलकत्ता, लखनऊ, इलाहाबाद आदि शहरों से अनेक भक्त आये हैं।

भोग-आरती हो जाने के बाद लगभग रात को तीन बजे लोगों ने महानन्द के साथ प्रसाद ग्रहण किया। माँ प्रसाद पाने वाले स्थानों का स्वयं जाकर मुआइना कर आयीं।

## २ नवम्बर, १९६६

कल पूजा समाप्त हो गयी। आज प्रतिमा को गंगा में विसर्जन दिया जायगा। ठीक इसी समय बिशु दादा ने प्रस्ताव रखा कि यह मूर्त्ति मुझे बहुत पसन्द है। मैं इसे अपने यहाँ ले जाना चाहता हूँ और नित्य इसकी पूजा करूँगा।

पूजित श्री श्री श्यामा माँ की मूर्त्ति की कथा

पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि शास्त्र में इस तरह का विधान है। माँ से आज्ञा लेने पर उन्होंने स्वीकृति दे दी। माँ की स्वीकृति पाते ही बिशु दादा बड़े गद्गद होते हुए मूर्त्ति को अपने घर ले गये। बाद में सुना कि पूजा के समय अधिकतर लोग मन ही मन यही कह रहे थे—'आहा, ऐसी सुन्दर मूर्त्ति गंगा गर्भ में विसर्जित होगी? काश! इस मूर्त्ति को रख लिया जाता। आज देवी ने स्वयं ही वैसी व्यवस्था कर दी। मूर्त्ति विसर्जित नहीं की जायगी, सुनकर लोग फूले नहीं समाये।

## ३ नवम्बर, १९६६

माँ की उपस्थिति में आश्रम में इस बार काफी धूमधाम के साथ अन्नकूट का उत्सव उदयापित हुआ। यहाँ के सभी भक्तों ने आश्रम में प्रसाद ग्रहण किया।

शाम के समय 'ब्रह्म बिन्दु' (भैया दूज) उत्सव यथा रीति सम्पन्न हुआ। पहले माँ को मैंने टीका लगाकर तब उपस्थित

सभी भक्तों एवं आश्रमवासी भाइयों को टीका लगायी। बाद में कन्यापीठ की महिलाएँ आयीं और माँ की आरती करने के बाद मुझे टीका लगायीं। महिलाओं में अधिकतर मुझे मौनी मामा के अनुकरण के अनुसार "दादा भाई" कहकर सम्बोधन करती हैं।

## ५ नवम्बर, १९५६

आज सवेरे माँ अन्नपूर्णा के नाट मन्दिर में जाकर बैठीं। कलकत्ता से मेरे फुफेरे भाई आशु की लड़कियाँ आयी हैं। माँ ने सबसे छोटी लड़की से कीर्त्तन करने को कहा। इस लड़की की उम्र ९-१० की रही, पर यह कीर्त्तन बहुत सुन्दर करती है। प्राचीन वैष्णवों द्वारा रचित पदावली कीर्त्तन बड़े मधुर ढंग से गाती है।

**आशु की लड़कियों के पदावली कीर्त्तन में पुरस्कार**

दो गीत उसने गाये। माँ ने कहा—"इसने तो न जाने कितने गीत गाकर पता नहीं कितने मेडेल पायी है। आज इसे यहाँ से एक मेडेल दिया जायगा। क्यों ठीक है न?"

इतना कहने के बाद माँ ने अमूल्य दादा की लड़की सती से न जाने क्या ले आने के लिए कहा। सती थोड़ी देर बाद एक लिफाफा लेकर आयी और माँ को उसने दी। उक्त लिफाफा माँ ने मुट्ठी में दबा लिया।

इसी बीच एक और घटना हो गयी जिसका उल्लेख यहाँ करना जरूरी है।

काशी के लब्ध प्रतिष्ठ एडवोकेट श्री यतीन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय जी की पत्नी मृणालिनी देवी ने पीतल की एक

छोटी गोपाल मूर्त्ति लाकर माँ को दी। गोपाल जी पीले रंग का घाघरा, गले में सोने की मटरमाला, सिर पर सोने का मुकुट पहने हुए थे। उनकी आकृति बहुत सुन्दर थी।

माँ ने बड़े आदर के साथ उस मूर्त्ति को गोद पर रख लिया। लोगों के सामने मृणालिनी गोपालजी का इतिहास सुनाने लगी।

यह गोपाल मूर्त्ति वह वृन्दावन से ले आयी है। माँ ने उसे कभी मानस पूजा करने को कहा था, किन्तु वह नित्य विधिवत् पूजा करती आ रही है।

आज से चार माह पहले की बात है। मृणालिनी के घर का पुजारी बीमार पड़ गया तब उसका दामाद आकर नियमित रूप से पूजा करने लगा। फिर उन्हें शयन देकर चला जाता था। एक दिन शयन देकर जब वह चला गया तब वह मूर्त्ति गायब हो गयी। लोगों को सन्देह हुआ कि नये पुजारी ने गायब कर दी है, पर उसने किसी तरह से स्वीकार नहीं किया कि वह ले गया है।

कुछ दिनों बाद एक दिन यतीन बाबू के घर की नौकरानी काम पर जब नहीं आयी तब घर के रसोइयाँ को उसके घर बुलाने के लिए भेजा गया। उसने आकर बताया कि मैंने गोपालजी की मूर्त्ति नौकरानी के घर देखी है। मृणालिनी तुरत नौकरानी के घर गयी और वहाँ से मूर्त्ति उठा लायी। नौकरानी ने कहा कि मैंने चोरी नहीं की है। आज से १५–१६ दिन पहले एक आदमी यहाँ आकर दे गया था।

बहरहाल, इस तरह २॥ माह बाद गोपालजी पुनः प्राप्त हुए। आज मृणालिनी उक्त गोपालजी माँ को दिखाने के लिए ले आयी है।

सती ने जो लिफाफा माँ के हाथ में दिया था, उसमें से तुलसी

को एक बड़ी पत्ती निकाल कर माँ ने गोपालजी के चरणों पर रखा। उक्त तुलसी की पत्ती सूखी हुई थी। उसमें चन्दन और केशर से कुछ लिखा था।

माँ ने आशु की लड़की से पुरस्कार स्वरूप गोपालजी के चरणों पर चढ़ायी गयी पत्ती को उठा लेने के लिए कहा—"इसे उठाकर नारायण स्वामी के हाथ में दे दो। इसमें क्या लिखा है, वे पढ़कर सुना देंगे।"

नारायण स्वामीजी ने पढ़कर सुनाया, तुलसी पत्र के ऊपर देवनागरी लिपि में लिखा था—'ओं नमो भगवते वासुदेवाय। ओं श्री सीताराम। श्री राधेश्याम, श्री राधे गोविन्द।'

माँ ने कहा—"तुलसी को यह पत्तियाँ चारखारीकी राजमाता ने भेजी हैं। यह शरीर कहाँ रखेगा, इसलिए शरीर के माँ, पिता, बन्धुओं के निकट रख दिया गया।"

मुक्ति महाराज ने कहा—"माँ शायद अपने लड़कों के पास नहीं रखतीं।"

नारायण स्वामीजी ने कहा—"लड़कों के पास रखने पर कहीं वे इसकी रक्षा न कर सकें तो, इसलिए माँ वहाँ नहीं रखने देतीं।" यह बात सुनकर सभी हँस पड़े।

माँ ने एक और तुलसी पत्र निकालकर मुक्ति महाराज के हाथ में दिया। नारायण स्वामीजी को भी दिया। इसके बाद मंत्र लिखित एक-एक तुलसी पत्र उपस्थित सभी लोगों ने ग्रहण किये।

वृद्ध सुरेन सान्याल जी भी बैठे थे। माँ ने उनसे कहा—"इच्छा हो तो ले सकते हैं पिताजी।"

उन्होंने कहा कि तुलसी पत्र में विश्वनाथ नाम नहीं है, इसलिए मैं नहीं लूँगा। जब माँ ने एक बार पुनः पूछा तब सान्याल जी ने कहा—"अगर आप यह कहें कि इसके लेने से मेरा भला होगा तो मैं ले सकता हूँ।"

अब माँ नीरव रह गयीं। फिर सान्याल जी ने माँ के हाथ से एक तुलसी पत्र लेते हुए कहा—"पर मैं जप-ध्यान नहीं कर सकूँगा।"

माँ—"अच्छा पिताजी! आप अपने साथ रखे रहना।"

सान्याल जी—"ठीक है, जेब में रखूँगा।" थोड़ी देर बाद पुनः बोले—"बक्स में रख दूँगा।"

वृद्ध शंकरानन्द स्वामीजी ने भी माँ के हाथ से एक तुलसी-पत्र माँग लिया।

**तुलसी-पत्र में नाम लिख देने पर उसे दीक्षा के रूप में ग्रहण किया जासकता है या नहीं**

उसी दिन सत्संग के समय यह प्रश्न उठा कि माँ ने जब इस तरह तुलसी-पत्र के द्वारा सभी को नाम और मंत्र दिये तब उसे दीक्षा समझकर ग्रहण किया जा सकता है या नहीं? किसी-किसी ने यह राय प्रकट की कि श्रद्धापूर्वक माँ के हाथ से जो भी प्राप्त हुआ है, अगर उसे दीक्षा मान लिया जाय तो उसके द्वारा दीक्षा का कार्य अवश्य होगा।

माँ की लीला की कोई सीमा नहीं है। क्या देकर माँ क्या कर डालती हैं, यह कौन जान सकता है? इधर माँ मानो कुछ जानती नहीं। सिर्फ बोलीं—"दीदी कई दिनों से तुलसी के बारे में कह रही थी, आज इसका इन्तजाम हो गया।"

## ६ नवम्बर, १९५६

परसों माँ संयम-सप्ताह के उपलक्ष्य में हरिद्वार चली जायँगी। शायद माँ सप्ताह समाप्त होने के बाद काशी लौट आयँगी। इसलिए मैं यही रह गयी।

**काशी आश्रम में दक्षिण भारत के श्री रमणाश्रम के अध्यक्ष आये**

आज सवेरे कलकत्ता से दक्षिण भारत के श्री रमणाश्रम के अध्यक्ष, उनकी सहकर्मी श्रीमती तलवार खान और महर्षि रमण की एक भक्त महिला आयी। ये लोग यहाँ ३–४ दिन रहेंगे। पिछली बार माँ जब दक्षिण भारत गयी थी तब श्रीमती तलवार खान ने माँ के लिए सभी प्रकार की व्यवस्था करती रहीं। माँ को श्री रमण के आश्रम में ले गयी थीं। वहाँ माँ के करकमलों से आश्रम के उपासना गृह की नींव डाली गयी थी।

सुना कि महर्षि रमण के देहावसान के बाद आश्रम के संचालन के मामले में कुछ मन-मुटाव आपस में हुआ था। इन दिनों महर्षि का भतीजा अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए हैं। श्रीमती तलवार खान महर्षि के भक्तों में एक विशेष विदुषी और प्रभावशाली महिला हैं। आजकल ये लोग उक्त मतभेद को दूर करने के लिए, भारत के असंख्य शिष्यों में प्रचार के उद्देश्य से उत्तर भारत का दौरा कर रहे हैं।

काशी के प्रसिद्ध चिकित्सक डा० नाथ महर्षि रमण के शिष्य हैं। वे और पानु स्टेशन पर इन लोगों का स्वागत करने के लिए गये थे। जब ये लोग यहाँ आये तब डा० नाथ और पानु ने उनसे आश्रम में ठहरने के लिए अनुरोध किया। इन लोग इस सादर आह्वान को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

रमणाश्रम के अध्यक्ष तथा अन्य दोनों व्यक्तियों का यद्यपि माँ से परिचय नहीं है, किन्तु आश्रम में ठहरने का अवसर पाकर श्रीमती तलवार खान हर्ष से गद्‌गद हो उठीं। गोकि आप पारसी हैं, पर माँ के प्रति इनके मन में असीम भक्ति, श्रद्धा और अनुराग है।

## ७ नवम्बर, १९५६

महर्षि आश्रम के अध्यक्ष तथा सहायक सज्जन सवेरे काफी देर तक माँ के साथ एकान्त में आध्यात्मिक चर्चा करते रहे। महर्षि की जीवन-सम्बन्धी अनेक अनुभूतियों की कहानी इन लोगों ने सुनायी। लम्बे अर्से तक महर्षि से इनका सम्पर्क रहा। माँ के साथ बातचीत करते हुए आपने बताया—"साधना के मार्ग पर चलते-चलते एक ऐसी स्थिति आ जाती है जहाँ से ऊपर उठना मानव के लिए कठिन हो जाता है। वहीं विशेष कृपा की आवश्यकता होती है। माँ की कृपा के लिए मैं कातर-भाव से प्रार्थना कर रहा हूँ।

माँ—"उनकी कृपा तो सर्वदा है।—इस विश्वास को मन में रखकर आगे बढ़ो।"

ऐसा लगा जैसे माँ के इस उत्तर से उक्त सज्जन अत्यन्त आनन्दित हुए। वे आश्रम की ओर से माँ के निकट एक बार रमणाश्रम में आने के लिए बार-बार प्रार्थना करने लगे। आगे उन्होंने कहा "मुझे दृढ़ विश्वास है कि माँ की उपस्थिति से वहाँ की साधक मण्डली का विशेष उपकार होगा।"

माँ ने कहा—"जब आप लोग इस छोटी लड़की को ले चलेंगे, तभी चली चलूँगी।"

आज कान्तिभाई आदि कुछ लोगों को हरिद्वार भेजा गया, बाद में माँ जायँगी।

## ८ नवम्बर, १९५६

संयम-सप्ताह के उपलक्ष्य में माँ का हरिद्वार गमन

आज सवेरे ११ बजे देहरादून एक्सप्रेस से माँ हरिद्वार रवाना हो गयीं। माँ के साथ परमानन्द स्वामीजी, बुनी, शोभा, मृणालिनी आदि १२–१३ व्यक्ति गये। आगामी १३ ता० को सवेरे से हरिद्वार स्थित सप्तऋषि आश्रम में संयम-सप्ताह आरम्भ होगा। १८ ता० को संभवतः समाप्त होगा।

यह तय किया जा रहा है कि माँ ९–१० ता० को हरिद्वार स्थित योगी भाई की धर्मशाला में ठहरने के बाद ११ ता० को सप्तऋषि आश्रम जायँगी। योगी भाई विशेष रूप से प्रार्थना कर चुके हैं कि माँ कम से कम दो दिन उनके यहाँ जरूर ठहरें। योगीभाई भी आजकल वहीं हैं, इसीलिए माँ तीन दिन पहले रवाना हो गयीं।

## १० नवम्बर, १९५६

कल रात को इस आशय का तार हरिद्वार से आया है कि माँ कल सवेरे ठीक से वहाँ पहुँच गयी हैं और योगीभाई के यहाँ ठहरी हैं।

श्री रमण महर्षि आश्रम की पार्टी कुछ दिनों तक यहाँ ठहरने के बाद आज तीसरे पहर इलाहाबाद रवाना हो गयी। इन्हें इधर

कई दिनों तक बड़ा आनन्द मिला। एक बात और है—पिछले ६ ता० को सवेरे माँ श्री गोपीनाथ कविराज जी के आग्रह पर श्री विशुद्धानन्द आश्रम में गयी थीं। उनके साथ परमानन्द स्वामीजी, नारायण स्वामीजी, मुक्ति महाराज आदि लोग गये थे। माँ के लिए वहीं भोग का प्रबन्ध किया यया था। कलकत्ता से आये यतीश दादा, अनिल गांगूली, रमण आश्रम के लोग माँ के साथ वहाँ गये थे।

माँ के प्रति कविराज जी की असीम श्रद्धा और भक्ति है। इतने बड़े शास्त्रज्ञ तथा इस तरह के एक उच्च स्तर के साधक होते हुए भी वे ऐसे निरभिमान व्यक्ति हैं कि इस तरह के लोग आज के जमाने में दुर्लभ हैं। माँ के निकट तो वे बिलकुल शिशु की तरह रहते हैं।

## १२ नवम्बर, १९७६

हरिद्वार से प्राप्त बुनी के पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ की तबीयत एक प्रकार से ठीक है। कल तक माँ योगीभाई के यहाँ रहने वाली थीं। कलकत्ता से डा० नलिनी ब्रह्म जी सपत्नीक, नकुड़ बाबू की पत्नी, अलमोड़ा से धरणीधर, जोशी, हरिराम जोशी आदि अनेक व्यक्ति इस बीच हरिद्वार में माँ के पास पहुँच गये हैं।

## १३ नवम्बर, १९७६

बुनी के पत्र से ज्ञात हुआ कि इसी बीच एक दिन माँ के पेट में पुनः दर्द उभरा था। उस दिन माँ बार्ली, मट्ठा आदि पीती रहीं। कल तो कुछ भी नहीं खायीं।

परसों भोर के वक्त वृन्दावन से हरि बाबाजी महाराज के भक्त तथा अनेक शिष्य हरिद्वार पहुंचे। स्वरूपानन्द इन लोगों को साथ ले गये थे। बाद में श्री हरि बाबाजी दिल्ली होते हुए मोटर द्वारा १२ बजे के लगभग पहुँचे। अवधूत जी २–३ रोज से वहाँ हैं। सभी लोग राजा साहब के यहाँ हैं।

यह समाचार भी आया है कि परसों सबेरे भोजनादि के बाद माँ हरि बाबाजी, अवधूतजी आदि को साथ लेकर सप्तऋषि आश्रम चली गयी हैं। बाकी लोग पहले ही वहाँ चले गये थे। कल से संयम-सप्ताह प्रारंभ हो गया है, इसलिये राजा साहब हरिद्वार में रहने के बदले सप्तऋषि आश्रम में रहने का प्रबन्ध कर रहे हैं।

## १६ नवम्बर, १९५६

हरिद्वार से परमानन्द स्वामीजी आदि लोगों के पत्र से ज्ञात हुआ कि संयम-सप्ताह का प्रबन्ध बहुत ही सुन्दर हुआ है। ब्रह्म-कुण्ड से लगभग ५ मील दूर हृषीकेश के मार्ग पर गंगा किनारे सप्तऋषि आश्रम है। पास ही सप्त सरोवर भी है। यह स्थान अत्यन्त मनोरम और आश्रम के योग्य है। प्राचीन काल में इसी स्थान पर विश्वामित्र आदि सप्त-ऋषियों का आश्रम था। लोग इसी स्थान पर तपस्या करते थे। अभी तक यह स्थान एक अपूर्व आध्यात्मिक भाव से परिपूर्ण है।

**हरिद्वार स्थित सप्तऋषि आश्रम में संयम-सप्ताह**

आश्रम के प्रवेश द्वार के सामने सप्तऋषि के नाम पर स्थापित सात पक्की कोठरियाँ हैं। इनमें साधु-सन्तों को ठहराने का प्रबन्ध किया गया। आश्रम के ठीक बीच में महादेव जी का मन्दिर है जिसके चारों ओर अलिन्द में सप्तऋषियों की प्रस्तर मूर्त्तियाँ सजा

कर रखी गयी हैं। एक ओर काफी बड़ी प्रस्तर मूर्त्ति मालवीयजी की है। उसके पीछे विराट सत्संग भवन बनाया जा रहा है। हाल की छत का काम अभी पूरा नहीं हुआ है। उसके ऊपर शामियाना लगा कर काम लिया गया। चारों ओर कनात लगा कर संयम-सप्ताह का प्रबन्ध किया गया है। हाल के भीतर परमहंस रामतीर्थ महाराज की आदमकद प्रस्तर मूर्त्ति है।

एक ओर सुन्दर एक अतिथिशाला है। माँ के ठहरने का इन्त-जाम इसी में किया गया है। दोनों ओर अन्य कई कुटिया तथा कई तम्बू लगाकर भक्तों के रहने लायक इन्तजाम किया गया है। सारी व्यवस्था यथासाध्य आश्रमोचित रूप में हुई है। पास ही गंगा प्रवाहिता हैं, अतएव स्नान के मामले में कोई असुविधा नहीं है।

त्यागमूर्त्ति गोस्वामी श्री गणेशदत्तजी सारी व्यवस्था कर रहे हैं। इस आश्रम के प्रतिष्ठाता तथा संचालक आप ही हैं। वास्तव में आप त्याग-तपस्या के जीवन्त प्रतीक हैं। इस कड़ाके की सर्दी में आप एक टुकड़ा खद्दर की चादर ओढ़कर काम कर रहे हैं। सम्पूर्ण पंजाब तथा आसपास के क्षेत्रों में बसे लोगों के निकट आप बहुत ही जनप्रिय हैं। लोकसेवा एवं समाज-कल्याण के क्षेत्र में आपकी देन असीम है।

योगीभाई के शिमला स्थित राजभवन में आज से कई वर्ष पूर्व आपने माँ का दर्शन किया था और उस वक्त आप ऐसे अभिभूत हो गये थे कि आज तक उक्त दर्शन की अनुभूति की चर्चा बराबर करते रहते हैं।

दिल्ली के अवकाश प्राप्त एक्जीक्यूटिव इंजीनियर रायबहादुर नारायण दासजी भी प्रस्तुत संयम-सप्ताह के कार्य में गोस्वामीजी की अक्लान्त रूप से सहायता कर रहे थे। यद्यपि आप कुछ

अस्वस्थ हैं तथापि इस हालत में भी आप दिन-रात काम में जुटे हुए हैं।

भक्तगण यहाँ-वहाँ से बराबर आ रहे हैं। इनकी संख्या तीन सौ से अधिक हो गयी है। सभी लोगों के लिए ठहरने का प्रबन्ध वहीं या उसके आसपास के क्षेत्रों में किया गया है। श्री हरि बाबाजी, अवधूतजी, योगेश ब्रह्मचारीजी, बम्बई के स्वामी कृष्णानन्दजी, योगीभाई आदि आश्रम की एक-एक कुटिया में ठहरे हैं।

टेहरी के महाराज-महारानी, आमेर के राजा साहब आदि आये हैं। ये लोग आश्रम से कुछ दूर बिड़ला हाउस में ठहरे हैं।

सत्संग भवन सप्ताह के उपलक्ष्य में खूब अच्छी तरह सजाया गया है। हाल के भीतर पूर्व दिशा में चौकी के ऊपर साधु-महात्माओं के लिए बैठने का स्थान बनाया गया है। बीच में व्यासासन और उसके बगल में माँ के बैठने का स्थान ठीक किया गया है। सामने कीर्त्तनिया और ब्रह्मचारियों का दल बैठेगा। बाकी स्थानों पर पुरुष और महिलाएँ सब अलग-अलग बैठेंगे। दीवारों पर विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्त्ति सजायी गयी है। कई स्थानों पर माँ तथा अन्य महापुरुषों की वाणियाँ अंकित हैं।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस बार भी ८ से ९ बजे तक ओर तीसरे पहर ३ से ४ बजे तक समवेत ध्यान और जप के लिए समय निर्धारित किया गया है। सवेरे ९ से १२॥, तीसरे पहर ४ से ५ और रात १० बजे तक सत्संग होता है। यथा रीति श्री हरि बाबाजी का कीर्त्तन, अवधूतजी और योगेश ब्रह्मचारी का सारगर्भ भाषण चल रहा है। सप्ताह के प्रथम दिन प्रातःकाल गोस्वामीजी ने इस संयम-सप्ताह महाव्रत के बारे में अपनी ललित भाषा में विस्तृत रूप से वर्णन किया। गतवर्ष दिल्ली में अनुष्ठित पंचम-सप्ताह के समय

किस ढंग से इसी सप्तऋषि आश्रम में षष्ठ-सप्ताह महाव्रत के लिए आमंत्रण दिया था तथा कैसे श्री श्री माँ ने उक्त आमंत्रण को स्वीकार किया, इन सभी बातों का आपने अत्यन्त प्रभावकारी और मधुर संभाषण के माध्यम से लोगों के सामने प्रकट किया।

दूसरे दिन सवेरे सत्संग के समय माँ ने लोगों के सामने एक अद्‌भुत घटना की कहानी सुनायी। सप्ताह के प्रथम दिन रात को माँ अपनी कुटिया में विश्राम कर रही थीं। उस वक्त रात के २ बज चुके थे। ठीक इसी समय एक सूक्ष्म शरीरधारी, तेजस्वी, बलिष्ठ, श्वेत वस्त्रधारी, दीर्घकाय व्यक्ति माँ के पास आकर खड़ा हो गया। उनके पीछे दो अन्य शिष्य श्वेत वस्त्र पहने खड़े थे। इन तीनों ने आकर माँ को प्रणाम किया। माँ ने उन लोगों से पूछा—"अच्छे हो ?" इसके बाद मानों अत्यन्त स्वाभाविक रूप में माँ के मुँह से निकलने लगा—भज गोविन्दम्, भज गोविन्दम्, भज गोविन्दम् मूढ़मते।" ज्यों-ज्यों माँ यह श्लोक पढ़ती रहीं त्यों-त्यों सूक्ष्म शरीरधारी गुरु और शिष्यद्वयों में वस्त्र और मन की स्थितियों में परिवर्तन होते गये। मानो उनकी ऊर्ध्वगति हो गयी।

**माँ की जबानी एक विचित्र घटना की कहानी**

यह घटना माँ की जबानी सुनकर सभी लोग विशेष रूप से चकित रह गये। माँ के निकट इस तरह की घटना बराबर होती रहती है। किन्तु माँ यह सब बातें साधारण रूप से लोगों को नहीं बताती। पता नहीं आज माँ को क्या ख्याल हुआ कि कह गयीं।

सप्तऋषि आश्रम के वातावरण में एक अपूर्व विशेषता है। कोई सूक्ष्म शरीर महात्मा अपने शिष्यों के साथ इस स्थान पर माँ की प्रतीक्षा कर रहे थे। अब माँ का दर्शन पाने के बाद वे लोग जन्म-मृत्यु के आवागमन से मुक्ति पा गये या नहीं, यह बात कौन

बता सकता है ? माँ की अलौकिक कृपा-वर्षा कब किसके ऊपर, किस रूप में हो रही है, उसका अनुधावन करना हमारे लिए संभव नहीं है।

रात को ९ बजे के बाद मातृ संग के लिए आधा घण्टा समय निर्धारित किया गया है। कभी-कभी माँ प्रश्नों का उत्तर देती हैं। कभी 'हे भगवान्-हे भगवान्' या 'हरि बोल हरि बोल' या 'अच्युतं केशवं' इत्यादि पद-कीर्त्तनादि करती हुई लोगों को आनन्द देती हैं।

## १९ नवम्बर, १९५६

हरिद्वार से पत्र आया है। माँ का शरीर एक प्रकार से ठीक है, पर बीच-बीच में पेट में गड़बड़ी पैदा हो जाती है।

संयम-सप्ताह अत्यन्त सुन्दर ढंग से हुआ है। सप्ताह के चौथे दिन अर्थात् १५ ता० को ऋषिकेश परमार्थ निकेतन के प्रतिष्ठाता श्री स्वामी शुकदेवानन्दजी को मोटर से सप्तऋषि आश्रम में लाया गया था। आपने उस दिन माँ के यहाँ भिक्षा ग्रहण की थी। सवेरे रामायण पर अत्यन्त हृदयग्राही भाषण आपने दिया था।

उसी दिन तीसरे पहर बम्बई के संन्यास आश्रम के महामण्डलेश्वर श्री १००८ स्वामी महेश्वरानन्दजी महाराज का भी सत्संग के समय भाषण हुआ था। माँ के प्रति आपकी असीम श्रद्धा है। संयम-सप्ताह के उपलक्ष्य में आप बम्बई से हरिद्वार आये हैं। कनखल में उनका निजी आश्रम है। फलस्वरूप आप सप्तऋषि आश्रम नहीं आये।

सप्ताह के छठवें दिन पुनः आकर सत्संग में अत्यन्त पाण्डित्यपूर्ण भाषण देते हुए उन्होंने लोगों को आनन्द दिया था।

सत्संग के अवसर पर किसी ने प्रश्न किया—"संयम-सप्ताह से क्या लाभ हुआ ?" माँ ने उन्हें अत्यन्त सुन्दर ढंग से समझाया कि रात को १५ मिनट के मौन रहने के पश्चात् लोग यहाँ काफी शान्ति से बैठे रहते हैं, यही परम-लाभ है। नित्य दो घण्टे तक ध्यान में बैठे रहने के अभ्यास के कारण ऐसा हुआ है।

**संयम-सप्ताह के पालन से लाभ**

माँ ने आगे कहा है—"पहले इसी १५ मिनट के भीतर लोग न जाने कितना छींकते-खाँसते थे। दूसरी ओर कुछ लोग सोचते थे कि संयम-सप्ताह लम्बे अर्से तक चलता रहे। ये सभी अच्छे लक्षण हैं। माँ ने और भी कहा है—"धीरे-धीरे सभी में परिवर्त्तन होते हैं और हुए हैं। पर यह बात सभी समय समझ में नहीं आती। यही वजह है, यह शरीर सर्वदा कहता है कि प्रत्येक माह में कम से कम एक दिन संयम नियम का पालन करना चाहिए।"

व्रतियों की संख्या के बारे में जो कुछ अनुमान किया गया था, उससे अधिक थी। प्रथम श्रेणी के ५० और द्वितीय श्रेणी के २५० थे।

बुनी का एक और पत्र आया है। उससे यह पता लगा कि आज सवेरे माँ दिल्ली रवाना होनेवाली हैं।

माँ के पेट में काफी दिनों से दर्द है। डा० गोपाल दादा ने माँ से विशेष प्रार्थना की है कि हरिद्वार से वापस लौटते समय वे एक बार दिल्ली में एक्सरे करा लें। हम सब यह जानते हैं कि माँ के लिए इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। फिर भी गोपाल दादा की प्रार्थना को पूर्ण करने के लिए माँ दिल्ली जा रही हैं।

## २१ नवम्बर, १९५६

बुनी के पत्र से ज्ञात हुआ कि हरिद्वार में हुए संयम-सप्ताह के आखिरी दिन सवेरे गोस्वामीजी के अनुरोध पर, सप्तर्षि आश्रम की भूमि पर एक संस्कृत पाठशाला की नींव माँ के हाथों से रखवायी है। इस उपलक्ष्य में वहाँ अनेक लोग उपस्थित थे।

१९ ता० को लगभग १२ बजे माँ मोटर से दिल्ली आयीं। पंजाब के सुपरिण्डेण्टेण्ट इंजीनियर श्री महेश जी अपनी गाड़ी से माँ को दिल्ली ले आये। इसके अलावा टेहरी महाराजा की एक जीप पर माँ के साथ के कुछ लोग आये थे।

**हरिद्वार से दिल्ली की ओर**

सप्तर्षि आश्रम से रवाना होने के बाद माँ को मार्ग में २–३ आश्रमों तथा मन्दिरों में ले जाया गया था। आपके साथ श्री श्री हरि बाबाजी और अवधूत जी भी थे। प्रचण्ड वर्षा के कारण सड़क टूट गयी थी। फलस्वरूप दिल्ली पहुंचने में माँ को काफी देर हो गयी।

जिन दिनों माँ हरिद्वार में थीं, उन दिनों माँ का दर्शन करने के लिए प्रसिद्ध व्यवसायी श्री मोदी जी दो दिन आये थे। उनके विशेष अनुरोध पर माँ, श्री हरि बाबाजी एवं अवधूतजी को लेकर दिल्ली जाने वक्त कुछ देर के लिए मोदीनगर स्थित मोदी निवास में ठहरी थीं।

यह स्थान बड़े सुन्दर ढंग से बसा हुआ है। सत्संग भवन भी है। यहाँ माँ और महात्माओं को श्रद्धा पूर्वक बैठाकर जलपान कराया गया था। साथ के अन्य लोगों का दूध-चाय से स्वागत किया गया था।

मोदीनगर में घण्टा भर ठहरने के बाद सभी लोग पुनः दिल्ली की ओर रवाना हुए। दिल्ली के पास ही एक स्थान पर पुल टूट जाने के कारण माँ को काफी देर तक रुकना पड़ा। बड़ी मुश्किल से ठेल ठालकर गाड़ी पार की गयी। माँ को कीचड़ पर कुछ दूर पैदल चलना पड़ा था।

श्री हरि बाबाजी दिल्ली में हमेशा अपने भक्त श्री आदित्य नारायण जी के यहाँ ठहरते हैं। माँ दिल्ली में पहुँचते ही सबसे पहले उन्हें वहाँ पहुँचाकर तब कालकाजी आश्रम गयीं। अवधूत जी माँ के साथ गये।

कल सवेरे अवधूत जी महाराज गाड़ी से वृन्दावन रवाना हो गये। आज माँ भी पहुँचने वाली हैं इसलिए वे एक दिन पहले चले गये हैं।

इस बार माँ दिल्ली में डा० सन्तोष सेन के नर्सिंग होम में एक्सरे कराने के लिए ठीक १० बजे पहुँचीं। डा० संतोष सेन की पत्नी श्रीमती सीता भी कुशल डाक्टर हैं। माँ की अच्छी तरह जांच करने के बाद उन्होंने दो बार 'एक्स रे' लिया।

डा० सेन यद्यपि माँ के प्रति अगाध श्रद्धा रखते हैं तथापि माँ को सर्व साधारण की भांति नर्सिंग होम में ले जाकर जाँच कराना या एक्स रे लेने की प्रक्रिया अनेक लोगों को पसन्द नहीं आयी। यह पहले हो कह चुकी हूँ कि माँ की ओर से इन सब बातों की कोई आवश्यकता नहीं हैं और न आज तक माँ के शरीर में कोई चिकित्सा हो सकी है, फिर भी केवल डा० गोपाल दादा की प्रार्थना पूरी करने के लिए माँ अपना एक्स रे कराने को राजी हुई थीं। यह भी माँ की एक लीला ही है। माँ कौन सी लीला के

द्वारा कब किसका क्या करती हैं, उसे हम लोगों के लिए समझना मुश्किल है।

बहरहाल पत्रों के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि एक्स रे के प्लेटों को बिना देखे श्री और श्रीमती सेन ने कोई राय जाहिर नहीं की। जाँच का फल बाद में ज्ञात होगा। माँ के चरणों में प्रार्थना करती हूँ कि एक्स रे में सब कुछ ठीक आये तभी गोपाल दादा आश्वस्त होंगे और हम निश्चित होंगे।

पिछले वर्ष इसी नर्सिंग होम में लगभग तीन सप्ताह से अधिक श्री हरि बाबाजी थे। उन दिनों माँ दिन में २-३ बार इस नर्सिंग होम में आकर उन्हें देख जाती थीं। डा० सेन ने उनका आपरेशन किया था। पुनः कुछ गड़बड़ी ज्ञात होने पर कल श्री हरि बाबाजी ने माँ की उपस्थिति में नर्सिंग होम जाकर डा० सेन से अपनी जांच करवायी।

## २३ नवम्बर, १९७६

वृन्दावन के पत्र से ज्ञात हुआ कि माँ का शरीर एक प्रकार से ठीक चल रहा है। २१ ता० को सवेरे ५॥ बजे श्री महेश जी की गाड़ी से माँ दिल्ली से वृन्दावन पहुँचो। साथ में टेहरी-राज की जीप थी। श्री हरि बाबाजी अपने भक्त की गाड़ी से आये थे।

वृन्दावन से कुछ दूर छाता नामक गाँव के एक स्कूल में श्री हरि बाबाजी के भक्तों के अनुरोध करने पर माँ तथा अन्य सभी लोग कुछ देर के लिए रुके थे। माँ तथा महात्माओं के स्वागत के लिए बड़ी अच्छी व्यवस्था हुई थी। विद्यालय के छोटे-छोटे बालकों ने मनोरम लीला पद गाकर सुनाया। माँ अपने हाथ से उन बच्चों को मिठाई बांटती रहीं।

लगभग १० बजे माँ वृन्दावन वाले आश्रम में पहुँचीं। विशाल भागवत भवन और गीता भवन का निर्माण कार्य अभी तक चल रहा है। आशा है अगले शिवरात्रि या होली तक काम पूरा हो जायगा। उस समय इन भवनों का उद्‌घाटन होगा।

आज माँ तीसरे पहर वृन्दावन से रवाना होकर कल दोपहर तक काशी पहुँचने वाली हैं।

## २४ नवम्बर, १९५६

आज १॥ बजे के लगभग माँ काशी आयीं। माँ की तबीयत ठीक नहीं है। आराम जरा भी नहीं कर पातीं।

वृन्दावन से कल ५ बजे श्री भार्गव की गाड़ी से हाथरस रवाना हुईं। शाम को ६॥ बजे पहुँचने के बाद माँ को दो घण्टे तक स्टेशन पर इन्तजार करना पड़ा। रात को ८-३५ बजे अपर इंडिया एक्सप्रेस से काशी रवाना हुईं।

भारत सरकार के रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष श्री घनानन्द पाण्डेयजी माँ के विशेष भक्त हैं। आपके प्रयत्नों से माँ के लिए एक कम्पार्टमेण्ट रिजर्व हुआ था। नादर्न रेलवे के जनरल मैनेजर श्री कौल ( काश्मीरी सज्जन ) माँ के लिए कई बार व्यवस्था स्वयं कर चुके हैं। आप माँ के पूर्व परिचितों में हैं।

शिलांग के जंगल महकमा के अधिकारी श्री मोहनलाल जी के सुपुत्र आनन्द इन दिनों आगरा में जिलाधिकारी है। इनकी माँ कमला अपने पुत्र के निकट आगरा में रहती हैं। ये दोनों हाथरस से ट्रेन द्वारा टुण्डला तक आये थे। काशी आते समय इटावा कानपुर, इलाहाबाद आदि स्टेशनों पर माँ का दर्शन करने के लिए असंख्य भक्त आये थे।

## २५ नवम्बर, १९५६

संयम-सप्ताह के अवसर पर एक अन्य घटना का पता चला। जब सत्संग भवन में ८ से ९ बजे तक समवेत रूप से ध्यान-भजन-जप होता था तब माँ नित्य देखती रहीं कि तीन गौरिया हाल के भीतर चक्कर काटा करती थीं। आश्चर्य की बात यह थी कि तबतक हाल का पूरी तरह से निर्माण नहीं हुआ था। छत भी नहीं बनी थी। ऐसी हालत में गौरियों का रहना असंभव था। इन तीनों गौरियों के साथ दो कबूतर भी ठीक मौन के समय आया करते थे। उन्हें देखकर माँ को ख्याल हुआ—"तुम लोग अगर विशेष कोई हो तो इस शरीर के निकट आओ।"

**संयम-सप्ताह की एक और घटना**

आश्चर्य की बात यह हुई कि ज्योंही माँ को यह ख्याल हुआ त्योंही तीनों गौरिया उड़ती हुई माँ के बिलकुल निकट आयीं। इस तरह अनेक घटनाएँ माँ के निकट हो चुकी हैं। इस तरह कितने रूपों में कितने तरह से न जाने कितने माँ के निकट आते-जाते रहते हैं, इसका निर्णय कौन कर सकता है?

सवेरे अन्नपूर्णा के नाट मन्दिर में सत्संग हो रहा है। एक ने प्रश्न किया—"किसी स्थान तक पहुँचने के लिए न जाने कितने तरह के यान-वाहन हैं। भगवान् के नाम भी इसी प्रकार कितने हैं, पर कौन सा नाम लेने पर जल्दी पहुँचा जा सकता है?"

माँ—"भगवान् के सभी नामों में शक्ति है : तुम कोई नाम क्यों न लो, उसी नाम के द्वारा तुम गन्तव्य स्थान तक पहुँच सकते हो। वेग के बारे में, गति के बारे में जो कुछ कहा—वह साधक

की साधना की इच्छा की तीव्रता पर निर्भर है। अगर साधना तीव्र हुई तो जल्दी पहुँचने में आता है और गति अगर मन्द हुई तो पहुँचने में देर लग सकती है।

**माँ की विंध्याचल यात्रा**

दोपहर को दो बजे माँ विन्ध्याचल की ओर रवाना हुईं। मैं भी माँ के साथ चल पड़ी। बहुत दिनों से यह कहा जा रहा है कि कुछ दिनों तक मेरे लिए विंध्याचल यात्रा लाभदायक हो सकती है, किन्तु आज तक ऐसा हो नहीं सका। फलस्वरूप लगे हाथ यह कार्य भी हो रहा है।

हमारे साथ दीदी माँ, मुक्ति महाराज आदि २०-२० व्यक्ति ५ गाड़ी भर कर चल पड़े। हम सब काफी लोग साथ चल रहे हैं, फिर भी विन्ध्याचल आने के बाद माँ को यहाँ कुछ विश्राम करने का मौका मिल जाता है। यहाँ माँ अपने ख्याल के अनुसार उठती-बैठती हैं। जब ख्याल होता है तब अपनी तबीयत से टहलती हैं और कभी-कभी देर तक लेटी रहती हैं। विन्ध्याचल आश्रम का प्राकृतिक परिवेश मनोरम है। निर्जन, नीरवता के बीच अगणित वृक्ष समूहों से घिरा हुआ यह आश्रम मानो शान्ति की गोद में सोया हुआ है। आश्रम से दूर मन्थर गति से गंगा की प्रवाहमान धारा दिखाई देती है। गंगा का यह रूप गैरिक है। दोनों किनारे दिगन्त विस्तृत निर्जन प्रान्तर में जो मौन गंभीरता है, उसकी प्रशान्ति हृदय के आवेग में प्रशान्ति प्रदान करती है, अनाविल और उदार। इन्हीं सब बातों के कारण हम सब अपने साथ काफी लोगों को लेकर आनन्द चित्त से विन्ध्याचल की ओर रवाना हुए।

## २८ नवम्बर, १९५६

**विन्ध्याचल में माँ**

माँ के साथ हम लोग विन्ध्याचल आये। यहाँ का आश्रम दो मंजिल का है। मैं माँ के नीचे वाले कमरे में ठहरी हूँ। दीदी माँ भी मेरे कमरे में हैं।

## २९ नवम्बर, १९५६

इधर कुछ दिनों से माँ के कान में दर्द पैदा हो गया है। इस बार जब माँ हरिद्वार से दिल्ली गयीं तब मार्ग में ठण्ढक लग जाने के कारण यह शिकायत पैदा हुई। तभी से माँ के कानों में एक प्रकार की सीटी बजती रहती है। कभी-कभी कान बन्द हो जाते हैं।

काशी के प्रसिद्ध डाक्टर नाथ यह समाचार सुनकर आज माँ को यहाँ देखने आये हैं। वे कानों की जाँच करने के बाद बोले—"भीतर काफी मैल जम गया है, इसे साफ करना जरूरी है।"

माँ को कान आदि साफ कराने का ख्याल कभी नहीं हुआ। फिर माँ का सब काम विपरीत होता है। पता नहीं, क्या करने से क्या हो जाय, इस विचार से हम लोग साफ कराने के लिए राजी नहीं हुए। डा० नाथ निराश होकर वापस चले गये। माँ के शरीर में किसी दवा का प्रयोग भी नहीं किया जा सकता।

कान जांच कराने की वजह से दर्द आज कुछ कम बढ़ गया। गरम तेल वगैरह देने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ।

## ३० नवम्बर, १९५६

रात को माँ के कान का दर्द अधिक बढ़ गया। अचानक रात के अन्तिम भाग में माँ को ख्याल हुआ कि काशी जाकर डा० नाथ से कान साफ करवाया जाय। आज ही डा० नाथ बनारस से बाहर कहीं चले जायँगे।

मेरी छोटी बहन जिसे सभी बेला के नाम से पुकारते हैं, माँ के बगलवाले कमरे में सो रही थी। माँ ने उसे बुलाकर काशी जाने की बात परमानन्द स्वामीजी से कहने के लिए कहा। संवाद पाते ही स्वामीजी ने गाड़ी तैयार करवायी।

**माँ में विचित्र भावान्तर**

भोर के वक्त ५ बजे स्वामीजी, बेलू और बुनी को अपने साथ लेकर माँ काशी रवाना हो गयीं। यह माँ एक नया भाव था। अचानक इस रूप में डा० नाथ को दिखाने के लिए माँ को जब काशी जाने का ख्याल हुआ तब हम सब चकित रह गये। इधर माँ अपने ख्याल के मुताबिक जा रही थीं। इसके अन्तराल में कौन सा कारण है, कौन बता सकता है। यही वजह है कि माँ के ख्याल के विरुद्ध कुछ कहने का साहस हमें नहीं हुआ वर्ना इस जाड़े में इतनी दूर मोटर से जाने का कोई तुक नहीं था। डाक्टर को खबर देने पर वे तुरत चले आते।

काशी पहुँचते ही माँ आश्रम में न जाकर सीधे डा० नाथ के घर पहुँचीं। अप्रत्याशित रूप में माँ आयी हैं, फलस्वरूप डाक्टर बाबू यह समाचार सुनते ही दौड़े हुए आये और कहा कि मैं आश्रम में आकर जाँच करूँगा। तब माँ को आश्रम में ले आया गया। इधर माँ को अचानक आश्रम में आते देख वहाँ के लोग चकित रह

गये। लोगों ने लक्ष्य किया कि माँ के भावों में कुछ अस्वाभाविक ढंग से परिवर्त्तन हुआ है।

आश्रम में आकर माँ सीधे ऊपर चली गयीं। ऊपर जाकर अपने हाथ से भीतर का दरवाजा बन्द करके माँ बरामदे में खड़ी रह गयीं। माँ को प्रणाम करने का भी मौका किसी को नहीं मिला। केवल माँ का आदेश पाकर उनके निकट परमानन्द स्वामीजी तथा वेलू गयी। बुनी भीतर चली गयी थी, किन्तु माँ उससे बिना एक शब्द कहे उसे अपने हाथ से बाहर निकाल दिया। बात कुछ समझ में नहीं आ रही थी। माँ का भाव अत्यन्त गम्भीर रहा। ऐसा लगता था जैसे माँ कुछ समय तक अपने भाव में रहना चाहती हैं। फलस्वरूप सभी आश्रमवासी तथा अन्य कुछ भक्तों ने, जो सहसा चले आये थे, दूर से ही माँ को प्रणाम किया। माँ को परेशान करने का साहस किसी में नहीं हुआ।

कुछ देर बाद डा० नाथ अपने सामानों के साथ आये। माँ के कमरे में आकर उनके कानों को साफ कर दिया, पर इससे कोई लाभ नहीं हुआ।

माँ सवेरे ८ बजे के लगभग काशी पहुँची थीं। लोगों का ख्याल था कि माँ भोग के बाद तीसरे पहर पुनः विंध्याचल रवाना हो जायँगी, पर माँ १०॥ बजे के लगभग आश्रम से निकल पड़ीं। कोई उपाय नहीं था। माँ को कुछ खिलाया नहीं जा सका। किसी को यह विश्वास नहीं था कि माँ इतनी जल्दी चल देंगी। माँ के तत्कालीन भाव से ऐसा लगा जैसे किसी जरूरी काम से बाहर जा रही हैं।

बाद में सुना गया कि माँ ने काशी जाकर परमानन्द स्वामीजी

से कहा था—"परमानन्द, २-१ दिन यहाँ ठहरा जाय तो कैसा रहे ?" इस प्रश्न का उत्तर स्वामीजी ने नहीं दिया था, इसीलिए माँ अपने ख्याल के आधार पर जल्दी से चल पड़ीं।

इस बार कन्यापीठ से विमला भी माँ के साथ चल दी। दासु गाड़ी चला रहा था। बुनी और विमला आगे बैठी थीं। पीछे एक छोटे टूल पर परमानन्द स्वामीजी बैठे और बीच में माँ। दूसरी ओर नीचे बेलू बैठी थी। माँ की यह गाड़ी इतनी छोटी है कि चालक के पास एक से अधिक व्यक्ति को माँ बैठने नहीं देतीं, किन्तु आज घटना चक्र से माँ की उपस्थिति में दो लड़कियाँ दासु के बगल में बैठीं। माँ ने कोई आपत्ति नहीं की, नीरव रहीं। गाड़ी विंध्याचल की ओर चल पड़ी।

काशी से विंध्याचल जाने के दो मार्ग है। पहला रामनगर-चुनार होते हुए और दूसरा माधोसिंह, चील्ह होकर गंगा पार करते हुए जाना पड़ता है। यह मार्ग शार्टकट है, पर बरसात के दिनों बन्द हो जाता है। अभी तक यह मार्ग ठीक नहीं हो सका है, इसलिए आते समय माँ चुनार के रास्ते काशी गयीं और आते समय उधर से ही आयीं।

माँ की गाड़ी जब चुनार से दो मील दूर रही तभी अचानक अद्भुत ढंग से एक आकस्मिक दुर्घटना हो गयी। घटना अत्यन्त विस्मय जनक रही, किन्तु फल से बराबर

एक आकस्मिक दुर्घटना होने वाली घटनाओं का अवलोकन किया जाय तो पता चलेगा कि सभी घटनाएं एक दूसरे के सूत्र से बंधी हुई हैं। ऐसा लगता है, मानो ये घटनाएँ एक के बाद एक संघटित होकर तैयार थीं। हमलोग सीमाबद्ध जीव हैं। हमारी दृष्टि-शक्ति भी गण्डिबद्ध है इसलिए अगले क्षण

कौन सी घटना होनेवाली है, वह हमारी दृष्टि के बाहर रहती है। सिर्फ दृष्टि के बाहर नहीं, हम उसकी कल्पना तक नहीं कर पाते। इधर माँ की विश्वतः दृष्टि है, इनके निकट भूत, भविष्य, वर्तमान कुछ भी अज्ञात नहीं है। काल या दूरी का आवरण इनके सामने नहीं है, फलस्वरूप उनके व्यवहार से अगर भविष्य की घटनाओं की छाया प्रतिभात हो उठे तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है?

माँ की गाड़ी साधारण रफ्तार से चल रही थी। रास्ते में सरकार के निर्माण विभाग की ओर से लोग काम कर रहे थे। सड़क के दोनों ओर मरम्मत का काम जारी है। गाड़ी ठीक बीच से गुजर रही थी। अचानक एक वयस्क व्यक्ति एक लोहे की ठेला-गाड़ी ढकेलते हुए मार्ग को पार करने लगा। उसके साथ एक कम उम्र का बालक था।

उन्हें देखने के बाद दासु कई बार दूर से हार्न बजाने के बाद उन्हें बायीं ओर रखते हुए दाहिनी ओर से निकल जाना चाहा। अचानक न जाने क्यों वयस्क व्यक्ति बुद्धिहीन जैसा होकर सीधे मोटर के ऊपर आ गिरा। वह व्यक्ति विपरीत दिशा से इस प्रकार दौड़कर आ सकता है, यह कल्पना के परे की बात थी। पर कहा गया है कि विधि का विधान! साथ होसाथ दासु ने तेजी से ब्रेक दबाकर गाड़ी रोकने का प्रयत्न किया। मार्ग के दाहिनी ओर कई खजूर के वृक्ष थे और आगे एक बड़ी खाई। गाड़ी सहसा ब्रेक के दबाव के कारण खाई के किनारे करवट लेकर खड़ी हो गयी। गाड़ी जहाँ आकर खड़ी हुई, वहाँ से १-१॥ हाथ को दूरी पर एक खजूर का पेड़ था। अगर गाड़ी जरा और आगे बढ़ जाती तो खजूर के पेड़ से जरूर टकरा जाती और तब क्या परिणाम होता, उसकी कल्पना ही की जा सकती है। दूसरी ओर गाड़ी बालिश्त भर दाहिनी ओर चली जाती तो सीधे खाई में गिरकर चूर-चूर हो जाती।

यह सब सोचने पर चकित रह जाना पड़ता है कि उक्त संकीर्ण स्थान में गाड़ी कैसे रुक गयी ! इस बात का उत्तर मानवीय बुद्धि से देना सम्भव नहीं है। यह जितना विस्मयकर है, उतना ही साधारण बुद्धि के अगम्य है।

तिसपर माँ स्वयं गाड़ी के भीतर बैठी हैं। माँ को लिये-दिये अगर गाड़ी पेड़ से टकरा जाती या खाई में गिरकर उलट-पुलट जाती तो क्या होता, इसकी कल्पना से ही शरीर आतङ्कित हो उठता है।

इधर उक्त हतभाग्य (?) व्यक्ति जब गाड़ी के ऊपर चढ़ आया तब माँ जोर से चीख पड़ीं—"आदमी मर गया, मर गया।" उस वक्त गाड़ी में बैठे लोगों की मानसिक स्थिति कैसी हो गयी, इसका अनुमान किया जा सकता है।

दासु ऐसे माहौल में बिना कुछ घबड़ाये गाड़ी से नीचे उतर पड़ा। उसके साथ बेलू और माँ भी बाहर निकली। गाड़ी करवट लिये खड़ी रही—लगता था जैसे अब उलट जायगी।

इधर गाड़ी के भीतर एक और दुर्घटना हो गयी। जब आफत आती है तब चारों ओर से आती है। गाड़ी के भीतर विमला के हाथ में माँ के लिए गरम पानी का फ्लास्क था। जल्दबाजी में उतरते समय उसका ढक्कन खुल गया और पानी पैरों पर गिर पड़ा। बुनी चीख उठी; उसके हाथ-पैर में कई जगह जल गये हैं।

बेलू और दासु ने दौड़कर गाड़ी की दूसरी ओर जाकर देखा कि उस व्यक्ति का सिर गाड़ी के नीचे है बाकी शरीर सड़क पर लम्बे रूप में पड़ा है। कैसे वह गाड़ी के नीचे आ गया, यह बात हमारी बुद्धि के अगोचर रह गयी।

बहरहाल उसे उठाकर एक किनारे चित्त लेटा दिया गया। देखते ही देखते कुलियों की भीड़ जुट गयी। साथ का बालक भय और विस्मय से विह्वल होकर रोने लगा।

बेलू उक्त व्यक्ति के पैरों को फैलाकर उसके शरीर पर हाथ फेरने लगी। बदन पर चोट के एक भी निशान नहीं थे। सिर्फ सिर में एक स्थान से खून निकल रहा था। दासु दौड़कर दूसरी ओर से पानी ले आया। माँ अपने चद्दर को भिगोकर उसके मुँह पर पानी छोड़ने लगीं। एक अव्यक्त करुणा का भाव लेकर उसके शरीर पर हाथ फेरने लगीं।

अगर उस व्यक्ति को तुरत अस्पताल में भेजा जाता तो घटना का कुछ और ही रूप होता, किन्तु तुरत हुई दुर्घटना के कारण लोग इस कार्य में बाधा देने लगे। परमानन्द स्वामीजी सभी को स्थिर भाव से समझाने लगे, पर कौन उनकी बात सुनता है, किसी ने उनकी बातों की परवाह नहीं की। इधर माँ की गाड़ी में उसे अस्पताल में ले जाया जा सके, इसका कोई उपाय नहीं था, क्योंकि गाड़ी करवट ले चुकी थी। उसे ठीक करके सड़क तक ले आना कठिन कार्य था। इसके अलावा अगर गाड़ी को सड़क पर ले आया जाता तो उपस्थित जनता और पुलिस उसे छोड़ न देती।

फलस्वरूप आहत व्यक्ति उसी हालत में सड़क पर पड़ा रहा और करुणामयी माँ उसके बदन पर हाथ फेरती रहीं। बेलू 'राम-राम' कहने लगी। माँ को ख्याल हो रहा था कि श्री रामचन्द्रजी ने जैसे जटायु को जलदान देकर अपने स्वरूप का परिचय देते हुए उसका उद्धार किया था, यह भी जैसे उसी नाम की घटना है।

लगभग १५-२० मिनट यों ही गुजर गये। माँ उक्त व्यक्ति के

ब्रह्मरन्ध्र से सारे शरीर पर हाथ ज्योंही फेर दीं त्योंही उसकी प्राणवायु निकल गयी। माँ के हाथ का अमृत स्पर्श पाकर वह इस जगत् से दूर किस अमृत लोक का यात्री बना, इसे केवल माँ ही बता सकती हैं। उसके निमीलित नयनों पर शान्ति छाया घनीभूत हो उठी।

अब यहाँ से चल देने के लिए माँ कुछ दूर जाकर टहलने लगीं। साथ के लोग सोचने लगे कि अब क्या करना उचित है।

घटनास्थल से थाना २॥ मील दूर है। वहाँ समाचार देने के लिए आदमी भेजा गया है, फिर भी पुलिस कब तक आयेगी, कौन जाने। दुर्घटना १२॥ बजे के लगभग हुई थी।

साथ में तीन महिलाएँ हैं। पुरुष एकमात्र स्वामी परमानन्दजी हैं। माँ देर तक चहलकदमी करने के बाद एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गयीं। इस प्रखर धूप में और सूनसान में माँ को कब तक बैठाया जायगा, गाड़ी तो अचल स्थिति में है। लोग किसी सूरत से माँ को विन्ध्याचल भेजने के लिए परेशान थे।

काशी में फोन करके एक गाड़ी बिना मँगाये विन्ध्याचल तक जाना एक प्रकार से असम्भव था। यात्रीवाही बसें जरूर आ-जा रही हैं, पर उसमें जाने की कोई व्यवस्था नहीं हो पा रही है। मृत व्यक्ति के संगी-साथी माँ को पहचानते नहीं, इसलिए वे यह सोच रहे थे कि इन्हें छोड़ देने पर ये लोग भाग जायँगे। फलस्वरूप जब कभी माँ या स्वामीजी गुजरने वाली किसी बस या ट्रक को रोकते तो बाकी लोग बिगड़ उठते थे। दुर्घटनास्थल लोकालय से काफी दूर था। स्वामीजी चुनार या मीरज़ापुर जाकर कोई इन्तजाम कर सकें, यह चारा भी नहीं था। वह इसलिए कि माँ और महिलाओं को इस प्रकार छोड़ जाना वे उचित नहीं समझते थे। इस प्रकार

दो घण्टे गुजर गये। अचानक एक मिलेटरी ट्रक आती दिखाई दी। माँ ने स्वयं हाथ दिखाकर उसे रोकने का संकेत किया। माँ के संकेत पर गाड़ी रुक गयी। संयोग की बात यह हुई कि ट्रक में कुछ ऐसे लोग थे जो माँ का दर्शन कर चुके थे। माँ को इस हालत में बैठा देखकर वे लोग दौड़े हुए माँ के पास आये और सारी घटना ध्यानपूर्वक सुनते रहे।

गाड़ी मिलेटरीवालों की थी; इसलिए अब कोई इन लोगों को रोकने का साहस नहीं कर सका। माँ ने इन लोगों से कहा कि कहीं से काशी आश्रम में फोन कर दें। बाद में पता चला कि इन लोगों ने माँ की बातों पर अमल किया था।

बाद में एक अन्य गाड़ी के ड्राइवर से यही अनुरोध किया था, उसने भी फोन किया था।

इधर पुलिस के आने में ४ बज गये। वे लोग आकर मृत व्यक्ति के साथियों से बयान लेने लगे। बाद में लोगों की सहायता से माँ की गाड़ी को वे लोग सड़क तक ढकेल ले आये।

स्वामीजी ने पुलिस अधिकारियों से कहा कि इस गाड़ी से माँ को विन्ध्याचल तक पहुँचाने का आदेश दिया जाय। किन्तु उन लोगों ने कहा कि अदालत के हुक्म के बिना गाड़ी या ड्राइवर किसी को छोड़ा नहीं जा सकता।

फलस्वरूप माँ की गाड़ी से माँ को चुनार तक ले आया गया। दासु और बाकी लोग पीछे एक अन्य गाड़ी से पुलिस के साथ आये। माँ की गाड़ी पुलिस चला रही थी। गाड़ी चुनार के थाने में ले जायँगे। दासु को उन लोगों ने बाँध दिया था।

गाड़ी जब चुनार पहुँची तब दरोगा साहब ने इज्जत के साथ

माँ तथा अन्य लोगों को एक साधारण यात्रीवाही बस में बैठाया। बस मीरजापुर जा रही थी। मीरजापुर से ये लोग फिर विन्ध्याचल जायँगे। इसके अलावा और कोई उपाय भी नहीं था। काशी आश्रम में संवाद पहुँचा या नहीं अथवा वहाँ से कब गाड़ी आयेगी, इसका कोई ठीक नहीं था। इस बीच माँ को लगभग ५-५।। घण्टा सड़क पर खड़े रहकर गुजारना पड़ा था। फलस्वरूप लोग बिना देर किये तुरत मीरजापुर वाली बस से रवाना हो गये।

चुनार से मीरजापुर की दूरी लगभग २० मील है। बस लगभग १।। घण्टे में पहुँचती है। वहाँ से विन्ध्याचल पहुँचने में १।।-२ घण्टे लगते हैं। माँ रात के अन्तिम पहर में विन्ध्याचल से चली थीं, इधर मार्ग में इतनी दुर्घटनाएँ हो गयीं। माँ का यह दुर्भोग— सभी के मन की क्या स्थिति रही, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

माँ को गाड़ी और दासु थाने में रह गये। इस तरह की दुर्घटनाओं में कचहरी-पुलिस का बड़ा चक्कर होता है। दासु की किस्मत में क्या है, इसे केवल एकमात्र माँ जानती हैं।

माँ जिस बस से मीरजापुर जा रही थीं, वह जब चुनार से १०-१२ मील आगे बढ़ गयी तब पीछे से डा० गोपाल दादा और पटल एक टैक्सी लेकर काशी से रवाना होकर माँ के बस तक पहुँच गये। सुना गया कि काशी आश्रम में ज्योंही यह समाचार पहुँचा त्योंही मामू ने गोपाल दादा और पटल को तुरत फोन किया कि अभी गाड़ी लेकर चुनार रवाना हो जाइये। गोपाल दादा की निजी गाड़ी उस समय घर पर नहीं थी, इसलिए ये लोग टैक्सी लेकर तुरत चुनार की ओर चल दिये।

काशी में पटल और पातु दोनों को आने को कहा गया था,

किन्तु पानु घटनाचक्र से उसी दिन शाम को गाड़ी से विन्ध्याचल माँ से मिलने आ रहा था। ट्रेन काशी से तीसरे पहर ३।। बजे छूटती है। माखन को जब इस दुर्घटना का समाचार मिला, उस समय ३ बज चुके थे माखन ने तड़ित वुद्धि का प्रयोग करते हुए एक आदमी को स्टेशन दौड़ाया और कहा कि गाड़ी छूटने के पहले अगर वहाँ पहुँच जाना तो पानु को यह समाचार दे देना ताकि वह जल्द से जल्द चुनार पहुंच जाय।

गाड़ी छूटने का वक्त हो गया था। ठीक इसी समय आश्रम का आदमी स्टेशन पर आकर पानु को ढूँढ़ निकाला। उसकी जबानी सारा समाचार पाकर पानु तुरत डाक्टर बाबू के घर गया। तबतक डाक्टर बाबू की गाड़ी वापस आ गयी थी। पानु और डाक्टर बाबू का ज्येष्ठ पुत्र रतन तुरत चुनार की ओर रवाना हो गये।

इस घटना का वर्णन विस्तार से इसलिए लिख रही हूँ कि सभी माँ की लीला रही। अगर डाक्टर बाबू की गाड़ी ठीक समय से न पहुँचती तो बाद की घटनाओं का प्रवाह दूसरी ओर प्रवाहित होता। ऐसा क्यों होता, इसका स्पष्टीकरण आगे की घटनाओं से समझ सकेंगे।

डाक्टर बाबू को गाड़ी माँ के बस के पास रुकी और माँ तथा साथ के अन्य लोगों को लेकर विंध्याचल की ओर रवाना हुई। माँ के साथ डाक्टर बाबू, बुनी, विमला और बेलू गये। परमानन्द स्वामीजी और पटल बस से मीरजापुर रवाना हुए। ये लोग बस से इसलिए गये ताकि मीरजापुर के कलक्टर की सहायता से गाड़ी और दासु की जमानत देकर उन्हें पुलिस हिरासत से छुड़ा लिया जाय।

शाम हो गयी है, अभी तक माँ काशी से वापस नहीं आयीं। फलस्वरूप मेरे मन में एक अनजाना आशंका उत्पन्न हो रही थी। इधर जो इतनी भयंकर घटना हो गयी है, इसे मैं स्वप्न में भी नहीं सोच सकती थी।

काफी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा करने के बाद माँ ६।। बजे के लगभग विंध्याचल आश्रम में पहुँचीं। जब सभी लोग आश्रम के भीतर आये तो मैंने देखा कि माँ के अलावा बाकी लोगों की आकृति जरा अस्वाभाविक ढंग की है। सभी जैसे गंभीर और सन्न भाव लिये हुए हैं। बाद में सुना कि माँ ने महिलाओं से कहा था कि अभी फिलहाल मुझे कुछ न बताया जाय। मैं कहीं अपनी अस्वस्थ दशा में इस दुर्घटना का विवरण सुनकर उत्तेजित न हो जाऊँ। इसलिए कृपामयी माँ पहले से सतर्कता बरत गयीं। गोकि इस तरह की घटनाओं की आपस में चर्चा न करना श्रेयस्कर होता है।

कुछ देर बाद माँ स्वयं ही सारी घटनाओं का वर्णन संक्षेप में मेरे सामने करती रहीं। इस सम्बन्ध में अन्य लोग कुछ नहीं जान सके। माँ की गाड़ी कैसे एक शोचनीय दुर्घटना से मुक्ति पा सकी, सारी बातें सुनने के बाद मैं तो एकबारगी सिहरकर कांप उठी। माँ बराबर मोटर द्वारा लम्बी यात्राएँ करती हैं। यहाँ तक कि एक बार दिल्ली से काशी तक की यात्रा कर चुकी हैं। दक्षिण भारत का सारा इलाका मोटर से सफर करती रहीं, पर आज तक माँ की गाड़ी से किसी को धक्का तक नहीं लगा। यहाँ तक कि एक पक्षी तक माँ की गाड़ीं से आहत नहीं हुआ है और इधर काशी से विंध्याचल जैसे सामान्य दूरी तय करने में ऐसी दुर्घटना हो गयी।

अब दासु की बात लीजिये। इस दुर्घटना के लिए दासु को दोष नहीं दिया जा सकता। अगर विचार किया जाय तो वास्तव

में उसकी कोई गलती नहीं। वह व्यक्ति अचानक मोटर का हार्न सुनता है और मोटर को पास आते देखता है, फिर भी विपरीत दिशा में दौड़ जाता है, यह कल्पना के परे की बात है। फिर कैसे वह व्यक्ति मोटर के बगल से गिरकर नीचे गया, यह रहस्य भी पुलिस तक को चकित कर देने वाला रहा। दासू पिछले कई वर्षों से माँ की गाड़ी चला रहा है। अब तक कोई दुर्घटना उससे नहीं हुई है। योगी भाई उसे अपने यहाँ रखकर ड्राइवरी की शिक्षा दिलवाते रहे।

और यह गाड़ी ? टेहरी की राजमाता ने माँ के लिए इसे खरीदवाया है। जब से यह गाड़ी खरीदी गयी है तब से माँ काशी से विंध्याचल, इलाहाबाद आदि स्थानों में आती-जाती रहती हैं। अचानक इस दुर्घटना का समाचार पाकर वे लोग क्या सोचेंगे, यह सोचना भी हम नहीं चाहते।

रात को ९॥ बजे के लगभग स्वामीजी, पटल और पानु मीरजापुर से वापस आये। सुना कि पानु ने डाक्टर बाबू को गाड़ी से आते समय रास्ते में बस पर से स्वामीजी तथा पटल को मीरजापुर से कुछ दूर पहले उतार लिया था। इसके बाद अपनी गाड़ी से लेकर ये लोग मीरजापुर में जमानत वगैरह के कार्य के लिए कोशिश करते रहे। यहाँ कुछ देर के लिए आकर पुनः ये लोग चुनार की ओर चले गये। डाक्टर बाबू टैक्सी से बनारस चले गये। स्वामीजी आदि रात को कब तक लौटेंगे ? दासु की क्या जमानत हो सकेगी ? इन्हीं सब चिन्ताओं से मैं बुरी तरह घिर गयी।

## १ दिसम्बर, १९५६

कल रात को माँ में सोने का भाव नहीं था। सोती हुई हालत में माँ घुमा फिराकर उसी बात को दुहरा रही थीं।

उस वक्त रात को १॥ बज चुके थे। स्वामीजी और पानु दासु तथा माँ की गाड़ी लेकर हाजिर हुए। माँ स्वयं इनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। माँ की एकान्त कृपा के कारण ही ये लोग दासु को वापस ला सके हैं, वर्ना इतनी रात गये इतना बड़ा काम होना संभव नहीं था। संभव तो दूर की बात, यह कल्पना के बाहर की बात है।

इस लोगों की जबानी पता चला कि सारी घटनाएँ आशातीत रूप से घटती गयीं जिसे सुनने पर चकित रह जाना पड़ेगा। साधारण व्यक्ति यही समझेंगे कि यह तो होनी रही, इसलिए हो गयी। इसमें आश्चर्य की क्या बात है। किन्तु माँ की लीला का इस तरह के प्रमाण पाने के बाद हम कैसे आँख बन्दकर यह कह दें कि "यह तो होनी रही", यह ऐसी बात नहीं थी। क्योंकि सारी घटनाएँ स्वयं ही स्वप्रकाश हैं जिसे कृपामयी की कृपा के अलावा अन्य किसी नाम से अभिहित नहीं किया जा सकता।

मीरजापुर आते ही पटल और पानु सबसे पहले मैजिस्ट्रेट के निवास स्थान पर गये। जिले के कलक्टर हमारे लिए अपरिचित थे। आप एक मुसलमान सज्जन होने पर भी हमें विश्वास था कि आपके अनुग्रह से शायद हमारा काम हो जाय।

कलक्टर साहब के बंगले में प्रवेश करते ही देखने में आया कि सामने बनारस के कमिश्नर श्री शिवेश्वर कर साहब बैठे हैं। आप महाराष्ट्र के निवासी हैं, इन दिनों बनारस कमिश्नरी के कमिश्नर हैं। आप माँ के यहाँ कई बार आ चुके हैं और माँ के प्रति आपकी यथेष्ट श्रद्धा है। माँ की गाड़ी के साथ हुई दुर्घटना के बारे में सारी जानकारी प्राप्त करने के बाद उन्होंने मीरजापुर के मैजिस्ट्रेट से हर तरह से सहायता देने का अनुरोध किया। उस

वक्त रात हो गयी थी और कचहरी बन्द हो चुकी थी। फिर भी उन्होंने कमिश्नर साहब के अनुरोध को अस्वीकार नहीं किया। यह बात हर कोई जानता है कि इस स्थिति में किसी प्रकार की सहायता देना सरकारी अधिकारी के लिए भी कितना कठिन कार्य होता है। अब इस समस्या पर गौर करने पर बहुत सी बात स्पष्ट हो जायँगी।

ठीक इसी मौके पर बनारस के कमिश्नर वहाँ मौजूद थे। अगर पानु और पटल आधा घण्टा बाद जाते तो उनके साथ मुलाकात न होती। दूसरी ओर स्टेशन पर समाचार पाते ही पानु अगर कार से न आता तो पटल और स्वामीजी जबतक मीरजापुर आते तबतक कमिश्नर साहब शायद वहाँ से चल देते। इसलिए इस घटना को कृपामयी की लीला के अलावा और क्या कहा जा सकता है?

बहरहाल कमिश्नर साहब से अनुरुद्ध होने पर तुरत मैजिस्ट्रेट साहब ने इन लोगों को चुनार के सहायक मैजिस्ट्रेट के पास भेज दिया। इतनी रात को एक बंगाली वकील के माध्यम से कोर्ट के कागजातों का संग्रह करने के बाद जमानत की रस्म पूरी की गयी। यह भी विचारणीय बात है। साधारण तौर पर इतनी रात गये और इतने कम समय के भीतर इस तरह का कार्य हो जाना, एक प्रकार से अकल्पनीय घटना है। फिर भी माँ की लीला से सहज ही हो गया। तिसपर चुनार के मैजिस्ट्रेट तुरत कहीं दौरे पर जा रहे थे और पूरी तैयारी कर चुके थे, ठीक ऐसे मौके पर ये लोग वहाँ हाजिर हुए। माँ की कृपा से असंभव भी संभव हो गया। उनके हुक्म से दासु को जमानत पर छोड़ दिया गया। उक्त आदेश को ले जाकर चुनार से दासु के छुड़ाकर ले आया गया। बेचारा दुःख, आतंक और अपमान के कारण मृतवत् सा हो गया था। केवल

माँ की कृपा से कुछ घण्टे के भीतर उसे मुक्ति मिल गयी और वह भी इतनी रात गये। वर्ना किस्मत में क्या लिखा था, यह सब सोचने पर सिहर उठती हूँ।

अब गाड़ी की बात लीजिये। गाड़ी थाना के सामने खड़ी थी। कानून के मुताबिक जब तक गाड़ी की जाँच सरकारी अधिकारी न कर लें और अदालत हुक्म न दे तब तक गाड़ी थाना के कब्जे में रहती है। पर माँ की गाड़ी इस तरह लावारिस रूप में थाना के पास छोड़ देने के लिए पानु का मन नहीं हो रहा था। काफी बात-चीत हो जाने के बाद दरोगा साहब ने गाड़ी ले जाने का आदेश दे दिया, पर शर्त्त यह लगा दी कि कल सुबह ६ बजे गाड़ी पुनः थाना के सामने हाजिर रखा जाय। इस तरह सब काम निपटाते हुए ये लोग आधी रात को आश्रम वापस आये।

दूसरे दिन भोर के वक्त ५ बजे दासु को लेकर पानु माँ की गाड़ी से चुनार रवाना हो गया। चाहे जैसे भी हो आज गाड़ी को थाने की झंझट से छुड़ा लाना होगा ओर दासु का कोई प्रबन्ध करना ही होगा।

दोपहर से कुछ पहले जितेन दादा अचानक आ गये। वे काशी आये थे, वहाँ यह सब समाचार सुनकर तुरत यहाँ चले आये। चुनार के थाने पर जाकर वे पानु और दासु से भेंट कर आये हैं। आप एक अभिज्ञ एडवोकेट हैं, इसलिए वापस आते समय इस मामले में कुछ परामर्श दे आये हैं।

सुना कि कल की दुर्घटना के बाद से माँ की गाड़ी को ब्रेक खराब हो गयी है। गाड़ी को थाने से छुड़ाने के बाद जब तक उसको ठीक से मरम्मत न होगी तबतक चलाने योग्य नहीं होगी।

कानून निगाह में ब्रेक का खराब प्रमाणित होना एक प्रकार से

जुर्म है। बशर्त्ते दुर्घटना के समय अत्यधिक जोर से दबाने के कारण फट न गया हो; पर अन्त तक क्या-क्या मुसीबतें आयँगी, कौन जाने।

सुना कि चुनार से वापस आते समय माँ की गाड़ी एक और दुर्घटना का शिकार बनने से अलौकिक रूप में बच गयी।

**दुर्घटना पर दुर्घटना और अलौकिक रूप में रक्षा**

विन्ध्याचल के पास एक रेलवे क्रासिंग का फाटक बन्द था। दूर गाड़ी आ रही थी। यह दृश्य देखकर दासु ने ब्रेक जोर से दबाया; पर वह तो खराब हो चुकी थी। इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया था। गाड़ी फाटक को धक्के देकर रेलवे लाइन पर चढ़ गयी। यह तो खुश-किस्मती की बात रही कि गाड़ी अभी दूर थी यह दृश्य देखकर गेट रक्षक ने तुरत दूसरी ओर का फाटक खोल दिया। फलस्वरूप गाड़ी दूसरी ओर ले जाना सम्भव हुआ। अगर १।-२ मिनट की और देर हो जाती तो क्या होता, इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है।

गाड़ी में पानु और स्वामीजी बैठे थे। इस प्रकार कुछ ही घण्टे के भीतर दो-दो दुर्घटनाओं में आरोही और गाड़ी की रक्षा माँ की कृपा से हो गयी। जिसकी रक्षा भगवान् करता है उसका बाल कौन बाँका कर सकता है, कहावत इन घटनाओं पर पूरी तरह लागू होती है।

लेवेल क्रासिंग पार करके जब लोग इस पार आये तो देखा— लोहे के फाटक से कसकर भिड़ जाने के बाद भी माँ की गाड़ी को कोई नुकसान नहीं पहुँचा है। क्या यह सब मिराकेल (आश्चर्य) नहीं है?

इस घटना का वर्णन रात को स्वामीजी ने नहीं किया। आज वे सुनाते रहे।

आज तीसरे पहर चुनार के उक्त दरोगा को लेकर पानु आश्रम में आया। देखा—वे माँ की बातें सुनकर और माँ का दर्शन कर अत्यन्त अनुरक्त हो गये। उन्होंने आश्वासन दिया कि जहाँ तक जल्दी हो सकेगा, वे गाड़ी को छोड़ देंगे।

बातचीत के सिलसिले में दरोगा ने उक्त व्यक्ति की आकस्मिक मृत्यु की चर्चा की। वह व्यक्ति इस प्रकार की दुर्घटना में मर गया, यह बड़े दुःख की बात है, इसमें सन्देह नहीं। पर इस तरह की दुर्घटनाएँ तो आये दिन होती आ रही हैं। इसका लेखा-जोखा कौन रखता है। और इस बारे में इतना कौन सोचता है? अगर ऐसी दुर्घटनाएँ आँखों के सामने घटती हैं तो लोग मौखिक सहानु-या समवेदना प्रकट कर अपने रास्ते लग जाते हैं। अगर कहीं अपराधी पकड़ा गया तो तुरत ५० या १०० रुपया देकर जान बचाने की फिक्र करता है। पुलिस भी ऐसी वारदातों की अभ्यस्त हो चुकी है।

पर हम लोगों का वक्तव्य दूसरे रूप में है। हमारा कहना है कि हम आश्रम की ओर से इस तरह का अन्याय करना पसन्द नहीं करेंगे। सत्य की रक्षा करना हमारा सर्व प्रथम और सर्व प्रधान कर्त्तव्य है। अगर ऐसा करने में आश्रम को हानि हो, यहाँ तक कि यथा सर्वस्व त्याग करना पड़े, दासु को सपरिश्रम कारादण्ड हो तब भी हम इस फैसले को शिरोधार्य कर लेंगे। झूठ की राह पर, अन्याय के मार्ग पर हम एक पैर भी बढ़ाना पसन्द नहीं करेंगे।

दुर्घटना हुई है। उसका परिणाम सामने है। यह कितना शोचनीय काण्ड है, इस बारे में और क्या कहा जा सकता है। पर मैं सोचती हूँ कि मृत्यु के लग्न में माँ के श्रीहस्त से जिसने अन्तिम जल बिन्दु ग्रहण किया, माँ का करुणापूर्ण पूत स्पर्श पाकर जिसने इस नश्वर शरीर का त्याग किया, त्रिभुवन-तारिणी माँ की दृष्टि के सामने जिसका प्राणवायु बहिर्गत हुआ, वह व्यक्ति कितना बड़ा भाग्यवान है! कितने जन्मों का कितने सौभाग्य अर्जन का यह फल रहा जिससे ऐसी सद्गति हुई।

माँ के मुँह से सुना—"वह व्यक्ति निश्चय अच्छा था, वर्ना ऐसा क्यों होता? सभी तो एक ही घर के व्यक्ति हैं। एक ही परिवार के हैं। यही वजह है कि अन्तिम समय पर तुम लोगों से सेवा लेते हुए, तुम लोगों के मुँह से रामनाम सुनते-सुनते चला गया।"

वास्तव में इन घटनाओं को सुनने पर स्पष्ट रूप में समझ में आ जाता है कि परम सुकृति के फलस्वरूप माँ के श्रीचरणों के नीचे आकर उस व्यक्ति ने देहत्याग किया।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जो होना होता है, वही होता है, वर्ना रात के अन्तिम भाग में सहसा माँ काशी क्यों गयीं? और काशी जाने पर सहसा माँ के भाव में ऐसा परिवर्तन क्यों हुआ? सिर्फ यही नहीं, लगता है जैसे सर्वज्ञा माँ उक्त व्यक्ति के मौत के वक्त पर ठीक मौके से उसके निकट रहने के लिए ही व्यस्तता के साथ असमय में विंध्याचल की ओर रवाना हुई थीं।

गाड़ी जब दुर्घटना स्थल से कुछ दूर रही तभी माँ ने साफ-साफ तौर से देखा कि वह व्यक्ति मौत के मुँह में जा रहा है। माँ ने कहा—अधिकतर दासु या अन्य चालक को ख्याल करके कभी-

सतर्क कर दिया जाता है। किन्तु कल इस तरह स्पष्ट रूप से दिखाई देने पर भी कुछ कहने का ख्याल नहीं आ रहा था।"

एक तरह से कहा जाय तो माँ की वही बात—"जो होना है, वह होगा ही।" यही चिर सत्य, चिरन्तन सत्य एवं अमोघ सत्य है।

कल रात को माँ पुनः कह रही थीं—"पानु, दासु सब अभी तक वापस नहीं आये। उस व्यक्ति के सत्कार का क्या प्रबन्ध हुआ ?"

माँ की बातों से समझ सकी कि उक्त व्यक्ति का विधिवत् सत्कार आदि हो ताकि पारमार्थिक चिरकल्याण उसे प्राप्त हो, यही माँ की इच्छा है। कल जब माँ वहाँ से चलीं, उस समय मृत व्यक्ति का शरीर सड़कपर पड़ा था, बाद में स्वामीजी की जबानी पता चला कि लाश को थाना में ले आया गया था। फिर अस्पताल में पोस्ट मार्टम होने के बाद सत्कार के लिए लाश वापस कर दी गयी थी।

उक्त व्यक्ति के आत्मीय-स्वजन कौन कहाँ हैं, पता नहीं। सिर्फ इतना ही पता चला कि उसके घर उसकी पत्नी और लड़की है। कहीं अर्थाभाव या व्यक्ति की कमी के कारण उसका दाह-कार्य न हो, इसलिए माँ में यही ख्याल चक्कर काट रहे थे। आश्रम की ओर से यह कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हो जाय, इस ओर लक्ष्य रखना जरूरी है।

बहरहाल जब तक पानु वापस नहीं आ जाता तबतक ठीक-ठीक संवाद प्राप्त नहीं होगा।

## २ दिसम्बर, १९६६

माँ की गाड़ी लेकर पानु और दासु कल रात को दो बजे वापस लौटे। उनके आते ही इतनी रात को माँ ने तुरत पूछा—"उस व्यक्ति के शरीर का क्या हुआ ?"

सुना कि अस्पताल की जाँच समाप्त होने के बाद कल हो तीसरे पहर उसके रिश्तेदारों को लाश वापस दे दी गयी थी। मृत व्यक्ति की एक बहन और दो भांजे आये थे। वे सब लाश ले जाकर दाह-क्रिया सम्पन्न कर चुके हैं। इसमें किसी प्रकार का विघ्न नहीं हुआ है। यह समाचार पाकर ऐसा लगा जैसे माँ आश्वस्त हो गयीं।

दिन भर दौड़-धूप करके कचहरी से अनुमति वगैरह प्राप्त करके शाम के समय चुनार थाना से गाड़ी वापस ली गयी। उसी हालत में गाड़ी तुरत काशी ले आयी गयी। वहाँ आधी रात तक गाड़ी का ब्रेक आदि मरम्मत करवाकर विंध्याचल वापस आने में रात के २॥ बज गये।

आज माँ सवेरे बरामदे में बैठी थीं। सत्संग जारी है। आत्मानन्द ( आस्ट्रीयन कुमारी ब्लॉका श्लाम जो कि आजकल हमारे आश्रम में रहती हैं ) ने माँ से प्रश्न किया—"माताजी, हम सब कितने दिनों से आपका संग कर रहे हैं, लेकिन क्रोध, मान, अभिमान, द्वेष आदि तो अभी तक है। यह क्यों होता है ?"

माँ—"संग ठीक हो तब न ? लेकिन ठीक-ठीक संग कहाँ होता है ? अगर संग का अर्थ यही हो तो मच्छर, मक्खी भी तो इस शरीर का संग कर रही हैं।"

माँ के मुँह से यह उत्तर सुनकर सभी लोगों ने अनुभव किया

कि बात कितनी सच है ? हम लोग क्या वास्तव में माँ का संग कर रहे हैं ? माँ के इस एकान्त पूत शरीर के निकट रहते हुए भी क्या हम लोग माँ का ठीक-ठीक संग करने में सक्षम हैं। यह तो हम लोगों की अक्षमता है—हमारा दुर्भाग्य है। माँ स्वयं करुणा करके अगर हम लोगों के लिए कोई गति कर दें, यही हम लोगों के लिए एक मात्र आशा है वर्ना कोई भरोसा नहीं।

नारायण स्वामीजी ने प्रश्न किया—"माँ तब कैसे ठीक-ठीक तुम्हारा संग किया जा सकता है ?"

माँ—"इस शरीर की बात छोड़ दो। महात्माओं का संग करना—महापुरुषों का संग करने का अर्थ है, उनके निकट जो कुछ सुना है उसका यथावत् पालन करना चाहिए। देखा होगा कि गाय एक बार खूब मुँह भरकर खा लेती है, इसके बाद थोड़ी-थोड़ी निकालकर खूब चबा चबाकर खाती है। कहते हैं कि इस प्रकार हजम करने का प्रयत्न करती है।"

## ४ दिसम्बर, १९५६

माँ की गाड़ी लेकर पानु और दासु आज सवेरे पुनः चुनार से काशी चले गये। गाड़ी मरम्मत वगैरह ठीक से होने के बाद २-३ दिन में वापस आयेगी।

तीसरे पहर माँ आश्रम में खाट पर बैठी हुई हैं और नारायण स्वामीजी बरामदे में खिड़की के पास खड़े हैं। माँ ने स्वामीजी की ओर देखते हुए कहा—"प्राणगोपाल बाबू और कातू माँ को देखा गया। स्पष्ट जैसे जलजल कर रहे थे। दोनों एक सुन्दर स्थल पर बैठे पूजा कर रहे थे। बहुत अच्छी दशा है। दोनों ही एक ही गुरु के शिष्य हैं न। प्राणगोपाल बाबू जल्द ही और ऊपर जायँगे।"

नारायण स्वामीजी ने पूछा—"कातू माँ की ऊर्ध्वगति नहीं दिखाई दी ?"

माँ—"नहीं, फिलहाल उसका उस तरह का कोई भाव नहीं दिखाई दे रहा है।"

इसी बीच न जाने कौन सा प्रसंग छिड़ा कि इस सम्बन्ध में होने वाली बातें बन्द हो गयीं। माँ के मुँह से आम लोगों के सामने इस तरह की विशेष बातें प्रकट नहीं होतीं। यदि प्रसंगान्तर न हो जाता तो आज और कुछ सुनने में आता।

प्राणगोपाल बाबू और कातू माँ ( उनकी बहन ) दोनों ही देव-घर के बालानन्द ब्रह्मचारीजी महाराज के शिष्य हैं। दोनों ही माँ को भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं।

## ९ दिसम्बर, १९५६

माँ की शारीरिक स्थिति ठीक नहीं है। कानों में लगातार घण्टी की आवाज बजती जा रही है, डाक्टर नाथ २-१ दिन के अन्तर पर बराबर आकर कानों की जाँच कर रहे हैं। वे भी निरु-पाय हैं। माँ के शरीर पर किसी प्रकार की चिकित्सा चल नहीं पाती। एक बार उन्होंने माँ के कान में पम्प करने का प्रस्ताव रखा था, किन्तु हम लोगों ने इसलिए मना कर दिया कि कहीं इसकी वजह से कोई विपरीत परिणाम उपस्थित न हो।

माँ का भाव भी न जाने कैसा अस्वाभाविक सा है। हम लोगों के बीच रहते हुए भी जैसे नहीं हैं। एक अनजाना सा बिखराव है। जब कभी मैं माँ के भावों में किसी प्रकार का परिवर्त्तन देखती हूँ तब मेरे मन में आतंक छा जाता है।

## ६ दिसम्बर, १९५६

आज विजयानन्द ( फ्रांसीसी डाक्टर, नाम है वाइनट्रव। आजकल आश्रमवासी हो गये हैं ) और उसके बहनोई दिल्ली हवाई जहाज द्वारा माँ का दर्शन करने के लिए यहाँ आये हैं। सुना कि आपके बहनोई न्यायविशेषज्ञ हैं। एशिया में कागज का कारबार करने के उद्देश्य से अमेरिका से यहाँ आये हैं। कल पुनः दिल्ली चले जायँगे। फलस्वरूप विजयानन्द उन्हें टैक्सी से यहाँ ले आये हैं। आप यहूदी धर्मावलम्बी हैं।

**सुसंस्कार प्राप्त करने के उपाय**

माँ का दर्शन करने के बाद उन्होंने माँ से पूछा—"मनुष्य में अच्छे संस्कार कैसे आते हैं?"

माँ—"तुम जैसे पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते वकील बन गये हो, इंजीनियर जैसे इंजीनियरिंग कालेज में पढ़कर इंजीनियर बनता है। प्रोफेसर जिस प्रकार कालेज में पढ़ते हुए एम० ए० पास कर प्रोफेसर होता है, ठीक उसी प्रकार इस लाइन की पुस्तकें पढ़कर यानी साधना करते हुए अच्छे संस्कार अर्जन किये जा सकते हैं। यहाँ तक कि भगवान् से साक्षात् भी किया जा सकता है।"

सज्जन—"क्या सचमुच में भगवान् हैं?"

माँ—"जिस प्रकार तुम सत्य हो, उसी प्रकार भगवान् भी सत्य हैं।"

पास ही एक संतरा रखा था। उसकी ओर देखती हुई माँ बोलीं—"इसके भीतर जैसे बीज है—खोलने पर दिखाई देता है, फिर बीज के भीतर वृक्ष है। उसी प्रकार तुम्हारे भीतर भी वे

हैं। साधन के जरिये खोल लेने पर अर्थात् आवरण को नष्ट कर देने पर वही जो स्वयं प्रकाश—उन्हें पाया जा सकता है। बीज के भीतर जैसे सम्पूर्ण वृक्ष है, ठीक उसी प्रकार तुम्हारे भीतर भी वे पूर्ण रूप में विराजित हैं।"

फ्रांसीसी सज्जन माँ के मुँह से इन गंभीर तत्त्व की बातें सुनते हुए उसके मूल अर्थों को जैसे समझने की चेष्टा कर रहे थे। वे अत्यन्त चिन्तनशील और गंभीर प्रकृति के लगे। काफी देर तक इस ढंग की बातचीत होती रही। बाद में माँ को प्रमाण कर वे मोटर द्वारा काशी रवाना हो गये।

माँ के मुँह से आज एक बात और प्रकट हुई। माँ सूक्ष्म में देख रही थीं कि दीदी माँ दक्षिण ओर सिर रखे, दाहिने करवट में, पूर्ण रूप से आवरणहीन अवस्था में सोई हैं। माँ मानो उनके समस्त शरीर में सिर से पैर तक हाथ फेरती रहीं। पूछने लगीं— "क्यों माँ, कैसे अपने शरीर को दुबला बना लिया ?"

दीदी माँ यह सब बातें माँ के मुँह से सुनकर अवाक् रह गयीं। बोलीं—"देखो, अन्तिम समय में इसी तरह सारे शरीर पर हाथ फेर देना।"

### ८ दिसम्बर, १९५६

कई दिनों से माँ को ख्याल हो रहा है कि मोटर दुर्घटना से आहत व्यक्ति का श्राद्धादि काम यथावत् रूप से सम्पन्न हुआ या नहीं। स्थानीय रीति के अनुसार १३ दिन में तेरही की जाती है। सुना कि वह व्यक्ति चुनार से काफी दूर रायपुर नामक

एक गाँव में रहता था। अपने गाँव से वह उसी दिन सरकारी महकमे में काम करने आया था। उसके साथ वाला छोटा बालक उसका भतीजा था। उसके घर पत्नी और दो लड़कियाँ हैं।

उस व्यक्ति की मृत्यु के कारण उसके परिवार के सदस्य अनाहार का कष्ट न उठायें, इस बात की चिन्ता हम सबको सता रही थी। आश्रम की ओर से आवश्यकता पड़ने पर आर्थिक सहायता देने की व्यवस्था करना आवश्यक है।

इसी बीच २-१ बार यह सवाल उठा कि मृत व्यति के घर का पता लगाकर उसके बारे में कुछ पता लगाया जाय, पर थाने के अधिकारियों ने ऐसा करने से रोका। उनका कहना था कि हमारे लिए अकेले उतनी दूर गाँव में जाना उचित नहीं होगा, क्योंकि उत्तेजना और आक्रोश के कारण मनुष्य हित-अहित सोच नहीं पाता। दरोगा साहब स्वयं ही कह गये कि इस बारे में वे विस्तारित रूप से समाचार पता लगाकर सूचित करेंगे।

पानु आज दोपहर को काशी से गाड़ी लेकर वापस आया। सुना कि वह आज सवेरे चुनार थाने के कोतवाल साहब तथा कुछ सिपाहियों को लेकर मृत व्यक्ति के घर गया था। विंध्याचल से ५० मील दूर अहरौरा रोड के समीप रायपुर गाँव में उसका घर है। मार्ग अत्यन्त दुर्गम है। कोतवाल साहब ने विधवा स्त्री, गाँव पंचायत के सरपंच और सरकारी पटवारी से सारा समाचार प्राप्त किया। पता चला कि मृत व्यक्ति की आर्थिक अवस्था बहुत खराब नहीं है। कुछ जमीन है। मृत व्यक्ति का बड़ा भाई घर का मालिक है। एक लड़की की शादी हो गयी है और दूसरी अनव्याही है।

स्त्री के हाथ पर आश्रम की ओर से पानु २००) नगद श्राद्धादि कार्य के लिए दे आया है और गाँव के सरपंच के हाथ कुछ

रुपया मृत व्यक्ति को आत्मा की तृप्ति के निमित्त भण्डारा के लिए दे आया है। श्राद्ध के पहले हो उन्हें आर्थिक मदद दे दी गयी है, यह समाचार पाकर ऐसा लगा जैसे माँ प्रसन्न हो गयी हैं।

## ९ दिसम्बर, १९५६

**आश्रम में गीता जयन्ती उत्सव के आरम्भ का इतिहास। विंध्याचल में गीता-जयन्ती**

आज से १२ वर्ष पूर्व साधन समर आश्रम के श्री सत्यदेव ठाकुर के शिष्य स्व० गोपाल ठाकुर जी ने इसी विंध्याचल स्थित माँ के आश्रम में प्रथम गीता-जयन्ती उत्सव आरम्भ किया था। तभी से वे बराबर हर वर्ष जाड़े के समय माँ के सान्निध्य में, किसी भी आश्रम में स्वयं उपस्थित रहकर उत्सव मनाते आये हैं। आज दो वर्ष हुए वे परलोक-वासी हो गये हैं। उनका आखिरी गीता जयन्ती उत्सव जिस वर्ष काशी धाम में हुई थी, उन दिनों उनकी तबीयत ज्यादा खराब हो गयी थी। ब्लड प्रेशर और मधुमेह से वे काफी दिनों से पीड़ित रहे। ऐसी हालत में भी वे माँ के आश्रम में सपरिवार आकर बड़े समारोह के साथ गीता-जयन्ती उत्सव मनाते हुए सभी लोगों को आनन्द देते रहे।

स्व० गोपाल ठाकुर जी इस लोक में नहीं हैं, किन्तु उनके द्वारा प्रवर्तित इस उत्सव की धारा आज भी हमारे आश्रम में जारी है।

इस वर्ष माँ यहाँ हैं, इस लिए आज से ही माँ की उपस्थिति में सभी लोग मिलकर गीता-जयन्ती उत्सव मनाने लगे। स्व० गोपाल ठाकुर के प्रिय शिष्य श्री देवप्रसाद यहाँ उपस्थित है, इसलिए उत्सव की विशिष्टता को वह बनाये रखने में सहायता देगा।

९॥ बजे के लगभग विधिवत् ठीक रूप में पूजा समाप्त हो गयी। इसके बाद उपस्थित सभी लोगों ने समवेत रूप से छह अध्याय गीता का पाठ किया। ब्रह्मचारी रघुनाथ दास ने श्री श्री गोविन्द पूजा की। तीसरे पहर माँ की इच्छानुसार श्री मुक्ति महाराज ने गीता के विषय पर अत्यन्त उपादेय तथा ज्ञानगर्भ भाषण दिया।

## १० दिसम्बर, १९५६

आज गीता जयन्ती का दूसरा दिन है। प्रभात में यथारीति पूजा होने के बाद छह अध्याय गीता का पाठ हुआ। तीसरे पहर ब्रह्मचारी रघुनाथ दास तथा अध्यापक मदन गोपाल गीता के ऊपर हिन्दी में व्याख्या करते रहे।

शाम के समय श्री वर्मा साहब को लेकर कमल मोटर द्वारा काशी आया। श्री वर्मा साहब माँ के एकनिष्ठ भक्त हैं। आप पहले पंजाब के चीफ इंजीनियर थे। आजकल यूनियन पब्लिक सर्विस कमिशन के मेम्बर हैं।

काशी के घाटों तथा आश्रम के कार्य के सिलसिले में आप तथा श्री कानवार सेन प्लेन द्वारा दिल्ली से यहाँ आये हैं। साथ में एक अन्य इन्जीनियर हैं। श्री कानवार सेन पंजाबी हैं। आप केन्द्रीय सरकार के चीफ इंजीनियर तथा सेण्ट्रल वाटर पावर कमीशन के चेयरमैन हैं। काशी आश्रम के गंगा के ऊपर वाले भवन को पूरी तरह तोड़ देने की चर्चा हो रही है। श्री वर्मा भी यही राय दे रहे हैं। समग्र अट्टालिका इस समय ऐसी स्थिति में है कि कुछ रोज में तोड़ देना निरापद होगा।

इसी बीच आश्रम की ओर से इस कार्य के लिए कई हजार रुपये उत्तर प्रदेश सरकार के निकट जमा कर दिया गया है। आगे जब

सरकार की ओर से घाट का निर्माण हो जायगा तब उस स्थान पर भवन बनवाने की बातें सोची जायँगी।

गंगा के ऊपर दाहिनी ओर स्थित अत्यन्त सुन्दर विरजा मन्दिर इस बीच तोड़ दिया गया है। अब १५-२० दिन के भीतर उत्तरवाला यज्ञ मन्दिर तोड़ देने की चर्चा चल रही है। गंगा की ओर ये दोनों मन्दिर और उसके साथ फैली हुई विशाल छत आश्रम के सामने की शोभा है। जिन लोगों ने गङ्गा में नाव द्वारा सैर करते हुए इस दृश्य की शोभा को देखा है, उनका कहना है कि ऐसा दृश्य काशी में अन्यत्र कहीं नहीं है। अब लाचारी में जब इसे तोड़ दिया जा रहा है तब हमारे मन में कितनी ठेस पहुँच सकती है, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

**माँ संघ संघटन से भी ऊपर हैं**

पर माँ की बात अलग है। उनमें किसी प्रकार विकार नहीं है। उनके निकट सृष्टि-स्थिति-लय सब एक ही है। माँ आनन्द से कभी ताली बजाती हुई कह रही हैं—"दीदी का मकान गायब हो रहा है, शायद इसीलिए वह कुछ कहना चाहती थी।" लोग माँ की यह बात सुनकर विस्मित रह गये। माँ को हर बात में आनन्द मिलता है। सब कुछ जैसे अद्भुत है।

सुनती रहती हूँ, बाहरी लोग अक्सर कहा करते हैं—"आनन्दमयी माँ ने आश्रम बनवाया है। वही आश्रम आज तोड़ा जा रहा है। पता नहीं, उन्हें कितना दुःख हो रहा होगा।"

पर लोगों को यह मालूम नहीं कि माँ ने न तो आश्रम बनवाया और न उनका आश्रम के साथ कोई सम्बन्ध है। फलस्वरूप आश्रम का बनाना-बिगाड़ना उनके निकट बराबर है। माँ हमेशा कहती हैं—"आश्रम तो सिर्फ एक ही है। समग्र विश्व ही एक आश्रम है।"

दुनिया में मनुष्य कितने घरौंदे बनाते हैं, कितने बिगाड़ देते हैं, कितने बनाने-बिगाड़ने का कार्य करते हैं, मनुष्य घरौंदे बनाते समय हँसता है, बिगाड़ते समय आँसुओं की बरसात करता है, पर माँ के निकट ? माँ के निकट बनाने-बिगाड़ने का कोई महत्त्व नहीं है। इस मामले में वे विकार रहित हैं। फलस्वरूप आज जब आनन्द-मयी आश्रम के भवन का एक हिस्सा तोड़ दिया जायगा तब इससे उनका कुछ न होना स्वाभाविक है। यही वजह है कि ताली बजाती हुई आनन्द प्रकट कर रही हैं।

## ११ दिसम्बर, १९५६

श्री वर्मा जी पिछली रात को माँ के निकट रहे। आज सवेरे कमल उन्हें साथ लेकर मोटर से काशी वापस चला गया। रात को वर्माजो माँ के साथ एकान्त में बैठे विभिन्न .विषयों पर बातचीत करते रहे।

उधर गीता-जयन्ती के तीसरे दिन का अनुष्ठान विधिवत् सम्पन्न हो गया है। आज तीसरे पहर नारायण स्वामीजी गीता के सम्बन्ध में हिन्दी में व्याख्यान देंगे।

## १२ दिसम्बर, १९५६

आज गीता-जयन्ती का चौथा दिन है। कल की तरह आज के सभी अनुष्ठान हुए। तीसरे पहर स्वामी प्रणवानन्द के शिष्य मीरजा-पुर के एक बंगाली सज्जन ने गीता की यौगिक व्याख्या बड़े सुन्दर से ढंग की। भवसागर पार होने के लिए .श्रीकृष्ण को भवपार का खेवनहार बनाना पड़ेगा। इसके बिना 'नान्यः पन्थाः विद्यते'—इस

तथ्य को उन्होंने उपस्थित सभी लोगों के अन्तर में ग्रथित कर दिया।

## १३ दिसम्बर, १९५६

गीता जयन्ती आज समाप्त हो जायगी। माँ के शयन मन्दिर में पूजा का प्रबन्ध हुआ है। माँ भोर के समय उठकर पूजा की समस्त व्यवस्था की देख रेख स्वयं कर रही हैं। स्व० गोपाल ठाकुर द्वारा प्रवर्त्तित पूजा उनके द्वारा प्रवर्त्तित विधान और आडम्बर के साथ हो, इस दिशा में दृष्टि सजग है।

श्री गोविन्दजी के आसन पर गीता स्थापन करने के बाद अत्यन्त सुचारु रूप में उसे फूल-मालाओं से सजाया गया। मां स्वयं अपने हाथ से पुष्पमालाओं से सजाने लगीं। बायें और दक्षिण में अट्ठारह प्रकार के भोग, नैवेद्य, पान पात्र तथा अट्ठारह प्रदीप सजाये गये। मैं यह देख चुकी हूँ कि स्व० गोपाल ठाकुरजी प्रचुर परिमाण में पुष्प और मालाओं से पूजा करना विशेष रुप से पसन्द करते थे। शायद इसी वजह से माँ के निर्देश पर आज भी विविध प्रकार के ष्प और मालाएं संगृहीत हुई हैं। पुष्प काशी से मंगवाये गये हैं।

**पूर्ण माँ की व्यवस्था में सर्वत्र पूर्ण**

सारा आयोजन हो जाने के बाद ठीक १० बजे ब्रह्मचारी रघुनाथ दास ने पूजा आरंभ की। बाकी लोग भी अपने-अपने आसन पर बैठकर पूजा करने लगे। स्व० गोपाल ठाकुर जी जब पूजा करने बैठते तब समयोपयोगी जितने गीत गाये जाते थे, वे सब पूजा के अंग बन गये हैं। उसी अनुसार वे सब गीत आज की पूजा के समय गाये जाने लगे। माँ स्वयं

इन गीतों में यथावत् सुर कई दिनों से ब्रह्मचारी हर प्रसाद द्वारा दिलवा रही थीं। किन्तु "जा पेयेछी तारि माझे डाकी तोमाय" नामक गीत गाते समय स्वर में कुछ असंगतियाँ आ गयीं। तब मां स्वयं अपने स्वभाव-मधुर-कण्ठ से उक्त गीत गाने लगीं। कितनी अपूर्व झंकार थी। मां के मुँह से यह गीत सुनकर सभी मुग्ध हो उठे। सभी लोगों के मन में यही भावना उत्पन्न हुई कि अगर इस महापूजा में कोई त्रुटि या दोष रहा हो तो वह सुर की इस बरसात में धो पोंछकर साफ निर्दोष हो गया। पूत पवित्रता की गंघ से पूजा-स्थल मानो आमोदित हो उठा। सभी लोग अवाक् आनन्द से स्थिर होकर मां की ओर देखते रहे।

विंध्याचल जैसे स्थान में जहां एक प्रकार से कुछ भी नहीं मिलता, वहां इस बार गीता-जयन्ती उत्सव मां की उपस्थिति में इतने सुन्दर और आडम्बर के साथ सम्पन्न हुआ कि लोग इस बारे में बारम्बार आपस में चर्चा करते हुए विस्मय प्रकट करने लगे।

पूजा समाप्त होने में लगभग २ बज गये। इसके बाद आश्रम के समीप ही प्राचीन मन्दिर की वेदी पर यज्ञ आरंभ हुआ। नारायण स्वामीजी बृहदारण्य उपनिषद् से मंत्र उच्चारण कर रहे थे और ब्रह्मचारी रघुनाथदास उन मंत्रों पर आहुति प्रदान कर रहे थे। यज्ञ समाप्त होते-होते ३ बज गये। इसके बाद पूजा स्थल पर, मां के घर में भोग और आरती हुई। इस तरह कार्य समाप्ति के बाद मां स्वयं "गोविन्द, गोविन्द, गोविन्द जय" तथा "कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण जय" गाने लगीं। उपस्थित सभी लोग बड़े आनन्द के साथ नाम-कीर्त्तन में भाग लेने लगे। समग्र वातावरण में मानो एक अपूर्व भाव की बाढ़ आ गयी।

पता नहीं कैसे इस उत्सव के उपलक्ष्य में शहर से अनेक स्त्री-

पुरुष आश्रम में आये थे। पूजा के अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के उपमंत्री श्री जगन प्रसाद रावत ५-६ व्यक्तियों के साथ मोटर से यहां आये। वे इलाहाबाद जा रहे थे। यहां से गुजरते समय मां का दर्शन करते गये। इलाहाबाद से डा० पन्नालाल भी कई रोज के लिए मां के पास आये हैं। गीता-जयन्ती के उपलक्ष्य में कई रोज ठहरने के बाद वे इलाहालाद चले गये। इस उत्सव के सम्बन्ध में अचानक मां के मुँह से निकला—"कौन कहता है कि पिता जी ( स्व० गोपाल ठाकुरजी ) यहां नहीं थे ? पिताजी अवश्य उपस्थित थे।" मां ने अपनी बातें इतने सशक्त भाव से कहीं कि सभी लोगों ने इसे अनुभव किया।

आज सवेरे की एक घटना जो संयोग वश मां के मुँह से सुनने में आयी। मां सूक्ष्म में देख रही थीं—श्री अमूल्य गुप्त जी मां के निकट मानो गंभीर भाव में बैठे हैं। मां से उन्होंने पूछा—"भगवान् हैं कि नहीं ?"

इस प्रश्न के उत्तर में मां के मुँह से निकल पड़ा—"तुम्हीं तो सृष्टि करते हो, पालन करते हो और लय भी तो तुम्हीं करते हो।"

## १६ दिसम्बर, १९६६

मां की तबीयत बराबर गड़बड़ सी है। कान के भीतर बराबर घण्टी बजती रहती है। भाव भी जरा उखड़ा रहता है। अक्सर ऐसा लगता है कि हमारे बीच रहती हुई भी नहीं हैं। प्रायः वे कहती हैं—"जो हो जाय।"

माँ के उखड़े-उखड़े भावसे हममें आतंक

उस दिन स्वयं ही कह रही थीं—"व्यवहार का रूप जैसे ठीक नहीं चल रहा है। देखो न, हरिद्वार से मोटर द्वारा जब रवाना हुई

तब हरि बाबाजी की गाड़ी कहाँ रह गयी, इस ओर ध्यान ही नहीं रहा। ऐसा आगे कभी नहीं होता था। पिताजी कहाँ रह गये? पिताजी को आगे कर पीछे-पीछे यह शरीर आता है, आजकल जैसे इन सब बातों की ओर ख्याल नहीं रहता। जो हो जाय—ऐसा भाव रहता है।"

यह सब देख-सुनकर हम सब दिन प्रति दिन आतंकित हो रहे हैं। माँ में सोने के भाव और ख्याल में भी काफी कमी हो गयी है। दिन-रात एक ही हालत है।

## १७ दिसम्बर, १९५६

आज शाम के बाद श्री कान्तिभाई मुन्शा सपत्नीक अहमदाबाद से यहां मोटर द्वारा आये। कल वापस चले जायँगे।

आगामी जन्मोत्सव की सूचना की बातें

श्री श्री मां का आगामी जन्मोत्सव अहमदाबाद में कान्तिभाई के घर मनाने का निश्चय किया गया है। मई माह में कान्तिभाई भारत से बाहर चले जायँगे। उनकी अनुपस्थिति में मुकुन्द भाई, ठाकुरभाई, चिनु भाई वगैरह उत्सव का सारा इन्तजाम करेंगे, ऐसी आशा की जाती है। कान्तिभाई की बहुत दिनों से इच्छा थी कि अहमदाबाद में एक बार माँ का जन्मोत्सव मनाया जाय। इस बार माँ की कृपा से उनकी यह इच्छा पूरी होने जा रही है।

## १९ दिसम्बर, १९५६

सवेरे ११ बजे के लगभग कविराज जी तथा अमूल्य दादा

काशी से यहां आये। इनके साथ मेरी बड़ी बहन बाच्चू की मां भी आयी हैं। अमूल्य दादा यहां एक घण्टा रहने के बाद 'मेरी पत्नी बीमार हैं' कहकर काशी वापस चले गये।

कल कविराज जी का मौन दिवस है। आज वे माँ के निकट आकर तीसरे पहर तथा शाम को देर तक बैठे रहे। माँ में कुछ अनमना भाव था, यह भाव कविराज जी ने भी देखा।

माँ की एक ही बात है--"जो हो जाय।" इस बार दुर्घटना की चर्चा चलने पर माँ ने कहा—"एक बार इलाहाबाद में पाठक की गाड़ी में यह शरीर जा रहा था। अचानक गाड़ी के धक्के से एक आदमी गिर पड़ा। तुरन्त शरीर को ख्याल हुआ कि कुछ मत होने दो। गाड़ी से उतरकर आहत व्यक्ति के शरीर पर हाथ फेरते हुए कहा गया—"उठो" ही ज्योंहि उसे उठाकर बैठाया गया त्योंही वह खड़ा होकर तुरत चला गया। लगा जैसे कुछ हुआ नहीं था। पर इस बार की दुर्घटना के समय इस प्रकार का कोई ख्याल इस शरीर को नहीं हुआ। केवल यही भाव आया--'जो हो जाय'।"

## २१ दिसम्बर, १९५६

कविराज जी आकर मां के पास बैठें हैं। हर तरह की बात-चीत हो रही है।

कलकत्ता आश्रम के मनोरंजन सरकार जी का भतीजा कविराज जी का गुरु भाई है। उनके आश्रम में परसों १०८ कुमारियों को भोजन कराने की व्यवस्था की गयी थी, किन्तु कविराज जी के यहाँ चले आने के कारण वह कार्यक्रम नहीं हुआ। अब अगले रविवार को होने की बातचीत हो रही है। सत्यसाधन बाबू( मनो रंजन दादा का भतीजा ) विशेष रूप से माँ से प्रार्थना निवेदन

करने को कह गये हैं ताकि माँ उस दिन वहाँ उपस्थित रहें। कविराज जी भी अपनी ओर से उस दिन वहाँ उपस्थित रहने के लिए बार-बार अनुरोध करने लगे। बार-बार के अनुरोध पर माँ ने स्वीकृति दे दी।

तय हुआ कि कल माँ तीसरे पहर यहाँ से काशी चली जायँगी। सवेरे वहाँ कुमारी भोजन है।

कविराज जी को काशी विश्व विद्यालय की ओर से डी० लिट० उपाधि देने का प्रस्ताव किया गया है। उपकुलपति स्वयं कविराज जी के निवास स्थान पर आकर यह निवेदन कर गये हैं कि वे उक्त समावर्तन समारोह में उपस्थित रहें। पर ये राजी नहीं हुए हैं। अब तो ये विंध्याचल चले आये हैं, उपकुलपति ने कहा है कि माँ यहाँ हैं अगर जानता तो उन्हें भी उत्सव में ले आने की व्यवस्था की जाती। माँ यह बात सुनकर बोलीं—"ठीक तो था। यह छोटी लड़की पिताजी के साथ जाती।"

तीसरे पहर चुनार थाना के कोतवाल तथा विंध्याचल थाना के दरोगा माँ का दर्शन करने आये। कोतवाल साहब यानी ठाकुर दीपनारायण सिंह जी हमारी हर तरह से मदद कर रहे हैं। इन्हीं की मदद से मृत व्यक्ति के गाँव में जाकर उसके परिवार के लोगों को श्राद्ध के लिए रुपया देना संभव हुआ। माँ से संबंधित कार्य है, इसलिए सेवा-भावना से ये लोग आनन्द के साथ यह सब काम कर रहे हैं। माँ का अधिकतर कार्य इसी ढंग से पूरा होता है। मैं बराबर देखती आ रही हूँ कि माँ के काम में इसी प्रकार अयाचित भाव से आकर लोग सहायता देते हैं।

श्री सिंह को मैंने माँ की दो अंग्रेजी की पुस्तकें भेंट में दीं। साथ ही माँ के प्रसाद के रूप में एक वस्त्र भी दिया गया। उन्होंने इन सब सामग्रियों को बड़े आनन्द से ग्रहण किया।

माँ की असीम कृपा से दासु के मुकदमे की कारवाई पूरी होने को आ गयी हैं। बेचारे के लिए मैं काफी चिन्तित थी। अगर आश्रम का मामला न रहता तो असत् उपायों से आसामी छुटकारा पा जाते हैं। पर हम लोग उस मार्ग पर जाना पसन्द नहीं करते। चाहे जिस रूप में हो, जैसे भी हो, सत्य का पालन हम करेंगे ही—यही माँ की शिक्षा है।

सुना कि मृत व्यक्ति के पोस्ट मार्टम में यह रिपोर्ट लगायी गयी है कि उसके शरीर में कहीं चोट नहीं लगो है। अचानक शॉक लग जाने के कारण उसका हार्ट फेल हो गया है। फलस्वरूप चालक दोषी नहीं प्रमाणित होता। इसके अलावा माँ की गाड़ी बिलकुल नयी है। गाड़ी में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं है, इस बात का समर्थन पुलिस ने किया है। दुर्घटना स्थल की जाँच करने तथा वहाँ के प्रत्यक्ष दर्शी लोगों के बयानों से यह प्रमाणित हो गया कि चालक का कोई दोष नहीं रहा। फलस्वरूप सर्व सम्मति से यह निर्णय लिया जा रहा है कि यह मृत्यु शॉक लगने के कारण हुई है।

इन रिपोर्टों के आधार पर जिला पुलिस सुपरिण्डेण्टेण्ट ने दासु को छोड़ देने का आदेश दे दिया और कोर्ट से अनुरोध किया है कि यह मामला खारिज कर दिया जाय। माँ की करुणा से इस तरह वास्तविक घटना का स्वरूप प्रकाशित हुआ। सच तो यह है कि दासु की कोई गलती नहीं थी। ऐसी हालत में अगर बिना कसूर के दासु की सजा हो जाती तो हमें अपार दुःख होता।

## २२ दिसम्बर, १९६६

माँ आज भोग के बाद कविराज जी के साथ काशी चली गयीं। उनके साथ दीदी माँ और नारायण स्वामी जी भी गये।

**माँ का काशी गमन**

## २४ दिसम्बर, १९५६

आज काशी से माँ वापस आनेवाली हैं, किन्तु उनके वापस न आने पर मुझे कुछ चिन्ता हो गयी। कारण माँ की तबीयत ठीक नहीं है। इसके अलावा जाते समय यह कह गयी हैं कि अगर शरीर ठीक न रहा तो यहाँ वापस नहीं भी आया जा सकता।

## २५ दिसम्बर, १९५६

आज सवेरे कमल दो गाड़ियाँ लेकर आया है।

सुना कि काशी जाने पर भी माँ की तबीयत गड़बड़ है। यही वजह है कि डाक्टर बाबू और कविराज जी पुनः विंध्याचल वापस आने के लिए राय नहीं दे रहे हैं। काशी में विंध्याचल की अपेक्षा ठंढक कम है, इसलिए कमल हम लोगों को काशी वापस ले जाने के लिए आया है।

कमल के आने पर पिछले तीन दिनों का समाचार मिला।

**विशुद्धानन्दजी के आश्रम में माँ**

२२ ता० को माँ कविराज जी को उनके घर पर छोड़कर शाम के समय आश्रम पहुँचीं।

दूसरे दिन सबेरे ९ बजे श्री विशुद्धानन्दजी के आश्रम में गयी थीं। आपके साथ नारायण स्वामीजी, चन्दन और योगी भाई भी थे।

माँ जब विशुद्धानन्दजी के आश्रम में पहुँचीं तब आश्रमवासियो तथा स्वामीजी के भक्तों ने माँ का स्वागत शंख बजाकर तथा माला-चन्दन से किया। इन लोगों की भावनाएं सचमुच अत्यन्त मधुर हैं। माँ को यह लोग साक्षात् भगवती के रूप में मानते हैं।

माँ ने स्वामी जी के मन्दिर में प्रवेश करते ही उनकी श्वेत प्रस्तर की प्रतिमूर्ति का आलिंगन किया। बाद में शिव-दुर्गा मन्दिर दर्शन कराने के बाद माँ को स्वामी जी के कमरे में ले जाकर बैठाया गया।

जब कुमारी-भोज आरंभ हुआ तब माँ को वहाँ ले जाया गया। हमारे आश्रम की ओर से सभी कुमारियाँ को ब्रह्मचारी दत्तात्रेय ने एक-एक संतरा भेंट किया। श्री विशुद्धानन्द मन्दिर में कुछ फल भेज दिया गया।

कुमारी भोजन समाप्त होने के बाद माँ के हाथ से उन लोगों को माला और फल बंटवाया गया। प्रत्येक कुमारी को एक-एक रंगीन वस्त्र तथा दक्षिणा भी दिया गया।

माँ के भोग के लिए स्वतंत्र जगह ठीक की गयी थी। देव मन्दिरों में जिस प्रकार भोग के समय घण्टा-घड़ियाल बजाये जाते हैं, ठीक उसी प्रकार माँ के भोग के समय बाजे बजाये गये। भोग के बाद माँ आश्रम में वापस आ गयीं।

बहरहाल, मैं जल्दी से खाना-पीना समाप्त कर लड़कियों को साथ ले काशी चली आयी। तीसरे पहर ३ बजे के लगभग काशी पहुँची।

बाहर से देखने पर माँ की तबीयत खराब मालूम हुई। मैंने गौर किया तो ऐसा लगा जैसे किसी से विशेष बातचीत नहीं कर रही हैं। अगर कोई प्रश्न किया गया तो अत्यन्त संक्षेप में २–१ बातों का उत्तर देती हैं। फलस्वरूप सभी उदास हैं।

**पुकारने की तरह पुकारने का अर्थ और उसका उपाय**

तीसरे पहर कुछ लोग माँ से मिलने आये। उस समय कुछ बातचीत हुई। एक सज्जन ने माँ से प्रश्न किया—"भगवान् को तो पुकारा जाता है, पर कहाँ उनका दर्शन मिलता ?"

माँ ने कहा—"ठीक-ठीक पुकारने की तरह पुकारा कहाँ जाता है। पुकारने की तरह अगर पुकारा जाय तो वे बिना दर्शन दिये नहीं रह सकते।"

मुझे याद आया, कवि के एक गीत में सुना था—'पुकारने की तरह पुकारने पर पाषाण भी अश्रुपात करता है।' सोचा शायद माँ भी यही कह रही हैं। कवि की अनुभूति सार्थक हुई। थोड़ी देर बाद माँ पुनः कहने लगीं—"तुम लोगों का मन चारों तरफ बिखर गया है, इसलिए ठीक से पुकार नहीं पाते। जिस पुकार पर उन्हें पाया जा सकता है, वह पुकार कहाँ होती है? उनके बिना मेरा चल नहीं रहा है, इस तरह के अभाव बोध होने पर तब ठीक-ठीक पुकार होती है। जब भूख ही नहीं है तब उन्हें पाओगे कैसे?"

नारायण स्वामीजी—"ठीक-ठीक अभाव बोध कैसे होता है?"

माँ—"सत्संगत करना चाहिए। जो लोग भगवान् को पाने की चेष्टा कर रहे हैं, उनका साथ करना चाहिए। इसके साथ यह भी ख्याल रखना चाहिए कि इस संसार की सम्पूर्ण सामग्री मुझे स्थायी सुख नहीं दे सकती। केवल मौत की ओर खोंच ले जा रही है। इस तरह का विचार सर्वदा करना चाहिए। इस जगत् का सुख तो आपेक्षिक है अर्थात् किसी वस्तु की अपेक्षा रखना ही सुख है। उस वस्तु के न रहने या अभाव होने पर दुःख होता है और इस जगत् में जो कुछ है सब क्षण भंगुर हैं—अभी है तो अभी नहीं। इस प्रकार के विचार हमेशा मन में रखना चाहिए तभी जगत् के प्रति मोह कम होगा और उधर का मोह बढ़ेगा।"

माँ के मुँह से आज कुछ बातें सुनकर हम सब अत्यन्त आनन्दित हुए।

## २७ दिसम्बर, १९५६

मां की तबीयत में बराबर गड़बड़ी चल रही है। कानके भीतर हमेशा एक गंभीर आवाज जारी है जैसे हवाईजहाज चलने की आवाज होती है। वही आवाज सिर के भीतर प्रतिध्वनित होती रहती है। बाहर की मामूली आवाज भी इसकी वजह से और तकलीफ देती है, कान के उस आवाज को तीव्र कर देती है।

**रोग-पीड़ित माँ**

डा० नाथ ने पुनः कानों की जांच अच्छी तरह की। उनका कहना है कि कान के साथ नाक की जिस पतली नली का संयोग है. ठंढ लग जाने के कारण वह बन्द हो गयी है। जरा पम्प करके बाहर से जोर से हवा देने पर वह साफ हो जायगी और तब कान और सिर में गूंजने वाली आवाज गायब हो जायगी।

अब अगर पम्प किया जायगा तो कोकिन जैसी दवा लगानी पड़ेगी, पर मुश्किल यह है कि इस तरह की कोई भी दवा माँ के शरीर में सह्य नहीं होती। इससे लाभ तो कुछ नहीं होता बल्कि विपरीत फल होता है, फिर भी डा० नाथ ने रबड़ का वाल्ब भेजा है जिससे संभवतः हवा देना संभव हो।

मां हर वक्त अपने कमरे में रहती हैं। सवेरे और तीसरे पहर ख्याल होने पर २०-२५ मिनट के लिए नाट मन्दिर के सामने आकर बैठती हैं। मां के कमरे के सामने जाने के लिए मनाही कर दी गयी। मानो मां अधिकतर अपने ख्याल में रहना चाहती हैं।

## २८ दिसम्बर, १९५६

आज दोपहर को भोग के बाद मां धूप में आकर बैठ गयीं।

नारायण स्वामीजी से बोलीं—"डाक्टर ने रबड़ की जो नली भेजी है, उसे ले आओ।"

पम्प ले आया गया। माँ की सम्मति लेकर नारायण स्वामीजी ने ( बिना दवा के प्रयोग किये ) माँ के दाहिने नाक में तीन बार और बायीं ओर दो बार पम्प किया। माँ के शरीर में इस प्रकार हवा देने में वे बहुत डर रहे थे। पता नहीं क्या हो जाय।

पम्प से हवा देने पर तत्काल कुछ ज्ञात नहीं हो सका। बाद में पता चला कि आवाज में वृद्धि हो गयी। भला करने का परिणाम बुरा हुआ। माँ के शरीर पर बाहरी कोई प्रक्रिया नहीं चलती। यह दृश्य हम अनेक बार देख चुके हैं। इन सबकी आवश्यकता भी नहीं होती। सिर्फ माँ का ख्याल हो जाने पर सब कुछ अपने आप ठीक हो जाता है। इसलिए माँ के निकट प्रार्थना करने के अलावा और कोई उपाय नहीं—"माँ, तुम कृपा करके हम लोगों के लिए अपने को स्वस्थ रखने का ख्याल करो।"

## ३१ दिसम्बर, १९५६

माँ के शरीर और भाव को देखते हुए हम सब विशेष उद्विग्न और भीत हो रहे हैं। शरीर की अपेक्षा भाव में परिवर्तन होना हम लोगों की दृष्टि में अधिक आशंका की बात है। न जाने कैसा अनमना भाव है। लोगों के साथ पहले की तरह मिलनसारिता नहीं है। बातचीत तो एक प्रकार से बन्द है। माँ के मुँह से सिर्फ एक बात निकलती है—"जो हो जाय।"

इन सब वजहों से आश्रमवासियों में आतंक की भावना उत्पन्न हो गयी है। माँ के शरीर और भाव के इस समाचार को पाकर कलकत्ता आदि स्थानों से बाकी लोग आये हैं। विभिन्न स्थानों से

तार-पत्र बराबर आ रहे हैं। हम इन पत्रों का क्या उत्तर दें, समझ नहीं पा रहे हैं। यह भी नहीं समझ पा रहे हैं कि ऐसी हालत में हमें क्या करना चाहिए।

इधर जब दिन प्रतिदिन यह दशा बढ़ती गयी तब और कोई उपाय न पाकर मैंने विभिन्न स्थानों में रहनेवाले भक्तों से प्रार्थना की कि वे माँ के स्वास्थ्य के लिए जप आरंभ कर दें। कविराज जी और डा० गोपाल दादा बराबर आते हैं, किन्तु उन्हें भी कोई उपाय नहीं सूझ रहा है।

बम्बई से श्री बी० के० शाह ( भइया ) माँ के शरीर की इस हालत का समाचार पाकर कल रात को काशी आ गये हैं। आपके साथ कानिया भाई नामक एक गुजराती सज्जन भी हैं। भइया के एक घण्टे की कीमत काफी है, फिर भी वे माँ के पास रहने के लिए एक सप्ताह की छुट्टी लेकर आये हैं। सोलन के राजा साहब भी ( योगी भाई ) आज ६-७ दिनों से माँ के निकट हैं। सभी लोग माँ के लिए विशेष रूप से चिन्तित हैं।

आज सवेरे माँ की आकृति किंचित् प्रफुल्लित थी। रात को सामान्य सोने का भाव था।

भइया के लिए माँ यह घर छोड़कर पहले की तरह पुन पश्चिम वाले बरामदे में अपने कमरे में रहने लगी हैं। इस ओर रहने पर मैं कभी-कभी माँ के कमरे में चली जाती हूँ। हरि बाबाजी के उधर रहने पर कुछ किया नहीं जा सकता, क्योंकि उधर महिलाओं के जाने पर रोक है। माँ का यह भाव देखकर लड़के-लड़कियाँ पास जाने का साहस नहीं कर रहे हैं। माँ का इस प्रकार को गम्भीर मूर्त्ति और मौन भाव बहुत दिनों से हम लोगों ने नहीं देखा है।

कलकत्ता से चित्रा आयी है। माँ इसे बन्धु कहकर बुलाती हैं।

माँ से इसे अपरिसीम स्नेह, आदर और कृपा प्राप्त हुई है। अक्सर माँ 'चित्रा, चित्रा बन्धु' सम्बोधन करती हुई इसके बारे में पूछताछ करतो थीं, पर अब हालत यह है कि वे इसे पहचान नहीं पा रही हैं। कौन किसका बन्धु? हम सब क्या हैं? बेचारी चित्रा जिसने माँ का यह रूप कभी नहीं देखा था, रोते-रोते परेशान हो गयो। इधर हमारी समझ में भी कोई बात नहीं आ रही थी कि आखिर माँ के भाव में इस तरह का परिवर्त्तन क्यों हुआ है। लगता है जैसे हम लोगों के किसी अपराध के कारण माँ के शरीर और मन में ऐसा परिवर्त्तन हुआ है।

डा० गोपाल दादा ने प्रस्ताव रखा कि कलकत्ता से किसी बड़े चिकित्सक तथा कान के विशेषज्ञ को बुलाया जाय। माँ न हो दवा न लें, पर उनसे राय लेने में कोई हर्ज नहीं। भइया ने कहा कि आवश्यकता पड़ने पर बम्बई से बड़े-बड़े विशेषज्ञों को बुलाया जा सकता है। मेरे इलाज के लिए आप मुक्तहस्त से हजारों रुपया खर्च कर चुके हैं और अभी तक कर रहे हैं। हवाई जहाज द्वारा बम्बई, दिल्ली न जाने कितने बड़े-बड़े चिकित्सक आ-जा रहे हैं। आज माँ अस्वस्थ हैं, ऐसी हालत में सभी लोग श्रेष्ठ व्यवस्था करने को कहेंगे, इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है।

बहरहाल, अन्त में सलाह करने के बाद रात को कलकत्ता के अनिल गांगुली को फोन किया गया। माँ को इस हालत में कलकत्ता के बड़े डॉक्टरों में कम से कम दो को काशी लाना सम्भव हो, इस बारे में डॉ० सुधीन मजुमदार के साथ परामर्श कर लें। कल सवेरे पुनः फोन द्वारा ठीक-ठीक समाचार दिया जायगा। यह सारी बातें तय हो गयीं।

# श्री श्री माँ आनन्दमयी

## सप्तदश भाग

श्री श्री माँ के अलौकिक जीवन की अनेक घटनाओं का वर्णन इस भाग में है। विशेष रूप से श्री श्री माँ के साथ श्री गोपीनाथ कविराज जी की जो वार्तालाप हुई है, वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

माँ की अस्वस्थता के लिए भारत के सभी भक्तों की आकुल प्रार्थना, कलकत्ता, बम्बई, अहमदाबाद, जयपुर, कुचामन, जोधपुर, वृन्दावन आदि स्थानों की भ्रमण लीलाएँ; वृन्दावन आश्रम के गीता भवन में प्रवेश-उत्सव, सूक्ष्म देहधारियों का दर्शन, अहमदाबाद में माँ की जन्म-तिथि पूजा, कान्ति भाई के यहाँ रासलीला, राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के अनुरोध पर राष्ट्रपति भवन में माँ का भोग आदि घटनाएँ इस भाग की विशेषताएँ हैं।

[ जनवरी १९५७ से दिसम्बर १९५७ तक ]